भक्तमाल सटीक ॥

بھگت مال سٹیک

श्रीनाभादास कृत ॥

जिसमें

रामानन्द कबीरदास नामदेव ध्रुव मीराबाई रैदास सुल्तानबादशाह सधनकसाई इत्यादि भगवद्भक्त महात्माओं की कथा अत्युत्तम वर्णित है ॥

और

परमभक्त श्री महाराज नाभादास जीने टीकामें अनेक अनेकग्रंथोंके श्लोकादिकोंसे दृष्टान्त दिये हैं ॥

वही

सम्पूर्ण भगवद्भक्त साधु महात्माओंके उपकारार्थ बड़ी शुद्धता पूर्वक

प्रथम बार

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखाने में छापीगई

फरवरी सन्१८८३ ई० ॥

बिज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् फरवरी सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेंचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ब्योपारकी इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिवंश पर्व	रामायण कबितावली
महाभारत	म०भा०पर्वअलेहदाभीहैं	रामायणगीतावलीसटी
१ पहिले हिस्सामें	रामायणरामबिलास	बिनयपत्रिका बा० मो
आदिपर्व, सभापर्व	रामायण तुलसीकृत	बिनयपत्रिका बा० शि
बनपर्व	रामायण सटीक अथ	लिङ्गपुराण
२ दूसरे हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	बिष्णुपुराण
बिराटपर्व, उद्योगपर्व	तथाजिल्दबंधी	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	मयतसवीर व क्षेपक	**वैद्यक भाषा**
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायण तुलसीकृत	निघंटु
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	सातोंकाण्ड	अमरबिनोद
ऐशिकपर्व, विशोकपर्व	१ बालकांड	वैद्यजीवन
स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें	२ अयोध्याकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
राजधर्म आपदधर्म,	३ आरण्यकांड	अमृतसागर बड़ा
मोक्षधर्म	४ किष्किन्धाकांड	तथा छोटा
४ चौथे हिस्सामें	५ सुन्दरकांड	वैद्यमनोत्सव
शान्तिपर्व, दानधर्म	६ लंकाकांड	माधवनिदानसंस्कृत
अश्वमेध, आश्रमबासिक	७ उत्तरकांड	**नाटक**
पर्व, व मौशलपर्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचंद्रोदय
वाणप्रस्थान पर्व	रामायणका इतिहास	रामाभिषेक
स्वर्गारोहण पर्व	रामायणमानसदीपिका	आनन्द रघुनन्दन

श्रीगणेशायनमः॥

अथ भक्तमाल सटीक॥
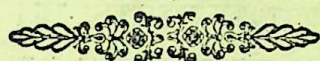
अथ टीकाकर्त्ताको मङ्गलाचरण लिख्यते॥

श्री मन्निमन्त्रा चार्य्यायनमः॥ तहां अर्थ भक्तमाल में लिख्यो है भक्तभक्ति भगवन्त गुरु चार रूप लिखेहैं तहां हरिकोस्वरूप नहीं लिख्योजाय तापैराजा को चित्र कारकोदृष्टांत॥दोहा॥ लिखन बैठिजाकीछबी गहिगहि गर्व गरूर॥भये न केतेजगत के चतुर चितेरे क्रूर १ चित्र चितेरो जो लिखै रचिपचि मूरतिबाल। वहचितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल २ दृग पुतरीलौं श्यामवह लिख्योकौन पै जाय।जग उजियारी श्यामता देखोजीय लगाय। कोटिभानुजोजगवैतऊउजासनहोय॥तनकश्याम की श्यामता जोदृग लगी न होय। मोहन जग व्यौहार तनिबणिज करोयहिहाट।पीवपदारथपाइये नियकौड़ी के साट ५ छबि निरखत अति थकित ह्वै दृग पुतरी ब्रज बाम।फिरन उठी बैठी चुहट कियो गौरतनश्यामप॥पद॥ मैयादाऊजीमोहिं बहुत खिझायो॥ मोसों कहत मोल कोलीयोतू यशुदानहिं जायो॥ नंदहूगोरो यशुदहूगोरी तू कित श्यामशरीर। तारी देदै ग्वाल नचावैं सिखवत हैं बलबीर। सिखवन दै बलबीर चवाई मिथ्यावादी धूत ।सूरदास मोहिं गोधनकी सौं मैं जननी तू पूत ६ संमोहर्नातंचे॥ फुल्ल न्दीवरकाँतिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंपीतांवरंसुदरं॥गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविंदंकलवेणुवादनपरं

दिव्यांगभूषंभजे ७ ॥ दोहा॥ प्रेम चितेरे की सुमति कापै बरणीजाय॥मोहन मूरतिश्यामकी हियपटलिखीवनाइ८ तीक्षण बरुनी बाण सौं वेध्यो हियो दुसार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनों प्रेमीवट अँषियार९ लिखिस्वरूप चित कौ दियो लियोहियेसोंलाइ॥ चित्र कार परवारितन रह्यो पाइलपटाइ १॥कवित्त॥श्यामताउज्यारी सुखमुरलीअधर धारी रूपमतवारीआखैं रूपतकि रहीहैं। केशखैंचि बांध्यो जूड़ा वेसमनमोंकचूड़ा प्रेमछविपूराद्युति चंद्रिकासुबहीहै॥अलकैं कपोलनिपै कुटिआईंघुटलानों घटलेत हियेकछुवैसियेवहीहै। श्रीगोविंदचन्द जूको चित्रलिखि चित्र दियो बड़ेई विचित्रनिकी मति अति गहीहै १॥पद॥नमो नमो श्रीभक्ति सुमाल । जाकेसुनतमहा तम नाशत उर आलक्रत राधानँदलाल। गदगदसुरपुलकत अँगअंगन लोचन बरषत अँसुवनजाल। उतरिजात अभिमान व्यालविष लेतजिवाइ सुरसतिहि काल । होति प्रीति हरिभक्त न नन सौं लेतसीतरुहि चरण प्रछाल। तजतकुसंग लेतसत संगति भाग जगत कोउ अद्भुतभाल। निभिना सरसोवत अरुजागत रोम रोमहू करत निहाल। श्री अग्रन रायन दास प्रिया प्रिय प्रगटी जीवनि रसिकरसाल ३ हरिको स्वरूप प्रेम रूपी चित्रकार सौं लिख्योजाइ और सौं नहीं महाप्रभुजिमित्र काहेते जीवहरिसों विमुख सन्मुख आवैजव प्राप्तहोइ १॥ गीतायां॥ दैवीह्येषागुणमयीमम मायादुरत्यया॥ मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतितेः ॥चैतन्यभागवते॥ एतेचांशकलापुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयं॥इंद्रादिव्याकुलंलोक मृडयंतियुगेयुगे ३ मनहरन अक्षर सो कामधेनुहै॥ राधाचंद्रदीपकायां॥ दृष्टःक्वापिचकेशवो व्रजवधूमादायकांचिद्गतः सर्वाएवविमोचितासखिवयं सोन्य घणीयोयदि॥ हाहैगच्छतसित्वदीर्घसहसाराधांगृहीत्वा करे॥गोपीवेषधरोनिकुंजभवनं प्राप्तोहरिःपातुवः ३ सखी मनहरण॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसोंमोसों ऐसी होड़

परी और इनआलिनसों कहाधौंविशेषिये। दर्पण निहारि कान्ह कही मेरे बड़ेनैन हांकही इनकुंतब बोलीहैं हृतेषिये। दीरघ ढरोर दृग मेरो राधा कुंवरिके हैं कैसेकरि जानोंचलौदिगलाइपेषिये। आयेहैंहरावोइन्हैं अहोयेहोबलिगई एकबार आंखिन सों आखें लाहिंदेखिये ४ जैसीनित रहतिहै तैसी सखिआईं मेरी इनकी अनैसी अब नईअयेतेपिये। चित्तमेंचढ़ीहैं प्यारी दीसत न उजियारी ताकीकेतलअहोमांहि अवरेषिये। होंहूंजानति हौंहोजसल कैसे ह्वै हैं हतें धारि किये प्रेमसों विशेषिये। जितघट ह्वै है तित जोर है सुजान कान्ह कैसे अैसीआंखिनिसों आंखें नाहिं देखिये ५ लीनसम रघराल उधर हुर कछुपात वामन मनहरि वेलैं निघ्रवैकेहेरैहैं। नेकुन निहारै हिय फारै बाराहसम अरिवैते परशुराम फिरतग फेरे हैं तीछण नृसिंह नखबोषक अबोलिबतैंतारिबेतैं रावनकुलाव चित्तनेरेहैं। मोहिवेतैं मोहन अकलंक बिन निहकलंक दशौ अवतार किधौं प्यारी नैन तेरे हैं १ वृन्दाबन मनहरणपै ॥ श्लोक ॥ कथ्यो (न्योयदि संभूतो यस्तु गोपेन्द्र नंदनं। वृंदावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासः कनककपिशंवैजयंतींचमालां ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृंदैर्वृन्दारण्यंस्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्त्तिः २ ब्रजबासी मनहरणपै॥ भागवते ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपब्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनं ४ साधमनहरणपै ॥ भागवते ॥ निरपेक्षंमुनिंशांतं निर्वैरंसमदर्शनं ॥ अनुब्रजाम्यहंनित्यं तपूयत्यंघ्रिरेणुभिः ५ ॥

अज्ञानरूपन कवित्त ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरणजूके चरण को ध्यानमेरे नाममुखगाइये । ताही समय नाभा जीने आज्ञादई लईधारि टीका बिस्तारिभक्तमा-

ल की सुनाइये । कीजियेकवित्तबंद छंदअतिप्यारो लगै जगै जगमाहिं कहिबाणी बिरमाइये । जानों निजमति येपैसुनोभागवतशुकद्रुमनप्रवेशकियोऐसेईकहाइये १ ॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥

भगवान कह्योमैंभक्तनको ऋणियांहौं यातेइनकी चरण रेणु मैं शिरपरधारोंहौं क्योंकि मेरो अपराधमिटै ६ ॥ गीतायां ॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहं ॥ येदारागारपुत्राप्तान् ७सो कहीपै बनीनहीं क्योंकि इन्होंनेघर-बार पतिपुत्रादिकुल धर्म सबछोड़ अरुमोते कछू न छूथ्यो यातेश्चौं इनकोऋणियांहौंयातेबिचारो इनहीं की चरण रेणुशिरपरधारोंतबमेरोअपराध मिटैगोसोयातेधारोंहौं ८ ध्यानमेरेनामसुखगाइये९ तहांदोऊकैसेबनैं ॥श्लोक ॥ इंद्रियाणांलयोध्यानः तापैदृष्टांत सिद्धके द्वैरूपइन्द्रिनको १०ताहीसमय ॥ दोहा ॥पायलपाइलगीरहैलगेअमोलक लाल॥भोडरहूकोभासिहै बेंदीभामिनिभाल १सुनाइये ॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वापराधकृदपि मुच्यतेहरिसंश्रयः ॥ हरेरप्यपराधन्यं कुर्याद्द्विपदपांसनः २ ॥ आगमे ॥ यानैर्वापादुकान्विर्वा गमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अप्रनामस्तदग्रतः ३ उच्छिष्टेवाप्यशौचेवाभगवद्वन्दनादिकं ॥ एकहस्तप्रणामश्चतत्पुरश्चाप्रदक्षिणं ४ यादप्रसारणंचाग्रे तथापर्यंकबंधनं ॥ शयनंभक्षणंचापिमिथ्याभाषणमेवच ५ उच्चैर्भाषामिथोजल्पो रोदनानिचविग्रहः ॥ निग्रहानुग्रहौचैव न्रपुचाक्रूर भाषणम् ६ कंबलावरणंचैव परनिंदापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाषणंचैव अधोवायोर्विमोक्षणं ७ शक्तौ गौणोपचारश्च अनिवेदितभक्षणं ॥ तत्तत्कालोद्भवानांच फलादीनामतर्पणं ८ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यंजनादिके ॥ पृष्ठीकृत्यासनंचैव परेषामभिवादनं ९ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवतानिंदनंतथा ॥ अप-

राधास्तथाविश्व।इतिचिंशत्परिकीर्तिताः १० नामाश्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येवसनामतः ॥ नाम्नोपिसर्वसहृदोह्य पराधात्पतत्यधः ११ ॥ नाभाछप्पै ॥ गुरुअवज्ञाकरैसाधु निंदाविस्तारै। शिवकी निंदाकरैब्रह्मसेंभेद विचारै ॥नाम बल करि अपराध नाम परतापनजानै। वेदनिशास्त्रउलंघि आप मनको मतठानै ॥बिनश्रद्धा उपदेश औरठगिआयो पोषै। निजइंद्रिन के हेत चेत परि पिएड सोषै ॥ ये दश अपराध तजिदेहते साध संगति सेरलिमिलै। ततवेतातिज्ञं लोकमें राम नाम तोको फलै १२ ॥ गीतायां ॥ मूकंकरो तिवाचालं पंगुंलंघयतेगिरिं ॥ यत्कृपातमहंवंद परमानंद माधवं १ कहाद्वयेपै ॥ दोहा ॥ संत कृपा रवि उदयते मिटै तिमिरअज्ञान ॥ हृदयसरोवर बिमलहैफूलेहित बुधज्ञा न २ श्रीभागवतकी सुबुधि कही कीरकलगान ॥ भक्तमाल अभिप्राय जो जानैसंतसुजान ॥३ ॥

रचिकविताईसुखदाईलगैनिपट सुहाईऔसचाईपुनि रुक्तलैमिटाईहै। अक्षरमधुरताई अनुप्रासजमकाई अति छबिछाई मोदझरीसीलगाईहै। काव्यकीबड़ाईनिजमुख नभलाईहोतिनाभाजूकहाई यातेप्रौढ़कैसुनाईहै । हृदय सरसाई जोपैसुनियेसदाई यहभक्तिरसबोधिनीसोनाम टीकागाईहै ॥

रचिकविताईपै॥श्लोक॥ तद्ब्रह्मसात्ववधपातकमन्मथारी श्चांतकारिकरसंगमपायभीत्यारोपशंधनुर्निजपुरप्रचरणाय नूनं देहंमुमोचरघुनंदनपाणितीर्थे ४॥ दोहा ॥ पियलखि सियकीमाधुरीतृणतोरनकेचाइ॥ भोरैंधनुषउठाइकैतोरत्रो सहज सुभाइ ५ श्लोक॥ कमठपृष्टकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्तिर सौरघुनंदनः॥ कथमधिज्यमनेनविधीयता मदहतातपणस्तव दारुणः६ रचिवोनामरंगकोहै कविताकोकहारंगिबोची-

नकाढ़िलैबो यही कविताको रँगिबोहै१ सुखदाईसुहाई
पुनरुक्त भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकारकी शब्दचित्र
अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥सवैया॥ हटकेनरहैं भटकै पलओट
भटू मेरे नैननि मों बसिकै। अटके उतही सटके मनलै नट
की सेवटाटटकेरसकै। लटके लट छोरनि सों लटकै षटके
न कटाछनकेकसकै। मटकेन छटा छबिकी झलकै न लगे
दून चाहन की चसकै ८ पीसौं भुको रसना वे कान लखे
गुणनाम समान तिहारे। नयनन्वले अति लुघेरहे तुमता-
हीतेनैनये नाम धरारे। संत विरुद्ध बको अतिही जिय ते
दुख नेकु टरे नहिंटारे। पाइ सुलच्छण राग अरे करकाहे
को नंदलला भिझकारे १ दृगहौ तुम दाई अदाई बड़े
अरु घूंघुट माहिं रहे फँसिकै। रसना रस जानति तूनकछू
मुखबैन कहेनहिंतैं हँसिकै। भुजहौतुमभूलकरीहूतनोपिय
प्यारेसों क्यों न मिले गँसिकै। मन तू न मिल्योमनमोहन
सों सबही के सयान गये नँसिकै २ दोहा ॥ चष उपमा
कमलासन आसन निज तन कीन ॥ विमलज हृदय
कमलकमलन को धूरि कमल सुखदीन३ वारों बलि तो
दृगनि पर अलि खंजन मृगमीन॥ आधो दृष्टि चितौनजि-
मि कियेलाल आधीन ४ ॥कवित्त॥ कारेभपकारे रतनारे
अनियारे सोहै सहज ढरारे मनमथ मतवारेहैं। लाज
भरि भारे जो चपल अनियारे तारे सांचेकेसे ढारे प्यारे
रूपके उज्यारे हैं। आधी चितवनिही में आधीन कियेते
हरिटोने सेवसीकरके लोने पनियारे हैं। कमल कुरंग
मीन खंजन भँवर वृषभानुकी कुंवरि तेरे दृगनिपैवारेहैं ५
सवाईश्लोक॥ हरोहिभालवत्सते हरिश्चतिचवारिधौ॥
आकाशेभ्रमतेसूर्याजानेमत्कुणघंकथा ॥ वायसाःकिन्नभ
चंतिकवयोनवदंतिकिम् मद्यपाकिन्नजल्पंति किन्नकुर्वंति
योषितः ६ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथा नकथ्यतेयद्भगव
न्नधोचजः॥ तदेवसत्यंतदुहैवमंगलं तदेवपुण्यंभगवद्गुणोदयं
७पुनिरुक्त दोहा। दोषनहीं पुनिरुक्तको एककहतकवि

राज॥ अर्थगहे पुनि अर्थको येकविगणके साज॥ वारख को तारख अहो बार न लागीतोहिं॥ बार नकीजैहेप्रभो वारख अटकल मोहिं ८ मनकी सचाई पाइके उठिआये प्रभुपास॥ मनबांछितफलपाइकै हियमेंअधिकहुलास ९ शुद्धघटमेंतौहरिसदाबासकरैहैं ताकोचिंताकौनमधुकीहै मधुरताईपै॥ कवित्त॥ करत कवित्त तुक दौरैमनदौरैन हांऔरैऔरैऔरैजहारसुठरांकरै॥ सौनैकीसी सांकरैये मिश्रीकीसीकांकरैयेआकरसआकरैसुहाकरै निसाकरै। सोंठिकीसी गांठैतुकगांठैतेजगाठिकी न सांठेसोलैआनी काहू आकनिकेराकरै। दोऊते समान ऐसी जहानको जमानोदेख्यो भोरभये जीत्यो षटपद पदमाकरै १ अंग अंग औघटन घाटहै सनाढोको लालको लषाहै याअधर रसपानकी। भौंहकीमरोरनिमें भोरसे परतजात त्योरी कीतरंगनिमें निठुरता निदानकी। जगन गहर मौन उ-त्तर न पाइहैकिहू ऐसीगरबीलीहै हठीलीवृषभानकी। रसिकप्रवाह रसकूलन बिदारैजात नदीसी उमड़िचली मानिनीके मानको २॥अनुप्रास॥मदनतुकासीकिधौंराजैं कुंदकासी मानोंकंजकलिकासी कुवजारीझिबिकासीहै। गांसीभरीहांसी सुखभासी मोहफांसीमद यौवनउजासी नेहदियेकी शिखासीहै। जाकी रतिदासी रसरासीहै रमासीकोकहै तिलोत्तमासी रूपरतनप्रकासीहै। काम की कलासी चपलासी कविनाथ किधौं चंपलतिकासी चारुचंद्रचंद्रिकासी है ३ सोईमेरोबीर जोलेआवै बल-बीर ताहिदेहौं दोऊचीर मेरो बिरहबटाइले। भंजन कृपाकेपीर कृपैनकृपायेपीर कृपाकरिकृपैतौ कृपाकर कृपाइले। मदनलग्यो हैघाइघाइसोकहौरीघाइये रीमेरी धाइ नेकमोहुतन धाइले। देहरी घरथराइदेहरीचढ्योन जाइ देहरीतनकहाथ देहरीलँघाइले ४ काव्यकीबड़ाई कवित्त॥यहैकबिताई जामें भरीसरसाईऋतु पदसुखदाई अंकरचनासुहाईहै। जाकेढूंढ़िबेकोबड़ेरसिकप्रवीन मन

लीन भये रसमांभजनैजाइपाईहै। जैसेतीरगरवर निपट एकाग्रकरि आधिआंखिमूंदिलखै तीरकुटिलाईहै। ऐसे वह बकाई निज प्रगटदिखाईदेति ताकी न बड़ाई वा बकाईकी बड़ाई है॥ १ ॥

भक्तिस्वरूप॥श्रद्धाईफुलेलऔउबटनौंश्रवणकथामैलअभिमानअंगअंगनिछुटाइये।मननसुनीरअन्हवाइअगुछायदयानवनवसनपनसौंधौलैलगाइये । आभरणनामहरिसाधुसेवाकरणफूल मानसीसुनथसंगअंजनबनाइये। भक्तिमहारानीकोशिंगारचारुवीरीचाहरहै जोनिहारिलहै लालप्यारीगाइये ॥

श्रद्धाईफुलेल भक्तिमहारानी को श्रृंगारआगमे॥हरिभक्तिमहादिव्या सर्वामुक्तादि सिद्धय:। भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्या चेटिकावदनुव्रता: २ भागवते तत्सर्वं भक्तियोगेनमद्भक्तोलभतेऽजसा॥ स्वर्गापवर्गौ मद्धाम कथंचिद्यतिवांछति ३ तापैदृष्टांतरांकावांकाको ॥आगमे॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगोथ भजन क्रिया॥ ततोनर्थ निवृत्तिश्च ततोनिष्ठारुचिस्ततः ३ अथा सक्ति स्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति॥ साधका नामिदं प्रेम्ना प्रादुर्भावो भवेत्क्रमात् ४ मैलअभिमान यातिर्विद्यामहत्वंच रूपयौवनमेवच यत्नेनपरितस्त्याज्या: पंचैतेभक्तिकंटका: ५ पांचकांटेसोई पांचौमैल॥भागवते॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वं मूषित्वंवासुरात्मजा:॥ प्रीणनायमुकुंदस्यनवृत्तंनवकूज्ञता ६ नदानंनतपोनेज्या नशौचंनव्रतानिच प्रियतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंवनं ७ मननसुनीर न्हायवेमेंआनंदजैसेहीमननमें अंगौछादयामेंतीनगुणतेलछुटावै उबटनो अरुमैल श्रद्धाकथामनन॥नारदपंचरात्रे॥वैष्णवानांचयंकर्मदयाजीवेषुनारद॥श्रीगोविंदे पराभक्ति स्तदीयानां समर्चनंकर्णफूलपांचजातिके

जड़ाऊसोने के रूपेके रांगके काठके पै सुहाग पांचोही में रहैं यातेकरैतौ दोऊकरै साधुसेवानबनिआवै तौप्रभुकीवी उठाइधरै॥पद्मे। अर्चयित्वातुगोविंदं तदीयान्नार्चयंतिये॥नतेविष्णुप्रसादस्य भाजनंदांभिकाजनाः २ सतसंगपै भागवते॥नरोधयतिमांयोगो नसांख्यंधर्मएवच॥नस्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तंनदक्षिणा ३ व्रतानियज्ञश्छंदांसितीर्थानिनियमायमायथावरुंधेत्सतसंगःसर्वसंगापहोहिमां ४ अथवाभक्तिके अंगभक्तिमालहीमें हैं श्रद्धासेवामेंगदाधरभट कथा में परीक्षित मननसुचोरचतुरभुजदासकी कथा सुनी ५ दयाकेवलरामसाटोपीटिमें उपद्धयो ६ नवनगोपालदासजोवनेरी पनराजाआसकरन नामआभरणअंतरनिष्ट ७ हरिसेवारत्नावतीरानी ८ साधुसेवासदाव्रती मानसीरघुनाथगुसाईं सतसंगरवालभक्तः ९ चाहवारीमधुगोसाईं १० ॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवात्सल्यऔशिंगारुचारुपांचौ रससार विस्तारनीकेगाये हैं टीकाको चमत्कारजानौंगे बिचारिमन इनकेस्वरूप मैंअनूपलै दिखाये हैं । जिनकेनअश्रुपातपुलकितगातकहूंतिनहूंकोभावसिद्धबौरेसोछकायेहैं। जौलौंरहेंदूरिरहैंबिमुखतापूरिहियौहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ४ पंचरससोईपंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाईहै । बैजयंतीदामभाववतीअलिनाभानाम लाईअभिरामश्यामतिलकचाईहै । धारीउरप्यारीकिहूंकरतमन्यारीअहौदेखौगतिन्यारीढरियाइनिकोआईहै ॥ भक्तिछबिभारतातेंनमितशिंगारहोत होतबशलषैजोईयातेंजानिपाईहै ५॥

भक्तिपंचरसपै॥ सोभक्तिकोस्वरूपक्रियात्मकहै सोक्रिया

होतेजानीजाइहै ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिंगानामानुश्च विककर्मणां ॥ सत्वएवैकमनसोवृत्तिः स्वाभाविकीतुया १ अनिमित्ताभागवतीभक्तिः सिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुया कोशं निगीर्णमनलोयथा २ जैसे रसनमें इंद्रीस्वाभाविकी होच लैहै ऐसेही समस्तइंद्री भक्ति में स्वाभाविकी लगें याक्रियाते भक्तिजानीजाइहै सोभक्ति पंचप्रकार की जैसे ईषको रसखांड़बुरा मिश्री कंद औरास्वाद न्यारेन्यारे तत्व एक ३ शांतरस ॥ दोहा ॥ यमकरिमुहतरहठि परयो यहधरिहरिचितलाइ ॥ विषयतृषापरिहरिअजौंन रहरिकेगुणगाइ ४ दास्यरस ॥ दासनदासतिहारोकरुणी प्रभुमोतेनहीं कछुबैननिआई। तेदुखठावनि मोदबढ़ावनि मोहित भोगकीनींमदिवाई। आपुहीमैंबिसरयो तिनमें मगितातेतहांतुम्हरीकोचलाई।पैआपअपनोजानिगहोन हिं जातिअहोतुम्हरीयेबड़ाई५ ॥कवित्त॥गुणनगहेहैंमन ठ्यारमैंबहेहौं तरीढीलनदहैहौं पंचरंगकोपतंमें।जितही कन्यावतहौ तितहीमैंआवतहौं ऐयेभुक्तिधावतहौं पवन कैसंगमें। गयोभरिवाइ हरिउरनरह्योआइ तातेथिन थांभथभ्योथिरकनिकेरंगमें। हरेहरेमैंबिनाथ कीजियेजू अपनीघानातरुअनाथ जातअनँगकीतरंगमें ६ सख्यरस करुणाभरनाटके ॥ एककहै असयत्ननहिंकीजै। कछु हारिकाजाननदीजै॥ एककहैंहोंलैहोंदांव।कहाभयोहवै आयोराव७एककहैं आवनतौदेऊ।तबतुमदांवआपनोलेऊ वात्सल्य पद ॥ जोपैराखतहौ पहिंचानि। तौ वै बालक मोहन मूरति सोहिं मिलावो आनि। भली करी कंसादिक मारे सुरमुनि काजकियो। अब इन गाइन कौन चरावैभरि भरिलेत हियो। तुमरानी वसुदेव गेहनी हम अहीरव्रजबासी। पठैदेऊमेरेलाल लड़ैते वारौं ऐसी हांसी खानपान परधान विविधि सुख जो कोउ लाड़ लड़ावै तदपिसूर मेरो कुंवर कन्हैया गोरसही सुखपावै १ शृंगार रसकवित्त॥ सीखे रसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार

सब सीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो। सीखे सोहैं खान नटिजान मुसकान सीखे सीखे सैनबैननि में हँसि-बो हँसाइबो। सीखेचाह चाहसों जु चाह उपजाइबोकि जैसीकोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहिबो। जहां जहां सीखे ऐसी बातैं घातैं तातैं तब तहां क्यों न सीखे नेकु नेहको निबाहिबो २ ऊधोकहा कहिये जियकी तियकी न सीजोन सँभारति हैं। परतासभलौ नहीं या जग में हमतौ अपने दिनटारतिहैं। मुखमीठी महाहिरदै कपटी बतियां छतियां नित जारतिहैं। हौं दास निदास तिहारी सखी येईबोल गुपालके शालतहैं ३ गहिबो आकाश पु-नि लहिबो अथाह थाह अति बिकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शेल शमशेर धारसहिबो प्रहार बान गज मृगराज लै हथेरिनि लराइबो। गिरिते गिरनपंथ अगि-निमें जरनि काशीमें करवटतन बरफलैंगराइबो। पीबौ विष बिषम कवुल कबि नागरजू कठिन कराल एक नेह को निबाहिबो ४॥ दोहा ॥ नैंनमूंदिमुखमूंदिकोधरौचि-कुटी मधि ध्यान ॥ तब आपहि में देखिहौं पूरण आतम राम ५॥कवित्त॥ओढिबेको कंथाऔ रमाइबेकोभस्म अंग काननिमेंमुद्रा शिरटोपियांधरावैंगी। करमें कमंडल कर खप्पर भराइबे को आदेश आदेश करि शृंगीऊ बजा-वैंगी। कुब्जिाको रिद्धिदईगोपनिकोसिद्धिदई फिरैंगी मसाननि मेंगोरखै जगावैंगी।एकबार ऊधवजू फेरि सम-झाइ कहौएती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी १यो-गी जग तजै हम योगजग दोऊतजैं योगी भयैं पौन हम पौनहू तेहटहैं। योगीकर सींगी हम सींगी भईं श्याम बिन योगी लावैं धूरिहमधूरिहूतेलटिहैं। योगीछेदैंकान हमछेदैंहियोबिधे प्राण योगी ढूंढैदंडहमहरिदंडठटिहैं॥ आवनकीआश सुधिवीतिगईऊधोजोतोयोगीकीजुगतिते बियोगीकहाघटिहैं२सुखाई शरीरअधीनकरेहगनोर की बूंदसौं माल फिरावै। नेहकीसेलीबियोग जटालिये आह

की सींगी संपूट बजावै। प्रेमकी आंचसें ठाढ़ीजरै सुधि आरालै आपनी देहबिरावै। सुजानकहैं कलाकोटि क- रौपै बियोगीके भेदको योगी न पावै ३ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठौयाम ऊधौयहां श्यामहीं सों कामहै। श्यामहियश्यामजिय श्यामबिन नाहिंतिय आंधरेकी लाकरी अधार नामश्यामहै। श्यामगति श्या- समति श्यामहीं प्रतापपति श्याम सुखदाई सो भुलाये घरधामहैं। तुमभयेबौरेयहां पाती लियें आये दौरयोग कहां राखैं हमरोम रोम श्यामहैं ४ हसिरहौ हमसों तौहमैंनितही परि पाइंनि पाइंसताइबो। बोलौन बोलौ हमैंनित बोलिबो चाहकरौनकरो हमैं चाहिबो। देखे न देखेदयाकरिप्यारे हमैंनितनैननितैंदरसाइबो ।मानो न मानो हमैंयह नेम नयोनित नेहको नातो निबाहिबो ५ बिचार सन॥ तापै दृष्टान्त चित्रकी पुतरी को अरु खान- खानाको १ छोइ चूरचूर॥ कवित्त॥ बेले ते बिछुरिपान पर पाटिल ह्वैकै कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है। बेधुमार दागिल ह्वै परत कतरनीमें पाइकै मरोरी बड़ बिकनि बिकतुहै॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेबीच धरिकै चितौनी रस सचिकै पचतु है। एते परसखी सुख रसिक हाथआये कहाचूरचूर भयेबिनारंग क्योंरचतुहै१॥

सतसंगप्रभाव ॥ भक्तितरुपोधाताहिबिघ्नडरछेरीहू कोबारदेबिचारबारसींचोसतसंगसों। लाग्योईबढ़नगोदा चहुंदिशिकढ़नसो चढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों॥ सं- तउरआलवालशोभितबिशालछाया जियेजीवजालतापु गये योंप्रसंगसों। देखौबढ़बारिजाहि अजहूकीशंकाहुती ताहीपेंड़बांधेझूलैंहाथीजीतेजंगसों ६ ॥

सतसंग॥ भागवत॥ सतांप्रसंगान्ममवीर्यसंबिदोभवंति

हृतकर्णरसायनांकथा:। तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनिश्रद्धा रतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति १ दोहा॥ इष्टमिलैअरुमनमिलैमिलै भजनरसनीति॥ मिलियैतहांनिशंककह्वै कीजैतिनसों प्रीति १एककहैजागे लोचन घूमघुमारे॥ दूसरीकहै एकनिरंजनहै अविनाशी॥ दोहा॥ बहता पानी निर्मला बंधा गँधीला होइ॥ साधू जनरमता भला दाग न लागै कोइ २॥ वृं-न्दाबन सतके॥ मिलंतुचिन्तामणि कोटि कोटिय:। स्व-यंवहिर्दृष्टिमुपैतुबाहरी। तथापि वृन्दाबन धूरिधूसरं न देह मन्यच कदापि यातुमे ३॥ कवित्त॥ वचन विलास सैंमिठास आइ बास करै हरै हृदय रोग भोग माने जे जिआरी के। नयेई जे नातनाति बातन सुहत नेकु पुलकत गात दृग धारा जल न्यारी के॥ रूप गुण माते देह नाते जिते हातें होत सोतज्यों सलिल मन मिलत जियारीके। और सब संग हम संग के समान किये सोई सतसंग रंग बोरै लाल प्यारीके ४ सबहीतें बड़ी छिति छिति हूतें बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि बारिध अचैरहे। तिनहूं तें बड़े नक्षतामैं सुनिसेअनेक तारा अरु दारायेन सबयन अ-छवैरहै॥ तिनहूंतें बड़े पगवावन बढ़ाये जब ताही की उचाई देखितीनोंलोक नैरहे। तिनहूं तें बड़ेसंत साहिब अगमें गम ऐसेहरि बड़ेताके हृदय घर कै रहे ५॥

नाभाजूकोवर्णनं॥ जाकोजोरुवरूपसोअनूपलैदिखाइ दियोकियोयोंकबित्तपटमिहीमध्यलालहै।गुणपैअपारसा धुकहैंआंकचारिहीमेंअर्थविस्तारिकविशजटकसारहै।सुनि संतसभाझूमिरहीअलिश्रेणीमानौं घूमिरहीकहैंयहकहाधौं रसाळहै। सुनेहैअगरअबजानेमैंअगरसही चोवाभयेनाभा सोसुगंधभक्तिमालहै ७॥

चारहीमें॥ छप्पै॥ कहान सज्जननवत कहा मुनिगोपी

मोहित। कहादासकोनाम कवितमें कहियतकोहित॥ कोप्यारो जगमाहिं कहाछिति लागैश्रावै। कोबासरही करै कहासंसारहिभावै॥ कहिकाहि देखि कायर कँपत श्रादिश्रंतकोहैशरनं। यहउत्तर केशवदासदिय सबैजगत शोभाधरन १॥ कवित्त॥ चतुरबिहारीजूपै मिलिश्राइं बालासात मांगतिहैं श्राजुकछु हमको दिवाइये। गोद लैहौफूल दैहौनाकहि पहिराइमोती पोननकीपातरिझ ताशनझंलाइये। झंपैसेश्रवासके भरोखा बैठाइयेजू मेरी सेजश्यामश्राजु रतिपति ध्याइये। ग्वालसमझाइबेको उत्तरसब दीन्हौंएक उत्ता विशेषभांति वारीनहीं श्राइये २ श्लोक॥ कोदुराग्रस्यमोहाय काप्रियासुरविद्विषः। पदं प्रस्नवितर्कैक्किकोदंतः छदभूषणं॥ कोमुष्योहेविद्वन्सबैषा सषीनारामानुरागइंदिरालोकमाता। मानुप्रस्नेचवितर्कैं चनसवंतसिंद्यकौरानीनैसिंगरफ कोमालिख्यौ॥ तामें लालसाबांच्यो जैसेब्रजसुंदरीने पातीलिखी॥दोहा॥ तर झुरसी ऊपरगरी कज्जलजल छिरकाइ। पिय पातीबिन हीलिखी बांचीबिरह बलाइ ३ दृष्टांत गुलाब कौ श्रौगुलालाको ४॥

भक्तमालस्वरूप॥ बड़ेभक्तमाननिशिदिन गुणगान करें हरैंजग पापजाप हियो परिपूरहै। जानिसुखमानि हरि संतसन मानसचें बचेऊजगत रीतिप्रीति जानीमूर है। तऊदुराराध्यकोऊकैरोकैश्रराध्यसकैसमझोनजातमन कंपभयोचूरहै। शोभिततिलकभालमालउरराजैश्रैपैबिना भक्तिमालभक्तिरूपश्रतिदूरहै॥मूलमंगलाचरण॥ दोहा॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामबपुएक॥ इनकेपदबंदन करैनाशैबिघनश्रनेक १

भक्तिरूपश्रतिदूरिहै॥भागवते॥तत्कथ्यतांमहाभागयदि

कृष्णकथाश्रय: अथवास्यपदांभोज मकरंद लिहां सतां १ भक्तभक्ति मंगलाचरन तीनि प्रकार बस्तुनिर्देशात्मक गीतगोविंदे ॥ मेघैर्मेदुरमंबरं बनभुव: श्यामस्तमाल द्रुमै र्नक्तं भीरुरयंत्वमेव तदिमंराधे गृहंप्रापय इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयो: प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरह:केलय: ॥ नमस्कारात्मकं॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायमनाखसादय: । येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयात् शुद्धंतितस्मैप्रभुविष्णवेनम: २ आशीर्वादात्मकं। न्रसिंहपुराणे॥ यस्तंभाहन्यमानोगगडगडगड ज्वालचंद्रार्द्धदंष्ट्रोव्योमोद्भुव्योप्यमानोजजडजड़जडत्साध्यमान: सटाभि:दंष्ट्राभि:खाद्यमानं ककटकटकटत्तर्ज्जमानोसुरेंद्रं॥ निष्क्रांतोर्ह। स्ययुक्तोगगहगहगहत्पातुव: श्रीन्रसिंह: ३ वपुएक श्लोक॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने॥ अन्ययत्नंपरित्यज्य वैष्णवान्भजसुब्रत ४ भक्ति कैसे तैसेंफूलमेंसुगंध ॥

टीकाबिशेषलक्षण॥हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोईभक्त सहीगहीएकटेकफेरिउरतेनटरीहै।भक्तिरसरूपकोस्वरूप यहैछबिसारचारुहरिनामलेतअँशुबनिझरीहैं॥वहीभगवंत संतप्रीतिकोबिचारकरै धरैदूरिईशताहू पांडवनसोंकरी है ॥ गुरुगुरुताईकीसचाईलैदिखाईजहां गाई श्री पैहारी जूकीरीतिरंगभरीहै २ मूल ॥ मंगलआदिबिचारिरह्योब स्तुनऔरअनूप। हरिजनकोयशगावतेंहरिजनमंगलरूप २ सबसंतनिनिर्णयकियोमथिश्रुतिपुराणइतिहास । भजिबेकोदोऊसुघरकैहरिकैहरिदास ॥श्रीगुरुअग्रदेवअज्ञा दईभक्तनिकोयशगाइ । भवसागरकेतरनकोनाहिनऔरुउपाइ ४ ॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो। पटनाकी बाईसे रंगटको आमिल लाहौरको सुदर्शन खत्रीको दृष्टांत॥ कवित्त॥ शोच रूपसागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन कौन लगै कछु घात है। कौन या बिभीषणको राखैंगेंकि रा- वण सों जीवजाल माकरीलौं परयौ पछितात है॥ लछम- ण पाछैं मैंहूं मरन परन लीनों जस राम बरख्यौंत बूड़ी बुधि जात है। जीवको न लालच वचनको विशेष उरजीव गये वचन बचैतौ बड़ी बात है १ भक्ति रस रूपको एकादशे वाग्गद्गदाद्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति क्वचिच्च बि- लज्ज उद्गायति न्रत्यतेच मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति २॥ भवसागर॥ निमज्ज्योन्मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायणं संतो ब्रह्म विदःशांता नौर्दृढ़े विष्णु मज्जता ३॥

टीकाआज्ञासमयकी॥मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदास जबैकरतबयारनाभामधुरसँभारसों। चल्योहोजहाजपै जु शिष्यएकआपदामैं करैउध्यानखिच्यौमनछुट्योरूपसार सो। कहतसमरथगयोवोहितबहुतदूरि आवो छबिपूरि फिरिढरेताहीढारसौं॥ लोचनउघारिकैनिहारिकह्योबो- ल्योकोनवहीजोनपाल्योसीतदैदैसुकुवारसौं १०॥

मानसीस्वरूप मे॥ ताप्रभूतमेदृष्टोत॥ दोहा॥ यहमन भूतसमानहै दौरै दांत पसारि॥ बांभगांठि उतरै चढ़ैसब बलजावैहारि १ चल दल पच पताक पट दामिनि कच्छ पमाघ॥भूत दीप दीपकशिखायों मन चल्य अनाघ २॥ सवैया॥ चंचलजोमनको गतिहै अलिरूप सुवन बनमें फि- रियै॥कुण्डललोल कपोलन मैं अलकनि झलकनि चितमैं धरियै॥ बरबेंदी भालरसाल दियेअधरनिमैं मोतीथरहरि यै। अलबेलीलाल बिहारिनि कोंदिन रैन निहारनिही करियै ३ मनहैतौ भली थिरकै रहितू हरिकेपद पंकज में

गिरितू। कवि सुन्दर जौन सुभाव तजै फिरिबोईकरै तौ इहां फिरितू॥ मुरली पर मोरपखा परह्वै लकुटीपरह्वै भकुटी भ्रमितू। इन कुण्डल लोल कपोलनिमैं घनसैतन ज्यैं घिरिकै रहितू ३ करत बयारि नाभा जूनै बिचारीयह सुख कैसे मिलै॥ टहलतेमिलै दृष्टांत मरजियाको ४॥ सभारसौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमलहै सो बयारि की चोट लगै ५ सारसौ॥ कवित्त॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो झूमि तापर सिंहासन सुखासनबिछायो है। अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंगअंग मानोकोऊ रंग भरलायो है॥ कुण्डल झलाकार कंकनमुकुटकटि किंकिणीकि धुनि सुनि मन भरमायोहै। चंपे के चमेलीके अरु कुंद मंदार के सुहारनि मैं हारिके बिचारि बिसरायो है ६॥

अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजान्योसंतनप्रभावको। अज्ञातबदईयहभईतौपैसाधकृपाउनहींकोरूपगुणकह्योहियेभावको॥ बोल्योकरजोरियाकोपावतनओरठौरगाऊंरामकृपानहींपाऊंभक्तिदावको। कही समुझाइबोईहृदयआइकहैंसब जिनलैदिखाइदईसागरमैंनावको ११ श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था॥हनूमानबंशहीमेंजन्मप्रसिद्धिजाकोभयो दृगहीनदीनसोनबीनबातधारियै।उमरिबरषपांचमानिकैअकालआंच मातावनछोड़िगई बिपतिबिचारिये॥ कील्हाओअगरताहीडगरदरशदियो लियोयोंअनाथजानिपूंछीसोउचारिये॥ बड़ेसिद्धजललैकमंडलसोंसींचेनैनचैनभयोखुलेचषजोरीकोनिहारियै१२॥

रूप गुण ॥ श्लोक॥ येकंठलग्नतुलसीमलिनाक्षमाला येबाहुदंडपरिचिन्हितशंखचक्रः॥ ततोये।तितिक्षवः कारुणिकासुहृदः सर्वदेहिना। अजातशत्रवःशान्ताः साधवाःसाधु

अथवा:१माता॥ सवैया॥ बारिध तातकृते विधिसे सुत आदित सोमसहोदर दोऊ। रंभारमा तिनकी भगिनी अघ वामधुसूदन से बहनेऊ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो अरमध्य सहायनकोऊ।सूक्तिसराज रह्यो नलमें सुख संपति में सबको सबकोऊ २ पिता कोऊ कहैअरु कोऊकहै सुतकोऊकहै नाना बाबा तन तीनि तापतयोहै। प्रभुकोऊकहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम अबकहौयेजू काहि काहि दयो है॥ ब्रह्मभने जित तित चलिचलि छोइरही सुख नहीं कछू बछू हाथ गेंदभयोहै। कियोहू तिहारो अरु पाल्योहू तिहारोहीहौं इन बीचके लोगन ने बांटो बांट लियो है॥ सींचे नैन ॥ एकादशे॥ संतोदिशंति चक्षुंषिबहिरर्कः समुत्थितः॥देवता बांधवा: संत: संतआत्माहमेव च १॥

पाइँपरिआंशूआयेकृपाकरिसंगल्यायेकीन्हअज्ञापाइमंत्रअगरसुनायोहै। गलतेप्रगटसाधुसेवासोबिराजमान जानिउनमानताहीटहललगायोहै॥ चरणप्रक्षालिसंत सीतसोअनंतप्रीतिजानीरसरीतितातेहृदय रंगछायोहै। भईबढ़वारिताकोपावैकौनपारावारजैसोभक्तिरूपसोअनूपगिरागायोहै १३॥

मंत्र अगर आगमे॥ ताप: पौंड्रं यथानाम मंत्रोयाग श्वपंचम: एतेपंचसंस्कारा:चपरमैकांतहेतव: २ जन्म ना जायतेशूद्र: संस्काराद्विजउच्यते बेदाभ्यासी भवेद्विप्र: ब्रह्म जानातिब्राह्मण: ३ संतसीत नारद बाक्यं॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजै: ४ छायोहै॥ कवित्त॥ कोऊयह कहै संस्कारहीसों भक्तहो तबिना संस्कार भक्तिकैसे करि पाइयै। जान्यो हम सारसब ग्रंथ अनुसार पुनि एपैहै बिचार गूढ़ कहिकै सुनाइयै॥ महिमा अगाध साधुरसिक

प्रबीननि की नेकु चितवत कारस बन्धु उलटाइये। अंग अंग रंग सतसंग को प्रभाव अहो जैसे दत्तात्रेय बार सुखी हित छाइये ५ भईबढ़वारि॥ दोहा॥ मृत्तकचोर जूंठनिवचन काग बिट्टिजन मित्र॥ शिवनिरमायञ्ज आदिदैयेसबबस्तुपवित्र ६ शुकबाक्यं॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कशा आभीकंकाय वनाखशादय:॥येन्येच पापा: मदु पाश्रयाश्रया शुध्यंति तस्मै प्रभु विष्णवे नम: ७॥

मूल॥जयजयमीनबराहकमठनरहरिबलबावन।परशुरामरघुबीरकृष्णकीरतिजगपावन। बुद्धकलंकीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर। यज्ञऋषभहयग्रीवध्रूववरदैनधन्वंतर। बद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौबीस रूपलीलारुचिर श्रीअग्रदासपदउरधरो५ टीका॥ जिते अवतारसुखसागरनपारावार करैविस्तारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमांझमनलागैजाकोपागैतहीं जागै हियेभाववहीपावैकौनपारको। सबहीहैंनित्यध्यानकरत प्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैबित्त जोपैजानैसारको। केशन कुटिलताई ऐसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई बसौउर हारको १४॥ मूल॥ चरणचिन्हरघुबीरके संतनिसदा सहाइ॥ काअंकुशअंबरकुलिश कमलजबधुजावेनुपद। शंखचक्रसुस्तकजंबूफल कलशसुधाहद॥ अर्द्धचंद्रषटकोनमीनबिंदुऊर्द्धरेखा। अष्टकौनत्रैकौन इंद्रधनुपुरुषविशेषा॥ सीतापतिपदनितबसत एतेमंगलदायका। चरण चिन्हरघुवीरके ६॥

जैजैमीनबराह॥मीनबाराह क्यों गाये रामकृष्ण कोंडि़कै सबजातिकेसाधु गाये जाहिंगे कोऊ नीकचढ़ावै याते प-

हिले हरिही की जाति कहोंहैक्योंकि कोऊनाक चढ़ा
वै सोअबहीं चढ़ावो कृष्ण कीरति को विषयिहिसुनै १
तिते अवतार कोऊ कहै गुरुननै आज्ञादई संतनिकी इ-
न्होंने प्रथम अवतार क्योंधरे बटुवापहिले आवे साधुपाछे
आवै २ नाहीरूप जापै फकीर को औ लरिकाको दृष्टांत
कोऊ कहै मीन वाराह कैसे सुखदाई सुंदर केसंगतेसुंदर
होइ केशन के संगते कुटिलता ३॥

टीका॥ संतनिसहाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोज
निमें चिन्हसुखदाइयै।मनहीमतंगमत्तवारोहाथआवैनाहीं
ताकेलियेअंकुशलेधारेउहियेधाइये । औसेहीकुलिशपाप
पर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकंजमनलाइये ।
जोपैध्वजवंतरसवंतरूपसंपतिमें करिलेबिचारसबनिशिदि
नगाइये १५ ॥

मनमतंगचहुयें॥अयंत्वत्कथामृष्टपियूषणाद्यांमनोवारणः
क्लेशदावाग्निदग्धः॥तृषार्तोवगाढंनसस्याद्दावंननिष्क्राम
तिब्रह्मसंपन्नवन्नः १ छप्पै ॥ सदारहतनवरंगमेंमनमतंगबिच
र्योबुरो । धरनाधर्मउखारिसरमसांकरगहि तोरत । तरु
णिकरीवललखतधीलसाकहिगहिमोरत। बिनयबाणनहिं
बदतज्ञानअंकुशनहिंमानत।गुरूमहावततासिचाहिडारन
उरआनतलखिलेइबो वबारणविषयकुन्दनमदयौ बनजु
र्यो।सदारहतनवरंगमें मनमतंगविचर्योबुरो २ कवित्त ॥
मनमजनमताहिं जहांतहांघेरेफिर्यो मनमुटमरद गनीम
सेरीपागीहै। काहू प्रसंगी पंचरंगीजंगी जोरावर अलख
अभंगीसुउपाधिअनुरागीहै। कैदकरिपायोमनीराम नर
काया बीच अबकैजाचूकैगो तौ बड़ोतूअभागीहै। सुमिरि
कोऊ सारपांचभूतनिकोसिरदार मारिऐसीमारतेरी
भलीघात लागीहै ३ जबको हेतसुनो सदादातासबविद्या

की सुमतिको संपतिको सुखकोनिवासहै । च्चणमें सभीत होतकलिकीकुचालिदेखि ४त्रनासो विशेषजानों अभयको विश्वासहै। गोपदसुह्वै है भवसागर सुनागर जन जोपै नेकु हिये को लगावै मिटैचाह है। कपट कुचालि माया जाल सबजीतिबे को अंबर को दरम कियो जोपै अनायासहै १ कामहू निशाचर के मारिबे को चक्रधरयो मंगलकल्याण हेतखस्तकहूमानिये। मंगलीकजंबूफल फलचारुहूकोफल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानियै ॥ कलशअौसुधाकोसर सहीरेभक्तिभरयो नैनपटपानकीजैजीजैमनआनियै। भक्ति कोबढ़ावैऔघटावैतीनितापनिको अर्द्धचंद्रधारणयेकारण हूजानिये २ विषयभुवंगबलमीकतनमाहिंबसै दासकोन डसैतातैयत्नअनुसर्योहै । मीनविंदुरामचंद्रकीनोंविशोक- रणप्रायताहीतैनिकायजनमनजातहर्योहै ॥ अष्टकोनचै- कोनयंत्रकियेनीतिबेको जियेजोईजानैजाकेध्यानउरभर्यो है। संसारसागरकोपारावारपावैनाहिं ऊर्द्धरेखादासनि कासेतबंधकर्योहै ३ धनुषपदमाहिंधर्यौहर्यौशोकध्या- निनको मानिनिकौमार्यौमानरावणादिभाषिये। पुरुष जोविशेषपद कमलबसायोराम हेतअभिरामसुनौश्याम अभिलाषिये॥ सूधेमनसूधेबैनसूधीकरतूतिसबऐसोजनहोइ मेरौथाहीतेजुराखियै। जोपैबुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करि लैबिचारसबनिशिदिनभाषिये ४॥ दोहा ॥ दुखमैंतौसब कोउभजै सुखमेंभजैनकोइ॥ जोसुखमेंहरिकोंभजै तौदुख काहेकौहोइ ५ कबहूंनसुखमेंहरिभजे दुखमेंकीनेयादि॥ कहिकबीरवाजीवकोकैसेलगैफिरादि ६ जोसाहिबसोंतू मिलै साहिबमिलैतौतोहिं॥ बिनाभजनमिलतानहींसुख काहेकोहोहि७ बसतिहृदयजाकेदया रामहिंजानतजोइ दयारामपावैतबै दयारामकीहोइ ८॥

मूल ॥ विधिनारदशंकरसनकादिककपिलदेवमुनिभू- प।नरहरिदासजनकभीषमबलि शुकमुनिधर्मस्वरूप॥

अंतरंगअनुचरहरिजूके जोइनकोयशगावै। आदिअंतलौं मंगलतिनकोश्रोताबक्तापावै॥ अजामीलप्रसंगयहनिर्णय परमधर्मकेजान। इनकीकृपाऔरुपुनिसमझै द्वादशभक्त प्रधान॥टीका॥द्वादशप्रसिद्धिभक्तराजकथाभागवत अति सुखदाईनानाबिधिकरिगायेहैं। शिवजूकोबातएकबहुधान जानैकोऊ सुनिरससानैंहियोभावउरझायेहैं । सीताके बियोगरामबिकलबिपिनदेखि शंकरनिपुणसतीबचनसु-नायेहैं । कैसेयेप्रबीणईशकौतिकनवीनदेखो मनैहूंकरत अंगवैसेहूबनायेहैं १६ सीताहीसोरूपवेषलेशहूनफेरफार रामजूनिहारिनेकमनमैंनआईहै । तबफिरिआइकैसुनाइ दईशंकरको अतिदुखपाइबहुबिधिसमुझाईहै । इष्टको स्वरूपधारयोतातेतनपरिहरयो परयोबड़ोशोचमतिअति भरमाईहै। ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगमगे लगेमोको प्यारेयहबातरीझिगाईहै १७॥

अनतरंग॥ बाणासुरके युद्धमें महादेव कृष्णसोंलरे॥ भागवते॥ स्वयंभूर्नारदःशंभुःकुमारःकपिलोमनुः प्रह्लादो जनकोभीष्मोबलिर्वैयशिःशिर्वयं २ निपुणपरमेश्वरका प्रेम कोस्वादनहीं जैसे पादशाहको फकीरी को नहीं॥ ना-टके॥ पूर्यबदनाय नाथ किमिदंदासो स्मिते लक्ष्मणः कोहं वत्सनुआर्यराव भगवान् आर्यश्चकोराघवः किंकुर्मोविजने बने तत इतोदेवी भृशं विद्यते। कादेवीजनकाधिराजतन याहाहाप्रियेजानकी ४॥ मनैहूंकरत॥ दोहा॥ ज्योंजगके रानानिको भेदनजानैकोइ॥ तासुअन्तक्योंपाइये सबको दरतासोइ ५॥

चलेजातमगउभैषेरेशिपदीठिपरेकरैपरनामहिंपभक्ति

6394.

लागीप्यारियै। पारवतीपूछैंकियेकौनकौजूकहौमोसों दीसतनजनकोऊतबसोउचारियै। बरषहजारदशबीतेतहांभक्तभयो नयोग्रोरुहवैहैदूजीठौरबीतेधारियै। सुनिकैप्रभावहरिदासनिसोंभावबढ्यो रढ्योकैसेजातचढ्योरंगअतिभारियै १८ टीका अजामीलकी ॥ धर्योपितुमातनाम अजामीलसांचभयोअजामलरह्योछुटीतियाशुभजातकी। कियोमदपानसोसमानगहिदूरडार्यो गार्योतनवाहीसोंजोकीन्होलैकैपातकी। करिपरिहासकाहूदुखनैपठाये साधु आयेघरदेखिबुद्धिआइगईसातुकी । सेवाकरिसावधानसंतनिरिझाइलियोनारायणनामधर्योगर्बबालबातकी १६ ॥

बरष हजार बाबा नानक अरुमरदाने चेलाको। दृष्टांत भागवते॥मुक्तानामपिसिद्धानां नारायणपरायण: सुदुर्लभ प्रशांतात्मा कोटिस्वपिमहामुने १ नीतौ ॥ गिरौगिरौ न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे। साधवो नहिं सर्वत्र चंदनं नवनेबने २ रंगचढ्योभागवते॥ वरमेकंहृणयापि पूर्णात्कामाभिवर्षणात् भगवत्युत्तमां भक्तिं तत्परेषु तथा त्वयि ३ दोहा सयान तनकनरहै विरक्तिता लगै हगनिकी थाप कछु पूजामाला कहुंकहुं बटुवा कछुआय ४ करि परहास तापै शिवजीको दृष्टांत ५ सातुकी भागवते॥ नह्यंमयानि तीर्थानि नदेवामृछिलामया: तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेव साधव: ६ सावधान नीते॥ आत्मनो मुखदोषेन वध्यंते शुकसारिका: वकास्तत्र न वध्यंते मौनं सर्वार्थ साधक: ७ मोहजाल श्लोक॥ अंगंगलितं पलितंमुडंजातं दशनविहीनं तुंडं वृद्धोयाति ग्रहीत्वादंडं तदपिनमुंचत्याशपिंडं १ ॥

आइगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्यो महाबिकरालय मदूतदीदिखाइये। वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियो लियोसोपुकारिसुरआरतसुनाइये।सुनतहीपारषदआयेताहीठौरदौरि तोरिडारेपाशकह्योधर्मसमुझाइये। हारेलैबिडारेजाइपतिपैपुकारेकहीसुनोंबजमारमतिजावोहरिगाइ-ये २० मूल ॥मोचितवृत्तनित्ततहांरहों जहांनारायणपद पारषद ॥ विष्वसेनिजयबिजयप्रबलबलमंगलकारी। नंदसुनंदसुभद्रभद्रजगआमैहारी ॥ चंडप्रचंडबिनीतप्र-णीतकुमुदकुमुदाक्षकरुणालय। शीलसुशीलसुसेनभाव भक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीननप्रवीनभजनानंद भक्तनिहद। मोचितवृत्तनिततहांरहोजहांनारायणपद पारषद ८॥

आरत भागवते॥ सांकेत्यंपारिहास्यंवा स्तोभंहेलनमेव वा॥वैकुंठनामग्रहण मसेषाघ हरंबिदुः १ धर्मसमुझाइपै। एतेनैवह्य घोनोस्य कृतंस्यादगनिःकृतिः यदानारायणायेति जगाद चतुरक्षरं २ स्तेनःसुरापोमित्रधुकब्रह्महागुरुतल्पगः स्त्रीराजपितृगोहंतायेचपातकिनोपरे ३ सर्वेषामप्यघवता मिदमेवसुनिःकृतं॥ नामव्याहरणंविष्णोर्यतस्तद्विषयामि तिः४अहावतःस्वपचोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुभ्यंतेपु स्तपस्तेजुहुदुःसस्भुरार्याब्रह्मानूचुर्नामग्रहणीतियेते४छप्पै॥ कहाब्रतनेसगजेंद्रकियो कहावेदपुराण पढ़ीगणिका अजा मीलनेकौन अचार कियो निशिवासर पान सुरापपिका कहा जपजाप वधिक कियौसोहृतौघनजीवनकौहनिका तुलसी अघपर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनकोकनिका ६ हरिगाइपै दूतनिबृति नामोच्चारण माहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः अजामिलोपियेनैव मृत्युपाशाद च्यत ७॥

टीका॥पार्षदमुख्यकहैसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकीरि
द्धिहियेराखीबहुजोरिकै। श्रीपतिनरायणकेप्रीननप्रवीणम
हाध्यानकरैजनपालैभावदृगकोरिकै। सनकादिकदियो
श्रापप्रेरिकैदिवायोआपप्रगटहूवैकह्यो पियोसुधाजिमिघो
रिकै। गहीप्रतिकूलताईजोपैयहैमनभाई यातरीतिहदगा
ईधरीरंगबोरिकै २१ मूल॥ हरिबल्लभसबप्रार्थौंजिनचर
णरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुड़सुनंदआदि षोड़शप्रभु
पदरति । हनूमंतजामवंतसुग्रीवविभीषणसिवरीखग
पति ॥ ध्रुवउद्धवअंबरीषबिदुर अक्रूरसुदामा । चंद्र
हासचित्रकेतग्राहगजपांडवनामा॥ कौषारवकुंतीबधूपट
ऐंचतलज्जाहरी । हरिबल्लभसबप्रार्थौंजिनचरणरेणु
आशाधरी ६ ॥

प्रेरिकैदिवायो॥गीता॥लक्ष्मीवंतोनजानंति प्रायेणपरवेद
नांशेषधराभराक्रांतश्रेतेलक्ष्मीपतिस्स्वयं १ पियोसुधाजिमि
दोहा॥ तुम मति भूल्यो भूलनो सुनि मनस हन मित्त।
भूलेपरभूलौंनहीं तोहींसुमिरौंनित्त २ कवित्त॥ प्रतिकूल
ताई॥नरक जो देहि तौननिदरि विमुख ह्वैजैस्वर्ग जोदेहि
तौन हर्ष सराहिये। रहकरि डारैतौनकोजिये कलेषजिय
करै जो कबूल तौम फूलिकै उमहिये । जिहीअंग रंगहो
इतिही अंग रंगह्वजे ये दिल सनेही नेही नीकेकै निबा-
हिये। चित्त क्योंन चाह मरो आपु चाह चूहै परोप्रीतम
जो चाहै चाह सोई चाहचाहिये ३ दोहा॥ दियोसुशीश
चढ़ाइले अच्छी भांति अपेर॥ जासोंसुखचाहतलयोतादें
दुखहि न फेर ४ चरणरेणु॥श्लोक॥ रहूगणैतत्तपशान्या-
ति नचेज्ययान्निर्वपणाद्गृहाद्वानछंदशानैवजलाग्निसूर्यैर्वि
नामहत्पादरजोभिषेकं ५ लज्जाहरी॥दोहा॥ पट ऐंचतं

मटकी नहीं भुजबल भई अनाथ ॥ तुलसीकीन्हों ग्यार-
होंबसनरूपरघुनाथ ६ ॥

टीका ॥ हरिकेजेबल्लभहैंदुर्ल्लभभवनमांझ तिनहीं
कीपदरेणुआशाजियकरीहै । योगीयतीतपीतासोंमेरोकछु
काजनाहिंप्रीतिपरतीतिरीतिमेरीमतिहरीहै।कमलागरुड़
जामवानसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमेंधरीहै ।
प्रभुसोसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाई
रसभरीहै २२ टीकाहनूमानजूकी॥रतनअपारक्षीरसागर
उधारकियेलियेहितचायकैबनाइमालाकरीहै । सबसुख
साजरघुनाथमहाराजजूके भक्तसोबिभीषणजूआनिभेंटध
रीहै । सभाहीकीचाहअवगाहहनूमानगरेडारिदईसुधि
भईमतिअरबरीहै। रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारि
खोलितुचानामहौंदिखायोबुधिहरीहै २३ ॥

डारिदई॥रामायणे॥ कंकणेनैवजानामि नैवजानामिकुं
डले ॥ नूपुरावेवजानामिसदापादाभिवंदनात् १ छप्पै॥
रामचरणतजिआनरति गजतजिसनुगदहैचढ़ै ॥ वहैनीच
वहैपोचवहैआतमवड़पापी। वहैअबिद्यामूलवहैगुरुद्रोहि
सुरापी । वहैदीनमतिहीनवहैनरकनिमेंनामी । वहैछत
मीकुटिल वहैबड़लोनहरामी । अगरकहैताहिगतिनहीं
तीनिताप सो हियदढ़ै । रामचरणतजि २ । फोरि मणि
दीनी ।किकंठभूषणं३खोलित्वचा॥ कवित्त । न्यारीन्यारी
दीसैं जैसेकागदकी चीरीपर मसीकीडँडीरी ऐसी मजनू
कीपांसुरी । गरिगयोगातयेरी पातसोपुरानोह्वैकै पान
पानरही परयो लेतहै उसासरी । तेरीयेतलबतेरेताल
वदिवानेकोहै देखतहवालवाको आवतहै आंसुरी।लेरी

अब लैलै डरलाइ लेरी अपनीसों फेरिपछितै है जबमाटी मिलै मांसुरी ४ ॥

टीकाबिभीषणजूकी ॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसो कौनजनऐपैकछुकहीजातिसुनोचितलाइकै। चलतजहाज परअटकिविचारिकियोकोऊअंगहीननरदियोलैबहाइकै। जाइलग्योटापूताहिराक्ष सिनिगोदलियो मोदभरिराजा पासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहासनतेकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै २४ रचिसोसिंहासन पैलैबैठायेताहीक्षणराक्षसनरीझिदेत मानीशुभघरीहै । चाहतमुखारविंदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैननीरटेकि ठाढ़ोछरीहै। तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणक्षणज्योतिन्हजि- येकृपालमतिमेरीअतिहरीहै । करौंसिंधुपारमेरेयहीसुख सारदियेरतनअपारलायेवाहीठौरफरीहै २५ रामनाम लखिशीशमध्यधरिदियोयाको यहीजलपारकरैभावसां- चोपायोहै । ताहीठौरबढ्योमानोनयोऔररूपभयोगयो जोजहाजसोईफेरिकरिआयोहै। लियोपहिचानिपूंछेउस बसोंबखानकियोहियोहुलशायोसुनिबिनयकैचढ़ायोहै । पर्योनीरकूदिनेकुमायानेप्रवेशकियो हर्योमनदेखिरघु- नाथनामभायोहै २६ ॥

दियोलैबहाइ। नीति। वनानिदहतोवन्हि सखाभवति मारुतः सयेवदीपनाशाय कृशेकस्यास्तिसौहृदं १ अश्वंनैव गजंनैवसिंहंनैवचनैवच। अजापुत्रंबलिंदद्यात् दैवोदुर्बलघातकः २जाइलग्यो ॥दोहा॥ कबिरातेरेनामपद कियो सुराहू लौन॥ जिन्हैचलाओपंथतुम तिन्हैभुलावैकौन ३ राम

नाम श्लोक ॥ रामत्वत्तोधिकंनाम इतिमेनिश्चितामतिः त्वयैकातारितायोध्या नाम्नाचभुवनत्रयं४ रामनामकेलिखे तरेपाषाणरोदुष्टअजामिलतरयोनामतेजानरोसबतजिभजि हरिनामसुनोसबजंतरोनामबिनाहैनरकसुनोभाईसंतरे५॥

सवरीजीकीटीका॥ बनमेंरहतिनामसेवरीकहतसबबा हतटहलसाधुतनन्यूनताईहैरजनीकेशेषऋषिआश्रम प्रवेशकियोलकरीनबोझधरिआवैमनभाईहै । न्हाइबेको मगझारिकांकरनिबीनिडारि बेगिउठिजाइकोऊजातन लखाईहै। उठतसबारेंकहैंकौनधौंबहारिगयोभयोहियेशोच कोऊबड़ोसुखदाईहै २७ बड़ेईअसंगवेमातंगरसरंग भरे धरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअहो गहो वाहिएकदिनबिनायापै प्रीतिवाकीमनभरमायोहै। बैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहि लईकापैतननायोहै। देखतहीऋषिजलधाराबहीनैननितेबैननिसोंकह्योजात कहाकछुपायोहै २८ ॥

बनमें रहत दोहा ॥ लोल पवन सौंजे भरे उघरे डांकल गाइ॥ करणफूल भूलतरहैं काननहीं में आइ १ सवैया ॥ जाइये न जहांतहांसंगतिकुसंगतिहै कायरके संगशूरभागिहैपैभागिहै । फूलनि के बास बस फूलनि की बासहोति कामिनीके संग कामजागिहैपै जागिहै ।घरबसेघरबसेघरमें वैराग कहा मायामोहममतामें पागिहैपैपागिहै। काजर की कोठरीमें कैसोहू सयानो बैठै कांजरकीएकरेखलागिहैपैलागिहै२ निशिबासरबस्तु बिचारि करै सुख सांचहिये करुणाधनहै। अघनिग्रहसे ग्रहधर्म कथा सुपरिग्रह साधन कोगनहै। कहिकेशवभीतरयोगजगै अतिऊपर भोगनि में

तनहै। मनहायसदा जिनके तिनको बनहीघरहै घरहीबन है ३ रसरंगभरे॥ रसैवैस:रसंह्येवायलब्ध्वा नंदी भवति इति श्रुते। कोइकहै बिरक्तहैकैरसरंगमें कैसेभरेजैसे शुकदेवजी चीरहरण की लीला दुलराइकै गाई ४॥

डीबिहूनसौंहीं होतिमानितनगोतछोत परीजाइशोच सोतकैसेकैनिकारिये। भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनिपट नीकेकैऊकोटिबिप्रताईयापैवारिडारिये। दियोबासआश्र ममेंश्रवणमैंनामदियो कियोसुनिरोषसबैकीनोपांतिन्यारि ये।सवरीसोंकह्योतुमरामदरशनकरौमैंतौपरलोकजातआ ज्ञाप्रभुपारिये २६ गुरुकोबियोगहियेदारुणलैशोकदियो जियोनहींजाततऊरामआशलागीहै। न्हाइबेकोघाटनि-शिजातिहीबुहारिसब भईयोंअवारऋषिदेखिठयथापागी है। छुयोगयोनेककहूंखीजतअनेकभांति करिकैविवेकंग-योन्हानयहभागीहै। जलसोंरुधिरभयोनामाक्रमभरिग-योनयोपायोशोचतौहूजानैंनअभागीहै ३० लावैबनबेर लागीरामकीऔंसेरभल चाखैधरिराखैफिरमीठेउनयोग हैं। मारगमेंरहैजाइलोचनबिछाइकभूंआवैंरघुराइदृगपा वैंनिजभोगहैं। ऐसेहीबहुतदिनबीतेमगजोवतही आइ गयेऔचकासुमिटे सबशोगहैं। अयैतननूनताईआईसुधि छिपीजाइ पूछैआपसेवरीकहांठाढ़ेसबलोगहैं ३१॥

भक्तिकोप्रतापइतिहास॥ शिवलिंगसहस्राणिशालिग्रा मसतानिच॥द्वादशकोटिय:विप्रास्वपचमेकवैष्णवं१ हरिभ क्तिलतिकायां॥ व्याधस्याचरणंध्रुवस्यचवयोविद्यागजेंद्रस्य क्का।कुब्जायाकिमुनामरूपमधिकंकिंतत्सुदाम्नोधनं॥ वंश:

कोविदुरस्ययादवपते रुग्रस्यकिंपौरुष: भक्त्यातुस्यतिकेवलंनतुगुणैर्भक्तिप्रियोमाधव:२नामदियो॥पंचरात्रे। यावद्गुरुर्नक्रियतेसिद्धिस्तावत्नलभ्यते ॥ तस्मात्गुरुर्हिकर्त्तव्यं नैवसिद्धिगुरुर्विना ३ अभागीहै ॥ छप्पै ॥ मत्सरक्रोधमिलिरह्यो गर्बगिरिपरयोजुगाजै । क्रोधगोदहियमध्यद्वंद मदमदनविराजै ॥ लोभभँवरहृदलाभल कोधभीतरतिहि आसन। कपटझूठझिलिमिलै थिर न मानतविश्वासन ॥ मनमोहकोहकंदरपरयो अपरसह्लै भीटनडरै। भनिलाल बालहरिवंशहित बिनप्रसादतसकोहरै॥

पूछिपूछिआयेतहांसवरीअस्थानजहां कहांवहभागवतीदेखौंदगप्यासेहैं। आइगईआश्रममेंजानिकैपधारेआप, दूरहीतेशाष्टांगकरोचषभासेहैं। रखिकिउठाइलईव्यथातन दूरिगईनई जैंननीरझरीपरेप्रेमपासेहैं। बैठेसुखपाइफल खाइकैसराहेवेइ कह्यौकहाकहौंमेरेमगदुखनाशेहैं ३२ करतहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोबिगारसोसुधारिकैसेकीजियै। आवतसुनेहैंबनपथरघुनाथकहूं आवैंजब कहैंयाकोभेदकहिदीजियै । इतनेहींमांझसुनीसवरीके बिराजेआनि गयोअभिमानचलोपगगहिलीजियै। आये खुनसाइकहीनीरकोउपाइकहौ गहौपगभीलिनीकेछुवौ स्वच्छभीजियै ३३ ॥

इतनेही॥नीते॥राज्यहीनानरासर्वे बुद्धिहीनाभवंतिहि। बुद्धिहीनानरासर्वेराज्यहीनाभवंतिहि १ खादूकी॥पद॥ मीठेमीठेचाखिचाखिबेरलाईभीलनी। कौनसीअचारवती नहींरूपरंगरती जातिहूमेंकुलहीनबड़ीहैकुचीलनी ॥ जूठे फलखायेरामसकुचेनभावजानि तुमतौप्रभुऐसीकोनी रस कीभीलनी। कौनसीतपस्याकीनीबैकुंठपदवीदीनोबिमान

मेंचढ़ीजातऐसीहैसुशीलनी ॥ सांचीप्रीतिकरैकोई अ-
मरदासतरैसोईप्रीतिहोसोंतरिगईगोकुलअहीरनी२क-
हीनीरनीर॥नीते। शठंप्रतिशठंकुर्यात् दादरंप्रतिचादरं ॥
त्वयाचलुचितपक्षेमयातिमुंडतशिर: ३ तापैताताकोअरु
बेश्याकोदृष्टांत ४ स्वच्छभोजिये॥दोहा॥ अधिक बढ़ावत
आपतें जनमहिमारघुबीर॥ सबरीपदरजपरशतें सुध भयो
सरितानीर ५ हरिभगतनिकोमिलतहैंभगवतकेयशहाय॥
हृदयबीच कोफलतहै समुझो आपहिआप ६ अभिमानी
ऋषिछोंड़िसबरीकेगये ॥

जटायुकीटीका॥जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगु
निसीताबाणीखगराजदौरेउआयोहै।बड़ीपैलड़ाईलीनींदे
हवारिफेरिदीनीराखेप्राणरामसुखदेखिबोसुहायोहै॥आये
आपगोदशीशधारिदृगधारसींच्यो दईसुधिलईगतितनहूं
जरायोहै।दशरथवतनानकियेजलदानयहअतिसनमान
निजरूपधामपायोहै३४ अंबरीषजूकीटीका॥अंबरीषभक्त
कीजुरीसकोऊकरैऔर बड़ोमतिबौरकिहूंजातनहिंमाषि
ये। दुर्बाशाऋषिशिषसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपराधशिर
जटाखैंचिनाखिये॥ लईउपजाइकालकृत्याबिकरालरूप
भूपमहाधीररह्योठाढ़ोअभिलाषिये। चक्रदुखमानिलैकृशा
नुतेजराखकरीपरीभीरब्रह्मणकोभागवतसाखिये ३५ ॥

गोद शीश॥सवैया॥ श्रीरघुनाथजूलैखगहाथ निहारैं
औ नैननितेजलडारैं। टूकहूं जात हैं सीता बियाके सो
याकी सनेह कथा कै बिचारैं॥ तजि मोहिंचले लगिनी-
को तुम्हैं हमैंसौंहतिहारीहै संगतिहारैं। यौंकहिराम
गरोभरिफेरि जटायुकी धूरि जटानसों झारैं १ लईगति
दोहा॥ मुये मरत मरिहैं सकल घरी पहर के बीच ॥

लही न काहू आजुलौं गीधराज की मीचर ॥ दईसुधि ॥ रघुबर विकल विहंग लखि सो बिलोकि दोउवीर ॥ सिय सुधि कहि सियराम कहि देह तजी मतिधीर ३ ॥ घरी जनावतहीरहैं घरी भजे नहिंराम। घरी भई सब पुण्यकी खरी सुमति बेकाम ४ ॥ दीपकोक्ष ॥ नवमे॥सवै मन: कृष्ण पदारविंद योर्बचांसि वैकुंठगुणांनुवर्णने ॥ करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतिंचकाराच्युतसत्कथोदये ५ मुकुंदलिंगालयदर्शनेदृशौतद्भृत्यगात्रस्पर्शेंगसंगमं॥ घ्राणंचत त्पाद सरोज सौरभे श्रीमतुलस्यारसना तदर्पिते ६ पादौ हरे: क्षेत्रपदानुसर्पणे शिरोहृषीकेशपदाभिवंदने॥ कामंच दास्येनतुकामकाम्ययायथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारति: ७॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयोनयोतेजच क्रचूनकियेडारहैंब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरीदासनि कोभेदनहींजान्योबेदधारेहैं।पहुँचेवैकुंठजाइकह्योदुखअकु- लाइहायहायराखौप्रभुखरौतनजारहैंमैंतोहौंअधीनतीनि- गुणकोनमानमेरेभक्तवात्सल्यगुणसबहीकोढारेहैं ३६ मो कोअतिप्यारेसाधुउनकीअगाधमतिकरैअपराधतुमसह्यो कैसेजातहै। धामधनवामसुतप्राणतनत्यागकरेढरेंमेरीओ रनिशिभोरमोसोंबातहै॥ मेरेउनसंतबिनुऔरुकछुसांची कहौंजाओवाहीठौरयातेमिटैउतपातहै। बड़ेईदयालसदा दीनप्रतिपालकरैंन्यूनतानधरैंकहूंभक्तिगातगातहै ३७॥

ब्रह्मावाक्य ॥ लक्ष्मीप्राणाधिकाशश्वत् नास्तिकोपित तोधिका ॥ भक्तानद्दष्टीस्वयंसाचेत् तूर्णंत्यजतितांविभु: १ ॥ शिववाक्य ॥ मह्तिप्रलयेब्रह्मन्ब्रह्मांडोपजलप्लुत: ॥ नतत्र नाशोभक्तानांसर्वेषांच विशिष्यति२॥ हायहाय॥ पद॥हरि भक्तनिसोंगर्भन करिबो। यह अपराध परमपद हूते उतरि

नरक में परिबो॥ गज सिंहासन आरूढ़ कहि भवसागर नहिं तरिबो। कुल कुलवंत धनीये भिक्षुक बीचनकनमें धरिबो॥ यहमत भक्तो नहीं आपुन बहु नरकन अनुसरिबो। हरिसे बीजस गाहक कोलघुकाननमें कुनडरिबो। अपनेदोष निपटआधेपर दोषकुतर्कनि जरिबो॥ इथा चातुरी मांह जनम ते भक्तगर्भमें गरिबो। खानपान ऐड़ान भले जो बदनपसारि न मरिबो॥ श्री कृष्णदास हित धरि विवेक चित साधन संग उबरिबो ३॥ आधीन नरमे॥ अहं भक्तपराधीनःह्यस्वतंत्रइवद्विजः॥ साधुभिर्ग्रस्त हृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ४ भागवते॥ येदारागार पुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिमंपरं॥ हित्वामांशरणंयाताःकथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ५ नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना श्रियंचात्यंतिकीं ब्रह्मन् येषांगतिरहंपरा ६॥ तीननामसार आगतपातक आरतनाशभक्तवरदेव॥ भक्तो गर्भमें गरिबो७॥

ह्वैकरिनिराशऋषिआयोनृपपासचल्योगर्भसोंउदासपगगहैदीनभाष्योहै। राजालाजमानिमृदकहिसनमानकर्योढरयोचक्रऔरकरजोरिअभिलाष्योहै। भक्तिनिशिकामकहूंकामनानचाहतहै चाहतहैविप्रदूरिकरो दुखचाख्योहै। देखिकैबिकलताईसदासंतसुखदाईआईमनमांझसबैतेजढांपिराख्योहै ३८ एकनृपसुतासुनिअंबरीषभक्तिभावभर्योहियभावऐसोबरकरिलीजिये। पितासोंनिशंकह्वैकेकहीपतिकियोमैंहीं विनय मानिमेरी वेगिचिट्ठी लिखि दीजिये। पातीलैकैचल्योविप्रछिप्रवहिपुरीगयोनयोचावजान्योआपकैसे तियाधीजिये। कहौतुमजाइरानीबैठीसतआइमोको वोल्योनसुहाइप्रभुसेवामांझभीजिये ३६॥

गर्भसोंउदास॥पद॥हमभक्तनिसोंमुखिबिगारी। जान्यो

नहीं इतोबल इनको येहरिके अधिकारी। कमल पराग भँवरभल जानैं वहैबासना बिहारी। निपट नालके निकट मेंडुका भयो कीचकोचारी। काम क्रोध मद अतिशय जड मतितपबलबकोबिकारी। अंगीकारकिये हरिइनकोयह कछु हमन विचारी। दुर्वाशा अंबरीष आगे करीदीनता भारी। अग्रदास अभिमान पोटरी कृषिशिरते तबडारी १ निशंक ह्वै कै॥ सवैया॥ चंदनपंकगुलाबको नीरसरोज की सेज उठाइधरौरी। तूलभयो तनजात जरैउ यहबैरी दुकूल उतारि धरौरी। सिंधुजू कुंडसबै उपचारयो माह तुसारके भारपरौरी। लाजके ऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं खइलाज करौरी २ नरिनाङ्ग जोलानसो काजबि-गारे ३ तिया घीजिबे तिया घीजबकै सरानी कीलौंड़ी पं-डितकोदृष्टांत॥ चोर साहूकारको दृष्टांत॥ दोव्याहाको न्याय॥ नदीनांचनदीनांच शृंगिणांशस्त्रपाणिनां। विश्वा सोनैवकर्तव्यःस्त्रीषुराजकुलेषुच ४ दृष्टांत नानकशाहको ४

कहीनृपसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनजिमिगयोआ योकामनाहींवियाको। फेरिकैपठायोसुखपायोमैंतौजान्यो वहवडोवरभक्तवाकेलोभनहींतियाको। बोलीअकुलाइमन भक्तिहीरिझाइलियो कियोपति मुखनहींदेखो ओरपिया को। जाइकैनिशंकयहबात तुमभेरीकहौचेरीजोनकरौतौपै लेवौपायजियाको १० कहीबिप्रजाइसुनि चाइभहराइग योदयौलैखड़गयासोंफेरिफेरिलीजिये। भयोजूबिवाहउ-तसाहकहूँमातनाहींआईपुरअंबरीषदेखिकछिभीजिये। क ह्योनवमंदिरमेंझारिकैबसेरा देवोदेहुरावभोगविभवनाना सुखकीजिये। पूरवजनमकोऊमेरे भक्तिगंधहुतियातेसन-बंध पायोयहै मानधीजिये ११ रजनीकशेषपतिभवनमें प्रवेशकियो लियोप्रेमसाथ ढिगमंदिरके आइये। वाहरी

टहलपात्रचौकाकरिरीझिरही गहिकौनजाइजामेंहोतनल खाइये। आवतहीराजादेखिलगैननिमेषकहूंकौनचोरआ योमेरीसेवालैचुराइये। देखीदिनतीनिफिरि चीन्हिकै प्र वीनकही ऐसोमनजोपै प्रभुमाथे पधराइये ४३ ॥

बाली अकुलाइ ॥ ऋषभदेववाक्यं ॥ गुरुर्नसः स्यात्स्व जनोनसस्स्यात्पितानसस्स्यात् जननी नसास्यात् ॥दै- वंन सस्स्यात्नपतिश्चसः स्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युं १ पति भवनमें ॥ लक्ष्मीवाक्य ॥ सवैपतिः स्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति भया तुरंजनं । सएकएवेतरथामिथोभयं नै वात्मलाभादधि मन्यतेपरं २ बिनाटहलतौभक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेकउपाइ करौबिनाहरिकोकृपाकहौ क हांते आवै जैसे रसयनोको रसायनिबिनाटहलनहींपावै जबटहलकरिकै प्रसन्न करै तबमिलै ३॥

लईबातमानिमानोमंत्रलैसुनायोकान होतहीबिहान सेवानीकीपधराईहै। करतिशिंगारफिरिआपहीनिहारिरहै लहैनहींपारदृगझरीसीलगाईहै॥भईबढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिबिस्ताररीतिपुरीसबछाईहै। नृपहूसुनत अबलागीचोपदेखिबेकीआयोततकालमतिअतिअकुलाईहै ४३ हरैहरैपावधरैपौरियानमनेकरैंखरैंअरबरैं कबदेखों भागभारीको। नयेचलिमंदिरलौंमुंदरनसुधिअंगरंगभी जिरहीदृगलाइरहेझरीको॥ बीणलैबजावैगावैलालनरि- झावैंत्योंत्योंअतिसनीभावैकहैधन्यवहघरीको। द्वारपैन रह्योजाइगयेललचाइढिग भईउठिठाढ़ीदेखिराजागुरुह रीको ४४ वैसहीबजाओबीनतानिनिनवीनलैकैझीनसुर कानपरैजातमतिखोइये। जैसैरंगभीजिरहीकहीसोन

जातिमोपैअयेमननैनचैनकैसेकरिगोइये ॥ करिकैअलाप चारोफेरिकैसँभारीतानआइगयोध्यानरूप ताहीमांझभोइ ये । प्रीतिरसरूपभईरातिसबबीतिगईनईकछुरीतिअहो जामैंनहींसोइये ४५ ॥

लई बात मानि ॥ गीतायां॥ जन्मांतरसहस्रेषुतपोध्यान समाधिभिः॥ नराणांक्षीणपापानां कृष्णेभक्तिंप्रजायते १ ॥ टीकिजै॥पंचरात्रे ॥ नाहंबसामिवैकुंठेयोगिनांहृदयेनच मद्भक्तायत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारद २ ॥ भई उहिठाढ़ी न्यायै ॥ नराणांचनराधिपः ३ ॥ एक उपदेश कर्त्तागुरु ॥ एक पति परमेश्वर सोतीन नातेमानिकै उठीनहींसो हूये रोगी भोगीजोगिया वपुजेहीपरकाज ॥ ध्यानइनके हृदय में नीकै आवैलाज ॥ नास्केत॥एकाक्षर प्रदातारंयो गुरुंनैवमन्यते। श्वानजन्मसतंगत्वा चांडालेष्वपिजायते४ ॥

बातसुनोरानीऔरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअब कौनवाकीसरिहै । हमहूंलैसेवाकरैंपतिमतिवशकरैधरैनि तध्यानविषयबुद्धिराखीधरिहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभयेअतिअ बरीपईशलागीचौफूफैलगई भक्तिघरघरहै।बढ़ैदिनदिन-चावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनंदकोभरहै४६।

टीका बिदुरजीकी ॥ न्हातिहीबिदुरनारिअंगनिपखा रिकरि आइगये द्वारकृष्ण बोलिकै सुनायोहै । सुनत हीसुर सुधिडारी लैनिदरिमानों राख्योमदभरिदौरि आनिकैंचितायोहै । डारिदियोपीतपटकटिलपटाइलियो हियोसकुचायोवेसवेगिहीबनायोहै । बैठीढिगआयकेरा-छीलिछीलकाखवायआयो पतिखिज्योंदुखकोटिगुनोंपा-योहै ४७॥

पलटै॥ तामै दृष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीर को १ बीसदूक रशिक ह्वैगेहैं॥ पालपरैज्यों आव मिटैहैं १ आइ गये॥ श्लोक इंद्रप्रस्थं यमप्रस्थं अवंतिबारुण:व्रतं॥ देहिमांचतुरोग्रामांपंचमोहस्तिनापुर: २ विनायुद्धेनदातव्यंसुई अग्रेनकेशव३ यद्वा अयंमंचजुद्वोभगवान्मन: खिलेश्वर:॥ पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रवविसात्मसात्कृतं ४॥ कवित्त॥ नहीं नाहीं करैं थोरो मांगैं सबदैन कहैं मंगन को देखिपट देत बारबार हैं। जिनके मिलेते भली प्रापति की घरीहोति ऐसे करतार किये ऐसनिरधारहैं॥ भोगी ह्वै रहत बिल-सत अवनी के मध्य कनकन जोरैदान पाढ़ परिवार हैं। सेनापति समझि बिचारिदेखौ चार दाता अरु सूम दोनों किये राक सारहै ५ दुर्योधनघर त्यागतभये॥ अपनोमानि बिदुरकेगये ६ बोलिकै॥ दोहा॥ सुधि सुरताल अरु तान की रह्योन सुरठहराइ। येरीराग बिगारिगयो बैरीबो-ल सुनाइ ७ रही दहेड़ी ढिगधरी भरी मथनियां बारि। फिरत कर उलटी रई नई बिलोवन हारि ८॥ कवित्त॥ सोवत समाधित जगाइदिये मुनिगण पशुहू चकित चित्त करै नाचरनको। गाइनितबछरा छुटायेज पिवत छीर अ-द्भुत कथा तेरी कहांलौं बरनको॥ आन हृयकरी गोपी सबै है डरनि डरीतऊ तहांपरीते गई धरा धरनको। बां-सुरी मैं तोहिंपूछौं बारबार तू है लागी लाल के अधर में अधर मैं करनको ९॥ कबित्त॥ फूली सांझ के शिंगार सूहो सारी जुहीहार सोने सों लपटी गोरी गोने कोसी आईहै। आलस न फिरफांद जाने कछू चंदमुखी दीपक बरावन को नंदभवन लाईहै। ज्योति के जुरत हीसेंजुरे नैनादुरे जाइ चातुरी अचेतभई चितयो कन्हाईहै। बाती रहीहाती छबि छाती रस मातीपर पांगुरी भईहैमति आंगुरीलगाईहै १ गीतावां॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्यु हृतम श्नामिप्र यतात्मन:॥ सवैया॥सदीसीसारीसुहाईहैवांभाजेनैननझांकभिजानमई

है।कोहैकहांकीहै कौनकीहैघर कौनकेआईनवेलीनईहै। ठौरठगेउँसगेसेसमारष रीभिरहेश्रालीभेंटभईहै। काव- लियागलिबामेंगई सुदियालैगई सोजियालैगईहै ३ प्रेम कोविचार॥ तत्सुखरसुख॥ दोहा॥ पूजिभवानीभाईसों मांगतबहवरदेउ॥ बनमेंसुंदरसांवरो हमसोंकसनेकरै ४ सवैया॥ हमकूंवुनएक अनेकहुदेहैं उनहींकी विवेकबनाइ बहौ। इतचाहतिहारी तिहारीवतै घरचाहरप्रेमसदा निबहौ। मनभावैसुसारषसोईकरी अनुरागलताजिमवो यदहौ। घनश्यामसुखीरहौआनंदमें रहौनीकेरहौउन- हींकेरहौपूनाकचढ़ैसोवीकरै जितैछबीलोछैल॥ फिरिफि रिभूलबहैगहैपियकक्षरीलीगैल ६ ततबेतातिउंलोकमेंभो ननकियेअपार॥कैसिवरीकेबिदुरघररसिमानीकैबार १॥

प्रेमकोविचारिआपलागेफलसारदैन चैनपायोहियेनारिबड़ीदुखदाईहै। बोलेरीझिश्यामतुमकीनोबड़ोकाम ऐपैस्वादअभिरामवैसीवस्तुमैंनपाईहै। तियासकुचाइकर काटिडारौंहाइप्राण प्यारेकोखवायछीलिछीलकानभाईहै हितहीकीबातदोऊकोऊपारपावैनाहिं नीकेलैलड़ावैसोइ जानैंयहगाईहै४८टीका॥सुदामाजूकी॥ बड़ोनिशिकामसे रचूनहूंनधामढिगआई निजबामप्रीतिहरिसोंजनाईहै।सु निशोचपरेउहियोखरोअरबरेउ मनगाढ़ोलैकैंकरेउबोल्यो हांजुसरसाईहै । जावोएकबारवहबदननिहारिआवोजो पैकछुपावोलावोमोकोसुखदाईहै।कहीभलीबातसबलोक मेंकलंकहवैहैजानीपतियाहीलियेकीनोमित्रताईहै ४६॥

मित्रताई ॥ कवित्त ॥ बोल्योमुसिकाइ नारिबावरी कहांथीआई मोतनिपैमांगे सोकपूतमिकोरावहै। गिरि

हूंतेभारे ऐसेदारिदहमारेभागदई फिटकारे तिन्हैंकहौ
कहांठामहै खैरकोनटोटोऐसोआपदाहैमाटोसात थग-
रीकछूटोसोसुदामामेरोनामहै । जौलौंगावैंश्यामघन
मांगेपावैंभोगकन तौलौंमानिलोजैभिरछूचनकोछामहै २
ध्यावतिहैलाज मारीजातब्रजराजजूपै बसनसमाजदेखि
खरोमरिजाइये । एकहीपिछौरीसोतौठौरठौरफाटि
रही ओढ़ियेनिशाकोजासोंप्रातउठिन्हाइयै। भेंटऐसी
नाहिं जोलैजाइयेभगवंतजूपै अंतकभईहैनारिकौलौंसम-
भाइये । देहपरमांसजोलोंनाशिकामेंश्वासतौलौं बड़ो
उपहाससमांगि मीतनसताइये ३॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपकयोंनचहै जाहिदहै दुखआप-
हीसोंवचनसुनायेहैं। आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारैतब
धारेपगमगझूमिद्वारावतीआयेहैं। देखिकैबिभूतिसुखउप
ज्योअभूतकोऊ चल्योमुखमाधुरीकेलोचनतिसायेहैं। डर
पतिहियाड्योढ़ीलांघिमनगाढ़ोकियो लियोकरचाहतब
तहांपहुंचायेहैं ५० देख्योश्यामआयोमित्रचित्रवतरहेनेकु
हितकोचरित्रदौरिरोयगरेलागेहैं । मानोएकतनभयोल-
योऐसेलाइछाती नयोयहप्रेमछुटैनाहिंअंगपागेहैं। आई
दुबराईसुधिमिलनिछुटाईताते आनैंजलरानीपगधोये
भागजागेहैं । सेजपधराइगुरुचरचाचलाइसुख सागर
बढ़ाइआइअतिअनुरागेहैं ५१

आईसुधि॥ सवैया॥ हेकरतारहौं तोसोंकहौं कबहूं
जनिदीजिये काहूकेटोटो । औरलिखौजिनिकाहूकेभाग
में मालकेकाजैं जहीपनिपोटो। तूहूतौजानतहै अपनेजिय
मांगिबेतैं कछुऔर न खोटो जागयो मांगन तबलिद्वारतौ
याहीते ह्वैगयो बावनछोटो १ मतिमांगि मतिमांगि जा-

कोनामममांगना २ ममगाढ़ोकियो ॥ दोहा ॥ मोंमरनैं कोगेमहै मरौंतौ हरिकेद्वार ॥कबहूं तौ हरिबूझिहैं कौन मरयोदरबार ३ ॥ सवैया ॥ कैसेनिहाल बिनाद्विनसोंपग कंटकजाल गड़ेपुनिजोये । हायमहादुखपायोसखातुमआये इतैन कितैदिनखोये। देखिसुदामाकीदीनदशा करुणाकरिकै करुणानिधिरोये। पानीपरातकोहाथछुयोनहीं नयननके जलसोंपगधोये ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपछेंकहालायेमोकों अतिसकुचाये भूमितकेंदगभीजेहैं । खेंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वादपायोआपरीझेहैं। गह्योकररानीसुखसानीप्यारीबस्तुयहै खावोबांटिमानोश्रीसुदामाप्रेमधीजेहैं। श्यामजूबिचारिदीनीसंपतिअपारबिदा भयेपैनजानीसारबिकुरनकीजेहैं ५२ ॥

दियोसुखमांझ॥कबित्त॥ हूल हियरा में कामकामीन परीहै रौरभेंटतसुदामें श्यामैंबनैना अघातही। शिरोमणि अष्टसिद्धिनमें सिद्धिनमें शोरपरेउ काहिधौं बकसिठाढ़ो कांपैकमलातही। नरलोक नागलोक नगलोक नाकलोक थोकथाक कांपैंहरि देखिमुसकातही। हालोपरेउहालन में लालो लोकपालनमें चालोपरेउ यक्षनिमें चिरवा चबातही १ एसा कर पकरेउहो याहीते सुदामाकहै कहां तुच्छतंदुल कहँ जगत गुसाईंहैं। अहन जानै दीनहीण तीनि पैसादैकै सुखतीनिलोक बिभव मिलि कि करिपाई है। हरिसकुचाइकछुद्विजको मैंदियानाहिंतातेयासोंकहैं मेरीबड़ी हीनताईहै। हीनोंहौं शुदानताकोब्राह्मणी बिना न आनै आकेधन यौबन पुलोलजा लनाईहै २ बिदाभये कबित्त॥ बिदाकरिदीनो द्विजप्रकटनकीनोंकछु भेंटिभुजभर्‍यो मन में बिषाद भायो है। याहीतेउदास प्रभुपास न

रहनपायो याहीतेसुखीहौं मोहिंकछुनदिवायो है। एक दुखभारी मेरीब्राह्मणीहै खुटसारी ताहू कोतौ उत्तरमैं सरस बनायोहै। मैंजुनिधिपाईहो सोराहमैंछिनाई काहू मोबिनाहमारो सबकुटंबबुलायोहै ४ ॥

आयनिजग्रामवहै अतिअभिराममभयो नयोपुरद्वारका सोदेखिमतिगईहै। तियारंगभीनीसंगतरुन सहेलीलीनी कीनीमनहारियांप्रतीतिउरभईहै। करैहरिध्यानरूप मा धुरीकोपानवहै राखेनिजप्राणजाकेप्रीतिनितनईहै। भो गकीनचाहऐसेतननिरबाहकरैढरैसोईचालसुखजाल र- समईहै ५३ ॥

मतिगईहै॥ कवित्त ॥ याहीतेननमभरिगयोनहीं श्याम जूपै मेरोकह्यो बचन पँडाइनि नहिंमानै हो। नाऊनाऊ लै रहो न मानति अनाजखाइ औंड़ी मैंड़ी बातें मैंतौ गो- विंद की जानें हो। द्रौपदीको चीरदये गोपिन के छीनि लये ग्राहते बचायो गजरंगभूमि आनैहो। ब्राह्मणी सभेति काहू खेततैं उखारयो घरयाते हूं बचायो वाको कह्यो मैंन मान्योहै १ चौतरा उजारि काहू चामीकर धामकोन्हीं छानितौ छवाय डारी छाई चितसारीजू। जौहूं होतो घरतौपै काहेको बननदेतो होनहार ऐसीखोटी दशाही हमारीजू। हौतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठाइ देतो देइ सुखगारीजू। लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयाबनवारी काहू सोऊ मारि- डारीजू २ तियारंग भीनी॥ आलिनके यूथ ज्यों ज्यों आ- दर सों बोलै आइ त्योंत्यों डरपाइ पग आगे कोनदेतहै। पंडित न ज्योतिषी न वेदवान कौतिकीहौं रानी जू बुला वति है कहौ कौन हेतहै। द्वारका के राजाते जिलेते घर छीनों गयो रानी कहा छीनैंगी फल्यो न मेरो खेत है।

मोसो कहा नातोतुम जाइकहौ वाते मोहिं भूलि न सु-
हातो कोऊ ऐसे परलेतहै ३ नईहै॥दोहा॥ जे गरीब सौं-
हितकरैंधनिरहीम वेलोग। कहासुदामा बापुरो कृष्णमि-
ताजोग४भोगकीनचाह॥गीतायां॥ युक्ताहारविहारस्य
युक्तचेष्टस्यकर्मसु॥ युक्तस्वप्नावबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा ५

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुत चन्द्रहास
भयोपरीयोंबिपतिधाइलाईऔरपुरहै । राजाकोदिवान
ताकेरहीघरआनिबाल आपनोसमानसंगखेलेरसटरहै ।
भयोब्रह्मभोजकोई ऐसोईसंयोगबन्यो आयेवेकुमारजहां
बिप्रगणिकोसुरहै । बोलिउठेसबैतेरीसुतकोजुपतिहैयहवो
चाहैजानिसुनिगयोलाजघुरहै ५४ परयोशोचभारीकहा
करोयोंबिचारीअहोसुतजोहमारीताकोपतिऐसोचाहिये ।
डारोंयाहिमारियाकोयहैहैबिचारतबबोलेनीचजन कह्यो
मारोहियेदाहिये। लैकैगयेदरिदेखिबालछबिपूरहमजौन
परोधूरिदुखऐसोअवगाहिये । बोलेअकुलाइतोहिंमारेंगे
सहाइकौनमांगोएकबातजबकहोंतबचाहिये ५५ ॥

कवित्त आदिपुराणे॥ यस्यतुष्टोह्यहंपार्थवित्तंतस्यहरा-
म्यहं। करोमिबंधुविच्छेदंसर्वकष्टेनजीवितं १ तस्यापिसंतुष्टो
येनददामिअव्ययंपदं २ दोहा॥ तुलसीजो हो तव्यताप्र-
गटै तैसी तौन। करभायलकी सींगको कहौअमैठैकौन ३
वाह्विपै आदिपुराणे॥ यदिवातादिदोषेन मद्भक्तोमांचवि
स्मरेत्॥तर्ह्यिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं ४ गीतायां॥
ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन्॥ यःप्रयातित्यजं-
देहंसयातिपरमांगतिम् ५ अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाक-
लेवरं॥ यःप्रयातिसमद्भावं यातिनास्त्यत्रसंशयः ६ यंयंचापि
स्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरं॥ तंतमेवेतिकौंतेयसदातद्भावभा-

वित: ७सहाय ॥ जिन राखोऋषि यज्ञ जनकन्टपकोपनराखो। जिनराखो पितबोलकाक कपट जिनराखो। जिनराखेऋषिसकल विकल दंडकवनवासी। जिनराखो सुग्रीव वसत गिरिचसतउदासो। अनुज विभीषण पगपरत लंकदईसनमानिकै॥सुप्रेमसखा प्रतिराखिहैं दीनबंधुजनजानिकै॥

मानिलीन्हीबोलिसोकपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसुतकाटिसेवानीकीकीनीहै । भयोतदाकारयोनिहारिसुखभारभरिनैननिकोकोरहीसों अज्ञाबयदीनीहै। गिरेमुरझाइद्दग आइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरमति आनँदसों भीनी है। हुतीकुठीआँगुरी सुकाटिलईदुखनहीं भूषणहीभयो जाइकहीसांचचीन्हीहै ५६ वहैदेशभूमिमेंरहतलघुभूप औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै।निकस्योबिपिनआनिदेखिपाहिमोदमानिकीनीखगछांहघिरी मृगीपांतिसारीहै। दौरिकैनिशंकलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमन भायोसोबधायोश्रीवारीहै। कोऊदिनबीतेभयेनृपचित चीतेदियोराजकोतिलकभावभक्तिविस्तारीहै ५७ रहे जाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिंबांहबलजोरिदियो सचिवपठाइकै॥ आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछानि लियोवहेबालमार्योछलछाइकै। दईलिखिचिट्ठीजाहुमेरेसुतहाथदीजै कीजैवहीबातजाकोआयोलैलिखाइकै। गयेपुरपासबागसेवामतिपगकरीभरीद्दगनींद नेकुसोयो सुखपाइकै ५८॥

अज्ञाबध॥ दोहा॥ तुलसीतेरहसैवरष यद्यपिलगीसमाधि॥ तदपिभांड़कीनागईदुष्टबासनाव्याधि१बाकूवल॥

नीते॥ उत्खातान्प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन्लघून्वर्द्ध्-यन्।उत्तुङ्गान्नमयन्नतान्समुदयन् विश्लेषयन्संघतान्। क्षुद्रान्कंटकिनोवहिर्निरसयन्म्लानान्समुत्सेचयन्माला का रइवप्रयोगनिपुणोराजाचिरंनंदति२॥ कवित्त ॥ छोटेछोटे गुलनिकोमूरनिकी वारिकरोपातरेसे योधातिन्हैंपानी दैदैपालिबो। नीचेगिरिगये तिन्हैं दैदैटेक ऊचेकरो ऊंचे बढ़िजाइते जरूरकाटिडारिबो। फूलेफूलेफूलसबबीनिइक ठौरकरो घनेघने रूखएकठौरते उखारिबो। राजनिको मालनीको नितप्रतिदेवीदास चारिघरीरातिरहैं इतनों बिचारिबो ३ तापै राजाको अरुगांड़ेको दृष्टांत ४ माथो कटिबेते अंगुलीकटी ५ ॥चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विषमस्मैप्रदात व्यंत्वयामदनप्रचवे ॥ कार्याकार्यंनकर्त्तव्यं कर्त्तव्यंकिल मेप्रियं १

खेलतिसहेलिनिमोंआइवाहीबागमांझ करिअनुराग भईन्यारीदेखिरीझिये। पागमतिपातीछबिमातीझुकिखें-चलईबांचीखोलिलिख्यो विषदैनपितारवीझिये विषिया सुनामअभिरामदृगअंजनसों विषियाबनाइमनभाइरस भीजियेआइमिलीआलिनमें लालनकोध्यानहियेखियेमद मानोंगृहआइतबधीजिये ५९ ॥

नामअभिराम॥मैंजानों मेरो नाम सबते बुरो है क्योंकि काहूकोकनकमंजरी काहू को रूपलतापरिसैं अबजाती विषियाहीअभिरामहैं याते यहबात बनी घरी एक ॥ कु-ण्डलिया ॥हरिसन्मुखसुख पाइये बिमुख भये दुख होय। बिमुखभयेदुखहोइदेखिदशग्रीवबिभीषण। देखिसुरुचिसु नीतदेखिप्रह्लादपितातन देखिदक्षकोयज्ञ देखिप्रथुवेणुबि नीता। कंसजनकसुतअंधदेखिपांडवजगनीता। अगरमुकर प्रतिबिम्बमेंअपनोआननजाइ हरिसन्मुख सुखपाइये १॥

श्लोक ॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वैर्गुणास्तत्रसमासतेसुराः॥ हरएवभक्तस्यकुतोमहद्गुणामनोरथेनाश्रुति धावतोवहिः २तापैदृष्टांत हपसीकेदरपणको ३॥

उठ्योचंद्रहासजिहिपासलिख्योलायोजायो देखि मनभायोगाढ़ेगरेसोंलगायोहै । दईकरपातीबातलिखी सोंसुहातीबोलिबिप्रघरी एकमांझ व्याहउघरायो है॥ करीऐसीरीतिडारेबड़ेन्नृपजीति श्रीदेतगईबीतिचावपार पैनपायोहै । आयोपितानीचसुनिघूमिआईमीचमानों बानोलषिदूलहकोशूलसरसायोहै ६० बैठ्योलैइकांतसुत करीकहाभ्रांतयहकरेउसौनितांतकरपातीलैदिखाईहै ॥ बांचिआंचलागीमैंतोबड़ोईअभागीअैयेमारौमतिपागी बेटी रांड़हूसुहाईहै । बोलिनीचजातिबातकहीतुमजावोमठ आवैतहांकोऊमारिडारौमोहिंभाईहै ॥ चंद्रहासजूसोंभाष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलिआई है ६१ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहिंराजवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमलावोजावोपावोनहींफेरिसमयअबकामकीजिये ॥ दौरेउसुखपाइचाइमगहीमेंलियोजाइदियोसोपठाइन्नृप रंगमाहिंभीजिये । देवीअपमानतेनडरोसनमानकरोजातमारिडारेउयासोंभाष्योभूपलीजिये ६२ ॥

शूलसरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि बनाये जे बधाये ते सुनाये सुनि अतिही रिसाये दुख सागर बुड़ायोहै । नगर नगारेनगहते गूंजें भारसुनि याकेशिर मानो काहू आरासो फिरायो है॥ आंगनमें जातिहि सुअंगनि में आगि

लागी अंगना के करसों सुकंकना खुलायो है। पाती लैत हाथहीसुमारीशिर माथहो सुनिप्रिया कोबांचे बिषियाकै लपटायो है १॥

काहूआनिकही सुतमारेउतेरो नीचनिनेसींचनशरीर जलदृगझरिलागीहै। चल्योततकालदेखिगिरयो हवैबि-हालशीशपाथरसोंफोरिमरयोऐसोहीअभागीहै। सुनिचंद्र हासचलिबेगिमठपासआयोध्यायेपगदेवत केकाटेअंगरागीहै॥ कह्योतेरोदोपीयाहिक्रोधकरिमारेउमेंहींउठैदोउ दीजैदानजियेबड़भागीहै ६३ करयोऐसोराजसबदेश भक्तराजकरेउढिगकोसमाजताकीबातकहाभाषिये। हरि हरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिंसेवाअति अभिलाषिये॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकैदूरिकरैजिये नृपपाइऐसोनैननिमेंराखिये। कहीजितीबातआदिअंत लौंसुहातिहिये पढ़ैउठिप्रातफलजैमुनिमेंसाषिये ६४ टीकासमुदाइकी॥कौषारवनामसोबखानकियोभाजूनै मैत्रेअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें। अज्ञाप्रभुदईजाहु बिदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें॥ चित्र केतप्रेमकेतभागवतख्यातजातै पलट्योजनममप्रतिकूल फूलघातमें। अक्रूरआदिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्धवसेप्यारे नुकीख्यातपातपातमैं६५॥

बेटोरांड़ह्व सुहाइ॥दोहा॥ अगर दुष्टताजीवकी शिर तजिअपयशलेइ॥ सनतन खालकढ़ाइकै पर तन्त्र बंधन देइ २॥ बड़भागी है॥दोहा॥ दुष्टन छांड़ै दुष्टता सज्जन तजै न हेत॥ कज्जल तजैन श्यामता मोती तजैन स्वेत १ सज्जन ऐसो कीजिये जैसौ आको दूध॥ औगुणऊपर गुण करै

तौनाने कुल गुरु २ ॥ भक्तराज॥राजनीते॥ अखायांजायते वत्सः सिध्याबदतिभूपतिः॥वस्त्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजा तथाप्रजा ३ पलव्योजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरै सोमेरे आनंद ॥ कब मरिहौं कब भेंटिहौं परमपरमानंद ४ ब्रह्मासुरवधोयेतेयदि भागवत मिस्यति ५ ॥

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणीमांगतबिपतिजा सोंभाजेंसबजनहैं।देख्योमुखचाहौंलालदेखेबिनहियेशा लहूजियेकृपालनहींदीजैबासबनहैं। देखिबिकलाईप्रभु आंखिभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनधनहैं। श्रवणवियोगसुनितनकनरह्योगयो भयोबपुन्यारोअहो यहीसांचोपनहैं ६६ ॥

मांगतबिपति॥भागवते॥ विपदःसंतुनः सस्वत्ततत्रजगङ्गुरो। भवतोदर्शनंयत्स्यादपुनर्भवदर्शनं १ जन्मैश्वर्यसुतश्रीभिरेध मानमदःपुमान् ॥ नैवार्हत्यभिधातुंवैत्वा मकिंचनगोचरं २ दोहा ॥ प्रीतमनहींबजारमें सोइयजारउजार ॥ प्रीतम मिलैउजारमें सोईउजारबजार ३ कहाकरौंवैकुंठलै कल्पवृक्षकीछांह ॥ अहमदढाकसुहावने जोप्रीतमगल बांह ४॥ घरहीकोलाइये॥ गमनसमयअंचलगह्यो छांड़- नकह्योसुजान॥ प्राणपियारेप्रथमहीअंचलतजौंकिप्रान५ वपुन्यारा॥ जासोंमिलिसुखझिलिरहेदोनोंदुखबिसराइ फिरिनोजाकेबिछुरते फट्योनउरकहिहाइ६ मनचंद्रकतन जामगी हियरंजकजियसाज॥ प्रेमपलीतादगिगई निक- सीआहिअवाज ७॥

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटको टिगुनेभयेहैं। द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारका सोंफेरिआयेभक्तबाणीनयेहैं।गयेदुर्बाशाऋषिबनमेंपठा

येतीचधर्मपुत्रबोलेविनयआवैपनलयेहैं । भोजननिवारि त्रियाआइकहीशोचपर्योचाहैंतनत्याग्योकह्योकृष्णकहूं गयेहैं ६७ सुन्योभागवतीकोबचनभक्तिभावभर्योकर्यो मनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं । आवतहीकहीमोहिंभूख लागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहैं । विश्व केभरणहारधरेहैंअहारअजूहमसोंदुरावो कहीबाणीअभि रामहैं लग्योसाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रिलोकी विप्रगनैंकौननामहैं ६८ ॥

पटकोटिगुनैं॥ बसंतऋतुयाचकभईरीझिदियेद्रुमपात॥ यातेनवपल्लवभयेदियोदूरिनहिंजात ८॥ कवित्त॥ दुशा सनदुमनदुकूलगह्योदीनबंधुदीन ह्वैकै द्रुपदसुतारीयेपु- कारीहै। छांड़ैंपुरुषारथकोठाढ़ेपियपारथसेभीमसमहाभी मग्रीवानीचैकोनिहारीहै। अंबरजोअम्बरअमरकियेबंशी धर भीषमकरणद्रोणशोभायोंनिहारीहै। सारीमध्यनारी हैकिनारीमध्यसारीहै किसारीहै किनारीहै किसारिहि कीनारीहै९ नयेहैं ॥भारतेयदिगोविंदेतिचुक्रोशकृष्णमां दूरिवासनं ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धंमे हृदयान्नापसर्पति: १ आयेप्रयाम॥ पद ॥ तौहूंपावनबिरदलजाऊं॥ जोजनकेसंक टमेराजा सुमिरणसमयनआऊं। सुनौअजातशत्रुकरुणामय करुणासिंधुकहाऊं।अनघअनाथनिदीननानिकैगरुड़ासन बिसराऊं। शीघसुकाजभक्तअपनेके नहांतहांउठिधाऊं। लघुभगवानप्रतिज्ञामेरे यशनैलोकबढ़ाऊं १ कौननामहै॥ षष्ट॥ यथाहिस्कंधशाखानां तरोर्मूलनिसेचनं ॥ एवमा राधनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्चहि ३ यथातरोर्मूलनि षेचनेनतृप्यंतितत् कन्धभुजोपशाखा:॥प्राणोपहाराच्चयथें- द्रियाणांतथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ४ कोउअगस्तक्रोसंचउ चारै। कोउचूरणकोहाथपसारै॥ कोउअमलवेतकोयांचौ

कोऊपेटपीटिकैनांचै ५ एकभगवतनाम औषधिबिनारोग नहींकटै कोटियतन करौ ६

मूल॥पदपंकजबंदौं सदाजिनकेहरिनितउरबसैं। योगेश्वरश्रुतिदेवअंगमुचकुंदप्रियव्रतजेता। पृथुपरीक्षितशेषसूतसौनकपरचेता। सतरूपात्रयसुतासुनीतसतीसबहीमंदालश। यज्ञपत्नीब्रजनारिकियेकेशवअपनेबश। ऐसेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं। पादपंकजबंदौंसदाजिनकेहरिनित उरबसैं ११॥ टीकासमुदायकी। जिनहींके हरि उरनितबसैं। जिनहींकेपदरेणुचैनदेनआभरणकीजिये। योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहाबीणाश्रुतिदेव ताकी बातकहिदीजिये। आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियो ऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये जितेसाधुसंगतिन्हेंबिन यनप्रसंगकियो कियोउपदेशमोसोंबाढ़िपांवलीजिये॥७० मूल॥ अंघ्रीअंबुजपांशुकौजनमजनमहौंयाचिहौं।प्राचीनबर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागीरथ। बालमीकिमिथलेशगयेजेजेगोबिंदपथ। रुकमांगदहरिचंदभरतदधीचउदारा। सुरथसुधन्वाशिवरसुमतिअतिबलकीदारा। नीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहौं। अंघ्रीअंबुजपांशुकौजन्मजन्महौंयाचिहौं १२॥

प्रेमभरि दशमे॥ धन्योहं कृत,कृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम॥ अद्यमेसफलं जन्म: जीवितं सफलंचमे १ ऋषि संगन्ती ब्लोक॥ दारापुत्रोन्नगांस्वजन परिकरो बंधुवर्ग: प्रियोवा। माताभ्राता पिता वा श्वशुरबधुजनोज्योतिरैश्व र्यवित्तं। विद्यानीतिविपुलसुहृदायौवनंज्ञानगर्वं। मिथ्या

भूतंमरणं समये धर्ममेकः सहायः १ कुंडलिया॥ कोऊकाहू को नहीं देखो ठोंकि बजाइ॥ देख्यो ठोंकि बजाइ नारि प्रट भूषण चाहै। सुतसोषै नित प्राण सुता प्रत्यत्त्रवगा है॥ तात मातकरै वैरवधूनितचित्तबिगारी। स्वारथता के सजनदास दासी हैगारी॥ अगरकामहरिनामसों संकट होतसहाइ। कोऊ काहूको नहीं देखोठोंकि बजाइ २॥

टीका उभयबालमीकि की ॥ जनमपुनिजनमको न मेरेकछुशोचअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये। प्राचीन वर्हआदिकथाप्रसिद्धिजगउभैबालमीकऋषिबात जियतें नटारिये। भयेभील संगभीलऋषिसंगऋषिभयेभयेराम-दरशनलीलाबिस्तारिये। जिन्हैंजगगाईकहूंसकैनअघाइ चाइभाइभरिहियोभरिनैनभरिढारिये ७१ ॥ टीकासुपच बालमीकिकी॥ हुतोबालमीकएकसुपच सुनामताकोश्या मलैप्रगटकियोभारतमेंगाइये। पांडवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्र राजाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये। ताकोअनु भावशुभशंखसोप्रभावकहैजोपैनहींबाजैतौ अपूरणताआ इये। सोईबातभईबहुबाज्योनाहिंशोचपर्यो पूछेंप्रभुपा सआकीन्यूनता बताइये ७२ ॥

तिन्हैंजगगाइ॥ छपै॥ मुक्तिसुवनिताश्रवणआभरणअ च्छयहै कहि॥ मुनिमनपच्छीपच्छिदासजै रामतासगहि। ज गतसमुद्र अपारतीरभुवनैन वेदमल। कलिपातकतमप्रबल हरणको रवि शशि मंडल। विपरीति नाम उच्चार किय बालमीक ऋषि भयेतदा। जिहितिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरौं सदा १ रामायणं॥चरितं रघुनाथ स्यसत कोटिप्रविस्तरं। एकैकमच्चरं पुंसांमहापातकनाश नं२ बालमीक बुधवंत सदा सीता पतिगावैं। रामायणशत

कोटि रामराघव मन भावैं। तेंतीसकोटितेंतीसलाषतेंतीसहजारा। तीनसत बहुरि औरभूलोक तेंतीस बिचारा दश दश अक्षर और भक्ति भजिबेको कीना॥ रामनाम दोउ अंक मांगि शंकर तब लीना। ततबेता तिहुंलोकमें रामचरित बिस्तरि रह्यो। एकनाम सुमिरतसदा महापाप परलैगयो २ दोहा तुलसीरघुबरनामको रीझिभजोकैषीजि। उलटो सुलटोनामिहै परखेतमेंबीज॥

बोलेकृष्णदेवयाको सुनौसबभेवऐपैनीकेमानिलेबो बातदुरीसमझाइये। भागवतसंतरसवंतकोऊजैयौनाहिं ऋषिन समूहभूमिचहूंदिशिछाइये। जौपैकहौंभक्तिनाहीं नाहींकैसेकहौं गहौंगासएकऔरकुलजातिसोबहाइये। दासनिकोदासअभिमानकीनबासकहूं पूरणकीआसतौपै ऐसोलैजिमाइयै ७३ ऐसोहरिदासपुरआसपासदीखै नाहिंबासबिनकोऊलोकलोकनिमेंपाइये। तेरेईनगर मांझनिशिदिनभोरसांझआवैजाइ ऐपैकाहूबातनलखाइये॥ सुनिसबशोचपरेभावअचरजभरेहरमननैनअजू बेगिहीजताइये। कहानामकहांठामजहांहमजाइदेखैं लेखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ७४ जितमेरेसाधुकभू चहैंनप्रकाशभयोकरौंजोप्रकाशमानैमहादुखदाइये। मोकोपर्योशोचयज्ञपूरणकीलोचहिये लियेवाकोनामजिनिगामतजिजाइये॥ ऐसेतुमकहौजामेंरहौन्यारेप्यारेसदा हमहांलिवाइलावैंनीकेकैजिमाइये। जावोबालमीकिघरबड़ोअबलीकसाधुकियोअपराधहमदियोजोबताइये ७५॥

बासबिन॥ सवैया॥ नखबिन कटादेखे योगी कनफटा देखे शीशभारी जटा देखे छारलायेतनमें। मौनीअनबोल देखे जैनी शिरछोलदेखे करत कलोलदेखेबन खंडीबनमें।

गुणी अरु कूरदेखे कायर औ सूरदेखे मायाके अपूर देखे
परि रहे धन में। आदि अंत देखे सुखी जनमके दुखीदेखे
ऐसे नहीं देखे जिन्हैं लोभ नाहिं मनमें १ जावोबालमी-
किघर ॥भागवते॥ नमेप्रियश्चतुर्वेदीमद्भक्तःश्वपचःप्रियः तस्मै
देयंततोग्राह्यंसचपूज्योयथाह्यहं २ अवलोक॥ दोहा॥
पेट कपट जिह्वा कपट नैना कपट लिलाट। तुलसी हरि
कैसे मिलैं घटमैं औघट घाट ४ अहमद या मन सदनमें
हरि आवैं किहि बाट। बिकट जुरैं जौलौं निपट खुटै न
कपट कपाट ५ भक्त्याहमेकयाग्राह्यश्श्रद्धयात्माप्रियःसतां।
भक्तिःपुनातिमन्निष्ठाश्वपाकानपिसंभवात् ६॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईनिमंत्रणको अंतरउघारिकही
भक्तिभावदूरिहै। पहुंचेभवनजाइचहुंदिशिफिरिआइपरे
भूमिझूमिघरदेख्योछबिपूरहै॥ आयन्नृपराजनिकोदेखि
तजेकाजनिकोलाजनिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरहै। पा
वनकोधारियेजूजूंठनिकोडारियै जूपापअहटारियेजूकीजै
भागभूरिहै ७६ जूंठनिलैडारौंसदाद्वारकोबुहारौंनहींऔर
कोनिहारौंअजूयहींसांचोपनहै। कहौकहाजैंवोकछूपाछै
लैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहैं॥ तबतो
लजानोंहिय कृष्णपैरिसानोंनृपचाहौसोईठानोंबेरसंगको
ऊजनहै। भोरहीपधारौअबयहीउरधारौऔरभूलिनबिचा
रौकहीभलोजोपैमनहै ७७ कहीसबरीतिसुनिधर्मपुत्रप्री
तिभईकरीलैरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै। जेतिकप्रकार
सबव्यंजनसुधारिकरोआजुतेरेहाथनिकी होतिसफलाई
है॥ लायेजालिवाइकहैबाहिरजिमाइदेवोकहीप्रभूआप
लावोअंकभरिभाईहै। आनिकेबैठायोपाकशालामेंरशाल
ग्रासलेतबाज्योशंखहरिदंडकीलगाइहै ७८॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशु-द्धंतिवैग्रह ।किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः १ सा-धुजगमें तीरथहै जा घरमेंआवैं सब तीर्थहीआवैं २ सफला हूहै॥एकादशीभक्तपूज्यस्यदिका ३ कृष्णद्रौपदीसिखाई॥ नैवेद्यंपुरतोन्यस्तंचक्षुषागृह्यतेमया रसंचदासनिह्वायाम-श्नामिकमलोद्भव ४ नष्टप्रायेसुभद्रेषुनित्यंभगवतसेवया भ-गवत्युत्तमश्लोकेभक्तिर्भवतिनैष्टिकी ५ अंकभरिभक्तिको लातो दुनियाको मिलाप छोटो तुच्छजानिये व्याधि उ-तपत्ति करैयाते परिहरिये ६ ॥

सीतसीतप्रतिकर्योंनवाज्योकछुलाज्योकहाभक्तिकोप्र भावनहिंजानतयोंजानिये। बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअजू द्रौपदीको मेरोदोषनाहींयहआपमनआनिये । मानिसां-चिबातजातिबुद्धिआईदेखियाहिसबहीमिलाइमेरीचातुरी बिहानिये । पूंछेतेकहीहैबालमीकमेंमिलायोयातेआदि प्रभुपायोपाऊंस्वादउनमानिये ७६ ॥

सीतसीतप्रति ॥ श्लोक ॥ ग्रासेग्रासे कृतेनादे कृष्णता-ड़ितिपृष्टके। लोपितोभक्तिः प्रतापसिकथे सिकथेन नादितः १ जातिबुद्धि आई॥पाद्मे॥ अर्चावतारोपादानंवैष्णवोत्पत्ति चिंतनः॥ मातृयोनिपरीक्षायां तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ उनमानिये॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोइ। हरिकोभजैसोहरि कोहोइ ॥ ३ ॥ आशंकाइकउपजीमनमें। अर्जुनकहेउकृष्ण सों छनमें। कोटिनयज्ञ ब्राह्मणजेंये। पूरेउनहींसुकौनेहेत ४ ॥ कहेंश्रीकृष्ण सुनौहोपाण्डव कोउन संतआयो ति हारेवारत।जेयेजग पूरोहोतो बाजेदेवद्वार प्रभुहम ऊंच ऊंचकुलपूजे हमजान्यो यह निर्मलभाइ हूनउसों कोऊ निर्मलह्वैहैताहमभूले देऊबताइ। बालमीकिहै जातिसर-गरो जाकेराजा आयेधाइ।बाजेयेजग पूरोह्वैहैमनसापूरण

कार्यसँवारि। अर्जुनभीमनकुलसहदेवाराजासहितसुपक्षुंचे जाइ। करिदंडवतचरणगहि लीन्हेबालमीकिके लागेपाइं तुमतोऊंचकुलजनमे हमतौ नीचमहाकुलमाहिं। ऊंचनीच की शंकाआवै तातेतिहरे आवैनाहिं ॥ ७ ॥ तुमतौ याजग सकलशिरोमणि तुम समतूल और नहिंकोइ ॥ छपाकरौ अरु भवन पधारौ तुम्हैं चलै यज्ञ पूरण होइ ॥ ८॥ तब बालमीकि राजा के आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार जितनैग्रास जेंवतेलीने शंखजुबाज्यो तितनीबार ॥ ९ ॥ भूदरकहैं हाथसोंभानों खंडखंड करिहौं चकचूर। हमरो साधु जेंवतेग्रासजुकणिकणिकाहेनवाबाज्योकूर॥ १० ॥ देवदेव मोहिं दोष न दीजै दोषजुकोई द्रौपदी मोहिं ऊंच नीचकी शंकाआई यातेकणिकणि बाज्योनाहिं ११॥ परख्योसाधु पारखाआई जगमें न्योतिजिमायोसोइ। जानेयें जगपूरण ह्वैगो नामदेवकहैं शिरोमणि सोइ॥ १२ ॥

टीकारुक्मांगदराजाकी॥ रुक्मांगदबागशुभगंधफूल पागिरह्योकरिअनुरागदेववधूलेनआवहीं। रहिगईएक कांटाचुभ्योपगबैंगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं। कहोकोउपाइस्वर्गलोककोपठाइबीजैकरैएकादशी जलधारैकरजावही । व्रतकोतौनामयहग्रामकोऊजाने नाहिंकीनोहीअजानकालिहलावोगुनगावही ८० फेरीनृप डोंड़ीसुनिवनिककीलौंड़ी भूखीरहीहीकनौड़ीनिशिजागी उनमारिये। राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभइतियायों उड़ानिनिजलोककोपधारिये । महिमाअपारदेखिभूपने बिचारियाको कोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये। याहीकेप्रभावभावभक्तिविस्तारभयोनयोचोजा सुनौसबपुरी लैउधारिये ८१ एकादशीव्रतकीसचाईलैदिखाई राजा

सुताकीनिकाईसुनौंनीकेचितलाइकै । पिताघरआयोपति भूपनैसतायोअतिमांगै तियापासनहींदियोयहभाइकै ॥ आजुहरिवासरसोतासरणपूजैकोऊडरकहांमीचकोयोंमा- नीसुखपाइकै । तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानबधूहियेसर सानभईकह्योपनगाइकै ८२ ॥

याहीकेप्रभाव। ब्रह्मवैवर्तै॥ सर्वपाप प्रशमनंपुण्यंमात्यंतिकं यया। गोविंदस्मरणंनृणांयदेकादश्य पारणं॥ १॥सबहीको कर्तव्यहै ॥नीति॥कष्टाधिकष्टं सततं प्रवासीततोधि कष्टं पर गृहवासी॥ततोधिकष्टं कृपणस्यसेवाततोधिकष्टंधनहीनसेवा २ ॥ अपनको सेवाते भूखीरही एकादशीके महातममें इ- तिहासकी कथाहै एकराजाकीस्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आपकैसे मगनभये तबकही एकादशीके प्रताप सों राज्यपायो याते मगनभये ॥२॥ नृगराजा शिकारको गये देवलऋषि सों पूछीभद्रस्त्रयाखंड अगस्त्यजीगयेहैं ३ ॥

टीका समुदायको ॥सुनौहरिचंदकथा व्यथाबिनद्रव्य दियो तथानहींराखी बेंचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वा जूसों दोषकेकरतमरे शंखऔलिखतविप्रभयोमैलोमनहै॥ इंद्रऔअगिनिगये शिवोपैपरिक्षालेन काटिदियोमांसरी- झिसांचोजान्योपनहै । भरतदधीचआदिभागवतबीचगा- येसबनिसुहाये जिनदियोतनधनहै ८३ टीका विंध्याव- लीकी॥ बिंध्यावलीतियासीन देखीकहूंतियानैन बांध्यो प्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान दैन बैठ्योतुमहींको कियोअपमान मैंतोमान्योसुखसौगुनो । त्रिभुवनछीनिलिये दियेबैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरि आन्योनहिंऔगुनो । ऐसीभक्तिहोइजोपै जागोरहौसोइ

अहोरहेभवमांझ अैपैलागेनहींभौगुनो८४टीकामोरध्वज राजाजूकी॥ अर्जुनकेगर्वभयो कृष्णप्रभुजानिलयो दियो रसभारीयाहिरोगयोंमिटाइये। मेरोएकभक्तआइ तोकोलै दिखाऊंताहि भयेबिप्रवृद्धसंगबालचलिजाइये। पहुंचत भाष्योजाइ मोरध्वजराजाकहां बेगिसुधिदेवो काहूबात योंजनाइये। सेवाप्रभुकरौ नेकरहौपावधरौंजाइ कहौतु-मबैठौकहीआगिसीलगाइये ८५ ॥

दियोतनधन है॥ भागवते॥ नह्यौयुवैवमखवदुत्तमश्लोक लालसः १ करि अभिमान॥ दोहा॥ नारी काहू रंक की अपनी कहै न कोइ॥ हरिनारी अपनी कहै कौन कसी हत होइ २॥ नहीभौगुनो॥ साधूजन जग में रहैं ज्योंक-मला जलमाहिं। सदा सर्बदा सँगरहै जलको परसत ना-हिं॥ गर्वभयो॥भागवते॥ तपोविद्याचविप्राणां निश्श्रयोरा करेउभे। तएवदुर्विनीतस्यकल्पतेकर्त्तुमन्यथा ४ सेनयोब भयोर्मध्येरथस्थापयमेच्युत ५ ॥ दोहा॥ तिमिर गयोरवि देखिकै कुमति गई गुरुज्ञान॥ सुमति गई पर लोभ ते भक्तिगई अभिमान ६॥

चलेअनखाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाईतत कालबौरेआयेहैं। बड़ीकृपाकरीआजुफरीबेलिचाहमेरीनि पटनवेलिफलपायोयातेपायेहैं। दीजैआज्ञामोहिंसोइकीजे सुखलीजैवही पीजैबानीरस मेरेनैनलैसिरायेहैं। सुनिक्रो धगयोमोदभयो सोपरिक्षाहिये लियेचितचाव ऐसेबचन सुनायेहैं ८६ देवकीप्रतिज्ञाकरोंकरीजूप्रतिज्ञाहम जाही भांतिसुखतुम्हें सोईमोकोभाईहै। मिल्योमगसिंहयह बा लककोखायेजात कहीखावोमोहिं नहींयहीसुखदाईहै।

काहूभांतिछांड़ौनृप आधोजोशरीरआवै तौहीयाहितजौ कहिबातमोजनाईहै। बोलीउठितिया अरधंगीमोहिं जाय देवो पुत्रकहैमोकोलेवो और सुधिआईहै ८७ सुनौ एक बातसुततियालैकरौतगातचीरैधीरैभीरैनाहिं पीछेउनभा- षिये। कीनींवाहीभांति अहोनासालगिआयोजबढरेउ द्दगनीरभीरवाकरनचाषिये। चलेअनपाइगहिपाईसोसु- नायेबैन नैनजलवायोअंग कामकिहिनाखिये। सुनि भरिआयोहियो निजतनश्यामकियो दियोसुखरूपठ्यथा गईअभिलाषिये ८६ ॥

कीन्हीं वाही भांति॥ दोहा॥ कांचकथीर अधीरन- रकसेन उपजै प्रेम॥ परमा कसनी साधुसहैकैहीराकैहेम १॥ कवित्त॥ अगिनि कनक जारै चंदनखंडित घारैशिला घसेशीतलतो वासना घटातिहै। छीरमथे माखन बटुरिआ वै येरिलहै मुकर मलिन मांजैं मरति दिखातहै॥ तोरेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छोलैं छाटैं काटैंओटै अधिक मिठाति है। रचिबेको कहा कहौ बिरचैं सहस गुनो स- ज्जन सनेह कछु बातनि मिठातु है १ सुनायेबैन॥ नाटके॥ ग्रहणाल्लेपरियोभिरंप्रतिपदंग्रहणात्यजैवाजिनं। नीत्वा- चर्मधनुश्चयातिपुरत:संग्रामिभूमावपि। द्यूतंचौर्यंपरिस्त्रि यश्चशपथंजानातिनायंकरो। दानाद्युद्यमतांनिरीक्ष्यविधि नाशौचाधिकारीकृत: १॥

मोपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदिये बिना मेरेहियेशालहै। मांगौबरकोटिचोट बङ्लोनहूकत है सूकतहैमुख सुधिआयेवहांहालहै। बोल्योभक्तराजतुम बड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरतकाजमानौंकृतजालहै। एक

सोकोदीजैदाव दीयोजूबखानोवेगिसाधुपैपरिक्षाजिनिक रौकलिकालहै ६० ॥

कलिकालके॥ दोहा॥ चारिसवेरी चारिअवेरी इतनी देगोपाला। इतनीमेंतिएकघटै तौयहलेअपनीमाला २सब अर्जुनकोगर्भगयोतबबोले॥ पद॥ कहौकहांलौंक्षपातिहारी। कुलकलंकसबमेटिहमारे कियेजगतयशपावनकारी। द्विजकानीनहमारोश्राजा गोलकपितावंशकोगारो। हम तौकुंडसबैजगजानैं ताहूमेंऔरेगतिन्यारी। लहाकष्टकरि ब्याहजुकीनों ह्वैगइतियापंचभतारी॥ बड़ेव्यसनडूबगयेयुत राजाहमतेअधिकजुअग्रजुवारी। याकुकर्मकौअवधिकहा लौंजोतियराजसभामेंहारी। हतेपितामहबंधुविप्रगुरुलो भीनीचसारथीभारी। सबभांतनहौंकौनबिधिरीझेहमतौ ऐसेअधमविकारी। अतिआतुरह्वैरक्षाकीनी असनबसन कीसबैसँभारी। यहतौसाधनकोफलनाहीं बारबारहम यहैबिचारी। बीरभद्रकेमनक्षपालेसुबिगरतिगईसोसबैसुधारी३॥

टीका अलरककी॥ अलरककीकीरतिमें राच्यो नितसांचोहिये कियेउपदेशहून छूटैविषयबासना। माता मंदालसाकीबड़ीये प्रतिज्ञासुनौ आवैजोउदरमांझ फेरि गर्भआसना। पतिकोनिहोरोतातें रह्योछोटैकोरोताकोलै गयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना। मुद्रकाउघारिऔ- निहारिदत्तात्रेयजूको भयेभवपार करीप्रभुकीउपासना ६१ मूल॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिरजेजेहरिमायातरे॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधि रघुरैगेशुचिसतधन्वा। अमूरतिअरुरंतदेवउतंग भूरिदेवलवैवस्वतमन्वा। नहुषयया तिदिलीपपूरियदुगुहमानधाता। पिप्पलनिमिभरद्वाज

दक्षसभोगवैसंघाता ॥ संजयसमीकउत्तानपात याज्ञवल्क्ययशजगभरे। तिनचरणधूरिमोभूरिशिरजेजेहरिमायातरे १२ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंतदेवनृपसंतदुसकंतवंशअतिहोप्रशंस सोअकाशवृत्तलईहै। भूखेकोनदेखिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखेदेहक्षीणभईहै। चालीसऔआठदिनपाछैजलअन्नआयो दियोविप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै। हरिहीनिहारै उनमांझतबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेभोगौंभक्तिछईहै ६२ ॥

सूक्तानि ॥ मंदालसावाक्यं ॥ संगःसर्वात्मनात्याज्यः यदित्यक्तुंनशक्यते सद्भिरेवप्रकर्त्तव्यंसत्संगोभवभेजनं १ हरिहीनिहारै॥गीतायां ॥ विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगविहस्तिनि। सुनिचैवश्वपाकेच पंडिताःसमदर्शिनः ॥ सवैया ॥ यहीसौरहभारमैं लाखकरोरमैं एकघटैटिकैनौहीसही। इहांऐसेहीहरअप्रंचकोभाहिंगहैअविवेकरहैसुवही। पुनिनोनमें एकमिलाइ लिखैहोइ औरकोऔर सुजाइचही। यहीब्रह्म सबैसुअवोधहिपाइ भयोभवसोधकबोधयही ३ दुर्लभावैष्णवोनारी दुर्लभोविप्रवैष्णवा ॥ दुर्लभोवैष्णवोराजा अतिदुर्लभदुर्लभः ४ ॥

राजागुहकीटीका ॥ भिलनिकोराजा गुहराम अभिरामप्रीति भयोबनवासमिल्योमारगमैंआइकै। करौयहराजजूविराजिसुखदीजैमोको बोलेचैनसाजि तज्योआज्ञापितुपाइकै। दारुणवियोगअकुलाइद्दगअश्रुपात पाछेलोहूजाततबसकैकौनगाइकै। रहेनैनमूंदि रघुनाथबिनदेखैकहा अहाप्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ६३ ॥

भयोबनबास॥रामचन्द्रका॥पढ़ैविरंचिवेदमौन जीव

सोंन छंडिरे। कुबेर बरकैकही न यक्षभीर मंडिरे। दिनेश
दूरिजाहूबेठिनारदादि संगही। न बोकबंदमंदबुद्धिइंद्रकी
सभानहीं१ ॥ सवैया॥ नामसंथरामंदमतिचेरिकेकयीकेरि।
अयशपिटारी ताहिकरि गईगिरा मतिफेरि ॥ २ ॥ इन्द्र
केयुद्धकेहेबर ॥ कुंडलिया ॥ पुत्रप्राणसनतेबड़ेचारोंयुगपर
मान। तेराजा दोऊतजे वचन न दीनेजान। बचन न दीने
जान बड़ेकी यहैबड़ाई। बचनरहेसो कार्य औरसर्बसकिन
जाई। कहिगिरिधरकबिरायअयेदशरथन्रपऐसे। प्राणपुत्र
परिहरे बचन परिहरे न तैसे॥ ३ ॥ रही न रानीकेकयी
अमरभईयहबात। काहूपूरब योगतेबनपठये जगतात। बन
पठये जगतात पिता परलोक सिधारे। जिहिहितसुतके
कार्यफेरिनहिंबदननिहारे। कहिगिरिधरकबिराइलोक
मेंचलीकहानी। अपकीरति रहिगई केकयीरही न रानी
३ ॥ सवैया ॥ अहोपूतकहाँबलिहौअबहीं तुमसांचीकहौ
किनमोसोलला। सुनिनयननये जलसोंभरिकै जैसेबोअफर
नइजातफला ॥ सियकेमुखकीछबि योंनघटै मनोहै जसोंवै
द्विजराजकला। सुधिराखनहेत सियावरकी पलथ्योकनकी
अँगुरीको छला ॥ ४ ॥ जानकीतिहारेसंग जानत न एको
दुखयाके लाइूडबेटा तुमबनहूमें सहियो। पायँनकोचलि-
बोहै जौलोंपांयचलोजाइ आगेजनिचलौ याहिसंगलै नि
बहियो॥ लक्ष्मणको मनहूबो भूखोजनिदेखिसकौआवै
कोऊ हतते संदेशोताहि कहियो। उतरतजाऊ काहूया-
मनके बीचपूतमेरेबनबासीमेरीसुधिलेत रहियो॥५॥हनूमा
न नाटके ॥सद्यःपुरःपरिसरेपि शिरीसमृद्वी सीताजवाति
चतुरानिपदानिगत्वा । गंतव्य मस्तिकियदि त्यसकृद्ब्रुवा
णा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारं॥ १ ॥ सवैया ॥ पुरते
निकसी रघुबीरबधू करिसाहसधीर दईडगद्वै । झलिभाल
कनी निकसीश्रमकी पटसूकिगये अधरामृतद्वै ।पुनिपूंछत
योंचलनोंबकितौ कहैपर्णकुटी करिहौ कितवै। तुलसी
सियकीलखि आतुरता पियके युगनयन चलेजलचवै॥ २ ॥

औरहीके भूखेह्वैहैं प्यासमुख सूखेह्वैहैं चलैंपग दुखह्वैहैं फिरैंमग रातको। रविकी किरणिलागे लालकुम्हिलाने ह्वैहैंकारखपटाने ऑंगाफाटेह्वैहैं गातके।अबतौ भईहैसांझ वैहैं बनमांझ हमरही क्यों न बांझ हियेफटै क्योंनमातके। मेरेरी बिछौना गयेतनिके घरौना होंगेतरुके तरौना सो बिछौना कियेपातके ॥ ३ ॥ मगमेंपरतपग सुंदरभरतडग कोमल बिमलभूमि छोड़तहैंघनको।जिहिठौर कांटेकाठ कांकर परतआइ तिहिठौर धरतहैं आपने चरन को। जितेछांह सीरी तितै कीजत हैं प्यारी नीरो जितैघाम तितै कीजैनीरदसे तनको। गहेरघुनाथ निजहाथनसों हाथऐसेजानकी को लियेसाथ चलेजात बनको ॥ ४ ॥ मुख सूकिगये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै। करुणानिधि कंततुरंत कहेउ कि दुरंतमहाबन भूरिअवै। सरसीरुह लोचननीरचितै रघुनाथकही सियसोंजुतवै ॥ अबहीं बनभामिनि पूंछतिहौ तजि कौशलराज पुरी दिनद्वै ॥ ५ ॥ जासुकेनाम अजामिलसेखल कोटिनदीभव कुंडतकाढ़े।जोसुमिरैं गिरिमेरु शिलाकनहोत अजाखुर वारिधि बाढ़े।तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रगटी तटनी जुहरैअघगाढ़े। तेप्रभुहैंसरिता तरिबेकहँ मांगतनावक-रारिपैठाढ़े २ दूहिघाटते थोरिकदूरि अहो कटिलों जलथाह बताइहोंजू। परशैंपगधूरितरैतरणीघरणीघरक्यों समुझाइहोंजू। बरुमारिये मोहिंबिनापगधोये हौंनाथन नावचढ़ाइहौंजू। तुलसीअवलम्बन औरकछूलरिकाकि-हिभांतिजिवाइहौंजू ४ रावरेदोषनि पाइनिको पगधूरि कोभूरिप्रभावमहाहै। पाहनते बलवाननकाठको कोमल हैजलखाइरहाहै। तुलसीसुनिकेवटकेबरवैनहँसे प्रभुजान की ओरहहाहै। पावनपांवपखारिकैनाव चढ़ाइहौंआय सुहोतकहाहै५ प्रभुरुखपाइकैबुलाइबालघरणि कूंबंदिकै चरणचहूंदिशिबैठेघेरिघेरि। छोटोसोकठौवाभरिआन्यो पानीगंगाजूकोधोइपाइंपीवतपुनीतवारिफेरिफेरि। तुल-

सोसराहैं ताकोभागमानुराग सुरबरषैं सुमनजयजयकहै टेरिटेरि। विबुधसनेहसानी बानीसुखदानीसुनिहँसे राम जानकीलषणतनहेरिहेरि ईलक्ष्मणसों हमसांईकसाथसि या पुनिसाथहि छांड़िनदेहैं। वानरऋक्षजितेकह्किकोणवते सबकंदरखोहसमैहैं। छोड़िकैआनिमिल्यो हमसोंतिन कोयहसंगकहाकरिएहैं। औरसबै घरकेबनके कछुकौनके भवनविभीषणजैहैं७॥

चौदहबरषपाछेआयेरघुनाथनाथ साथकेजेभीलक हैंआयेप्रभुदेखिये । बोल्योंअबपाऊंकहांहोतनप्रतीत क्योंहूं प्रीतिकरिमिलेराम कहोमोकोपेखिये । परसपि-छानेलपटानैंसुखसागरसमानैंप्राणपायेमानो भालभाग लेखिये । प्रेमकीजुबातक्योंहूं बानीमेंसमातनाहिं अति अकुलातकहौंकैसेकैविशेषिये ६४ मूल ॥ निमिअरुनव योगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण ॥ कबिहरिकरिभाजन भक्तरत्नाकरभारी । अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधत उधारी ॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता । पिप्य-लद्रुमलप्रसिद्धभवाब्धिपारकेंपोता ॥ जयंतीनंदनजगति के त्रिबिधितापआमैहरण । निमिअरुनवयोगेश्वरापाद त्राणकीहौंशरण १३ पदपरागकरुणाकरौ जेनियंतान वधाभक्तिके ॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्याससावककरिं-तन । सुठिसुमिरणप्रहलादपृथु पूजाकमलाचरननाभन बंदकसुफलकसुवन दासदीपतिकपीश्वर । सख्यत्वेपार्थ समर्पनआत्मावलिधर ॥ उपजीवीइननामके रातेत्रातात्र गतिके ।पदपरागकरुणाकरौजेनियंतानवधाभक्तिके१४॥

दोहा ॥ थानपुष्पमयएकलियचढ़ेलषणसियश्याम॥ क-

रतस्तुतिसमदैमुनि चलेश्रमपुरराम १ रघुबरआगम सुनिअवधि वरघरपुरतनिशान ॥ मिलेभरतपरिजनप्रजा प्रथमहिंगुरुसनमान १ पादचाणकीहौंशरण॥वेदाचार्य्य वाक्यं॥ कर्मावलंबकाः केचित्केचिज्ज्ञानावलंबकाः वयंतु हरिदासानां पादत्राणावलंबकाः २ भक्तिके भागवते॥ श्री विष्णोःश्रवणेपरीक्षिदभवद्वैयासकिःकीर्तने प्रह्लादःस्मरणेत दंघ्रिभजनेलक्ष्मीःपृथुः पूजनेअक्रूरस्त्वभिवंदनेकपिपतिर्दास्ये चसख्येर्जुनः।सर्वस्वात्मनिवेदनेबलिरभूत्कृष्णाप्तिरेषांपरा५

श्रवणरसिककहूं सुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरतलागै कोटिगुनीप्यासहै । सुनिमनमांझकयोंहूं आवतनध्यावत हू वहीगर्भमध्य देखिआयोरूपरासहै । कहीशुकदेवजू सोंटवमेरीलीजैजानिआयालागैकथानहींतक्षककोत्रासहै। कीजियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीविरमानीज हांजीवननिरासहै ६५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेंनिक सिचले बनहींमेंकीनोंबास व्याससेपिताको नहींउत्तरहू दियोहै । दशमश्लोकसुनि गुणमतिहरिगई नईभईरीति पढ़िभागवतलियोहै । रूपगुणभरसह्यो जातकैसेकरिआ ये सभानृपढरिभीज्यो प्रेमरसहियोहै । पूछैभक्तभूपठौर ठौरपरै भौरजाइगाइउठैंजबै मानोंरंगझरिकियोहै६६ ॥

प्यासहै ॥ पारनो ॥ प्रवराश्चात्कोहंसः शुकोमीनादय स्तथा ॥ अवराष्टकभूरंडश्वपोष्ट्राद्यप्रकीर्तिताः १ ॥ छप्पै ॥ अन्य मनाहगलोलपदछेदकअसमंजस। स्थितगभीर श्रुति मंद पलकझपकैनिद्रावस।प्रश्नप्रसंगति मिलै मधुरअनुमो- दन अक्रिय ॥ बादरसिर सक छहर अभिनम्र अलापत प्रियाप्रिय । रसिक अनन्य विशालमति बातकाहत अनु भौसुकृत ॥ दश दोषरहितश्रोतामिलैतौउज्ज्वलरसबरषै

अमृत २ इत्यमरश्लोक॥ दशमे॥ अहोवकीयंस्तनकालकूटंजि घांसयापाययदप्यसाध्वी। लेभेगतिंधात्र्युचितांततोऽन्यंकं वादयालुंशरणंव्रजेम ३ परिनिष्टितोपिनैर्गुण्यउत्तमश्लोक लीलया॥ गृहीतचेताराजर्षेआख्यानंतदधीतवान् ४ परम वरजादू॥ कवित्त॥ सूभत न वारापार लिख्यो प्रेमहैअपा- र मिलन अथाह देखि धीरज हिरातुहै॥ पातीको अधार पाइ पैरत सनेह सिंधु विरह की लहरि मांभ हियराहि रात है। नवल गुनबंधोगूढि ढूंढतरतन औधी सूरति मर- जियाकी नेकन घिरात है॥ एक बेरबांचिपुनि फेरिखोलि फेरिबांचि बांचि बांचि प्राण प्यारी बूड़ि बूढ़िजातिहै ५॥

प्रहलादकोटीका ॥ सुमिरणसांचोकियोलियोदेखि सबहीमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै। काटिबोखड़ग जलबोरिबोसकतिजाकीताहीकोनिहारैचहूंओरसोअपार है।पूंछतेबतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रगटअनूपभक्त बाणीहींसोप्यारहै। दुष्टडारयोमारिगरैआंतेंलईडारित- ऊ क्रोधकोनपारकहाकियोयोंबिचारहै ६७॥

पूंछते॥ श्लोक॥ तत्साधुमन्येसुरवर्यदेहिनांसदासमु- द्विग्नधियामसद्ग्रहात्॥ हित्वात्मपातंगृहमंधकूपंवनंगतो यद्धरिमाश्रयेतं १ श्रवणंकीर्तनंविष्णोस्मरणंपादसेवनं॥ अर्चनं वंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनं॥ कवित्त॥ पानिसोंबांधिकै अगाधजलबोरि राखे तीर तरवारनि सों मारि मारि हारे हैं। गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तबमतवारे परवत से हाथीतरडारे हैं॥ फेरिभिर भारालैअगिनिमांभ जारेपुनिपूंछि मीडिगातनु लगासे नाग कारे हैं। भावतेके प्रेममें मगन कछू जानै नाहिं ऐसे प्रह्लाद पूरे प्रेममतवारे हैं ३॥ व्याल कराल महा बिषपावकमंत गयंदनि कोरद तोरे। ताते बिशंक चले डरपे नहीं किंकरते करनी सुख

मोरे। नेक बिषाद नहीं प्रह्लादहि कारण को हरि केवल होरे॥ कौनको त्रास सहै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै कोरे ४॥ छप्पै॥ गगन गूंजगुंजरत घोर दग्गलइंदिशि पूरण। हरत धरतिकलमलत घुमघुंकार बिषचूरण। उस रसंक सकपकत धीर धक पकत धमक सुनि॥ भगत भीर भहराइखंभ फहराइफटिलपुनि। अति बिकट दंतकट कट करतचट पटाइ नखकरत तप। लफलफत जीभदुर्ज्जन दलन सुपथनयखोल्हसिंह बपु ५ अति भक्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारि धरे ६॥

डरेशिवब्रह्मादिकहु देख्योनहींक्रोधऐसो आवतनढिग कोऊ लक्ष्मीहूंत्रासहै। तबतौपठायोप्रह्लादअह्लाद महा अहाभक्तिभावपग्यो आयोप्रभुपासहै। गोदमेंउठा इलियो शीशपरहाथदियो हियोहुलशायो कहीबाणी बिनयराशहै। आईजगदयालगि परउश्नोन्हसिंहजूकोअ-र्योयों छुटावो करौमायाज्ञाननाशहै ६८॥

बाणीबिनयराशिहै॥पाद्मे॥कुलंपबिचंजननीकृतार्थीबसुंधरासावसतीचधन्या॥ स्वर्गेस्थितातत्पितरोपिधन्यायेषांकुलेवैष्णवनामधेयं१ छप्पय॥ मनोरथ मनकेभौवअसत्तकहतअधिकारीसों हसनिपट अमत्यनआतहिदेखिसुपनेतिथसंगमःसोकम्हठजोहोयतऊनहिं कामसतावै। जोमनकेअनुभाव जासुतिहि जगन छुटावै॥ सुपनोंमुंदैसांचपुनजगत मिटै पहिंचानिये। यौंही बिषय निरसता गये सांचसो जानिये २ श्लोक। बिषयान्ध्यायतिचित्तं विषयेषुविसज्जते॥ मामनुस्मरतश्चित्तमय्येवप्रविलीयते ३ कबित्त॥ छबटि अन्हाइ लालधोतीभमकाइ पट पीतांबर छोरन भुराइ भमकाइ कै॥ मेलिकै अतरवह चतुरकिशोर बर बांध्यो कैग्रजूरा कर चूरा चमकाइकै॥ पहिरिख राजमणिरचित खचित

तान बानमुसकान पानखात उठ्यो गाइकै। ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितैकरयो मनकोरतमभिरयो भौंर खाइकै ४॥

अक्रूरकीटीका॥ चलेअक्रूरमधुपुरीतेविसूरनैनचली जलधारा कबदेखौंछबिपूरको। सगुनमनावैएकदेखिबोईभावै देहसुधिबिसरावै लोट्योलखिपगधूरिको। बंदन प्रवीनचाह निपटनवीनभई दईशुकदेव कहिजीवनकी मूरिको। मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथकों हिलेदग रूपकिये चूरिचूरिचूरिको ६६॥ टीकाबलिजूकी॥ दियो सरबसुकरि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रहलाद सुधिआईहै। गुरुभरमावें नीतिकहिसमुझावें बोलउरमें नआवैंकितीभीतउपजाईहै। कह्योजोईकियोसांचो भावपनलियोअहो दियोडरहरिहूनेमतिनचलाईहै। रीझेप्रभु रहेद्वारभयेबशहारिमानी श्रीशुकबखानी प्रीतिरीतिसोई गाईहै १०० मूल॥ हरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपरवान॥ शंकरशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना। विष्वकसेनप्रहलाद बलिरुभीषमजगजाना॥ अर्जुनध्रुव अंबरीष बिभीषणमहिमाभारी। अनुरागीअक्रूरसदाउद्धवअधिकारी॥ भगवंतभुक्तअवसिष्टकी कीरतिकहतसुजान। हरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपरवान १५॥

चूरिचूरि चूरिको॥ कबित्त बांधिकै सुकेसीचीराकलंगी जटितहीराबुरीढिगगोचपैं चलनितहीसंवारयोहै। भुंगएकलसकास कंचन बदरंगहोत एक छोर पटका कोछैतासों ढारयोहै। धुकधुकी कंठमध्यहीरानग मोतीजरेग्रीभितगलमाल आजु लालमैं निहारयोहै॥ पट्ट चनिमेंपहुं

सुंदररतन गरी अमैट करेननैअमैटि मनडाररोहै १ कह्यो
ओर्है॥श्लोक॥असंतुष्टाद्विजानष्टासंतुष्टाचमहीपतिःसलज्जा
गणिकानष्टा निर्लज्जाचकुलांगना २ हरिप्रसाद॥पाद्मे॥बलि
र्विभीषणोभीष्मः कपिलानारदोऽर्जुनःप्रह्लादोजनकोव्यासो
ऽम्बरीषःपृथुस्तथा ३ विष्वक्सेनोध्रुवोऽक्रूरोसनकाद्याःशु
कादयः। वासुदेवप्रसादान्नसर्वेग्रहणतुवैष्णवाः ४ ॥

ध्यानचतुर्भुजचितधर्यो तिन्हैंशरणहौंअनुसरौं ॥
अगस्त्यपुलस्त्यपुलह चमनबशिष्टसौभरऋषि। कर्दमअ
त्रिरिचीकगर्गगौतमव्यासासिषि ॥ लोमशभृगुदालभ्य
अंगिराशृङ्गीप्रकाशी । मांडवबिश्वामित्र दुर्वासासहस्र
अठासी ॥ याबलियामदग्निमयादर्श कश्यपपरचतपा
राशरपदरजधरौं। ध्यानचतुर्भुजचितधर्यो तिन्हैंशरण
हौंअनुसरौं १६ ॥

चतुर्भुज॥ छप्पै ॥ कीटमुकुटअरु तिलकभाल राजतछबि
छाजत । पीतबसनतनश्याम कामकोटिकलखिलाजत ॥
कंठचिवलीश्रीबत्ससुभगशोभितमनमोहत। बैजंतीबनमाल
कौनउपमाकबिटोहत॥करशंखचक्रगदापद्मधर रूपअमि-
तगुणगरुड़ध्वज । गोविंदचरणबंदतसदा जयजयजयश्री
चतुर्भुज १ ॥

साधनसाध्यसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्म
विष्णुशिवलिंग पदमस्कंधबिस्तारा । बावनमीनबराह
अग्निकूरमउदारा॥ गरुड़नारदीभविष्य ब्रह्मबैवर्त्तश्रवण
शुचि। मार्कंडब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ परमधर्मश्री
मुखकथित चतुरश्लोकीनिगमसत । साधनसाधिसत्रा
पुराणफलरूपीश्रीभागवत १७ दशआठस्मृतिजिनउच्चा

री तिनपदसरसिजभालभो ॥ मनुस्मृतिआत्रैवैष्णवीहा त्तिकजामी। याज्ञवल्क्यअंगिरासनैश्चरसाम्र्तकनामी॥ कात्यायनिसांखिल्यगौतमीवसिष्ठीदापी। सुरगुरुआशा ताप पराशरकृतमुनिशापी॥ आसापासउदारधी पर लोकलोकसाधनसो। दशआठस्मृतिजिनउच्चरीतिनपद सरसिजभालभो १८ मूल॥ पावैंभक्तिअनपायनीजेराम सचिवसुमिरणकरैं। सृष्टिविजयीजयंत नीतिपरशुचिर विनीता। राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रपरमपुनीता॥ अशोक सदाआनंदधर्मपालकतत्ववेता। मंत्रीवरज्यसुमंतचतुर्जग मंत्रीजेता॥ अनायासरघुपतिप्रसन्नभवसागरदुस्तरतरैं। पावैंभक्तिअनुपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं १९॥

फलरूपीश्रीभागवत॥ मंगलरूपअनूप निगमकल्पद्रुम कोफल। बीजवक्कुलतैंरहित मधुररससहितविमलकल॥ कहतसुनतसुखदेतअधिकहरिभक्तिबढ़ावत। सबसारनिको सार व्याससुतशुकमुखगावत॥ तिमिरहरणकोसूरसम श्रीगुविंदजगजगमगत। पूरनपुराणपतिप्रगटनित जयजय जयश्रीभागवत २ प्रथमे॥ निगमकल्पतरोर्गलितंफलं शुक सुखादमृतद्रवसंयुतं। पिवतभागवतंरसमालयं मुहरहोर- सिकाभुविभावुका ३ छप्पै॥ एकवेदकेचारिसहस्रशाखा विस्तारी। साठिलाखइतिहास महाभारतकियोभारी॥ चारिलाखअरुअर्द्ध व्यासवेदांतबखान्यो। अष्टादशकिये पुराण हृदयहरिनामननान्यो॥ कहतपढ़तसीखतसुनत दाहनहिंहृदयकोगयो।ततबेत्तानारदमिले तबव्यासहृद यशीतसमयो ४ दशहजारब्रह्मपुराण इकतालीसहजार विष्णुपुराण छिहत्तरिहजारशिवपुराण ग्यारहहजार लिंगपराण पचपनहजारपद्मपुराण एकसौइक्यासीहजार

स्कंदपुराण दशहजारबावनपुराण चौदहसौनपुराण चौवीशबाराहपुराण पंद्रहअग्निपुराण सत्रहकूर्मपुराण छनईसगरुडपुराण पचीसनारदपुराण चौदहभविष्य पुराण ब्रह्मवैवर्तअठारहपुराणनवमार्कंडेयपुराण बारह ब्रह्मांडपुराण अठारहहजारश्रीभागवत श्लोक एवंपुराणंसंदोहाश्चतुर्लक्ष उदाहृता१ छन्नतन ॥ छप्पै ॥ प्रथम द्वितियदोजवरणतृतीयेचतुर्थदाजउरु । पंचमनाभिगंभीर हृदयषष्टमसुखपुरु॥ सप्तमअष्टमभुजानवमकंठविराजै।दशम बदनसुखसदनभालएकादशराजै॥ द्वादशशिरशोभितसदा मंगलरूपीसुमिरमन । ततवेत्तातिहुंलोकमें कीर्तिरूपी छन्नतन२नवमे ॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानविविक्तासनोभवेत्। बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ३ तापैसन्यासीकोदृष्टांत ॥

शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥ दिनकरसुतहरिराजवालिवच्छकेशरीऔरस । दधिमुखदुविद मयंदऋच्छपतिसमकोपौरस ॥ उल्कासुभटसुसंनदरी मुखकुमुदनीलनल । सरभंगवैगवाछपनस गधमादन अतिबल ॥ पद्मअठारहयूथपाल रामकाजभद्रभीरके । शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके २० मूल ॥ ब्रजवड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ धरानंदध्रुवनंद तृतियउपनंदसुनागर । चतुर्थतहांअभिनंदनंदसुखसिंधु उजागर ॥ सुठिसुनंदपशुपालनिर्मलनिश्चयअभिनंदन । करमाधरमानंद अनुजबिदितबल्लभजगबंदन ॥ आसपास वावगरके जहांबिहरतपशुपशुछंद । ब्रजवड़ेगोपपरजन्य केसुतनीकेनवनंद २१ ॥

बालबच्छ ॥ कबित्त ॥ हरगिरिहाल हदमेरुगिरिहाल

पुनि उदयगिरि ढाल और कनकगिरि ढालवी। सप्तपाताल ढाल दशों दिग्पालढाल पलपलढाल ऊपर उछालवी। केशवदास लंकको विपुलदलबलढाल दशशीशढालउठयो भुजबीश ढालवो। लोकढाल और भूलोकढाल एकचालि बलवंत सुतपग नहीं ढालवी ॥ १ ॥ पादरज भागवते ॥ तद्भूरिभाग्य मिहजन्म किमप्यटव्यायद्गोकुलेपिकतमांघ्रिरजोभिषेकं ॥ यज्जीवितंतुनिखिलं भगवान्मुकुंदस्त्वद्यापि यत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव। अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां। यन्मित्रं परमानंदं पूर्णंब्रह्मसनातनं। आसामहो चरणरेणुजुषामहंस्यां वृन्दावने किमपिगुल्मलतौषधीनां। यादुस्त्यजंस्वजनमार्यपथंचहित्वा भेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्यां॥ ३ ॥ यादोहनेवहनने मथनोपलेपप्रेंखेंखनार्भरुदितो क्षणमार्जनादौ गायंतिचैनमनुरक्तधियोश्रुकंठ्योधन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयानः ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि मया तप्तंतपःपुरा॥ नंदगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणूपलब्धये ॥ ५ ॥

बालवृद्धनरनारिगोपहों अरथीउनपादरज ॥ नंदगोपउपनंदध्रुव धरानंदमहरियशोदा। कीरतदावृषभानकुंवरि सहचरिबिहरतमनमोदा॥ मधुमंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुनश्रीदामा। मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीबहुनामा॥ घोषनिवासनकीकृपा सुरनरबांछितआदिअज। बालवृद्धनरनारिगोपहों अर्थीउनपादरज २२ मूल॥ व्रजराजसुवनसँगसदनबनअनुगसदाततपररहैं॥ रक्तकपत्रकऔरपत्रि सबहीमनभावैं। मधुकंठीमधुवर्त्तरसालबिशालसुहावैं। प्रेमकंदमकरंद आनंदसदाचंद्रहासा। यादवकुलरसदानंशारदाबुद्धिप्रकासा॥ सेवासमयबिचारिकैं चारुचतुरबितकीलहैं। ब्रजराजसुवनसंगसदनबनअनुगसदातत्पररहैं २३मूल॥ सप्तद्वीपमेंदासजेतेमेरेशिरताज

जंबुओरपलक्षिसाल्मलिबहुतराजऋषि। कुशपवित्रपुनि क्रौंचकौनमहिमाजानैंलखि॥ शाकविपुलबिस्तारप्रसिद्ध नामीअतिपुहकर। परबतलोकालोक ओकटापूकंचनधर हरिभृत्यबसतजेजेजहां तिनसोंनितप्रतिकाज। सप्तद्वीप मेंदासजेतेमेरेशिरताज २४॥

मनमोदा॥ कबित्त॥ कहाद्भुतगातमात अहोआवोक हैंबात सुनेमनकंठसुखगात न समाइगो। थोरेवैसभोरे भाइ चोरेलेत लकचित कुंडलभलकहेरि हियराहिरायगो॥ तुमकान्ह सांवरे पधारिदेखौ एकबार मेरोगोरोकान्ह लखै मनललचाइगो। ग्रीवकोलटकभ्रुरि भौंहकीमटकबीच बीराकी चटकमें अटकिमन जाइगो॥ १॥ दोहा॥ राधा हरिहरि राधिका बनिआयेसंकेत। दंपतिरतिबिपरीति रस सहजसुरति सुखलेत २॥

मध्यदीपनवखंडमें भक्तजितेममभूप। इलावर्त्त आधीशसंकर्षणअनुगसदाशिव। रमनकमत्स्यमनुदासहिरण्य कूरमअर्जुनइव। कुरुवराहभूभृत्यवरिपहरिसिंह प्रह्लादा। किंपुरुषरामकपिभरतनारायनवीनानादा॥ भद्रासु ग्रीवहयभद्रस्रवकेतुकामककमलाअनूप। मध्यदीपनवख डमेंभक्तजितेममभूप २६॥ मूल॥श्वेतदीपमेंदासजेश्रवण सुनोंतिनकीकथा। श्रीनारायणकोबदननिरंतरताहीदेखें। पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखें। तिनकेदरशनका- जगयेजहँबीणाधारी। श्यामदईतहँसेनउलटिअबनहिं अधिकारी। नारायणीआख्यानदृढ़तहांप्रसंगनाहिनतथा। श्वेतदीपमेंदासजेश्रवणसुनोतिनकीकथा२७॥टीका॥श्वे तदीपबासीसदारूपकेउपासी गयेनारदबिलासीउपदेश

आशलागीहै । दईप्रभुसेनजिनिआवोइहिऐनदगदेखे सद्भावैनमतिगतिअनुरागीहै । फिरेदुखपाइजाइकहीश्री बैकुंठनाथसाथलियेचलेलखोंभक्तिअंगपागीहै। देख्योए-कसरखगरह्योध्यानधरिऋषि पूंछैंहरिकहोकह्योबड़ोबड़ भागीहै १०१ ॥

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुघुरारी लटें भूमिभूमि कुंडल कपोलनि में भलकैं। वारिज बदन रस रूपको सदन लखि दसकै रदन भरिभरि छवि छलकैं। कानन छुवत कोपि ऐन मैन कोटि मोहै शोभा सर लषि लषि मन मीन ललकैं। देखिवेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करोविधि औ अविधि करीपलकैं १ ॥ दोहा ॥ बड़ो मंद अरविंद सुत जिहिन प्रेम पहिंचानि ॥ पियमुखनिरखनि दृगनि को पलकरची बिच आनि २ ॥

बरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये । पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेत नहींओरयाकीमतिरसभीजिये । लीजैबातमानिजलपा-नकरिडारिदियोचोंचभरिदृगभरबुधिमतिधीजिये । अच रजदेखिचपलगैननिमेषकहूं चहूं दिशिफिर्यो अबसेवा याकीकीजिये १०२ चलोआगेदेखकोऊरहैनपरेखो भाव भक्तकरिलेखोगयेदीपहरिगाइये। आयोएकजनधायआर तीसमयबिहाइखैंचिलियेप्राणफेरिवधूयाकीआइये॥ वही इनकहीपतिदेखो नहींमहीपर्योचर्योयाकोजीवतनगि-र्योमनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआयेसांचेहितमेंदिखाये फे-रिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये १०३ ॥मूल॥उरगअष्ट

कुलद्वारपालसावधान हरिधामथिति॥इलापत्रमुखअनंत अनन्तकीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरते नहिंटारतअंशुकमलबासुकीअजितआज्ञाअनुबर्ती। करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिता अगरएकरसभजनरत। उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तन श्याम हैं बाकचलन बिष खान ॥ तुलसी गुरुके संगमैं शीश समर्पत आनि १ अनंत कीरति ॥ कवित्त ॥ दीननि कोहै दयाल दासनि को रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है। धन धन हीन को है गुननि गुनीनको है रूपहै बिरूप को अनूप है उदार है। आनंद कोकंद भवसिंधु को पगार दुख दंदको हरण हार महिमा अपार है॥ श्रीगुबिंद हरिजू के नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौचित्त ते अनदीनो रबि सो ॥ मैं आवा जावा नित्त मैं तू नजरिन आवदा २ ॥

चौबीसप्रथमहरिबपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट। श्रीरामानुजउदारसुधानिधिअवनिकल्पतरु। विष्णुस्वामिबोहित्यसिंधुसंसारपारकर ॥माध्वाचारजमेघभक्तिसर ऊसरभरिया। निंबादित्यआदित्यकुहरअज्ञानजुहरिया। जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापीअघट । चौबीसप्रथमहरिबपुधरेत्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट २८ ॥

चौवीस ॥ एकादशे॥कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविच्छंतिसंभवं॥कलौखलुभविष्यंतिनारायणपरायणाः१गीतायां ॥ परित्राणायसाधूनांबिनाशायचदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय

आशलागीहै । दईप्रभुसेनजिनिआवोइहिअैनदृगदेखे सदाचैनमतिगतिअनुरागीहै। फिरेदुखपाइजाइकहीश्री बैकुंठनाथसाथलियेचलेलखोंभक्तिअंगपागीहैं। देख्यो ए-कसरखगरह्योध्यानधरिऋषि पूंछैंहरिकहोकह्योबड़ो बड़भागीहै १०१॥

पलक परै गो बीच॥ कवित्त॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुघुरारी लटैं झूमिझूमि कुंडल कपोलनि में झलकैं। वारिज बदन रस रूपको सदन लखि दसकै रदन भरिभरि छबि छलकैं। कानन छुवत कोपै अैन मैन कोटि मोहै शोभा सर लषि लषि मन मीन ललकैं। देखिवेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करोबिधि औ अबिधि करीपलकैं १॥ दोहा॥ बड़ो मंद अरविंद सुत जिहिन प्रेम पहिंचानि॥ पियमुखनिरखनि दृगनि को पलकरची बिच आनि २॥

बरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये । पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेत नहींओरयाकीमतिरसभीजिये । लीजैबातमानिजलपा-नकरिडारिदियोचोंचभरिदृगभरबुधिमतिधीजिये । अच रजदेखिचपलगैननिमेषकहूं चहूं दिशिफि्र्यो अबसेवा याकीकीजिये १०२ चलोआगेदेखकोऊरहैनपरखो भाव भक्तफरिलेखोगयेदीपहरिगाइये। आयोएकजनधायआर तीसमयबिहाइखैंचिलियेप्राणफेरिबधूयाकीआइये॥ वही इनकहीपतिदेखो नहींमहीपर्योचर्योयाकोजीवतनगि-र्योमनभाइये। ऐसेपुत्रआदिआयेसांचेहितमेंदिखाये फे-रिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये १०३॥मूल॥उरगअष्ट

कुलद्वारपालसावधान हरिधामथिति॥इलापत्रमुखअनंत अनन्तकीरतिबिस्तारत । पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरते नहिंटारतअंशुकमलबासुकीअजितआज्ञाअनुवर्ती। करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिता अगरएकरसभजनरत। उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तन श्याम हैं बाकचलन विष खान ॥ तुलसी गुरुके संचपै शीघ्र समर्पत आनि १ अनंत कीरति ॥ कवित्त ॥ दीननि कोहै दयाल दासनिको रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है। धन धन हीन को है गुननि गुनीनको है रूपहै बिरूप को अनूप है उदार है। आनंद कोकंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदको हरण हार महिमा अपार है॥ श्रीगुबिंद हरिजू के नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है २ ॥ दोहा॥ मैं मानस सोचित्त ते लनदीनो रविसो॥ मैंआवा जावा निस मैंतू नजरिन आवदा २ ॥

चौबीसप्रथमहरिबपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट। श्रीरामानुजउदारसुधानिधिअवनिकल्पतरु। विष्णुस्वामिवोहित्यसिंधुसंसारपारकर ॥माध्वाचारजमेधभक्तिसर ऊसरभरिया। निंबादित्यआदित्यकुहरअज्ञानजुहरिया। जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापीअघट । चौबीसप्रथमहरिबपुधरेत्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट २८ ॥

चौवीस ॥ एकादशे॥कृतादिषुप्रजाराजन्कलाबिंछतिसंभवं॥कलौखलुभविष्यंतिनारायणपरायणः१गीतायां ॥ परित्राणायसाधूनांबिनाशायचदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय

संवत्सरोत्सवयुगे २ ननु भागवतालोकेलोक तत्वविचक्षणाः
भजन्तिसर्वसंदिष्टाहृदिस्थितेनभक्तात्मना ३ भगवानेवभू-
तानांसर्वचक्रपथाहरिः ॥ स्वधर्मायचरेलोकान्भक्तरूपेण
नारद ४ ॥ आदि पुराणे ॥ भक्तानन्नेवसर्वब्रह्मासिरस्थैववसा
म्यहं॥नाम्नैवयशकराद्देवः पदेगंधर्वकिन्नराः ५ ॥ दोहा ॥
दंभ सहित कलिधर्म लखि छलहि सहित व्यौहार ॥ स्वा
रथ सहित सनेह सब रुचै न उचितआचार ६ ॥ श्लोक ॥ घो-
रेकलियुगेप्राप्तेसर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपराभक्तास्तेकृ-
तार्थानसंशयः ७ कलियुगप्रगट॥छप्पै॥दयास्वर्ग उठि गई धर्म
धँसिगयो धरणिमें। पुण्य गयो पाताल पाप भयो बरण ब-
रण में। प्रीति रीति सब गई बैर भयो घर घर भारी॥
आप आपनी परी जितै जगमें नरनारी। कविराज कहत
सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो॥रैनर निरंध सुनि
कान दै अब प्रतच्छकलियुग भयो ८॥ दोहा॥ कलियुग
काल कराल की बरणिनजाइ अनीति। बैर बड्योचारयौ
बरन आप समय भयभीत ९ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडधा
मन्योतोकरिआयेहैं । पाककोअबारभईसंध्यामानिलईज
तीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं । आंगनमेंनीमतापैआ-
दित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिन्हपायेहैं।
प्रगटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजगदावयावनामपर्यो
हर्योमनगायेहैं १०५ दोहा ॥ रमापद्धितरामनुज राजै
विष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकर
गुरुमुखचारि ३०॥मूल॥संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्यो
भक्तवितान ।विष्वक्सेनमुनिवर्य्य सपुनषटकोपपुनीता
चोपदेवभागौतलुप्तउद्धर्योनवनीता। मंगलमुनिश्रीनाथ
पुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्ररसरासप्रगटपरतापपरां

कुश। यामुनिमुनिरामानुजतिमिरहरणउदयभान। सं प्रदायशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवित्तान ३१॥ मूल॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नकियो। गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचार्‌यो। सूतेनरपरेजागवहत्तरश्रवणनिधार्‌यो। तिननेंईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारीन्यारी। कुरतारकशिष्यप्रथमभक्तिवपुमंगलकारी। कृपणपालक रुणासमुद्ररामनुजसमनहिंबियोसह ३२

बेदबचन॥ भागवते॥ संध्याकालेचसंप्राप्तेकर्मचत्वारिबर्जयेत्॥ आहारंमैथुनंनिद्रांस्वाध्यायंचविशेषत:१ आहारेजायतेव्याधि: गर्भदुष्टंचमैथुने॥ निद्रायां हरतेलक्ष्मीस्वाध्याये मरणंध्रुवं२ आदित्यदिवायो॥समये॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वैं गुणास्तत्र समासतेसुरा॥ हरावभक्तस्यकुतो महद्गुणा: मनोरथेनासतिधावतोबहि: ३॥ एसा पद्मिति॥ पाद्मे॥ कलौखलुभविष्यंतिचत्वार:संप्रदायका:॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकाद्यावैष्णवाक्षितिपावन: ४॥

टीका॥ आस्यसोबदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोंवहीसुधिआईहैं। गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखौअंत्रजपतहीश्यामजूनेमूरतिदिखाईहै। करुणानिधानकही सबभगवानपावै चढ़िदरवाजेसोपुकार्‌योधुनिछाईहै। सुनिसीखिलियोयों बहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौज यहरीतिलैहैगाईहै १०६॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूके देखिबेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं। संगलैहजारशिष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं। बोलेप्रभुवेईआवैं करैअंगीकार मैंतोप्यारहीकोलेतकभूंऔगुणनलियेहैं। तऊदृढ़कीनीफिरकहीनहींकानकीनं

संप्लवासियुगेयुगे २ ननुभागवतालोकेलोक तत्वविचक्षणाः भजन्तिसर्वेसंदिष्टाहृदिस्थितेनमहात्मना ३ भगवानेवभूतानांसर्वेषक्षपयाहरिः ॥ रक्षणायचरेल्लोकान्भक्तरूपेण नारद ४ ॥ आदि पुराणे ॥ भक्तानेवसेवस्वासिरस्येववसाम्यहं॥नाशौचप्रकराद्देवः पदेगंधर्वकिन्नराः ५ ॥ दोहा ॥ दंभ सहित कलिधर्म लखि छलहि सहित व्यौहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब रुचैअचितआचार ६ ॥ श्लोक ॥ घोरेकलियुगेप्राप्तेसर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपराभक्तास्तेकृतार्थानसंशयः७कलियुगप्रगट॥छप्पै॥दयास्वर्ग उठि गई धर्म धँसिगयो धरणिमें। पुण्य गयो पाताल पाप भयो बरण बरण में। प्रीति रीति सब गई बैर भयो घर घर भारी ॥ आप आपनो परी जिते जगमें नरनारी। कविराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो ॥ रैनर निरंध सुनि कान दै अब प्रतक्षकलियुग भयो ८॥ दोहा॥ कलियुग काल कराल की बरणिनजाइ अनीति। बैर बढ्योचारयौ वरन आप समय भयभीत ९ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडया मन्योतोकेरिआयेहैं। पाककोअबारभईसंध्यामानिलईज तीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं। आंगनमेंनीमतापैआदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिन्हपायेहैं। प्रगटप्रभावदेखिजान्यो भक्तिभावजगदावयावनामपर्यो हर्योमनगायेहैं १०५ दोहा ॥ रमापद्धितरामनुज राजै विष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकर गुरुमुखचारि३०॥मूल॥ संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्यो भक्तवित्तान ।विष्वक्सेनमुनिवर्य्य सपुनषटको पपुनीता चोपदेवभागौतलुप्तउद्धर्यानवनीता। मंगलमुनिश्रीनाथ पुंडरीकाक्षपरमयश। रामसिश्ररसरासप्रगटपरतापपरां

कुश। यामुनिमुनिरामानुजतिमिरहरणउदयभान । संप्रदायशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवितान ३१ ॥ मूल॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नकियो।गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचारयो । सूतेनरपरेजागवहत्तरश्रवणनिधारयो । तिननेईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारीन्यारी । कुरतारकशिष्यप्रथमभक्तिवपुमंगलकारी । कृपणपालकरुणासमुद्ररामनुजसमनहिंवियोसह ३२

वेदवचन ॥ भागवते॥ संध्याकालेचसंप्राप्तेकर्मचत्वारिवर्जयेत् ॥ आहारंमैथुनंनिद्रांस्वाध्यायंचविशेषतः१ आहाराज्जायतेव्याधिः गर्भदुष्टंचमैथुने ॥निद्रायां हरतेलक्ष्मीस्वाध्याये मरणंध्रुवं२आदित्यदिखायो॥समये॥यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वैं गुणास्तत्र समासतेसुरा॥ हरावभक्तस्यकुतोमहद्गुणः मनोरथेनासतिधावतोबहिः ३ ॥ रमा पद्मेति ॥ पाद्मे ॥ कलौखलुभविष्यंतिचत्वारःसंप्रदायकाः ॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकाद्यावैष्णवाक्षितिपावनः ४ ॥

टीका॥ आस्यसोवदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोंवहीसुधिआईहैं। गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखोअंत्रजपतहीश्यामजूनेमूरतिदिखाईहै। करुणानिधानकहीसबभगवानपावैं चढ़िदरवाजेसोपुकार्योधुनिछाईहै। सुनिसीखिलियोयों बहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयहरीतिलैहैंगाईहै १०६॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूकेदेखिबेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं। संगलैहजारशिष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैंहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं। बोलेप्रभुवेईआवैं करेअंगीकार मैंतोप्यारहीकोलेतकभूंऔगुणनलियेहैं । तऊदृढकीनीफिरकहीनहींकानकीनी

लीनीवेदवाणीविधिकैसेजातछियेहैं १०७॥ जोरावरभक्त सोंबसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमनचोजदरशायोहै। गरुड़कोआज्ञादर्शसोईमानिलईउनशिष्यनिसमेतनिजदेश छोंड़िआयोहै। जागिकैनिहारैठौरऔरहीमगनभरो दये योंप्रगटकरगूढ़भावपायोहै। वेईसबसेवाकरैं श्याममनहरैं सदाधरैंसांचोप्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै १०८॥

मूरति दिखाई है॥यहतोबड़ोआश्चर्य्यहै तत्काल मूर्ति कैसेदेखी तीन बस्तु शुद्धहोंहितौ खेत में बीजऊगै॥ बीज घुनौं भूनो न होइ खेतकरवंजर न होइ किशान को भाग होइ चेला निर्वासक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासक यह बीजशुद्ध गुरुकेभाग॥ दोहा॥गुरुलोभी शिष्य लालची दोऊखेलैं दाव॥ दोऊबूड़ै बापुरे चढ़िपाथरकी नाव १ पाथरकी नावपै मल्लाहू बूड़ै चढन हारोहू बूड़ै सबभग- वान पावै तापै कठारीजू वाको दृष्टांत॥ श्लोक॥अपिचेति दुराचारोभजतेमामनन्यभाक॥ साधुरेवसमंतव्यसम्यग्व्य वसितोहिसः २ ॥

मूल॥चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबैरहैं। श्रुति प्रज्ञाश्रुतिदेवऋषपवपुहकरइभऐसे। श्रुतिधामाश्रुतिउ दधिपराजितवामनजैसे।श्रीरामानुजगुरुबंधुविदितजगमं गलकारी। शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी।इंद्रा पद्धितउदारधीसभासापिसारगकहैं। चतुरमहंतदिग्गज चतुरभक्तिभूमिदाबैरहैं ३२॥ आचारजजामातकीकथा सुनतहरिहोइरति कोऊमालाधारीमृतक बह्योसरितामें आयो। दाहकृत्यज्योंबंधुन्योंतिसबकुटुंबबुलायो नाक सकोचैंविप्रतबहरि पुरतेहरिजनआये। जेंवतदेखेसबनि

जातकोहूनहिंपाये। लालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईमहिमा जगत।श्रीश्राचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइरति३३

टीका॥श्राचारजकोजामातबाततासुनौंनीकिपायो उपदेशसंतबंधुकरमानिये। कीजैकोटगुणीप्रीत श्रैपैनबनतरीतितातेंइतिकरौयातेंघटतीनश्रानिये। मालाधारीतनसाधुसरितामेंबह्योश्रायोलायोघरफेरके विमानसबजानिये॥ गावतबजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदुखपायोसुखपायोसमाधानिये १०६॥

चतुरमहंत॥श्लोक॥ श्रद्यापिनोझतिहर:किलकालकूटं कूर्म्मोबिभर्तिधरणींखलुपृष्ठभागे॥ श्रंभोनिधिर्वहतिदु:सहवाडवाग्नोमंगीकृतंसुकृतिन:परिपालयंति१लालाचार्य्यपै स्कंधे।तुलसीकाष्ट जामालांकंठस्यावहतेतुय: अशौचप्रचाप्यनाचारोमामेवैतिनसंशय: १ केशरि कश्मीरमेंहोइ है सोराजाजैसिंहसवाई नेश्रमेरमेंलगाई सोनहींभई तबपूंछी काहेते न भई महाराज जल श्रावै तौहोइ जहां जलहू मगायो तऊ न भई महाराज माटी श्रावै तौहोइ माटीहू श्राई तऊना भई महाराज हवाश्रावै तौहोइ जैसेही प्रेम हृदयतेउपजे खैंचेते न श्रावै ३॥

कियोसोमहोछोज्ञाति विप्रनिकोन्योतोदियोलियोश्रायेनाहिंश्रानीशंकादुखदाहिये। भयेइकठौरेमायाकीनेसब बौरेकछूकहैबातश्रौरैमरोदेहवहीश्राहिहै। यातेनहींखात वाकीजानतनजातिपांति बड़ोउतपातघरलाइजाइदाहिये। मगश्रवलोकउतपरयोसुनशोचहिये जियेश्राइपूंछे गुरुकैसेकैनिवाहिये १२०॥ चलेश्रीश्राचार्य्यजूपैवारिजबदनदेखिकरीशाष्टांगबातकहीसोजनाइये। जावोजूनि

शंकवेप्रसादकोनजानेरंक जानैंजेप्रभावत्र्प्रावैवेगिसुखदा इये । देखेनभमूमिद्वारत्र्प्रैहैनिरधारजन वैकुंठनिवासी पांतिढिगह्वैकैत्र्प्राइये । इन्हेंत्र्प्रबजानदेवोजिनकछूकहौ त्र्प्रहौकरौ हांसिजबैघरजाइनिजपाइयो १२१ ॥

आयेनाहिं ॥आगमे॥ मालाधारकमाचोपि वैष्णवोभक्तिवर्जिताः । पूजनीयंप्रयत्नेन ब्रह्मणाकिंतुमानुषैः १ प्रसादकोनजानैरंक॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादे गोविंदेनाम्निब्राह्मणवैष्णवे॥स्वल्पपुण्यवतांराजन् विश्वासोनैवजायते २ घरजाइखाइये॥ प्रतिमासंचतीर्थेषु भेषजेवैष्णवेगुरौ॥ यादृशीभावनायस्य सिद्धिर्भवतितादृशी ३ कवित्त ॥ मल्लजानैकुलिश नरेशनरजानैंपुनि नारीजानैंमीनकेतमूरतिरसालहै। गोपजानैंस्वजन मद्दीपजानैंदंडदेन यादवयौंजानैंइष्टदेवताकृपालहै। अज्ञानीविराटजानैं गोपीपरतत्त्वजानैं रंगभूमिरामकृष्णगयेऐसेहालहै। नंदजानैंबालकगुविंदप्रतिपालजानैं शालमचुवंशजानैं कंसजानैंकालहै २ ॥

आयेदेखिपारषदगयोगिरिभूमिसद हदकरीकृपायह जानिनिजजनको । पायोलैप्रसादस्वादकहित्र्प्रहलाधदयो नयोलयोमोदजान्योसांचोसंतपनको । विदाह्वैपभरेनभमगमेंसिधारे विप्रदेखतविचारेद्वारठ्यथाभईमनको। गयोत्र्प्रभिमानत्र्प्रातमंदिरमगनभये नयेढगलाजबीनबीनिलैतकनको १२२ ॥ पाइलपटाइत्र्प्रंगधूरिमेंलुटाये कहैंकरौमनभायोत्र्प्रौरदीनबहुभाष्योहै । कहीभक्तराजतुमकृपामेंसमाजपायो गायोजोपुराननमेंरूपनैनचाष्योहै । छांड़ोउपहासत्र्प्रबकरौनिजदासहमैं पूजीजियत्र्प्रासमनत्र्प्रतित्र्प्रभिलाष्योहै । कियेयेप्रशंसमानौहंसयेपरमकोऊ त्र्प्रैसे

सेजसलाखभांतिघरघरराख्योहै १२३ मूल॥ श्रीमारग
उपदेशकृतिश्रवणसुनौश्रख्यानशुचि गुरुगमनकियोपर
देशशिष्यसुरधुनीदृढ़ाई। इकमंजनइकपानएकहृदयबंदना
कराई। गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो। विष्णुप
दीभयजानिकमलपत्रनपरधायो। पादपदमतादिनप्रगट
सबैप्रसन्नमनपरमरुचि। श्रीमारगउपदेशकृति श्रवण
सुनौश्रख्यानशुचि ३५॥

गयोगिरिभूमिपद। संतचरणपरशीशधर्यो। राखिलियो
बहुभांतिकृपाकरि मनतेसंशयमूलहर्यो। हमरेश्रौगुणमेटि
दूरिघटमैंहरिरसञ्चतभर्यो। कीटभृंगज्योंमृतकजिवायो
जीवकागतेहंसकर्यो॥ दूरिकियाअज्ञानअँधेरो ज्ञानर
तनजबदीपबर्यो। हरिहिदियाइकियोहरिहीसो इहि
सुखगायादुरिततर्यो। प्रभुवशभयेसाधुकीसेवा साधुसंगते
काजसर्यो। रामदासकेहितभगवानै साधुसंगकोश्रमल
पर्यो १॥

टीका॥देवधुनीतीरसोकुटीरबहुसाधुरहैं रहैगुरु भक्त
एकन्यारोनहींह्वैसकै। चलेप्रभुगांवजिनितजोबलिजांव
कही करौदाससेवागंगामेंहींकैसेह्वैसकै। क्रियासबकूप
करैंविष्णुपदीध्यानधरै रोषभरेसंतश्रेणीभावनहिंभैसकै।
आयेईशजानिदुखमानिसोबखानिकियो आनिमनजानि
बातअंगकैसेध्वैसकै ११४ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश
कियो रंगभरिबोलेसोअँगोछाबेगिलाइये। करतबिचार
शोचसागरनवारापार गंगाजूप्रगटकह्योकंजनपरआइये।
चलेईअधरपगधरैसोमधुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीर

भीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइलपटाइगये बड़ोपर-तापयहनिशिदिनगाइये ११५॥

देवधुनी कैसी है॥ द्वतीये॥ यावैलसच्छीतुलसी विमिश्रा कृष्णांघ्रिरेणुभ्यधिकांबुनेत्री॥ पुनातिलोकामुभयत्रशेषान् कस्मात्त्रसेवेतमरिष्यमाणः १॥ आदिपुराणे॥ दृष्ट्वाजन्मसतं पापंस्पृष्ट्वाजन्मसतद्वयं॥स्नात्वापीत्वासहस्राणि हंतिगंगा कलौयुगे २ तापैदृष्टांत भूतकोअरुसिद्धको॥ भोदरिद्र न मस्तुभ्यंसिद्धोहंतवदर्शनात्॥ पश्याम्यहंजगत्सर्वंनमांपश्यतिकश्चन ३॥ कवित्त॥ कारौकुलकंटक डरारौ बोलधारो जाको तीरथके तीरपगकबहूंन लैगयो। कहैं कविगंगकारे कागकृते सरसआप आनियमप्रेरो तबखाटमें कुंपैगयो। गंगाजीकी धोई चादरि बकुचामें धरी करीताके अंग लागतही तारागण लैगयो। चाहचौरठौरै सबदेवता नि-हारैं शा गंगाजीकी चादरि सौंचबभुजहै गयो ४॥ ऐसो गंगाको प्रताप ताको क्योंनउठिधाइये ५॥

मूल॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुसर्यो॥देवाचारजद्वितीयमहामहिमाहरियानँद। तस्यराघवानंदभयेभक्तनकोमानद॥ पत्रावलंबपृथिवीकरिकाशी अस्थाई। चारिबरणआश्रमसबहीकोभक्तिदृढ़ाई॥ तिनके रामानंदप्रगटबिश्वमंगलजिहबपुधर्यो। श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसर्यो ३६ श्रीरामानंदरघुनाथज्यों द्वितीयसेतजगतरनकियो॥अनंतानंदकवीरसुखासुरसुरापद्मावतनरहरि।पीपाभावानंदरैदासधनासेनसुरसुरकीधरहरि॥ औरौशिष्यप्रसिष्यएकतेंएकउजागर।विश्वमंगलआधारभक्तिदशधाकेआगर॥ बहुतकालबपुधारिकैप्रणतजननिकोपारदियो।श्रीरामानंदरघुनाथज्यों द्विती

थसेतजगतरक्षाकियो ३७ अनंतानंदपदपरशकैलोकपाल सेतेभये।योगानंदगयेशकरमचंद अल्हपैहारीसारी। राम दासश्रीरंगअवधिगुणमहिमाभारी॥तिनके नरहरिउदित मुदितमोहामंगलतन। रघुबरयदुवरगायबिमलकीरतिसं च्योधन॥हरिभक्तिसिंधुवेलारचैपानिपद्मजाशिरदये। अनं तानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये३८॥

वारिबरस एकादशे॥ मुखबाहूरुपादेभ्यःपुरुषस्याश्रमैः सह। चत्वारोजज्ञिरेवर्णा गुणैर्विप्रादयःपृथक्॥ परावपु रुषंसाक्षादात्मप्रभवमीश्वरं। नभजंत्यवजानंतिस्थानाद्भ्र ष्टाःपतंत्यधः२॥ वारैसिसबेबारैहीसेतरूपीहोतभये॥छप्पै॥ जगतसमुद्र अपारतासकैजेनसमरनतट।कामक्रोधमदलो भता सकलचहरिसैंसडाभट॥ मोहग्राहतम प्रबलनिगलि जावैसीसारा।ताभैंगोताखात नाहिंकोउतनक अधारा॥ दुखपायेबूड़तलेतहैं सुखपायेउछरतजानि। दीनानाथरघु नाथबिन कौनछुटावैआनि ॥

टीका ॥थोसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहै बनिकस रावगीकीकथालैबखानिये। रहलोगुलामगयोधर्मराजधा मवहां भयोबड़ोदूतकहीयेरेसुनिबानिये। आयेबनिजारे लैनदेखितदिखावैचैन बैलश्रृङ्गमध्यपैठिनार्योपहिंचानि ये।बिनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीतिभयोहरिभक्तिश्री अनंतपदध्यानिये१२६ सुतकोदिखाइदेतभूतनितसूक्यो जातपूछैंकहीबालतनबाहीठौरखायोहै।आयोनिशिमारबे कोधायोयहरोषभर्यो देवोगतिमोको उनबोलिकैसुना योहै। जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशर णमें ढूंढ़जगपायोहै ।दीनोंचरणामृतलैकियोदिव्यरूप

वाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायोहै १२७॥ मूल॥
निर्वेदअवधिकलि कृष्णदासअन्नपरिहरियपयानकियो।
जाकेशिरकरधर्योतासुकरतरनहिंआड्यो। अर्प्योपदनि-
र्वाणशोचनिर्भयकरिछांड्यो। तेजपुंजबलभजनमहामुनि
ऊरधरेता। सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता। दाहि
नावंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदियो। निर्वेदअव
धिकलिकृष्णदासअन्नपरहरियपयानकियो १६॥

धर्मराजधाम॥ सवैया॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि
सोवतके गठिया सरकावैं। घटकान करैं परकोधन चोरत
हौरत चौरके शोरसुनावैं। हमही शिर भूत चढ़ाइसुजाइ
कै पाइधुवाइकै प्याइछुड़ावैं। याहीते नाथ बरोबरिहौ
कछुधर्मअधर्मकीबातचलावैं १ चरणामृत॥ पाद्मे॥ गंगासा-
गरसहस्राणिद्वारकायां सतैरपि॥ एवंतीर्थाधिकंपुत्रयंस
तांपादोदकंपिवेत् २ शिरकरधर्यो॥ स्वाने॥ गुकारारंध
कारस्तुउकारोस्मैविनाशकृत्॥ अंधकारविनाशत्वगुरुरि
त्यभिधीयते ३॥

टीका॥जाकेशिरकरधर्यो तातरनओड्यो।हाथदीनोव
ड़ोबरराजाकुल्हकोजुसाखिये। परबतकंदरामेंदरशनदी-
न्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये। गिरीजो
जलेबीथारमांझतेउठाइबाल भयोहियेशालबिन अरपित
चाखिये। लैकरिखड़्गताहि मारणउपाइकियो जियोसं
तओटफिरमौलकरिराखिये १८ नृपसुतभक्तबड़ोअबलौं
बिराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानिये। संतबधूग
र्भदेखिउभयपनवारेदियेकहीगर्भइष्टमेरोऐसीउर आनिये
कोऊभेषधारीसोड्योहारीपगदासनकोकहीकृपाकरोकहा

जानेऔरआनिये। ऐपैंतजिनोक्रियादेखिजगबुरोहोत जो तिवहुदईदासरामम्तिसानिये ११६ ॥ मूल ॥ पैहारीप रसादते शिष्यसबैभयोपारकर।कील्ह अगरकेवलचरणव्र तहठीनरायन। सूरजपुरषापृथुतपूरहदिभक्तपरायन। प द्मनाभगोपालटेकटीलागदाधारी। देवाहेमकल्याणगंगा गंगासमनारी। विष्णुदासकन्हररंगाचांदमशिवरीगो विंदपर। पैहारीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितंतुगोविंदे भोजनंकुरुते यदि ॥ श्वानोविष्टासमंयान्नतोयंचसुरपासमं १ भागवते ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यन्तिवैगृहाः किंपुनःदर्शनस्प- र्शपादशौचासनादिभिः २ आगमे ॥ मालाधारकमाचोपि वैष्णवोभक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयंप्रयत्नेनब्राह्मणाकिंतुमानुषैः३ मालातिलकसंचिन्हैसयुक्तोयःप्रदस्यते ॥ चांडालोपिमही पालपूजनीयोनसंशयः ४ साधुकेगुणअवगुणककूनदेखैभगव तस्वरूपजानै ५ ॥

गांगेयमृत्युगंज्योनहीं त्योंकोल्हकरणनहिंकालबश। रामचरणचितवनरहतनिशिदिनलौलागी। सर्वभूतशिर नमितसूरभजनानँदभागी। सांष्ययोगमतिसुदृढ़कियो अनुभवहस्तामल। ब्रह्मरंध्रकरिगोनभयेहरितनकरणीब ल। सुमेरदेवसुतजगबिदित भुवविस्तार्योबिमलयश। गांगेयमृत्युगंज्योनहींत्योंकील्हकरणनहिंकालबश ४१

टीका सुमेरदेवकी ॥ श्रीसुमेरदेवपितासूबेगुजरातहुतेभये तनपातसोबिमानचढ़िचलेहैं। बैठेमधुपुरीकोमानसिंहरा- जाढिगदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं। पूछैनृपबोलेका सोंकैसेकैप्रकाशोंकहोंकह्योहठपरंसुनअचरजरलेहैं। मान

सपठायेसुधिलायेसांचआंचलागी करोशाष्टांगबातमानी भागफलेहैं ११६ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनबातसु नियेनवीनचाहैरामसेवाकीजिये । धरीहीपिटारेफूलमा लहाथडारयो तहांब्यालकरकाढ्योकह्योफेरिंकाढ़िलीजि ये । ऐसेहीकटायोबारतीनिहुलशायोहियोकियोनप्रभाव नेकसदारसपीजिये । करिकैसमाजसाधु मध्ययोबिराज-मान तजेदशैंद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये १२० ॥

चितवनि॥ दशमे॥मर्त्यौमृत्युव्यालभीतः पलायन्लोकान् सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत्। त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्य स्वस्थःशेरस्मादपैति ॥ सप्तमे ॥ तस्माद्भ्रमोरोगबिषादमन्यु मानस्पृहाभयदैन्याधिमूलं ॥ हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंन सिंहपादं भजताकुतोभयं ३ ज्ञानवैराग्ययुक्तेन भक्तियोगे नयोगिनः क्षेमायपादमूलंमे प्रविश्यंतिकुतोभयं३ ॥ दोहा॥ मारियेमरिजाइये कूटिपरैसंसार । अहमदमरनोकोवदै दिनमेंसौसौबार ४ तापैदृष्टांतराजाके गुलाम ने विषकी गोलीखाई सोमरेउ नहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंबि तयो । सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमि-रणसावधानचरणराघवचितलाये । प्रसिद्धबागसोंप्रीति सुहथकृतकरतनिरंतर । रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधारा धर । श्रीकृष्णदासकृपाकरीभक्तदत्त मनबचक्रमकरिअट लदियो । श्रीअग्रदासहरिभजनबिनकालवृथानहिंबित्त यो ४२टीकाअग्रदासजीकी॥ दरशनकाजमहाराजमान सिंहआयोछायोबागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं । झारिकैप तौवागयेबाहिरलैडारिबेको देखीभीरभाररहेबैठियेरसा

लहैं॥ आयेदेखिनाभाजूनेउठिशाष्टांगकरी भरीजलआरैं चले अँशुवनिजालहैं। राजामगचाहहारिआनिकैंनिहारे नैंतजानीआपजातीभयेदासनिदयालहैं१२१॥

काल हुयानहिं बित्तयो॥ कुण्डलिया॥ आगिलगं तेझोपरा जोनिकसै सोलाभ। जोनिकसै सोलाभदेखि मानुषतनथोरी। जैलोषेकी श्वासजातआवत न वहोरी ज्योंकरअंजलि माहिं घटतजल थिर न रहाई। करिआर तहरभजनसाधिकायावथगाई। अगरकहांलगिथेगरीदीजै फाटेआभ। आगि लगंतेझोपरा जोनिकसै सोलाभ १ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनहींमें लगेरहैं सोतो कालदो नोहींको गयो अभजनीहूं को और भजनीहूं को गयो हाथ तौकाहूके न आयो एक ब्राह्मणने रुपइयासाधुनको खवायो एकके गैलमें लटिलि येऐसे एक कोतो माल ठि- कानेगयोएक को हुयाही गयो ऐसेअग्रदास जीको माल ठिकानेजाय जैसेनाव बहुत भरीतो बूड़िही जाइ थोरी भरीहोइतो पारलगिजाइ ऐसेही ब्योहारीथोरो ब्यो- हार करेतो हरिको भजनकरि पार उतरि जाइ बहुत करेतो संसारमेंबूड़िजाइ २॥

मूल॥कलियुगधर्मपालकप्रगटेआचारजशंकरसुभट। उतश्टंषलअज्ञानजितेअनईश्वरबादी। वौधकुत्तर्कीजैनऔ रपाषंडहैआदी॥बिमुखनिकोदियो दंडऐंचिसनमारगआ नैं। सदाचारकीसीवबिश्वकीरतिहिंबखानैं ईश्वरअंशअ वतारमहिमर्य्यादामाड़ीअघट। कलियुगधर्मपालकप्रगट आचारजशंकरसुभट ४३॥ टीका संकराचार्यकी॥ बिमु खसमूहलैकैकियेसनमुख श्यामअतिअभिरामलीलाजग बिस्तारीहै। सेवराप्रबलवासेकेवराज्योंफैलिरहेगहेनहीं

जाहिवादीशुचिबातधारीहै। तजिकैशरीरकान्हनृपमेंप्र
वेशकियो दियोकरिग्रंथमोहमुन्दरसुभारीहै। शिष्यनि
सोंकह्योकभूंदेहमेंप्रवेशजानों तबहींबखानोंआनिसुनि
कीजैन्यारीहै १२२ जानिकैप्रवेशतनशिष्यनेप्रवेशकि
योरावलेमेंदेखिसोंश्लोकलै उचार्योहै। सुनतहीतज्योत
ननिजतनआइलियोकियोसोप्रनामदासपनपूरोपार्योहै।
सेवराहरायेवादीआयेनृपपासऊंचीछातिपरबैठिएकमाया
फंददार्योहै। जलचढ़िआयोनावभावलैदिखायोकहेंचढ़ो
नहींबूड़ोआपकौतुकसोंधार्योहै १२३॥

कलियुग धर्म॥ एकादशे॥ कृतेयध्यायतेविष्णुःत्रेतायांय
जतोमखैः॥ द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्त्तनात् १ ह
रेर्नामैवनामैवनामैवममजीवनं॥ कलौनास्त्येवनास्त्येवना
स्त्येवगतिरन्यथा २ प्राप्तेसन्निहितेनहिंनहिरक्षे नहिनहि
रक्षतिडुकृञ्करणे॥ भजगोविंदंभजगोविंदंगोविंदंभजमूढ़
मते ३ भिंगारशुचिउज्वलहृत्यमरः ४ नलिनीदलगतिजल
वततरलं। तद्वतजीवनमतिशयचपलं॥ क्षणमपिसज्जनसंग
तिरेका। भवतिभवार्णवतरणेनौका ५॥ कुण्डलिया॥ मी
या घरानि कासियेतरकसकहा धरौं। तरकसकहांधरौं
प्रथम जीवननिर्णय करि॥ पलकमाहिं प्रस्थानजीव पुनि
चलिहै परिहरि। द्यावतगहरी नींव सदन नोहराव
गीचा॥अस्व गजरथ परवानकोक ऊंचाअरुनीचा। अगर
डरत ते मृत्युते तिन ते अधिक डरौं। मीया घरानिकासि
योतर्क०॥

आचारजकहीयों चढ़ावोइनसेवरानिराजानैंचढ़ायेगि
रिदकउडिगयेहैं।तबतौप्रसन्ननृपपाइंपर्योभावभर्योक
ह्योजोइकह्योधर्मभागवतलयेहैं। भक्तिहीप्रवारपाछेमा-

यावादडारिदीनोंकोनोंप्रभुकह्योकितेबिमुखहूभयेहैं। ऐसे सोगम्भीरसंतधीरवहरीतिजानेंप्रीतिहीमेंसानेहरिरूपगुणनयेहैं १२४ ॥ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी। बालदशाबीठलयपानजाकेपयपीयो। मृतकगऊजिवाइपरचोअसुरनिकोदीयो। सेजसलिलतेकाढ़िपहलेजैसीहिहोती। देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसबहीसोती। पंडुरनाथकृतिअनुगत्योंछानिसुकरछाईदासकी। नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी४२॥

कीनो प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौयुगेभूत्वा कलया मानुषादिषु। स्वागमैःकल्पितैस्त्वंहिजनानमद्विमुखान्कुरु १ आससोगंभीर ॥ नमस्ते कमलनाभाय वासुदेवप्रभो तिभवारेमुरारे मुकुंद ॥ नमस्तुभ्यमितपालयंतमुदासांकुरुश्रीपते त्वत्पदांभोजभृंगं २ ॥ प्रतिज्ञापद ॥ आये मेरे अंधेरे घरकी मद-नराइ। चाकी चाटैं चूनखाइ ॥ तुरु गुरु गरूग प्रभुजूकी चालि। पूंछहलै ज्यौं नौकी बालि ॥ चूल्है माहिं जुप्रभु जूकी सेज। छीकेकीनो अधिकै तेज ॥ कातिक मेंजु प्रभु जी को भोग। लैलै लकुट खिजावैं लोग। तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि बन्यो संयोग २ परना पतिके चित न्हीं चढ़ै। संजारी के पुत्र अवां में उबारैं ॥ आचलगैनत-पै तन बासन। राखिलये हरिनैं विश्वासन ३ ॥

टीका नामदेवजूकी॥ छीपावामदेवहरिदेवजूकोभक्तबड़ोताकीएकबेटीपतिहीनभईजानिये। द्वादशबरषमांझभयोतबकहीपितासेवासावधानमननीकेकरिआनिये। तेरेजेमनोरथहैंपूरणकरनयेईजोपैदत्तचित्तह्वैकै मेरीबातमानिये। करतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामबासना

सुपोषीउनमानिये १२५ बिंधवाकोगर्भताकीबातठौरठौर चलीदुष्टशिरमौरनिकीभईमनभाइये । चलतचलतबाम देवजूकेकानपरीकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये । भयोजू प्रगटबालनामनामदेवधरयोकरयोमनभायो सबसंपति लुटाइये। दिनदिनबढ्योकछूऔरैरंगचढ्योभक्तिभावअंग मढ्योकढ्योरूपसुखदाइये १२६ खेलतखिलौनाप्रीति रीतिसबसेवाहीकी पटपहरावैंपुनिभोगकोलगावहीं । घं- टालैबजावैंनीकेध्यानमनलावैं त्योंत्योंअतिसुखपावैंनैननी रभरिआवहीं । बारबारकहैंनामदेवबामदेवजूसोंदेवोमो- हिंसेवामांझअतिहीसुहावहीं । जाऊंएकगांवफिरिआंवो दिनतीनमध्यदूधकोनिवावोंमतिपोबोमोहिंभावहीं १२७॥

बिपति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैंबिपति छोटेदुखतेदूरि। तारेन्यारेह्वैरहै गहतसंद अवसूर ॥ १ ॥ कामबासना ॥ द्वितीयेअकामः सर्वकामोवा मोचकामउदारधीः। तीव्रेण भक्तियोगेन भजेतपुरुषंपरं ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्पै ॥ क- ठिन प्रीतिकोरीति कठिन तनमन बशकरिबो । कठिनहै कर्मनिकंद कठिनभवसागर तरिबो । कठिनसंकटमेंदान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिनमन मारनममता । बचनमिबाह्न अतिकठिन निधननेहपालन कठिन । मुनिईश्वरसिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन ॥ ३ ॥

कौनवहवेरजिहिबेरदिनफेरिहोइफेरिफेरिकहैं वहोबे- रनहींआइहै । आईवहबेरलैकराहीमांझहेरिदूधडारयो युगसेरमननीकेकैबनाइये । चौंपनिकेंढेरलागीनिपटऔसे रढगआयोनीरघेरिजिनिगिरघूंटिजाइये । माताकहैंटेर

करीबड़ीतेअबेरअबकरौमतिझेरअजूचित्तदैऔटाइये१२८ चल्योप्रभुरासलैकटोराछबिरासितामेंदूधसोसु बासमध्य मिश्रीमिलाइये। हियमैंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐसेक-रैजोपैदासमोहिंमहासुखदाइये। देख्यौमृदुहासकोटि चांदनीकोभासकियोभावकोप्रकाशमतिअतिसरसाइये। प्याइबेकीआशकरिओटकछुभरयोश्वास देखिकैनिराश कह्योपीवौजूअघाइये १२९ ॥

फेरिकेरि॥ कवित्त॥ दिनतोनघटत औ घटत प्राणपल पल लाखमुखचंदको विरोधी पलनाटरै। कबकोनिहारि रही रविनतजतठौर बीतेयुगकोटि तऊनेकहू नहींटरै॥ तूतोरी कहतप्रयास रजनी मिलायदैहौं सिखिबो न मेरे बांट सखिबोझलैधरै। जानिपरिबरनिवानादूजो विधि ने जुकेरिमनआइ मेरे रातिदिनकोकरै १॥ चौपाई॥ कुंवरिकहै सखिया अधिराजै। राऊराउ क्योंगिलिगिलि छाजै॥ सखिकहैराऊअजतबपियो। तेरेकंत खंडीविधि कियो॥ उदरमहीं तौनैयहंपचै। निकसिनिकसि बिरही जनतचै॥ कुंवरिकहै होउखंडनिमाहीं। जराआनिकिनि लेऊजुराहीं २॥ दोहा॥ कैअहरनि परघरिसुकरसुकर लोहघनलेऊ। जबहींआनिपरैतहीं तबहीं ता शिरदेऊ ३ कौनदिवसआयोहैसजनी। इंदुअनलबरषैहैरजनी॥ भलो करैजो यादिनमाहीं। प्राणपियारो आवैनाहीं ४॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहिये बातगोइरह्योनिशिसोइये पैनींदनहींआवही। भयोजूसवारौफेरिवैसेहीसुधारिलियो हियोकियोगाढ़ौजाइधरयोपीवौभावही। बारबारपीयोक हुंअबतुमपीवोनाहिंआवैभोरनानागरैछुरीदैदिखावही। ग हिलियाकरजिनिकरिऐसीपीवौमैंतो पीवैकोलगईनेकरा

खोसदापावही १३० आयेबामदेवपाछेपूछैनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाषिये। मोसोंनपिछानिदिन दोइहानिभईतब मानिडरप्रानतज्योंचाहौंअभिलाषिये। पियौसुखदियोजबनेकुराखिलियो मैं तौजियोसुनिबातैक हीप्यायोकौनसाखिये। धर्योपैनपीवैअर्योप्यायौसुख पायोनानायामेंलैदिखायौभक्तबशरसचाखिये १३१॥

सदापावही तबतौ भगवानने हंसिदियो॥भागवते॥ न देवोविद्यतेकाष्ठे नपाषाणेनमृण्मये। देवोहिविद्यतेभा-वात्तस्माद्भावोहिकारणं १ प्रतिमासंचतीर्थेषु भेषजे वैष्णवेगुरौ। यादृशीभावनायस्य सिद्धिर्भवतितादृशी २ जिवाइगाइ॥ पद॥ विनतीसुनु जगदीशमुरारी॥ तेरोदास आसमोहिंतेरी हूतकरोकानमुरारी। दीनानाथदीनह्वै टेरत गाइहि क्योंनहिं ज्यावो। आछेसबै अंगहैयाके मेरे यशहिबढ़ावो। आजहुं याकेकर्मभमेनहिं जीवनलिख्योवि-धाता। तौनामदेवकी आयुर्दासों छांडुतुमहिं प्रभुदाता॥ ३ भक्तबच्छलभगवानहैं दृष्टांतव्यासको॥ शिशुशुकजबव्या-सजी लैगये तबभर्यो॥ वेदशास्त्रप्रमाणंतुनकरोत्यधमोनरः। अज्ञानीयमसङ्गाहीनरकंयातिनित्यशः ४॥

नृपसोंमलेक्षबोलिकहीमिलसाहिबकोदीजियेमिलाइ करामातिदिखराइये। होइकरामातितोपैकाहेकोकसबकरै भरैदिनऐसेबांटिसंतनिसोंखाइये। ताहीकेप्रतापआपइ-हांलोबुलायेहमें दीजियेजिवायगाइघरचलिजाइये। दै लैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुखपाइपाइपरोमन भाइये १३२ लेवोदेशगांवयातेमेरोकछूनामहोइचाहिये नकछूदईसेजमणिमईहै। धरिलईशीशदेउसंगदशबीसनर

नाहींकरआयेजलमांझडारिदईहै । भूपसुनिचौंकिपर्यो लावोफेरिआयेकहौ कहीनेकुआनिकेदिखावोकीजैनईहै । जलतेनिकासिबहुभांतिगहिडारीतट लीजियेपिछानिदे-खिसुधिबुधिगईहै १३३ आनिपर्यो पाइँप्रभुपासते बचाइ लाजै कीजै एकबात कभूंसाधुनदुखाइये । लेइ यहीमानि फेरिकीजिये नसुधि मेरी लीजिये गुणनि गाइ मंदिर लौंजाइये । देखी द्वारभीर पगदासी कटि बांधीधीर करसों उद्धीर करिचाहैं पदगाइये । देखिली-नी वेईकाहू दीनीपांच सात चोट कीनी धकाधूकीरिस मनमेंनआइये १३४ बैठेपिछवारेजाइकीनीजुउचितयह लीनीजोलगाइचोटमेरेमनभाइये । कानदैकैसुनोअबचा-हतनऔरकछूठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये । सुनत हीआनिकरिकरुणाबिकलभजे फेर्योद्वारइतेगहिमंदिर फिराइये । जेतिकवेसोतीमोतीआवसीउतरिगई भई हियेप्रीतिगह्योसबसुखदाइये १३५ ॥

साधुन दुखाइयेदोहा ॥ साधुसतायेतीनहानि अर्थ धर्म अरुवंश। टीलानीकेदेखिलै कौरव रावण कंश॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अतिशीतलता कहकरै कालूकेडैलागि। मथतमथत ही ऊपजै चंदनहूतेआगि ॥ २॥ घासबासना हियेबन ऊपर ते नरिगाइ । विषबीवरषाके मिले उगैअंकुरपाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये॥ पद ॥ हीनहोजातिमेरीयादवराइ ॥ कालिमें नामा इहांकाहेको पठायो तालपखावजबाजै पाबुरिना चै हमरीभक्ति वीठल काहेकोराचै ॥ पंडवप्रभुजूबचनसुनी जै। नामदेवस्वामी दरशनदीजै ॥ ४ ॥ मंदिरकौ पिछवारे बैठिकै यहपदगायो तबप्रभुनेबिचारो यहभजन मेरेऊपर कहेउ प्रसन्न ह्वैकै तुरत आइमिलेअथतूकहैसोकरौं ५॥

मंदिरफिरायो ॥ पद ॥ उठिभाई नाम देवपरै ह्वै जाइ यहांदुबेतिवारी बैठेआइ। बाह्मणबनिया उत्तमलोग। यहां नहोंनामदेवतुम्हरौसंयोग। नामदेवकामरीलईउठाइमंदि-रपाछैबैठेजाइ। पायँनघुघुरू हाथनिताल। नामदेव गावैगुण गोपाल। मंदिरऊपर छजा फरहरै। उलटि द्वारनामातन करै। नामदेव नरहरि दर्शनपाये। बांहपकरि ढिग लैबै-ठाये। दोऊ हिलिमिलिएकैभये। दासकबीर अचंभेरहे १॥

औचकहीघरमांझसांझहीअगिनिलागीबड़ोअनुरागी रहिगईसोऊडारिये । कहैआयोनाथसबकीजियेजूअं-गीकार हँसेसुकुवारहरिमोहीकोनिहारिये । तुमरोभवन औरुसकैकौनआइयहां भयेयोप्रसन्नछानिछाईआपसा-रिये । पूंछैंआनिलोगकौनेछाईहोछवाइलीजै दीजेजोई भावै तनमनप्राणवारिये १३६ सुनोऔरपरचैजेआयेन कवित्तमांझबांझभईमाताक्योंनजौनमतिपागीहै । हुतौ एकसाहतुलादानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहौनामदेव रागीहै । लैवौजूबुलाइएकदोइतौफिराइदिये तीसरेसों आयेकहाकहौबड़भागीहै । कीजियेजूकछूअंगीकारमेरोभ लोहोइ भयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै १३७ जाके तुलसीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्यौआधोरामनामया-सोंतौलिदीजिये। कहापरिहासकरौढरौहवैदयालदेखिहो तकैसोख्यालयाकोपूरोकरोरीझिये। लायोएककांटौलैचढ़ा योपातसोनासंग भयोबड़ोरंगसमहोतनाहिंछीजिये। लई सोतराजूजासोंतुलैमनपांचसातजातिपांतिहूंकोधनधरेउ पंनधीजिये १३८ परयोशोचभारीदुखपावैनरनारीनाम देवजूबिचारीएककामऔरकीजिये । जितेव्रतदानऔअ-

स्नानकियेतीरथमें करियेसंकलपयापैजलडारिदीजिये। करेहुउपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेवेखिसाइकह्योइत-नोहीलीजिये। लैकेंकहांधरैंसरवरहूनकरैंभक्ति भावसों लैभरेहियेमतिअतिभीजिये १३६॥

कीनियेजू अंगीकार॥ श्लोक॥ जलेविष्णु स्थलेविष्णु र्विष्णु:पर्वतमस्तके। ज्वालामालाकुले विष्णु:सर्वंविष्णुमयं जगत्२पूछैंग्रानिलोग वैठिपादियोतजाइ भाई।लोग परो सिनपछैंरनामा किनियहङानिकुवाई।तातेअधिकमंजूरी दहौं बेगिहि देऊवताई। बैठियाप्रीति मंजूरी मांगे जो-कोईङानिकुवावै। भाईबंधुसंगेसोंतोरेबैठियाआपहिआवै। जूठेफल शिवरीकेखायेकटिपिरधानं निसरावै। दुर्योधनकेसेवा त्यागे शाकबिदुरघरखावै। कंचनकानिपट्टपटदीने प्रीतिकी गांठिजुराई। गोविंदकेगुणभनै नामदेव बिन यहङानिकु वाई॥जाकेतुलसीहैं॥दशम। कश्चित्तुलसीकाल्याणि गोविंद चरणप्रिये १ तापैस्कंधपुराणकी कथाकैहै इंद्रलोकते पा-रिजातलाये नारदजी यातेव्रतदानको बड़ो अभिमान होताको खोइवे को यतनकियो। जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषम ज्वर खोयो चाहै व्रतदान धरवाये सो पूरे न भये॥ श्लोक॥ गो कोटिदानं ग्रहणे पुकाशी माघ प्रयागे यदि कल्पवासी। यज्ञा युतं मेरु सुवर्णदानं गोविंदनामा नभवंतितुल्यं २॥ कवित्त॥ मेरुसम हेमदान रतन अनेक दान गज दान भूमि दान अन्नदान करैहीं। मोतिनके तुलादान मकर प्रयाग न्हान ग्रहण में काशीवासचित्तमाहिंधरहीं।सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्रमें गोदान येते मैं पापहू तौ नेकु नाहिं हरहीं। कृष्णके मुरी रको नाम इकबार लियो ध्रुव पापी तीन लोक के सोबण माहिं तरहीं ३॥ गज दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषी मुवरको ४॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभर्योहियेरंग ब्रतपरचैकोलीजिये।भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखोआजतौनदेहौंभोरचाहैजितौलीजिये। कर्योहठभारीमिलिदोऊताकोशोरपर्योसमझावैनामदेवयाकोकहाखीजिये। बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाइंभावपैनजानैदईहत्यानहींछीजिये १४० रचिकैचिताकोबिप्रगोदलैकैबैठेजाइदियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुखदाईमनभाईमेरेभयेअंतर्द्धानपरेपांइप्रीतिहेरीहै । जागरगामांझहरिभक्तनकोप्यासलागीगयेलेनजल प्रेतआनिकीनीफेरीहै। फेंटतेनिकासितालगायोपदततकालबड़ेईकृपालरूपधर्योछबिहेरीहै१४१॥

गायोपद ततकाल ॥पद॥ येआये मेरेलंबकनाथ ।धरणी पाइस्वर्गलौं माथा योजन भरिभरिहाथ। शिवसनकादिकपारनपावैंतेसेई सखाबिराजत साथ। नामदेवकेस्वामी अन्तर्यामीकीनोंमोहिंसनाथ१नवरस ॥छप्पै॥श्रीवृषभानकुंवारिहितशृंगाररूपमय।हास्य वास्यरस हरेमात बंधन करुणामय। केशीप्रतिअति रुद्रबीर मार्‍योबत्सासुर।भय दावानलपानकियो बिभत्सबकोडर। अति अद्भुतबच बिरंचमति शांत सुसंतति शोचचित । कहिकेशव सुमिरौं मैं सदा नवरसमें ब्रजराजनित२॥कवित्त ॥ बीरही को काम याते समर मनाइबेको करुणा दिखाइ दूती बिरह सुनाईहै।उलटिबिहारसो अद्भुतको लखि सीखी सबर घांतेहास्यरीतिपाईहै। गुरुजनकी अटभयानक बिभत्सअंत संतह मनाइबो न आइवोरुदाईहै। औरनिके सदनमाहिंरसराजजानकैसेराजाकेसदनमाहिंसबकीसमाईहै॥३॥ जयदेव कबिबड़ोभक्तराजहै ४।५।६॥

मूल॥ जयदेवकबिनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकबि। प्रचुरभयोतिहूंलोकगीतगोबिंदउजागर। कोककाब्यनव रससरसशृंगारकोआगर। अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिबुद्धि बढ़ावै। राधारवनप्रसन्नसुनतहांनिश्चैआवै। संतसरोरुह खंडकोपदमावतिसुखजनकनरबि। जयदेवकबिनृपचक्कवै खंडमडलेश्वरआनिकबि ४४ टीकाजयदेवकी॥ किंदु बिलुग्रामतामें भयेकबिराजराजभर्‌यो रसराजहियेमनम नचाखिये। दिनदिनप्रतिरुखरूखतरजाइरहेगहेएकगूद रीकमंडलकोराखिये। कहीदेवैबिप्रसुताजगन्नाथदेव जूको भयेयाकोसमयचल्यो देनप्रभुभाखिये। रसिकज यदेवनाममेरोई स्वरूपताहिदेवौ ततकालअहोमेरीकहो साखिये १४२॥

सुखजन॥ दोहा॥ जलजसीत जलरबिनदिनखुलैनिवा- रणधाम॥ निशिको अमृत पीवयह जानिमुदैअभिराम १ रूखरूखतर॥ भागवते॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोप्रयासैर्वा हौस्वसिद्धे ह्युपबर्हणैःकिम्॥ सत्यांजलौकिंपुरुधान्यपात्र्या दिग्वल्कलादौ सतिकिन्दुकूलैः २ चीराणिकिंपथिनसंति दिशंति भिक्षांनैवांघिपाःपरभृतःसरितोप्यशुष्यन्। रुद्धागु हाकिमजितोवतिनोपपन्नान् कस्माद्भजंतिकवयोधनदुर्म दांधान् ३॥ सवैया॥ सीतजोशीतसतौवै शरीरतोचोरिलैपं थकेकंथाबनाइये। प्यासलगैवहतोजलपीजियेभूखलगैफलरू खकेखाइये। छांहचहैतोगुहागिरिकोगहि कानसौंआन- नरत्वकपाइये। क्योंधनअंधपै जाइसुहाइकितेहित आपन पैको दिखाइये ४जे कोई भक्तजनहैं ताको यही शिक्षाहै उपेक्षाहै जैसेजयदेव कबिको सांचप्रभुको आयोहाथपांव कटाये पैमनमें विषादनआयो अपने शरीरहीको दोषल-

गावैं ऐसो सांचबिश्वास आवै अरु युगयुग के प्रणामप्रता
पीकछावै जयदेवकविबड़े भक्त हैं ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराजमे
रीसुतायहलीजिये । कीजियेबिचारअधिकारविस्तारजा
के ताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये । जगन्नाथदेवजू
कीआज्ञाप्रतिपालकरौटरौमतिधरौ हियेनातोदोषभीजि-
ये। उनकोहजारसोंहैंहमकोपहारएकतातकिरिजावौतुम्हैं
कहाकहिखीजिये १४३ सुतासोंकहततुमबैठीरहौयाही
ठौरआज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्यौअनखाइस
मझाइहारेबातनिसोंमनतू समुझिकहाकीजैशोचभारिये ।
बोलेद्विजबालकीसोंआपनोबिचारकरौ धरौहियेध्यानमो
पैजातनसँभारिये । बोलीकरजोरिमेरोजोरनचलतकछूचा
होसोईहोहुयहवारिफेरिडारिये १४४ जानीजबभईतिया
कियोप्रभुजोरमोपै तौपैएकझोपड़ीकीछायाकरिलीजिये।
भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथीमेंबनाऊं
मनकीजिये । भयोजूप्रगटगीतसरसगोविंदजूको मनमें
प्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएकपदमुखनिकसतशो
चपर्यौधर्यौकैसेजातलाललिख्यौमतिरीझिये १४५ ॥

मनतूसमुझ ॥ कुण्डलिया ॥ बाप न मारी पोदनी बेटा
तीरंदाज । बेटा तीरंदाज बिषैत्यागी तन कन मन । कहा
इंद्रियनि सधै दुखनि में रधै दृघातन ॥ नफा आप नेकु सब
और तौ मूल गवावै । यों मन के अनुसार चलै तनक्क सुख
पावै ॥ यह बिचारि चित चेतिये नातरुहोइ अकाज । बा-
पन मारी पोदनी बेटातीरंदाज १ छायाकरिलीजिये ॥
श्लोक॥द्वाविमौपुरुषौलोकेशिरःशूलकरौमतौ। गृहस्थश्च

निरारंभोयतिनस्वपरिग्रहः २ श्रीमद्मंडलसंगरगरल खंडनं समभिरक्षिमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ३ लिख्योमतिरी- क्षिये जयतिपद्मावतीरवन जपदेवकविभारतीभणितमति शांतंकांयोप्रबंधः ४ ॥

नीलाचलधाममतामेंपंडितनृपतिएक करीवहीनामधरिपोथीसुखदाइये। द्विजनिबुलाइकहीवहीहैप्रसिद्धकरौ लिखिलिखिपठौदेशदेशनिचलाइये। बोलेमुसकाइबिप्र क्षिप्रसोंदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये। धरी दोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडारिवहहारलपटाइये १४६ पर्योशोचभारीनृपनिपटखिसानोभयो गयोउठिसागरमेंबूड़ोयहबातहै। अतिअपमानकियोकियो मेंबखानसोई गाइजातिकेंसेआंचलागीगातगातहै। आज्ञाप्रभुदईमतिबूड़ैतूसमुद्रमांझ दूसरोनग्रंथवैसोवृथातन पातहै। द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसंग चलैजाकीख्यातपातपातहै १४७ सुताएकमालीकीजुबैंगनकीबारीमांझ तोरैबनमालीगावैकथासर्गपांचकी। डोलैंजगन्नाथपाछेकाछेअंगमिहीझंगा आछेकहिघूमैसुधि आवैबिरहआंचकी। फट्योपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहा जानतनहमअबकहौंबातसांचकी। प्रभुहीजनाईमनभाई मेरेवहीगायालायेवहवालकीकोपालकीमेंनाचकी १४८॥

बोलेमुसिकाई॥दोहा॥ अकथ कहानी प्रेमकी कहीन जानै कोइ। कोइकाजानै खलकमें जाहिपर बीती होइ १ जैसे लैलैने मजनूको बुलायो अगिनिमें तापै मोसी को दृष्टांत अरुपतंग माखी को २ बिरह आंचकी॥ श्लोक॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसतिबनेबनमाली गोपीपीनपयो

धरमर्दन चंचल करयुग माली । पीनपयोधर भारभरेण हरिंपरिरभ्यसरागं । गोपवधूरनुगायतिकांचिदुदंचितपंचमरागं। कापिविलासविलोलविलोचन खेलनजनितमनोजं३ ॥

फेरोनृपडोंड़ीयहओड़ीबातजानीमहा कहाराजारंक पढ़ैनीकीठौरजानिकै । अक्षरमधुरऔरुमधुरसुरनिहीसों गावैजबलालप्यारीढिगहीलैमानिकै । सुनीयहरीतिएक मुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ेघोरेआगेश्यामरूपठानिकै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपुहीजोरीझेलिख्यौ निजकरआनिकै १४६ पोथीकीतौबातसबकहीमैंसुहात हियेसुनोऔरबातजामेंअतिअधिकाइये । गांठमेंमुहरमग चलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलिजाइये । जानिलईआपखोलिद्रव्यपकराइदियो लियोचाहोजोईसोई सोईमोकोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइनबिद्याअहो आवैजोनगरइन्हैंबेगिपकराइये १५० ॥

श्याम रूपठानिकै ॥ मीरमाधवलाहौरके मुगलफकीर भये सो॥पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टूकगली असाड़ी आवरे । सांवरे बदन ऊपर कोटि मदनवारे तेरी जुलफैं दिलदी कुलफैं दोऊ नैन हैं सितारे ॥ तेरी खूबीके देखनेको नैन तरसैं हमारे। जलजो कठोर होवै मीनक्यों जीवै बिचारे । कृपा कीनै दर्शन दीजै मीरमाधौ को नंद केदुलारे १ ॥ पोथी को प्रताप ॥ राजावीर विक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में गीतगोविंद गवायो।देवताओंनेकही याकोताहमारे सदा गावैहैं या को फलसुखकी उत्पत्तिकरैहै २॥ द्रव्यपकरायो॥श्लोक ॥ लोभमूलानिपापानिरसमूलानिव्याधय: ॥ स्नेहमूलानि

दुःखानितस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ३॥ समभिकही दुष्ट तीनि प्रकार के हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ट सज्जन तीनि प्रकार केहैं। आगे गुणिन वेद निगुणार बिंद करि बतायेहैं ४॥

एककहैंडारोमारिभलोहैंबिचारयही एककहैंमारोमतिधनहाथआयोहै। जोपैलेपिछानिकहूंकीजियेनिदान कहाहाथपांवकाटिबड़ेगाढ़पधरायोहै। आयोतहांराजा एकदेखिकैबिबेकभयो छपोउजियारोऔप्रसन्नदरशायो है। बाहिरनिकसिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि पूछोइतिहास कह्योऐसोतनपायोहै १५१ बड़ोईप्रभावमानिसकैकोबखानिअहो मेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये। पालकीबिठायलियेकियेसबढूंढ़िनीके जीकेभायेभयेकछुआज्ञामोहिं दीजिये। करौहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवेंजोईसंततिन्हैंदेखिदेखिभीजिये। आयेवेईठगमालातिलक बिलककियेकिलकिकैकहीबड़ेवंधुलखिलीजिये १५२ नृपतिबुलाइकहीहियेहरिभायभर ठरतेरेभागअबसेवाफललीजिये। गयोलैमहलमांझटहललगायेलोग लागेहो नभोगजियशंकातनछीजिये। मांगैबारबारबिदाराजानहिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामीधनदीजिये। दैकै बहुभांतिसोपठायेसंगमानसहू आवौपहुंचाइतबतुमपरखीजिये १५३॥

हाथ पावकाटे॥ भगवान सें भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्यो है जयदेव जेरोही रूपहै सोहाथ पांव कटाइकै आपसों कियौ॥ फेरि ख्यात वारिबे को आछे करिदिये कहैं नाम कौनको लीजै कोऊ काल

कोऊ ईश्वर कोऊ ग्रह येन जान्यौ साक्षात् धर्मही हैं ऐसे परीक्षित सोकछोड़ी हियेहरि भाव भारेहीहज रिखिबातुहै ॥ हरिखीनोचारीताके अर्थ विषयवर्त्तहै। ताते समभौती में समभाये हैं॥ श्री दामोदर नारायण वृंदावन वासुदेव मधुसूदन मुरारी १॥

पूंछैनृपनरकोऊतुम्हंरीनसरवरिहैजितेआयेसाधुऐसी सेवानहिंभईहै। स्वामीजूसोंनातोकहाकहोहमरवाहिंहा हाराखियेदूराइयहबातअतिनईहै। हुतेइकठौरेनृपचाकरी मेंतहांइनकियोईबिगारुमारिडारौआज्ञादईहै। राखेहम हितूजानिलेनिदानहाथपाववाहीके ईशानहमअबभरिल ईहै १५४ फाटिगईभूमिसबठगवेसमाइगयेभयेचकित दौरस्वामीजूपैआयेहैं। कहीजितीबातसुनिगातगातकां पिउठेहाथपांवमोड़ेभयेज्योंकेत्योंसुहायेहैं। अचरजदोऊनृ पपासजाप्रकाशकियेजियेएकमुनिआयेवाहीठौरधायेहैं। पूंछैबारबारशीशपायनमेंधारिरहेकाहिपैउघारिकैसेमेरेम नभायेहैं १५५॥

भक्तिरुई॥ दोहा॥ सिंह खाल गाडर पहिरिभेष सिंह को धारि। बोलनि बोली भेड़की कूजनि डारी फारि १ फाटिगईभूमितौदंडक्योंनदियो भेषजानिदण्डनदियोभेष सेवड्डो नलगैजैसेअपरसगुरू सपरसचेला॥ कोऊने बस्तर उठाइ कै मारे अपरस बनोर है राजाके प्यादेने जान्यौं महादयावलि होहिंगे सोइच्छाचारी सिद्धहोइंगे बैकुंठ लोकते आये पाताललोकको गये जैसे दंडहू दियोउत्कर्षनराख्यौ २॥ दोहा॥ घटिबढ़ि बातें भेषकी कीजे नाहिं बनाइ गुरुको मानै परशुरामलीजै कंठ लगाइ। साधन कों घर दूरिहै समभौ चित्त लगाइ ४ प्रगट अवगुण दी

सें तो जैसे नारद सनकादिकन सें भलोइ करे चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरोकहै येतूमति कहै ऐसेइचसमयमें फल होइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल सम प्राप्ति होय ॥

राजाअतिअरगहीकहीसबबात खोलिनिपटअमोलय हसंतनकोभेशहै । कैसोअपकारकरौतऊउपकारकरैंढरैंरी तिआपनोहीसरससुदेशहै । साधुतानतजैंकभूजैसेदुष्टदुष्ट तानयहीजानिलीजैमिलैंरसिकनरेशहै । जान्योजबनाम ठामरहोइहांबलिजांवभयोमैंसनाथ प्रेमभक्तिभईदेशहै १५६ गयोजालिवाइल्याइकबिराजराजतिया कियाले मिलायआपरानीढिगआईहै । मर्योएकभाईवाकोभईयों भौजाईसतीकोऊअंगकाढ़िकोऊकूदिपरीयाईहै । सुनतही नृपबधूनिपटअचंभोभयोइनकोनभयो फेरिकहिसमुझाई है। प्रीतिकीनरीतियहबड़ीबिपरीतिअहो।छूटैतनजबैप्रिया प्राणछुटिजाईहै१५७ ॥

प्रीतिकीनरीति ॥ सोरठा ॥ सुख देवेकी प्रीति स-ब कोऊ ऐसीकरै॥वेतौन्यारे रीतिजियें जिये मूयेमुरैं १ कवित्त ॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहौं सुमति कहौं प्रेम हैं लजावे मति यहपीव जोइये। साखिदै अगिनि जारे हथले वा हाथ जोरे जाके साथ दीजै ताके साथ जीव खोइये॥ कौन आगिकोन आंचबरै ताहिलियेबरै ताको कहा बरै काऊ कहे कान रोइये। जाके संग घनेदिन सेज माहिं सोय खोये ताके संग एकदिना आगिह्नमें सोइये॥ कवित्त ॥ अंगराग अंग करि मोती माल ग्रीव धरि वैठी बाल सोहै अति चांदनी बिमल में। आगी अगम-हरे सुराग रंग गहरैओ बारम्बार बलकैयों यौवनके बल

में। त्योंही काङ्क्षाली नंदनंदन आगम कह्यौ सामुही निहारी मानों वारी है अनल में। मोतिन के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़ि गयो अबीरह्वैकै पल में २॥ दोहा॥ सुफल फलै मनकामना तुलसीप्रेम प्रतीति॥ तिरिया अपने कारणै लिखि पूजतिहै भीति ३ साधुता न तजै॥ जैसे शिष्य पैजेगार गुरु कही गारीहै ऐसे ६॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंयहीलैकैजावौबागस्वामीने कुदेखोंप्रीतिको। निपटबिचारीबुरीदेतमेरेगरैंछुरीतियाह ठमानकरीऐसेहीप्रतीतिको। आनिकहैंआपपायेकहीयाही भांतिआइबैठीढिगतियादेखिलोढिगईरीतिको। बोलीभ क्तबधूअजूवेतौहोंबहुतनीकेतुमकहाऔचकही पावतहौंभी तिको १५८ भईलाजभारीपुनिफेरिकैसँभारीदिनबीतिग येकोऊतबतबवहीकीनीहै।जानिगईभक्तबधूचाहतपरीक्षा लियोकहीअजूपायेसुनितजीदेहभीनीहै।भयोमुखश्वेतरा नीराजाआयेजानीयहरचीचिताजरौंमतिभईमेरीहीनीहै। भईसुधिआपुकोजुआयेबेगिदौरिइहां देखीमृत्युप्रायनृपक हीमरीदीनीहै १५६ बोल्योनृपअजूमोहितरैईबनतअबस बउपदेशलैकैपूरिमेंमिलायोहै। कह्योबहुभांतिऐवेआव तनशांतिकिहूंगाईअष्टपदीसुरदियोतनज्यायोहै। लाजन कोमार्‌योराजाचाहैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिले शहूनआयोहै। करिसमाधाननिजग्रामआयेकिंदुबिल्वजे सोकछूसुन्योयहपरचौलैगायोहै १६०॥

राजाको जयदेवजी के संगकोरंग क्यों न लग्यो १ हरिविलासकाव्ये॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावनत्वत्पदं। प्रवलमिदमौषधं हृदिसकृत्सुधीर्द्धारयेत ॥२॥ अपथ्य

मिहवर्जयेत् विषयवासनासंयुक्तं वसेतविजनेवने फलदलां बुससीलयं ३ ॥ गीतगोविंदे ॥ वहतिमलयसमीरेमदनमुपनिधीयस्फुटतिकुसमनिकरे ॥ विरहिहृदयदलनायतव विरहे वनमाली सखिसीदति ४ करिसमाधान ॥ दोहा ॥ गईमिचकी मिवता रहेउकथाकोभाव। तोहिं न वेटाभूलही मोहिंपूछकोघाव ५ ॥

देवधुनीसोतहौंअठारहकोसआश्रमतेसदाअस्नानकरें धरैंयोगताईको। भयोतनवृद्धतऊछांड़ैनहींनित्यनेमप्रेम देखिभारीनिशिकहीसुखदाईको। आवौजनिध्यानकरौक शौजनिहठऐसोमानीनहींआंऊमैंहींजानौकैसेआईको। फूलेदेखौकंजजवकीजियोप्रतीतिमेरीभईवाहीभांति सेवैंअब लौंसुहाईको१६१॥मूल॥ श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो। तीनिकांडएकत्वसानिकेउअज्ञबखानता।करमठ ज्ञानीऐंचिअर्थको अनरथवानता।परमहंससंहिताबिदितटीकाविस्तारयो। षटशास्त्रअबिरुद्धवेदसंमतहिबिचारयो। परमानंदप्रसादतेमाधौसुकरसुधारिदियो। श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो ४५ ॥

छांडैंनहीं नित्यनेम ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधमनर पाहन सिकतापानि। ह्योतिअनुक्रम जानिये वैरव्यतिक्रम मानि १ सांचौ पनकै गंगाजो आपही पधारीं झूठे पनवारिनको झूठी बनाहु न मिलै जैसे छप्पनभोगीको दृष्टांत घोड़ाके मलोदाको अरुदेखनहारेको २ साईं यक्करखोरको यक्करहु पहुंचावै। वेविश्वासीजीव एकापर ज्यों घिघावै ॥ ३ ॥ श्रीधरगीतायां ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणंव्रज। अहंत्वांसर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच ४ ॥ षटशास्त्रछप्पै ॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकरैसु॥

पावै। कालाधीन वैशेषिक्याइकर तारवतावै॥ नित्यानि-
त्यबिचार सांख्यमत ऐसोभावै। पतांजली हठजोतियोग
अष्टांगदिखावै॥ सबमेंव्यापक ब्रह्महैवेदांत शास्त्रऐसीकहै।
षटशास्त्र सकलबिरुद्धये हरिज्ञानी दृष्टाद्वैरहै ५॥ परम
धर्म ॥प्रथमे॥ सवैपुंसांपरोधर्मोयतोभक्तिरधोक्षजे। अहैतु-
क्यप्रतिहताययात्मासंप्रसीदति ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्त
राजजितेभागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये। भयोजुबिचा
रकाशीपुरीअबिनाशीमांझ सभाअनुसारजोबसोईलिखि
दीजिये।ताकोतौप्रमाणभगवानबिंदुमाधवजूहैशोधोयही
बातधरिमंदिरमेंलीजिये। धरेसबजाइप्रभुसुकरबनाइदि
योकियोसबैपरिलैचल्योमतिधीजिये १६१ मूल॥ कृष्ण
कृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगलमंगलस्वरूपकरुणामृत सुक
बित्तउक्तिअनुचिष्टउचारी। रसिकजननिजीवनिहृदयजेंहा
रावलिधारी।हरिपकरायोहाथबहुरितहँलियोछुटाई। कहा
भयोकरछुटैंबदौतौहियेतेजाई। चिंतामणिसंगपाइकैब्रज
बधूकेलिबरणीअनूप। कृष्णकृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगल
मंगलस्वरूप ४६॥

कांइकरंडे कपूरकपासधरीदोऊ॥ श्लोक॥ वागीशा
यस्यवदने लक्ष्मीर्यस्यतुवक्षसि। यस्यास्तेहृदयेसंवित्तंन्ट-
सिंहमहंभजे १॥ दोहा॥ श्रीधरस्वामीतामनोश्रीधर
प्रगटेआन॥ तिलकभागवतकोकियो सबतिलकन परमा
न २॥ अघनाशी॥ सोरठा॥ मुक्तिजन्ममहिजानिज्ञान
खानि अघहानिकर। जहंवसशम्भुभवानिसोकाशीसेइय
कसन ३ कहाभयो॥श्लोक॥ हस्तमुत्क्षिप्ययातोसिबला-
त्कृष्णकिमद्भुतं॥ हृदयाद्यदिनिर्यासिपौरुषं गणयामितेर्४॥

चिंतामणिपाइकै ॥ दोहा ॥ पंडित पूजापाकदिल येहि-माकमतिजाव ॥ लगै जरब अखियानको सबैगरब चढ़िजाव ५ मांझगोलनि हसनिचलनि बानैतनि लै महबूब अघाया। धीरजधरम सरमसमअ-कादर बरगोलभगाया। भँरभरबासा कियोअकेला दूरकेलिये ठहराया। बल्लभर-सिक हूनहूरक दुनागो यागोमन पकराया ६ ॥ दोहा ॥ तानैतानतरंगकी बेधन तनमनप्रान। कलाकुसुमसर घरन की अतिअयान तनचान ७॥

टीका बिल्वमङ्गलकी॥कृष्णवेनातीरएकद्विजमतिधीर रहै हवैगयोअधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोक लाजहियेवाहीकोजुराजभयो निशिदिनकाजवहैरहैघर-जाइकै । पिताकोसराधनेकु रह्यौमनसाधिदिनसेसमें अवशचल्योअतिअकुलाइकै। नदीचढ़िरहीभारीपैयैनअवा रीनावभावभर्योहियोजियोजातनंघ्रिजायकै१६२ करत बिचारवारिधारमेंनरहैप्राणतातेभलीधारमित्रसन्मुखको जाइये। परेकूदिनीरकछूसुधिनाशरीरकीहैवहीएकपीरक बदरशनपाइये। पावततनपारतनहारिभयोबूड़िबेकोमृतक निहारिमानीनावमनभाइये। लगेईकिनारेजाइचल्योपग धाइचाइआयेपटलागेआधीनिशिसोबिहाइये १६३अज गरघूमिझूमिभूमिकोपरसकियोलियोईसहाइचढ़ो छातप रजाइकै । ऊपरकेंवारलगेपर्योकूदिआंगनमेंगिर्योयों गरतरागीजागीशोरपाइकै। दीपकबरायजोपैदेखैंबिल्वमं गलहैंबड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जलअन्हवाय सूखे पटपहराय हाइ कैसेकरिआयो जलपार द्वारधाइ कै १६४॥

हियेवाहीको जराव्यभयो ॥ कवित्त ॥ मरकतकेसुत किधौं पन्नगकेपूत किधौं राजतअभूत तमराजकेसेतारहैं। मखतूल गुणग्राम शोभित सरसश्याम काममृगकानन कुह्न के येकुवारहैं। कोपकीकिरणि जलनीलको नराकेतंतउपमा अनंत वालचमर शृंगारहैं। कारेसटकारे भीनेसोंधेते सुगंधवास ऐसेबलभद्र नवबालातेरे बार हैं १॥ झूलना॥ गुलौंबिचौं गुलचन्यो सेषुल्यानहीं परखुलसी। नलौंगुल कलंमतथासो वाझुझसन तेरीघुलसी। दानेदेखिदिवानै यासी अकलतिनादाभुलसी। अवभीपाकन जरिकै देखन वारे छनतिना शिरढुरसी २॥ दोहा॥ तनकनरहैबिरक्त ता लगै दृगन की थाप। कहुंगीता मालाकहूंकहुंबटुवा कहुं आप ३॥

नौकापठाइहारनावलटकाईदेखि मेरेमनभाईमैंतौतबैलईजानिकै। चलौदेखैंअहोयहकहाधौंप्रलापकरैदेख्यो विषघरमहाखीजीअपमानिकै। जैसोमनमेरेहाड़चामसों लगायोतैसो श्यामसोलगावेतौपैजानियेसयानकै। मैंतौ भयेभोरभजौंयुगुलकिशोरअबतेरीतुहीजानैचाहौकरौमन मानिकै १६५ खुलिगईआंखैंअभिलाखैंरूपमाधुरीको चाखैंरसरंगऔउमंगअंगन्यारिये। बीणालैबजाईगाईविपिननिकुंजक्रीड़ाभयोसुखपुंजजापैकोटिविषैवारिये।बीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहींजायदृगनीरभरि डारिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरुकियोआनि सकैको बखानिलालभुवननिहारिये १६६ ॥

प्रलापोनर्थकंवाचःइत्यमरः १ हाड़चामसों ॥ कवित्त ॥ देह तौ मलीन मन बहुत बिकार भरे ताहू मांझजरावात पित्त कफ खांसी है। कबहुंक पेटपीर कबहुंक शिरवाहु

कबहूंक आंखि कान मुख में बिघासी है॥ औरहू अनेक रोग मल मूत्र भरे सदा हरि तजि औरै भजै साधु करै हांसी है। ऐसो जो शरीर ताहि अपनो करि मानिरहै सुन्दर कहत यामें कौन सुखरासी है १ मांसकी गरैंयी कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंद जो श्लेषमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभ कूपकहै हाड़हीके खंभा तासों कहैं रंभातरु है। हाड़ही के दशन आहि हीरा मोती कहै तासों चामको अधर तासों कहै बिम्बा फरु है। ऐसी झूठी युगति बनावैं वे कहावैं कबिता पर कहत हमैं शारदा को बरु है २ ओस कोसोमोती और पानी को बबूला जिमि सांचोकरि मान्यौसोई बूड्यौ संक्षधार है। एक स्त्रीको पुत्रगुरु पायसो साधुपैछुटाया ऐसेचिन्ता मणिकही भोर मैंतौ जाऊंगी तेरीतूजानै॥

रहेसोवरसरससागरमगनभयेनयेनयेचोजकेश्लोक पढ़िजीजिये। चलेवृंदाबनमनकहैकबदेखौंजाइआयेम गमांझएकठौरमतिभीजिये। पर्योबड़ोशोरदृगकोरकै नचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआंखैंरीझिये। लगे वाकेपाछेकाछेकाछेकीनसुधिकछू गईघरआछेरहैद्वारतन छीजिये१६७आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढ़ेबड़ोभा गवतअतिपूछीसोजनाइये।कहीजूपधारौपाँवधारौगृहपा-वनकोपावनिपखारौंजलधारोंशीशभाइये। चलेभौनमां झमनआरतमिटाइबेको गाइबेकोजोईरीति सोईकोवता-इये। नारिसोंकह्योहोतशृंगारकरिसेवाकीजे लीजैयोंसु हागजामेंवगिप्रभुपाइये १६८ चलीहैशृंगारकरिथार मेंप्रसादलैकेऊंचीचित्रसारीजहांबैठेअनुरागीहैं। झनक मनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनवृत्य

भागीहैं । कहीयुगसुईलावौलाइदईगहीहाथकोरिडारी आखैंअहोबड़ीयेअभागीहैं । गईपतिपासश्वासभरतनबो लिआवैबोलीदुखपाइआयेपांयपरेरागीहैं १६६ ॥

लागेवाके पाछे ॥ भागवते ॥ पठकापाठकाश्चैवयेचान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढाःयःक्रियावान्सपंडितः१ कुंडलिया ॥ कूकरचौक चढ़ाइये चाकीचाटनजाइ। चाकी चाटनजाइआदिअभ्यास न छाड़ै । बरजतवेद पुराण विषै पकरत हठि हाड़ ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै। अनभोजनअनेकअविद्याहीको धावै॥ अग्रदास को बसकहापरै भूपतन बाइ । कूकर चौकचढ़ाइयेचाकी चाटनजाइ२ नून हलभागी हैं ॥ नारीस्तनभरनघन निवेशं दृष्टा मायामोहावेशं ॥ एतन्मांस विषादविकारं मनसि विचारय बारंवारं । भजगोविंदं भजगोविंदंगोविंदंभज मूढ़मते ॥

क्रियोअपराधहम साधुकोदुखायोअहो बड़ेतुमसाधु हमसाधुनामधर्योहै । रहौअजूसेवाकरैं करोतुमसेवा ऐसीतैसीनहींकाहूमांझमेरोउरहर्योहै। चलेसुखपाइदग भूतसेछुटाइदिये हियेहीकीआंखिनसोंअबैकामपर्योहै। बैठेबनमध्यजाइ भूखेजानिआपआये भोजनकराइचलो छायादिनढर्योहै १७० चलेलैगहाइकरछायाघनतरुतर चाहतछुटायोहाथछोड़ैकैसेनीकोहै। ज्योंज्योंबलकरैत्यों त्योंतजतनयेऊअरे लियोईछुड़ाइगह्योगाढ़ोरूपहीकोहै। ऐसेहीकरतवृन्दाबनघनआइलिये पियोचाहैरससबजग लाग्योफीकोहै । भइउतकंठाभारीआयेश्रीबिहारीलाल मुरलीबजाइकैसुकियोभायोजीकोहै १७१ ॥

हमनामसाधु ॥ दोहा ॥ गलियनिमेंहर्षतफिरैंसाधुकहैं सबकोइ॥ध्यान नाम बाबा धर्यो खोजी बाबन होइ १ रूपहीकाहै॥ हाथ छुड़ाये जातहो निबलजानिकैमोहिं॥ हियमेंतेजबजाउगे सबल बदौंगो तोहिं २ ॥ कबित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हितके निधान कहौ कैसेरहैं प्राणजो-पै अनखि रिसाइहौ। तुमतौउदार दीनहीनआइपर्यो द्वार सुनियै पुकार याहिकौलौं तरसाइहौ। चातिक हौं रावरो अनोखो मोहिं आवरो सुजान रूपबावरो वदन दरशाइहौ। बिरह नशाइ दयाहिय में बसाइ आइ हा-इ कब आनँदको घनबरसाइहौ ३ तापै सूरदासजी अरु साक्षात्कार की लीलाको दृष्टांत ४ ऐसे जबकही जबकरुणा-निधान हँसे प्रीतिके बशभये ५ ॥

खुलिगयेनयनज्योंकमलरविउदयभये देखिरूपराशि बाढ़ीकोटिगुणीप्यासहै। मुरलीमधुरसुरराख्योमदभरि मानोंहरिआयोकाननमेंआननमेंभासहै । मानियेप्रताप चिंतामणिमनमांझभई चिंतामणिजैतिआदिबोलेरसरा शहै। करुणाम्रतग्रंथहदैग्रंथकोविदारिडारै बांधेरसग्रंथ पंथयुगलप्रकाशहै १७२ चिंतामणिमुनीबनमांसरूपदे ख्योलाल ह्वैगईनिहालआईदेहनातोजानिकै। उठिवहु मानकियोदियोदूधभातदोनादै पठावैनितहरिहितूजन मानिकै। लियोकैरेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहौं नाथहाथसोंजोदेहैंसनमानिकै। बैठेदोऊजनकोऊपावैन हींएककनरीझेश्यामघनदीनोंदूसरोहूआनिकै १७३ ॥

चिंतामणिजयतिआदि ॥ श्लोक ॥ चिंतामणिर्जयति सोमगिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवान्शिखिपिच्छमौलिः॥ यत्पादकल्पतरुपल्लवशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेव य

श्लो: १ करनाष्टतग्रंथ॥ अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्याःस्वानंदसिंहासनलब्धदीक्षा॥शठेनकेनापिवयंहठेन दासीकृतागोपवधूवठेन २ कोऊपावै॥ दोहा॥ निकट न देख्या पारघी लग्यो न देख्योबाण॥मैंतोहिं पूछौंहेसखी केहि बिधि निकसे प्राण ३ जलधारौ नेहाघनौ लगेप्रीतिकेबाण। तूपी तूपी करिमरे इहिबिधि छाड़ेप्राण॥ पुमन आवमांगै ४ आनन देखा ज्ञानकर्म नामसों शुद्धहोइ अरु गीतामें भक्तियोग चित्त शुकनेलिख्यो ज्ञान कर्म आधा पाश शुद्ध होई बीचमें भक्तियोग भास्य में लिख्यो है भक्ति रत्न के दोऊ ढकना हैं चक्रवर्तीने लिख्यो है दोऊ लरैंग नहीं बीच में भक्ति योग दोकैहै दोउनको ५॥

मूल॥कलिजीवजंजालीकारणौ विष्णुपुरीबड़निधिसची॥भगवतधर्मउतंगआनधर्मआननदेखा। पीतरपटितरबिगतनिषकज्योंकुंदनरेखा॥कृष्णकृपाकरिवेलफलतसंगदिखायो।कोटिग्रन्थकोअर्थतेरहबिरंचनमेंगायो॥महासमुद्रभागवततेभक्तिरतनराजीरची। कलिजीवजंजालीकारणौ बिष्णुपुरीबड़निधिसची ४७ टीका॥जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठे महाप्रभूजवेचहूंओरभक्तभूपभीरअतिछाईहै । बोलेबिष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैंयातेजानियतमोक्षचाहनीकीमनआईहै।लिखीप्रभुचीठीओपमणगुणमालएकदीजियेपठाइमोहिंलागतसुहाईहै।जानिलईबातनिधिभागवतरतनदामदईपठैआदिमुक्तिखोदिकैवहाईहै १७४ मूल॥ बिष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति॥ नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृशउजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर॥ आचारजहरिदासअतुलबलआनँददाइन । तिहिमारगवल्लभबिदितपृथुपधितपराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासु

दृढ़मनबचक्रमहरिचरणरति । बिष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ ज्ञानदेवगंभीरमति ४८ ॥

खोदिके वहाइ हनुमान्नाटके ॥ भववंधच्छिदेत :मैनस्पृह यामिमुक्तये । अतान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते १ सालोक्यसार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानंनगृह्णंति विनामत्सेवनंजना: २ विष्णुपुरीवाक्यं ॥ येमुक्तावपि निस्पृहाप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददां यामास्थाय समस्त मस्तकमणीं कुर्वंतियंस्वेवसे । तान्भक्तानपितांचभक्तिमपि तंभक्तिप्रियंश्रीहरिंवंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे मुक्तिनिस्पृहाकथाएक पुराणकी एक समय श्रीनारदजी श्रीवृंदाबनमेंआये श्रीलालजीकोलोगादेखिकैबहुतप्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यहबड़ो आश्चर्य्यहै ५ ॥

ज्ञानदेवजूकीटीका॥ बिष्णुस्वामिसंप्रदायबड़ेईगँभीर मतिज्ञानदेवनामताकीबातसुनिलीजिये। पितागृहत्यागि आइग्रहणसन्यासकियोदियोबोलिरूठतिया नहींगुरुकी जिये। आईसुनिबच्छपाछेकह्योजान्योमिथ्याबादभुजनप करिमेरेसंगकरिदीजिये। आईसोलिवाइजातिअतिहीरि साइदियोपांतिमेंतेडारिरहेदूरिनहिंछीजिये १७५ भये तीनिपुत्रतामेंमुख्यबड़ोज्ञानदेवताकीकृष्णदेवजूसों हिय कीसंचाईहै। वेदनपढ़ावैकोईकहैसबजातिगईलईकरिस भाअहोकहामनआईहै। विनसोंब्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिका रनाहिंबोल्योयोंनिहारिपढ़ैभैंसालैदिखाइये। देखिभक्ति भावचावभयो आनिगहेपाव कियोईसभाववहीगहीदिवि ताईहै १७६ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजु हो निशान बाजे दशरथ राइके। रामजन्मसुनि रानीगावति आनंदवधाइके।उमंगे

ऋषिविश्वामित्र पढ़त वशिष्टतंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइ के। उमंगे दशरथकिधौंजलउलंगे मतगज उमंगेमहल सबकंचनजराइके। उमंगे पौरी पगार उमंगेबीथी बजार उमंगीअयोध्यापुरी रच्यो सुखछाइके। उमंगे सूरज कुल धरमअसुरकुलखंडके कंगूरा ठये अगम जनाइके।उमंगेरच सत्र सूखे हरेभये अबै उमंग्यो बन दंडक अधिक जिवाइके। उमंगे इन्द्र बाल सुर मुनि जेते ईश उमंगे गौतम जानि चिया मोचदाइके। उमंगे बानर रीछ हनुमान पूजाईसुग्री व रिपुको नाशकरि हानिये नशाइके। उमंग्यो सरयूको नीरमज्जन करिहैं रघुबीर उमंगे सब जीव जन्तु कोउ न सकै सताइके। उमंगी सभा विराजै अपने समाजै उमंगे तिलक नव मस्तक चढ़ाइके। उमंगे उघटत संगीत उमंगे उघट गीत मृदंगी मन मृदंगबजाइके। उमंगे मुनि समाजै बहुबिधिबाजे बाजैं महाराज दानदीजै सजिकैबुलाइके। उमंगे ढाढ़िया गावैं ढाढ़ेबजावैं उमंगि अशीश देत नृप मायो नाइके। उमंगे नाचै लागदाट तालसाचै रीझि वस्त्र देत जो चाहीलाइके। उमंगी कौशल्या रानी सुतजाये शारंगपानी उमंगे जन ज्ञानदेव सीताराम गाइके. १ सुताख्या ब्रह्मणकला सोपानदेव महानदेव ज्ञानदेव ऐसे तीन जैसे धाय पुत्र परोसी साखी ऐसे सबनमें ब्रह्मण साखीयह जानि लीजे सोभैसापत्यौप्रमाण कौन॥

टीकातिलोचनजूकी॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीतिलोचनजूसूरशशिनाहींकिधौंजगमेंप्रकाशहै। नामीकीतौ बातसुनिआयेसुनोदूसरेकी सुनेईबनतभक्तकथारसराश है॥ उपजेबणिककुलसबैकुलअच्युतकोऐयेनहींबनैएक तियारहैपासहै। टहलुवानकोउसाधुमननिकोजानिलै यहीअभिलाषसदादासनिकोदासहै १७७ आयेप्रभुटह लुवारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैयांटूटीपाइहै।

निकसतपूछैंअहोकहातेपधारेआप वायमहतारीऔरुदेखि येनगाइहै।बापमहतारीमेरेकोऊनाहिंसांचीकहौंगहौजोट हलतौपैमिलतसुभाइहै।अनमिलबातकौनदीजियेजनाय वहखाऊंपांचसातसेरउठतरिसाइहै १७८ चारिहीबरन-कीजुरीतिसबमेरेहाथ साथहूनचहौंकरौंनीकेमनलाइकै। भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजनमगयोनयोकछूनाहिं डारे बरषबिताइकै॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयोतेरोहोंतोबो-ल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै। कामरीपन्हैंयांसबन ईकरिदईऔरुमीडिकैन्हवायोतनमैलकोछुड़ाइकै १७९॥

अनमिलपै ॥ सवैया ॥ अरसात जम्हात लगे नख गात कितौ तुतरात सुबोलत हूं। कविसुन्दर उलटि औरुसुनौं इतनै परसौंह करै अनहूं॥ तिनसोंवकहा कहिये जिनके सुपनैंहूं न लाज भई कबहूं। जग में सबी औषधिहै सब कोपै सुभावकी औषधि नाहिंकहूं १ मनलाइकै॥ दोहा॥ चारि बरण की चातुरी सरै न मेरो काम॥ भक्त सेव जो जानिहौं तो रहौ हमारे धाम २ भक्तनकीसेवा॥ गीता-यां ॥ यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः ३ बाप मह-तारीनहीं॥जयतिजगनिवासोदेवकीजन्मवादो शाखजन्म गादैंअजन्मा।वै दोऊ सत्त:भक्ति बेटा मित्र सखा ऐसे जानिये॥

बोल्यौघरदासीसोंतूरहै याकोदासीहोइदेखियोउ-दासीदेतऐसोनहींपावनो। खाइसोखवावोसुखपावो नितनित्तहियेजियेजगमाहिं जौलौंमिलिगुनगावनो। आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लियेचावदावैपांवसब निलड़ावनो। ऐसहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठि

आपनेकुवातकोचलावनो १८० एकदिनगईहीपरोसिनि केभक्तवधूपूछिलईबातअहोकाहेकोमलीनहैं। बोलीमुसि काईवेटहलुवालिवाइलाये कहूँनअघाइखोटिपीसितनछी नहैं॥ काहूसोंनकहौयहगहोमनमांझयेरीतेरीसोंसुनैंगो जोपैजातरहैभीनहैं। सुनिलईयहीनेकुगयेउठिहुतीटेंक दुखहूअनेकजैसेजलबिनमीनहैं १८१ वीतेदिनतीनिअ- न्नजलकरिहीनभयेऐसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइये। ब डीतूअभागीबातकाहेकोकहनलागी रागीसाधुसेवामेंसु कैसेकरिलाइये। भईनभवानीतुमखावोअन्नपानीयहमैं हींमतिठानीमोकोप्रीतिरीतिभाइये। मैंतोहोंअधीनतेरेघ रहीमेंरहौंलीनजोपैकहौसदासेवाकरिबेकोआइये १८२ कीनेहरिदासमैंतोदासहूनभयोनेकु बड़ोउपहाससुखजग मेंदिखाइयें। कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरीकहोअहोअज्ञ ताईरीतिमननेंनआइये॥ उनकीतौबातबनिआवैसबउन हींसोंगुनहीकोलेतमेरेअवगुणछिपाइये। आयेघरमांझ ताऊमूढ़मैंनजानिसक्यों आवैंअबक्योंहूंधाइपाइलप टाइये १८३॥

आवत अनेक साधु॥ गीतायां॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजतेमामनन्यभाक्।साधुरेवसमंतव्यो सम्यक्व्यवसितोहि सः १ अन्न जल करिहीन॥ श्लोक॥ वैष्णवःपरमोधर्म्मः वैष्णवःपरमंतपः॥ वैष्णवःपरमाराध्यो वैष्णवः परमंगुरुः २ चारौ वेद में अरु अठारह पुराण में अरु श्रीभागवत में यह सुनी है वैष्णव स्वरूप सर्वोपर श्रीभगवत रूपी सा- क्षात् है ३॥

टीकावल्लभाचार्य्यजीकी॥ हियमेंसरूपसेवाकरिअ

नुरागभरेठरेओरजीवनिकीजीवनकोदीजिये । सोईलै प्रकाशघरघरमेंबिलासकियो अतिहीहुलास फलनयन नकोलीजिये । चातुरीअवधिनेकुआतुरीनहोतिक्योंहूं चहुंदिशिनानारागभोगसुखकीजिये । बल्लभजूनामलि योपृथुअभिरामरीतिगोकुलमेंधामजानि सुनिअतिरीझिये १८४ ॥ गोकुलकेदेखिबेकोगयोएकसाधुसूधोगोकुलम गनभयोरीतिकछुन्यारिये । छोकरकेवृक्षपरबटुवाझुलाइ दियोकियोजाइदर्शनसोभयोसुखभारिये । देखआइनाहिं प्रभूफेरिआपपासआयोचिंतासोंमलीनदेखि कहीजानिहा रिये ॥ वैसोईस्वरूपकैईगईसुधिबोल्योआनिलीजियेपि छानिकहीसेवानितधारिये १८५ ॥

गोकुलके देखिबेको ॥ कवित्त ॥ जौलौं व्रज बीथिन में विषकै न येरेमन तौलौंकुटिलाईकी सुकालिमाजनाइये। तौलौं नवनीत चोर चित्त में न आवै नेकु जौलौं और साधन मेंस्वच्छता न पाइये ।स्मृतिपुराणवेदपंडितप्रवीण ताई करि अभिमान धोष पंकलपटाइये। पैनकरि कहतु हौं प्रवीणन सों कानखोलि सोकुल मलीन जहां गोकुल नगाइये १ बेर गोधूलिकै सुनततियागोरी गान दामिनी निकरसी निकरथूहतेघिरैं। गोधनके पाछे आछे नटवर भेष काछे श्याम चलत कटाछेतियनैन नैनसों भिरैं। जा- रिनि किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जिततितफूलपा तीगैल छैलपै परैं। होतिनव सांझइनगोकुलगलिन मांझ कोटि बैकुंठसुख सहज बहेफिरैं २ नाहींप्रभु॥ दोहा॥ छतौनेह कागदहिपैभये लिखाइनटांक ॥ आंचलगै उघ- र्योअबै सेऊड़कोसों आंक ३ स्नेह बिछुरनि में उखरि आवै वैसोई रूप॥ दोहा॥ प्रेमएकएकचित्तसों एकैसंग समाइ॥गंधीकोसोंधौनहीं जनननहायबिकाइ४नयनको

फल ॥ वन्दीयतेतेनयनेनराणां लिंगानिविष्णोर्ननिरी-
क्षितोयेऽ ॥

खुलिगईआंखेंअभिलाखैंपहिंचानिकीजै दीजैजुबताइ मोहिंपावैनिजरूपहै । कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौ हियेलियेभावसेवाकरोमारगअनूपहै । देखिकैमगनभयो लयोउरधारिहरिनयनभरिआयेजान्योभक्तिकोस्वरूपहै। निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पूरणचमतकार कृपाअनुरूपहै १८६ मूल ॥ संतसाखिजानैंसबैप्रगटप्रे मकलियुगप्रधान।भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो। मारिमारिकरिखड्गबाजसागरमेंदीनो॥ नृसिंहकोअनुक रनहोइहरणाकुशमार्यो । वहेभयोदशरथरामबिछुरेतन डार्यो ॥ कृष्णदामबांधेसुनेतिहिक्षणदीनेप्रान । संतसा खिजानैसबैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान ५० टीका ॥ संत साखिजानैंकलिकालमेंप्रगटप्रेमबड़ोईअसंत जाकेभक्तसों अभावहै।हुतौएकभूपरामरूपततपुरमहारामहीकीलीला गुणसुनैंकरिभावहै । बिप्रसोसुनावैसीताचोरीकोनगावै हियोखरौभरिआवैवहजानतसुभावहै ॥ पर्योद्विजदुखी निजसुवन पठाइदियो जानैं न सुनायो भरमायो कियो घावहै १८७॥

कलियुगप्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेम ते वाके स्वरूपको बाप प्रेमते स्वरूपके बाप कोशिवाकार याते प्रधान १ घावहै ॥ कुंडलिया ॥ धोबीबेटा चांदसासी- टी और पटाक।सीटीऔर पटाक प्रेमहरि भक्तिनजानै अन्न कनरहै न टांक छालनीसों मनछानै ॥ श्वास धवनि

ज्यों धवै अंग मुसा ज्यों दाढ़ै। ऐसो महा अचेत धौस कूकर ज्योंकाढ़ै ॥ अगर कहैं निर फलगई सेमरि फूली पाक। धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक २ ॥ दोहा ॥ कबहुंनसुखमें हरिभजे भक्तन मिले न दौरि ॥तीनों पनयों ह्वैगये फिरत पराई पौरि ३ ॥

मारिमारिकरिकरखड्गनिकासिलियोदियोघोरसागरमेंसोअवेशआयोहै।मारैंयाहीकालदुष्टरावणबिहालकरैंपावनकोदेखैंसीताभावदृढ़छायोहै ॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनिबोलेविनप्राणकियेनीचफलपायोहै । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुणजो रूपकीनिहारिनयेफरिकैजिवायोहै १८८ नीलाचलधामतहांलीलाअनुकरणभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिडार्योहै।कोऊकहैदोसकोऊकहतअवेशतापै करौदशरथकियेभावपूरोपार्योहै॥ हुतीएकबाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंनआईसुतसुनीकहेउधार्योहै ॥ बांधेयशुमतिसुनिऔरभईगतिकहिदईसांचीरतितनतज्योमानौवार्योहै १८६ ॥

सोये समस्त भाव प्रेमसौं होतभये जैसे श्रीगोपिकानके प्रेमसों भाव होतभये १ तापैदृष्टांत एकप्रेम के द्वै श्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एकएकपुच आनंदिताकेतो सुनन्द व्याकुलताके बिरह ताबिरह की श्री तदात्मकको स्वरूप२॥ सवैया ॥ बैर बढ्योसुबढ्योअति ही अबको कहिको लरिकौनको सूझै। कैसी भई हरिहे-रतही अबकोहियके बियकी गतिबूझै। बाहरहूघरहू में सखी अंखियांनिबहैछबि आनिअरूझै। सांवरोरूपरम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ३॥ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे॥ यास्यामितीर्थमद्यैव कंठेकृत्वान्वालकं ॥ अथवात्वंगृहाण

चक्षुस्त्रयासेकिंप्रयोजनं ४ ऐसे नन्दजी में बैठिकै सो बाई ने कहो तदात्मकको पुन तद्वत् तद्वत्कोस्वरूप सोकहैं ५॥
कवित्त॥ श्यामको जपतिकुती श्यामाजू सरूप भरी मगीप्रेमपूरणते ह्वै गईकन्हाईहै। सुरतिलिखी जोचिट्ठी प्यारीपियततकाल भामिनी वियोगभयो अतिदुख दाईहै। व्याकुलबिहाल अति प्यारीके बिरहतन राधेराधेरटिपुनि भई राधिकाईहै। चकित सचेत कहै बेरबेर हेरि पाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आईहै १॥ पद॥ दुहुं दिशि को अति बिरह बिरहिनी कैसेकैंजुसहै। सुनो सखीयह बात श्यामसों को समुझाइकहै। जबराधा तबहीसुख माधोमाधो रटतिरहै। जबमाधो ह्वै जाति चणक में राधा बिरह दहै। पहले जानि अगिनि चंदनसी सती होन उमहै। समाचारतातेसीरेको पाछे कौनकहै। उभय दारुह्वै कीटमध्यज्योंशीतलताहिचहै। सूरदास प्रभु व्याकुल बिरहिनि क्योंहूंसुखनलहै २॥दोहा॥ पियके ध्यान गहीगहीरहीवहीह्वै नारि॥ आयआपही आरसीलखिरीझत रिझवार ३॥ श्लोक॥ तटिक्षुवितरलाक्षोलक्षतोयासमंतात् इहवसतिसधूर्त्तःशीघ्रमायातुयूयं॥ असकृदितिवदंतिकामिनीकापिवालं कपिकिरपितमालं गाढमालिंगतिस्म ४ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजी के ५॥ चौपाई॥ भृंगीभयतेभृंगहोइ वहकीटमहाजड़। कृष्णप्रेमतेकृष्णहोईकछुअचरजनहिंबड़ ६ प्रेमहिपीवहि अंतरपै तो।बीसीतीनि साठिहैं जेतो ७ एकसिद्ध अमली के नीचे बैठ्यो तप करतरह्यो तासग श्रीनारदजीआये से पूछी हरि मिलैंगे सोपरमेश्वर ते पूछी नारदजी कहोअमली के पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजाकी बेटीको अरुदै मिचन को दृष्टांत ८॥

मूल॥ प्रसादअवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति॥ होंकहाकहौंबनाइ बातसबहीजगजानै। करतेंदोनोभयो

श्यामसौरभरुचिमाने ॥ छप्पनभोगतेयहलखीचकरमा कोभावै । सिलिपिल्लेकेकहतकुंवरिपैहरिचलिआवै ॥ भक्तनिहितसुतबिषदियो भूपनारिप्रभुराखिपति । प्रसाद अवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति ५१ ॥ पुरुषोत्तम काशीराजा ॥ प्रसादकीअवज्ञातेतज्योनृपकरएक करिकै विवेकसुनोजैसीभांतिभईहै । खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभु भक्तमेश दाहिनेंसेफासेबांयोछुयोमतिगईहै । लैगयेरिसा इकैफिराइमहादुःखपाइ उठ्योनरदेवगेहगयोसुनिनईहै। लियोअनसनहाथतज्योयहीछिनतब सांचौमेरोपनबोलि बिप्रपूछिलईहै १६० काटैहाथकौनमेरोरहैगहिमौनयाते पूछतसचिवकहाशोचयोंबिचारियै । आवैएकप्रेतमोदिखा ईनितदेतनिशि डारिकैझरोखाकरशोरकरिभारियै । सोऊ ढिगआइरहौआपकोछिपाइतवडारैहाथआनितबहींकाटि डारियै । कहीनृपभलेचौकीदेतमेंघुमायोभूप डार्यौउठि आनिछेदन्यारौकियोवारियै १६१ देखिकैलजानोकहा कियोमैंअयानोनृप कहीप्रेतमानोनहींप्रभुसोंबिगारियै। कहीजगन्नाथदेवलैप्रसादजावोवहां लावोहाथबोवौबाग सोईउरधारियै। चलेतहांधाइभूपआगेमिल्योआइ हाथ निकस्यौलगाइहियेभयोसुखमारियै । लायेकरफूलताके भयेफूलदोनाके नितहीचढ़तअंगगंधहरिप्यारियै १६२॥

प्रसादअवज्ञा॥श्लोक॥ प्रसादंजगदीशस्यअन्नपानादि कंचयत् ॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहियथाबिष्णुस्तथैवतत् १ पूछि लई है॥ दोहा॥ बाम बाहु फरकत मिलै ज्यों प्रीतम्रस सूरि॥ त्योंतोहीसोंभेटिहौं राखि दाहिनोदूरि २॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनाम जानि बिनारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथ देवआइभोजनकरतनीके जितेलागैंभोगतामेंयहअतिभावही । गयोतहांसाधुमानिबड़ोअपराधकरे भरैवहश्वास सदाचारलैसिखावही । भईयोंअबारदेखैखोलिकैकिवार तौपैजूंठनिलगीहैमुखधोयेबिनआवही १६३ पूछीप्रभुभयोकहाकहियेप्रगटखोलि बोलिहूनआवैहमैंदेखिनईरीति है । करमासुनामएकखीचरीखवावैमोहिं मैंहूंनितपाऊंजायजानीसांचीप्रीतिहै । गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोसिखाइ आयो मतमोअनंतबिनजानेयोंअनीतिहै । कहीवाहीसाधुसोंजुसाधिआवौबहीबात जाइकैसिखाईहियआईबड़ीभीतिहै १६४ ॥ सिलपिल्लेउभैबाईकीटीका ॥ सिलिपिल्लेभक्तउभैबाईसोईकथासुनौ एकनृपसुताएकसुताजिमीदारकी । आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कहीललचाइपूजाकीजेसुकुवारकी । दियोशिलटूकएकनामकहि दियोवही कीजियेलगाइमनमतिभवपारकी । करत करत अनुरागबढ़िगयोभारी बड़ीयेबिचित्ररीतियहीशोभासारकी १६५ ॥

वैष्णवप्रेमको समझै नहीं॥वेदसमझै याते करमाबाई को वेदही सिखाया ॥ दोहा ॥ लकरी धोवै भ्योंसनै करै छतीसौ पाक ॥ ताको षट षटकरम हैं ताको भावैछाक १ सो प्रेमको समुझै । नट गोपाल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग बनावै २ बड़ोभीति है ॥ साधुको फेरिआया देखि कै डरी । आप कहा सिखाइगयो तब साधुबोले रीतूंडर मतिरी ॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं तब पोथी

देखी तब जानी तू वैसेही करयौ करि तब साधुहंसेकही खलचाइ ३॥

पाछिलेकबित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अबसुनौन्यारी न्यारीनीकेमनदीजिये। जिमीदारसुताताकेभयेउभैभाईर हैंआपसमेंबैरगामआर्योसुवेछीजिये। तामेंगईसेवाइतब डाईकलेशकियोतियोनहींजातखानपानकैसेकीजिये। र हेसमुझाइयाहिकछुनसुहाइतबकहीजायलावौतेरेदोऊस मधीजिये १६६ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभाईरहैबैठ्यो हैअथाईमांझकहीवहीबातहै। लेहुजूपिछानीतहांबैठ्यो इकठौरेप्रभुबोलिउठेउकोऊबोलिलीजेप्रीतिगातहै। भई आंखिरातीलगीफाटिबेकेछातीसोपुकारीसुरआरतसोमा नेतनपातहै। हियेआइलागेसबदुखदूरिभागेकोऊबड़ेभा गजागेघरआईनसमातहै १६७॥

भई आखिराती॥ कवित्त॥ कंचनमेंआंचदई चुनीचिन गारीभई दूषणभयेरी सब भूषणउतारिले। पियहैं विदेश वाही देश क्यों न परैधाइ ससकि ससकि उठै मनहूं विचारिले। परघर आगिआली लांगन क्यों जाति अब आगिमेरे अंगचिनगारीचारिभारिलै। सांझसमैसांचसुन बातीक्यों न देति आली छाती सों छुवाइ दियाबाती क्यों न बारिलै १ बसन डसन भये हसन रसन होत श्वासनिसों जागिहै वियोगआगिआगरी। धामतौ धजा रसे हैं छारसेहैं कामकाज आलिनकैयूथजाल ऐसे हाल नागरी। भोजन हलाहल कुलाहल सोनादनाति वाद है बिवाद ऐसे विसदनिकी सागरी। आपुनु मृगीकै तूल कामदेव शारदूल बचिहै न मूल फूल उठोहै उजागरी२॥ दोहा॥ धवल महल शय्याधवल धवल शरदकीरैन। एक श्याम बिन बिकलसब ज्यों पुतरी बिनसैन ३॥

टीकानृपसुताको॥सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगातपगी भजीसबविषयव्रतसेवाअनुरागीहै। ब्याहीहोबिमुखघर आयोलेनवहेवरखरीअरवरीकोईचितचिंतालागीहै। करि दईसंगभरीआपनेहीरंगचली अलीहूनकोऊएकवहीजा- सोंरागीहै। आयोढिगपतिबोलिकियोचाहैरतियाकीऔर भईगतिमतिआवौबिथापागीहै १९८ कौनवहबिथाताको कीजियेयतनबेगिबड़ोउदबेगनेकुबोलिसुखदीजिये। बो- लिबोजोचाहौतौपैकरौहरिभक्तिहियेबिनहरिभक्तिमेरोअं- गजिनिछीजिये। आयोरोषभारीतबमनमेंबिचारीवापिटा रीमेंजुकछूसोईलैकैन्यारोकीजिये। करीवहीबातमूसिजल मांझडारिदईनईभईज्वालाजियोजातनहिंखीजिये १९९ तज्योजलअन्नअबचाहतप्रसन्नकियो होतक्योंप्रसन्नता कोसरबसलियोहै। पहुंचेभवनआइदईसोजताइबातगा तअतिछीनदेखिकहाहठकियोहै। साससमझावैकछूहा थसोंखवावैयाकोबोल्योहूनभावेतबघरकतहियोहै। कहै सोईकरें अबपरैपांइतेरेहम बोलीजबवेईआवे तौहीजात जियोहै २०० ॥

तज्योजलअन्न॥ दोहा॥ शठसनेहसों डरपिये नंद और भयनाहिं। सांपिनिसुत हित जानिकै गिलेपेटपचि जाहिं १॥ कवित्त॥ समरमें लरयोजाहि गिरहते गिरयो जाइ गगनमें फिरयोजाइ पावकको दहिबो। काननमें रह्योजाइ ब्यालकर गह्योजाइ विरहहू सह्योजाइ और कहाकहिबो। हलाहल पियोजाइ सरबस दियो जाइ करवत लियो जाइ वारिधि को बहिबो। और दुख याहूते जुदुसह कठिन ऐसो जैसो कछू विमुख

संग एकछिनरहिबो २ ऐसो सत्संग मनमें जानिबो ३॥

आयेवाहीठौरभौंरआइतनभूमिगिरयो गिरयोजल नैनसुरआरतपुकारीहै। भक्तिबशश्यामजैसेकामबशका-मीनर धायलागेछातीसोंजुसंगसोंपिटारीहै। देखिपति सासुआदिजागतबिवाहमिट्यो बादिहीजनमगयोनेकुन सँभारीहै। कियेसबभक्तहरिसाधुसेवामांझपगे जगेकोऊ भागघरबधूयोंपधारीहै २०१॥ भक्तनकेहेतुसुतबिष दियोउभयबाईकीटीका॥ भक्तनकेहेतसुतबिषदियोउभै बाई कथासरसाईबातखोलिकैजताइये। भयोएकभूपता-केभगतअनेकआवैं आयोभक्तभूपतासोंलगनिलगाइये। नितहीचलतऐयेचलननदेतराजा चितयोबरषमांझकह्यौ मोरजाइये। गईआशटूटितनछूटिबेकीरीतिभई लईबात पूंछिरानीसबैलैजनाइये २०२॥

आयोभक्त भूप॥ श्लोक॥ मदाश्रयाःकथामिष्टाःशृण्वं-तिकथयंतिच॥तपंतिविविधास्तापानैतान्मद्गतचेतसः १साधु सेवासैंकछाला॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गंनपुनर्भवं॥ भग वत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः २॥ प्रथमे॥ वासुदेवभ गवतिभक्तियोगःप्रयोजितः॥ जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानंचयद हैतुकं ३सप्तमे॥ वासुदेवेभगवति भक्तिमुद्वहतांनृणां॥ ज्ञान वैराग्यवीर्याणां नेहकश्चिद्व्यपाश्रयः ४॥

दियोसुतबिषरानीजानीनृपजीवैनाहिं संतहैस्वतंत्र सोइन्हैंकैसेराखिये। भयेबिनभोरबधूशोरकरिरोइउठी भोइगईरावलमेंसुनीसाधुभाषिये। खोलिडारीकटिपट भवनमेंप्रवेश कियोलियादेखिबालककोनीलतनसाषिये।

पूछ्योभूपतियासोंजुसांचकहिकियोकहा कहीतुमचल्यौ चाहौनैनअभिलाषिये २०३ छातीखोलिरोयेसंतबोलहू नआवैमुखसुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये। जानी हूनजातिपांतिजाकोसोबिचारकहा अहोरससागरसोस-दाउरधारिये। हरिगुणगाइसाखिसंतनिबतायदियोबा-लकजिवाइलागीठौरवहप्यारिये। संगकेपठाइदियेरा जेवेभीजेहिये बोलेआपजाउंजौनमारिकैविडारिये २०४ सुनौचित्तलाइकहौदूसरोसुहाइहिये जियेजगमांहिंजौ-लौंसंतसंगकीजिये। भक्तनृपएकसुताब्याहीसोअभक्तम-हा जाकेघरमांझजननामनहिंलीजिये। पल्यौसाधुशीत सोंजुशरीरदृगरूपपले जीभचरणामृतकेस्वादहीसोंभी-जिये। रह्यौकैसेजाइअकुलाइनबरुयाइकछु आवेंपुरप्या-रेतबविषसुतदीजिये २०५॥

जानीहू न जातिपांति॥कुंडलिया॥ सोईनारिसुतेबड़ी जाकीकोठीउजारि।जाकी कोठीउजारि नाहि यादव पति भावै। श्रवणसुनत हरिकथारसनगोबिंदगुणगावै॥ आरज विदुष उदार सुमति सुकुलीनी सोई। हृदय बसत हरि चरण जगत डार्योकरि छोई॥ अगर कहैतादासपर तन मन दीजैवारि। सोई नारिसुतेबड़ी जाकी कोठी उजारि १॥ दोहा॥यद्यपि सुन्दर सुघरपुनि सगुनौ दीपक देह। तऊ प्रकाश करै तितौ भरिये जितौ सनेह २॥एकादशे॥ मल्लिंगमद्भक्तजन:दर्शनस्पर्शनार्चनं॥परिचर्यास्तुतिप्रीह गुणकर्मानुकीर्त्तनं ३ हरिगुणगाईसाखिसंतन॥ आदिपु-राणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिव। भक्तानामनु गच्छंतिभुक्तयोमुक्तिभि:सह ४॥

आयेपुरसंतआइदासीनेजनाइकही सहीकैसेजातिसु

तबिषलैकैदियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसब भूमिगिरेआनिदुकभयोजातहियोहै । बोलीअकुलाइएक जीवेकोउपायजोपै कियोजायपितामेरेकोउबारकियोहै । कहैसोईकरैदृगभरेल्यावोसंतनिको कैसेहोतसंतपूछौचेरो नामलियोहै २०६ चलीलैलिवायचेरीबोलिवोसिखाइदि योदेखिकैधरणिपरीपाइगहिलीजिये । कीनीवहीरीतिदृ- गधारामानोंप्रीतिसतकरीयोंप्रतीतिगृह पावनकोकीजिये चलेसुखपाइदासीआगेहीजनाईजाहि आइठाढ़ीपौरिपां- इगहेमतिभीजिये । कहीहरेबातमेरेजानोपितामातमैंतो अंगमेंनमातआजुप्राणवारिदीजिये २०७ रीझिगयेसंत प्रीतिदेखिकैअनंतकह्यो होइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजुकरी है । बालकनिहारिजानीबिषनिरधारदियो दियोचरणा- मृतकोप्राणसंज्ञाधरीहै । देखतबिमुखजाइपाइ ततकाल लिये कियेतवशिष्यसाधुसेवामतिहरीहै । ऐसेभूपनारि पतिराखी सबसाखीजन रहैअभिलाषी तोपैदेखोयह घरीहै २०८ ॥

दियोचरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्या धिविनाशनं । विष्णुपादकंपीत्वा शिरसाधारयाम्यहं १ देवतान नेकही शुकदेव जी सों श्रीभागवत हमैं देऊ अमृत राजा परीचितको देऊ सो इन भागवत न दयो है याते हरिको बालक को चरणामृत दियो ॥ दोहा ॥ धन्य संत जहँ जहँफिरे तहँ तहँ करत निहाल । चरणामृत मुख डारिके फेरि जियायो बाल २ ॥ श्लोक ॥ वरंहुतवहज्वाला पिंजरांतर्व्यवस्थितिः । नासौश्रीविष्णुविमुखः जनसंवासवै- शसम् ४ ॥

मूल ॥आसैअगाधदोउभक्तकोहरितोषनअतिशयकियो॥श्रीरंगनाथकोसदनकरनबहुबुद्धिबिचारी। कपटधर्मरबिजेन्द्र द्रव्यहितदेहबिसारी। हंसपकरनेकाज बधिकबानोंधरिआये। तिलकदामकीसकुच जानितिहिआपबँधाये॥ सुतबधहरिजनदेखिकैदैकन्याआदरदियो। आसेअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ५२ टीका॥ आसैसौअगाधदोउभक्तमामाभानजेको दियोप्रभुपोषताकीबातचितधारिये। घरतेनिकसिचलेबनकोविवेकरूपमूरतिअनूपबिनमंदिरनिहारिये। दक्षिणमेंरंगनाथनामअभिरामजाको ताकोलैबनावैधामकामसबटारिये। धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूंचहूंदिशिहेरिदेख्योभयोसुखभारिये २०९ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपारसकीआरसनकियोवेदनूनहूंबतायोहै। पावैंप्रभुसुखहमनरकहूगयेतौकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै। ऐसीकरीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्योंसेवरासमाजसबनीकेकैरिझायेहै। दियोसोंपिभारतचलेबेकोबिचारकरै हरेकोनराहभेदराजनपैपायोहै २१० ॥

घरतेनिकसिचले॥कवित्त॥ चाहैंधन धामवाम सुतअभिरामसुख कह्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहै। चतुरनआगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइसुनि उपजत लाज है। जोपै कहौंसांच यामें झूठन मिलाव नेकु तौपै श्वान से क्यों कहुं रोंक्यो गज राज है। बृन्दाबन चाहै तौ न चाहै जीवतनहूको मनहूंको दूरि ऐसे मिलतसमाजहै॥ वेदननहूं बतावै॥ श्लोक॥ गजैरापीड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमंदिरे। यामनीनैववक्तव्य कंठैःप्राणगतैरपि १ रंग

नाथ॥कावेरीविरजातौच वैकुण्ठंरंगमंदिरं। प्रवासुदेवरंगेश प्रत्यक्षंपरमंपदं २॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसों भानजोहो कलसमँवरक लीहाथसोंफिरायोहै। जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचिलई औरवारबहुआपनीकैचढ़िआयोहै। कियोहोजोहारतामेंफू लितनफँसिबैठेउअतिसुखपाइतबबोलिकैसुनायोहै। काढ़ि लेवोशीशईशभेषकीननिंदाकरैंभरैंअंकवार मनकीजियो सवायोहै २११ काढ़िलियोशीशईशइच्छाकोबिचारकि योजियेनहींजाततऊचाहमतिपागीहै। जोपैतनत्यागक रोंकैसेआससिंधुतरौवाहीओरआयो तहांनीमखुदीलागी है। भयोशोकभारीहमेंहवैगईअवारीकाहूऔरनेबिचारी देखैंवहीबड़भागीहै। भरिअंकवारिमिलेमंदिरसँवारिझि लेखिलेसुखपाइनयनजानेसोईरागीहै २१२ कोढ़ीभयो राजाकियोयतनअनेकऐयेएकहूनलागैकह्योहंसनिमँगाइ ये। बधिकबुलाइकहीबेगिहीउपायकरौ जहांतहांढूंढ़िअ होइह्वांलगिलाइये। कैसेकरिलावेंवैतोरहैंमानसरमांझ लावौगेकुटौगेतबजनेचारिजाइये। देखतहिउड़िजातजा तिकोपिछानिलेतसाधुसोनडरैंजानिभेषलैदनाइये२१३।

मामारह्यो भीतर॥ दोहा॥ साधुसतीअरुशूरमाज्ञा- नी अरु गजदंत। येते निकसिमबाहुरैं जोयुग नाहिंअनंत। ११॥ श्लोक॥ स्वर्गापवर्गनरकेष्वपितुल्यार्थदर्शिनः। सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणंव्रजेति २ अग्रेवह्निःपृष्ठे भानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः। करतलभिक्षा: तरुतलवासास्त दपिनमुञ्चत्याशापाशम् ३॥ दोहा॥ जौन युगति प्रिय मिलनकी धूरिमुक्ति मुखदीन। जो लहिये संग सजन तौ

घरके नरकहू दीन ४ ईश्वरइच्छा भलीकरी ॥यद्यद्वांछतिम झकः॥ इनकहो मुह कैसे दिखावेंगे सेवराके चेला भयेयाते काढ्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे औषधि कषीन व्यवहार कलिये वैद पसारी ऐसे कोढ़ी भयो खर कुत्तानहीं भले मनुष्यपैहै ॥

गयेजहांहंससंतवानोसोप्रसंशदेखि जानिकेबधायेरा जापासलैकेआयेहैं। मानिमतिसारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधा रिपूछिकैबजारलोगभूपढिगल्यायेहैं। काहेकोमँगायेपक्षी आछीहमदेहकरैंछांड़िदीजैइन्हैंकहीनीठिकरिपायेहैं। औ षधीपिसाईअंगअंगनिमिलाइकिये नीकेसुखपाइकहीउन कोछुड़ायेहैं २१४ ॥

जानिके बधाये॥ दोहा ॥ हंस कहै सुनि हंसिनी सुनों पुरातम साखि ॥ बधिकभेद जानेनहीं पतिवानैकीराखि१ वैद्यको॥ कवित्त ॥ तपबैल हजूर हरौल चंडौल कफवादू मूलहूलहलकारा काहली बिचारिये। कोटकोतवालको तो दादहै दिवान फोरा फौजदार पितीपद चरहूँकारिये। तिजारी तापतिल्ली संग्रहणी सेठमानिलेऊ खईखान खासी राजपत्नी निहारिये। शीतअतीसार युग मंत्री बिषम बादशाहिभाजि वैदराज आयो सेना लिये भारिये २ आई मनजूनके जनून बड़ीनून सेती भनिडारें रोग अरुण आमल बैठाया है। अरक फरक सेतो प्यादिन के यूथ बड़ चूरण चतुर चोबदार मन भाया है।गोली किधौं गोला काय कटक भसुण्डी मानों उसन सलिल शीत बातको नशायो है। अंजन सुगंध लेप मर्द्दन कराइ पुनि सेन चतुरंगसजि वैदराज आयोहै ३॥ छप्पै ॥ नारद शुक सदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं। करै सतसंग नव इत्तिकुपथ होने नहिं पावैं। औषधि नवधाभक्ति यतन प्रभु

को आचारा । चरणामृत करिकाथ हरै सो सकल विकारा। संत चरण रजधोइ के तोइ मारौ करिदीजै । पथ है महाप्रसाद अन्न रसना नहिं लीजै । त्रिगुण दोषबाई चौरासी जनम मरण कोठ हिहरै। तत्ववेत्ता तिहूंलोक में फिरि न रोग तिहिं संचरै ४ ॥

लेवोभूमिगांवबलिजांवयादयालुताकीभागभालजाके ताकोदरशनदीजिये। पायोहमसबअबकरोहरिसाधुसेवा मानुषजनमजाकीसफलताकीजिये। करिलैनिदेशदेशभक्तिविस्तारभईहंसहितसारजानिहियेधरिलीजिये। बधिकनजानीजासोंखगनिप्रतीतिकीनी ऐसोभेषछाड़ियेनरारूयोमतिभीजिये२१५॥महाजनसदावर्तीकीटीका॥ महाजनसुनोसदा प्रतीताकोभक्तपनमनमेंबिचारसेवाकीजैचितलाइकै। आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमतिसाधलेतजैसेअवेसुबुधिमिलाइकै। संतसुखमानिरहिगयोघरमांझसदा सुतसोंसनेहनितखेलेसंगजाइकै।इच्छाभगवानमुख्यगोनलोभजानिमारिडार्योधूरिगाड़िगृहआयोपछिताइकै २१६ देखैमहतारीमगबेटाकहांरह्योपगिबीतेचारियामतऊधामनेंनआयोहै।फेरीनृपडौंड़ीजाकेसंतसंगआथलाड़ीकह्योयोंपुकारिसुतकौनेबिरमायोहै। बंगिदेबताइदीजैआभरण दियोलीजैकहीसोसन्यासीयहमार्योमनलायोहै। दईलैदिखाइदेहबोल्योयाकोगहिलेहु याहीनेहमारोपुत्रमारेउनीकेपायोहै२१७॥

हिये॥ श्लोक॥ आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंपरं॥ तस्मात्परतरंदेवितदीयानांसमर्चनं १ भक्ततुष्टेहरिस्तुष्टे तुष्टस्तुष्टेचदेवता ॥ भवतिसिक्तामाखाश्वतरोर्मूलनिसे

धनात् २ आरंभगुर्वीक्षयतिक्रमेण लघ्वीपुराद्धवृद्धि मतीचप श्चात् ॥ दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्नाछायेवमैत्रीखलसज्जना नां ३ मनसेंविचार ॥ नवके ॥ मनुरेवमनुष्याणांकारणंबंध मोक्षयोः ४ चितचाइके ॥ कारनहीं तौ भक्ति ढिग जाइ जैसे पाथर चढ़ावते तौबड़ी बेर चढ़ै चित्त विना नेकमें गिरिपरेहैं ५ साधुलेत अनेक प्रकारके साधुआवे हैं ॥ जि- न में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकोसी रीतिजानौ ६॥

बोल्योअकुलाइ मैंतौदियोहैबताइ मोकोदेवौजुछुड़ा इनहींझूठकछुभाषिये। लेवौमतिनामसाधु जोउपाधिमटे उचाहौजावौउठिऔरकहूंमानिछोरिनाखिये । आइकेवि चारकियोजानीसकुचायोहियो बोलिउठीतियासुतदेकैनी केराखिये। परेउबधूपांइतेरीलीजियेबुलाइपुत्रशोककोमि टाइऔरखरीअभिलाषिये२१८बोलिलियोसंतसुताकीजि येजुअंगीकारदुखसोअपारकाहूविमुखकोदीजिये। बोल्यो मुरझाइ मैंतौमार्योसुतहाइमापै जियेहूनजाइ मेरोनाम नहींलीजिये। देखौसाधुताईधरीशीशपैबुराईइनरतीहून होसकियोमेरुसमरीझिये। दईबेटीब्याहिकहि मेरोउरदा हमिटेउकीजियेनिबाहजगमांहिंजौलौंजीजिये२१९ आ येगुरुघरसुनिदीजैकीनसरिबड़े संतसुखदाईसाधुसेवाले बताईहै। कह्योसुतकहांअजूपायोसुतकैसीभांतिकहिकोब खानेजगमीचुलपटाईहै। प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमेंआज्ञा दईचलियेदिखावौजहांदेहकोजराईहै।गयोवाहीठौरशि रमौरहरिध्यानकियोजियो चल्योआयोदासकीरतिवड़ाई है२२०मूल॥ चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन दारुमईतरवारिमारुनयरचीभुवनकी। देवाहितसितकेश

प्रतिज्ञाराखीजनकी । कमध्वजकेकपिचारुचितापरकाष्ठ लाये । जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढ़िआपनधाये । घृतसहि तभैंसचौगुणीश्रीधरसंगशायकधरन । चारोयुगचतुर्भुजस दाभक्तिगिरासांचीकरन ५२ ॥

लेवोमति नाम साधु ॥ कुंडलिया ॥ भुस ऊपरको लीपनो अरु बालूकी भीति । अरु बालू की भीति भूनकी मनो मिठाई । बाजीगरको बागस्वप्नमें नवनिधिपाई ॥ अजाअस्तन ज्यों कंट तुच्छ बादरकी छाया । पूरब बस्तु बिसारि पश्चिमदिशिढूढ़नधाया ॥ आन उपासक राम बिनु अगर सुऐसीरीति । भुसऊपरको लीपनौ अरु बालूकी भीति ॥ कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथाकर्त्तुं समर्थः ॥ ऐसेप्रीतिमें अवगुण दीखे जैसे मनन् की सहनककोरी जब नाच्यौ १ ॥

भुवनचौहानकीटीका ॥ सुनोकलिकालबातऔरहैपुरा णख्यात भुवनचौहानजहांरानाकीदुहाईहै । पट्टायुगला खखातसेवाअभिलाषसाधुचल्योईशिकारनृपभीरसंगधाई है । मृगीपाछेपरेकरेटूकहतिज्ञाभवनजे आइगईदयाकही काहेकोलगाईहै । कहैमोकोभक्तक्रियाकरौंमेंअभक्तनिकी दारुतरवारिधरौयहैमनभाईहै २२१ ॥

सुनों कलिकालहैं तीन युगनमें तौ पुराणन में विख्यातहैं सतयुगमें तौध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेधमेंकथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगनमें हरि प्रकट दर्शन देते कलियुग में तौ जीव लगौ रहहैंयाते कलियुगके जीव अधिकारी नहीं धन्यहैं सोनहीं और युगनमें बड़े के छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिके श्री बनमाल मांगते सोहू छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकहू दर्शन देहिंतो चिपटि जाहिं

क्योंकि गोपिनने द्वापरमें कृष्ण देखिकै घर छोड़े है कलि-के जीव कागद देखिके घर छोड़ि देहैं फिरि घरको मुख न देखैंगे यातो घरहुको आई १ ॥कवित्त॥ रसिकप्रवीण निकी कबिताई नाना भांतिगाई रसस्वादही सों होति सफलाई है। यहै जानि मोहनजु भोग भोगता बनाये आये चलेधुरिही सों सबनिजनाई है। त्रियुग प्रकट रूप देखे नितनैनन सों बैनमें सरूप लखिहोति अधिकाई है। कल कलिकालके लगोहैं येरसाल जीव छोड़िहैं न क्योंहूं हरि मूरति छिपाई है २ येबाणीमें साक्षात् मूरतिहो देखै है अधिकाई तो येई है याते प्रगट दर्शन नहीं देहैं हरि ३ कृपा ॥ श्लोक ॥ वैष्णवानांचयःकर्मदयाजीवेषुनारद ॥ श्रीगोविन्देपराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनं ४ ॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुसक्योनसँभारिजा इरानाकोजनाईहै । नृपनप्रतीतकरैकरैयहसौंहनानाबा नेप्रभुदेखितेजबातनचलाईहै । ऐसेहीबरषएककहतव्य तीतभयोकहैमोहिंमारिडारोजेपेंमैंबनाईहै । करीगोटकुं डजाइपाइकैप्रसादबैठेप्रथमनिकासिआपसबनदिखाईहै। २२२ क्रमसोंनिहारिकहीभुवनबिचारिकहाकह्योचाहैदा रुमुखनिकसतसारहै । काढ़िकेदिखाइमानोंबीजुरीचम चमाइआईमनमांझबोलेउवाकोमारौभारहै । भक्तकरजो रिकैबचायोअजूमारियेक्यों कहीबातझूंठनहींकरीकरतार हौपटादूनादूनपावैआवौमतिमुजराकोमैंहींघरआऊं होइ मेरोनिस्तारहै २२३ ॥

मारिडारिये ॥ एतेसत्पुरुषापरार्थघटिकास्त्वार्थंपरित्य ज्यते सामान्यास्तुपरार्थमुद्यमभृतःस्वार्थाविरोधेनये १ तेऽ मीमानुषराक्षसापरहितंस्वार्थायनिघ्नन्तियेयेनिघ्नंतिनि-

र्थकंपरहितंतकेनजानीमहै २॥ कबित्त॥ तजि स्वारथ परमारथकोचित्त दैकेसुधारत देवतजे। स्वारथह्न परमारथ ह्नचितदैकै सँभारत मानुषते। परमारथ कोतजि स्वारथ चित्तदैकैसुधारतराच्छसजे। स्वारथह्नपरमारथह्न चित्तदैकेन बिगारत जानौनते ३ अरिल्ल भइतलो यागौठजु रेनाहि चक्रवेपरचौनी जै अानु खाइहै लष्यवे। परमेश्वर प्रति राखी बात नहिं कछनकी। बिजुली ज्यों तरवारि चमकी भुवनकी ४ ॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका॥ दरशनआयोरानारूपचतुर्भुजजूकेरहेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। बेगिदेउतारिकरिलैकैगरेडारिदियोदेखिवारकहेउधौरोधोरेयेआयेहैं। कहततोकहिगई सहीनहींजातिअब महीपतिडारिमारहरिपदध्यायेहैं। अहोऋषीकेशकरोमेरेलियेसेतकेशलेशहूनभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं २२४ मानिराजात्रासदुखराशिसिंधुबूड़ोहुतोसुनिकैमिठासबाणीमानोंफेरिजियोहै। देखिसेतवारजानीकृपामेंअपारकरी भरिआंखिनीरसेवालेशमैंनकियोहै। बड़ईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरेंमैंतोहोंअभक्तऐयेहियोसकुचायोहै। झूंठसनबंधहूतेनामलीजैमेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशाइदियोहै २२५ आयोमोररानासेजवारसोनिहारिरहेकेशकाहूओरकलै पंडानेलगायेहैं। ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकैचढ़ाईनाकरुधिरकीधारानृपअंगछिरकायेहैं। गिरयोभूमिमुर्छाहूवैकैतनकीनसुधिकछू नाग्योयामबीतेअपराधकोटिगायेहैं। यहअबदंडराजबैठसोनआवैइहांअबयौंहूंआनमानिकरैंजेसिखायेहैं२२६

हरपदध्याइये॥ कुंडलिया॥ खटिया टूटभ्यौ सरनभुजा भगन भये ग्रीव। भुजा भगन भये ग्रीव दंड यमराज धरैगो।

तहाँ घराहर और राम बिन कौन करैगो। मात तात सुत सुता प्रीय परिजन कहि चारो। सब सों परयो बिछा- ह सुदिन हरिनाम संभारो। अगर आसरो और तजि रामनाम दृढ़ सोंव। खटिया टटैभ्योसरन भुजा भगनभ- यो ग्रीव १ अहो हृषीकेश॥ गीतायां॥ यंचस्यगुण दोष त्वंच्चमहंपुरुषोत्तम॥ अहंयंचभक्तान्यंचोनमेदोषोनमेगुणः २ भूठेसम्बंध॥ दोहा॥ परसा भूठ भक्तको हरि राखत मनमान॥ जैसे प्राहित कुपढ़को देतदान यजमान ३ ख- रौ खरौ सब लेतहैं परखि पारखी सार॥ खोटदास अन न्यके गाहक नंदकुमार ४ मन बुद्धि चित्त अहंकार सोहून के प्रेरक नंद कुमार ५॥

भयेचारिभाईकरेंचाकरीवेरानाजूकी तामेंएकभक्तिकरै वनमेंबसेरोहै। आइकैप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहै नेकुचलौतोमहीनालीजैतेरोहै। जाकेहमचाकरहैंरहतहजू रसदामरैतोजरावैकौनवहीजाकोचेरोहै। छूटेउतनबन रामआज्ञाहनुमानआयेकियोदाग धूवांलागिप्रेतपारनेरो है॥ २२७॥

एक भक्ति॥ श्लोक॥ तुल्यंक्षूभृतिजन्मतुल्यमुभयो स्तु- ल्यंचमूल्यंवपुस्तुल्यंदारुसुदग्धदंकाखननंतुल्यंचपाषाणयोः॥ एकस्याखिलवंदनायविधिनादेवत्वमारोपितं॥ तद्द्वारेवि हितापरस्परपदाघातास्पदंदेहली १॥दोहा। ज्ञाति गोत सब परिहरे प्रभुसेवाकी आस॥ रंक हरिहि को हूवेरहै सोकहिये निज दास २ जाकेहम चाकर हैं॥ सवैया॥ जिन के चित्र दै पति तें अति पावन है बचमै द्रुमि छंदनि के। सुबड़ेई कृपाल बड़ेई दयाल बड़े गुण दुःखनि फंदनि के। कवि सूरतिजे शरणागतपालहैं दायक सुख आनंदनिके। कृपाल बड़े करुणाकार हैं हम चाकर हैं रघुनंदनि के २

नरनको करै सेश बड़े अहमद भेष पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधिकात है। तासों जीवहिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म ह्वै है ताही के कुसंग नर दुःख दरशात है। मेरे जान चीन सब दोसनिको चाकरी है सोई ताहि भावै मद अंध उतपात है। पजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्यपापजैसेपौन परसेते पात उड़िजात है ३ नेक सुजरा करि आव॥ गीतायां॥ मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसिसत्यंते प्रतिजानेप्रियोसिमे ४।

सवैया॥ होहुनिचिंतकरैमतिचिंततू चोंचेंदईसोईचिंत करैगो। पांइपसारिपरेउरहिसोइतू पेटदियोसोइपेटभरैगो। जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहनमेंपहुंचाइधरैगो। भूखहिभूखपुकारतुहैनरतूकहांसुन्दरभूखमरैगो ३ कुंडलिया॥ यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी। सोखालीक्योंरहिसी संतौगलौगुपालबनायो। पांचमहीनापीछेजनम्यो दूधअगाऊआयो। निरधनकेवरचाकी होतीअन्नकहूंनहिं दीसे। ताहूकोहरिविमुखनराखें आनि परोसिनिपीसे। कृष्णायहबरजातबतायो धूकमनमाहीं वैसी। यहतौगलौगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी ४ पद॥ नारदजीमेरेसाधतेअंतरनाहीं। जोमेरेसाधते अंतरराखेतेउनरकमेंजाहीं। जहँजनजैहैतहँमेंजैबोजहँसो वेतहंसोऊं। जोकबहूंमेरोभक्तदुखपावै कोटियतनकरि खोऊं॥

पाइ दिये चलिबेफिरिबेको हाथदिये हरिकममकमायो। कानदिये सुनिये हरिको यश नैनदिये हरि दरश दिखायो। नासिका दीनी ऊतीरन सुंघन जीभदई हरिको

यश गायो। येसब साजदिये अतिसुंदर पेटदियो किधौं पाप लगायो॥ पांडवगीतायां॥ भोजनेच्छादनेचिंता वृथा कुर्वंतिवैष्णवा: ॥ योसौविश्वंभरोदेव:कथंभक्तानुपेक्षति१ हाथ हलाये बिन तौपंखाहू न पवन देहै हाथतौ हलाया ईचाहिये यतन॥ करि खाऊं॥ लक्ष्मी मेरी अर्द्धशरीरी हरिदासनकीदासी। सबतीरथ दासनिके चरणनकोटि गंग अरुकासी। जहंजहं मेरो हरियशगावै तेंहीं कियमैं बासा। आगे साधु पाछे उठिधाऊं मोहिंभक्तकी आसा। मन वच क्रमकरि हिरदेराखे सोईपरमपद पावै। कहत कबीर साधुको महिमाहरि अपने मुखगावै ५ हरि अरु हरिजन एक समाना। खोजिलेहु सब बेदपुराना। यातें सबहीं संसार कूपीमाया ते छुटावे। अरु हरिकी भक्तिको बढ़ावेहरिमारगुलगावै॥

मेरतौप्रथमवासजैमलनृपतिताको सेवाअनुरागनेकु खटकौनभावई। करेंघरीदशतामें कोऊजोखबरिदेतलेत नाहिंकानऔरठौरमरवावई। हुतोएकभाईबैरीभेदयह पाइलियोकियोआनिघेरोमाता जाइकेसुनावही। करैं हरिभलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलोगस चुपावही २२८ देखेंहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोअ गजबेदेखौ कहीवहीबैरीपर्‌योहै। बोल्योसुखपाइअजूसां वरोसिपाईकोहो अकेलेहीफौजमारीमेरौमनहर्‌योहै। तो हीकोदिखाइदईमेरेतरफतनैन बैननिसोंजानीवही श्याम प्रभूटर्‌योहै। पूछिकेपढ़ाइदियोवानेपनयहलियो कियेइ नदुःखकरैभलीबुरोकियोहै २२९॥

खटको न भावई॥ गीतायां॥ चंचलंहिमन:कृष्ण: प्रमाथिवलवद्दृढं। तस्याहंनिग्रहंमन्ये वायोरिवसुदुष्करं

कवित्त ॥ छिनमें प्रवीन छिन माया में मलीन पुनि छिन में दीन छिनमांहिं जैसो शक्र है। लियेदौ रि धूप छिनछिनक में अंनत रूप कोलाहल ठाने मघानकैसौंतक्र है। नटकोसो थारकिधौं हारहै रहटकोसोघाराकोराभँवर कैकुम्हार को सोंचक्र है। ऐसोमनभ्रामक सोअबकैसेथिर होत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्र है ॥ श्लोक ॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्द्धरः॥ यत्रश्रीविजयोभूतीध्रुवानीतिर्मतिर्मम ३ पूछिकेंपठाइ दियौ ॥ कबित्त ॥ काहूकोकपूरचूरि चंदनमें सानतहौ काहूकोगुलाबनिको कीनतपतनुहै। कहूं ऊधौ राजराग औरलग औरै ठठदौरि कहा होत यहां जारत अतनुहै। वेईतरुणी बरुणी वेईसुईलाल डोरै उनहींके टांकेहोत दुख को हतनुहै। छांड़िदेव पापनिको दूरिकै चवाइनिको आंखिनकै घाइनिको आंखे हीयतनुहै ४ ॥

भयोएकग्वालसाधुसेवासोरसालकरै परैजोईहाथलै कैसंतनखवावही। पायोपकवानबनमध्य गयोखवाइबेको आइबेकीढीलचोरभैसिसोचुरावही। जानिकेछिपाईबात मातासौंबनाइकही दईबिप्रभूखेघृतसंगफिरिआवही। दिनहेदिवारीकोसो उनपहरायोहांसि आईघरजामलियेराभिकैसुनावही २३० भागवतटीकाकरि श्रीधरसुजानि लेहु गृहमेंरहतकरैंजगतब्योहारहै। चलेजातमगठगमिलैकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै। जानिइन कोईनाहिं मारिबोउपावकरैं धरेचापबाणआवैवहीसुकुवारहै। आयेघरल्यायेपूछैश्यामसौंस्वरूपकहां जानिबेतो पारकियेआपडारयोभारहै २३१ ॥ मूल॥ भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊबच्छगोहनफिरे ॥ निष्किंचनइकदास

तासकेहरिजनआये। बिदितबटोहीरूपभये हरिआपलुटाये। साखिदैनकोश्यामखुरइहांप्रभुहिपधारे। रामदासकेसदनराइरनछोरसिधारे। आयुधछाततनअनुगकेबलिबंधनअपुवपुधरे। भक्तनसंगभगवाननित्तज्यों गऊवच्छगोहनफिरै ५४॥

आईघर॥ दोहा॥ छल करि बल करि बुद्धि करि साधनकैसुख देहिं॥ऊंडो कैसे दाम को हरिजू सों गनि लेहिं १ धरेचापबाण॥कोटि बिघन शिर पररहैं कोटि दुष्ट को साथ॥ तुलसी कछू न करि सकैं जो सहाइ रघुनाथ २ गोहनफिरै॥ ब्रह्मवैवर्त्ते॥ भक्तसंगभ्रमत्येव छायेवसततं हरिः॥ चक्रं धरचतेभक्तान् भक्ताभक्तजनप्रियः ३ कृष्ण कृष्णेतिकृष्णेतिसप्रयातिभवेन्नरः॥ पश्चात्महमनंपार्थसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ४॥

टीका॥ भक्तनकेसंगभगवान ऐसेफिरयोकरेंजैसेवच्छसंगफिरैनेहवतीगाईहै। हरिपालनामबिप्रधाममें जनमलियोकियोअनुरागसाधुदईश्रीलुटाईहै।केतिकहजारलेबजारकेकरजआये गरजनसरैकियाचोरीकोउपाईहै। बिमुखकलेतहरिदासकोनदेतदुख आयेघरसंततियासंगबतराईहै २३२ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलतहांशोचपरयोहरयोमनसाधुसेवासाहरूपकियोहै। पूछिचलेकहाकहीभक्तहैहमारोएक मैंहूंआउंआवोआयेजहांपूछिलियोहै। अजूमगचल्योजातबड़ोउतपातमध्य कोऊपहुंचाइदेवोलैरुपइयादियोहै। करौंसमाधानसंतमैंलिवाइजाउइन्हैंजाइबनमांझदेखिबहुधनजियोहै २३३ देखिजोनिहारिमालातिलकनसदाचारहोहिंगेभंडारघनजोपैइतौलायोहै।

लीजियेछिनाइयेहीबारकहेडारिदेवौ दियोसबडारिछला छिगुनीमेंछायोहै। अंगुरीमरोरिकहीबड़ोतूकठोरअहो। तो कोकैसेछाड़ौसतजैबेमोकोभायोहै। प्रकटदिखायोरूपसु न्दरअनूपवह मेरौभक्तभूपलैकैछातीसोंलगायोहै २३४॥

चोरी को उपाव ॥ श्लोक ॥ वैष्णवोबंधुसत्कार्य ॥ वि- जयरथकुटुंबबैठेजाक्षरक्षिणीसहल ॥ वर्जयित्वामहाराज श्रीमद्भगवदालयं १ हरगौश्वनसाधुसेवा ॥ साधवोहृदयंम- ह्यंसाधूनांहृदयंत्वहं। मदन्यंतेनजानंतिनाहन्तेभ्योमनाग- पि २ कोउ पञ्चांचावे बिमुख को लेत बनिया ह्वै कै चोरी करी वह वैष्णव निकस्यौ पिछौरी लैकै भज्यौ इ बमह यामेंरे सारको बिवाहहैयाजुपञ्चाना देखैजो निहारि जानी के सराबगी बनिया है ३ ॥

गौड़देशबासीउभयबिप्रताकीकथासुनौं एकवैश्यवृद्ध जातिवृद्धछोटोसंगहै। औरऔरठौरफिरिआयेफिरिआये बनतनभयोदुखीकीनीटहलअभंगहै। रीझेउबड़ोद्विजनि जसुतातोकोंदईअहोरहोनहींचाहौंमेरेलईबिनयरंगहै। सा खीदैगुपालअबबातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभामपूंछो सोप्रसंगहै २३५ बोल्योछोटोबिप्रक्षिप्रदीजियेकहीजो बाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै। द्विजकहैंनाहींकै सेकरौंमैंतोदेनकहीकहीकहाभूलिगयोबिथाकोप्रयोगहै। भईसभाभारीपूंछैसाखीनरनारीश्रीगुपालबनवारीऔरकौ नतुच्छलोगहै। लावोंजूलिवाइजोपैसाखीभरैआइतौपै ब्याहिबेटीदीजैलीजैकरौसुखभोगहै २३६॥

फिरिआयेवन॥पद॥ ब्रजभूमिमोहनीमैंजानी। मोहनकुं जमोहनवृन्दाबनमोहनयमुनापानी ॥ मोहननारिसकल

गोकुलकी बोलत अमृतबानी ॥ जैश्रीभटके प्रभुमोहननागर मोहन राधारानी ॥१॥ अनु॥वृन्दावनरजोवन्दे यचास्तेकोटिवैष्णवाः॥ २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदीकेतीरद्रुमडारझुकिनीरआई त्रिबिधि समीर बहै मतिमनकी । कुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगंध माधुरीसुमनके । राधेकृष्णनाममधुनि छाइरही जहां तहां कही न परतशोभा पुलिन अवनिकी ॥ देखिदेखिरहे फूलिसुधिबुधि भूलिभूलि ठौरठौरराखे वृन्दाबन वृन्दाबनकी ३ ॥ बंदौंश्रीवृन्दाबनधाम।ब्रह्मादिकदुर्लभतिनहींकोदेततुच्छजीवन बिश्राम । उद्धवसेहरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्मलाग्यौअभिराम। बलिबलिजाइकृपानिधिमोको लाड़लड़ावतआठौयाम। यहीरीतिरानीश्रीराधा नहींबिचाररूपगुणधाम। पाइनिलाल भालबेंदी दईभोडरधिय लखिरीझतश्याम १ ॥ श्लोक॥ वाराणस्यांविशालाक्षि विमला पुरुषोत्तमे ॥ रुक्मिणीद्वारकायांतु राधावृंदावनेवने २ छप्पै॥ सघनकुंजअलिगुंजपवन तहँत्रिबिधि सुहाई। रतनजटितअवनी अनूप यमुनाबहिआई॥ छरितुकोक संगीत रागरागिनि सखिरतिपति। सबसुखराजसमाज सहजसेवत अतिनितप्रति ॥ शृंगारहास्यरसप्रेमहैं काल कर्मगुन कछुनडर। दंपति बिहार गोविंदसरस जैजैवृंदाबिपिनबर ३॥ कवित्त॥ ब्रह्माके कमंडलते गिरिजाप्रचंडनते शिवजटा मंडनते धाराधौं बहतिहै । तीनोलोक पावनको आपदा नशावनको जाकेगुणगावनको बाणीयौं चहतिहै ।कहैकबिराइ सुरअसुरहू पूजैंजाहि सुरधुनी कहेदुखपापनरहतहै। यमुनाजीकी महिमा यातेनकही परै गंगापगपानी ताकीपटरानी कहतहै ४ ॥ कवित्त॥ रसिबो बसिबो वृन्दाबनको हँसिबोमिलि संतनमेंरहिये। पढ़िवो सुनिबोनित राम सदा सुख सों लहि जो जितनौ चहिये। योगी सुयती हियध्यान धरैं जग जीवनि भाग बड़ौ लहिये। भ्रमणा मिटिजाइ सबै जियकी यमुना यमु-

ना यमुना कहिये ५ ॥ कवित्त ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुख पुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भांति हेरीहै। फूली फूल डारैं गुंजमधुप बिहारैं प्यारी प्रीतम निहारैं आंखैं चकं दिशि हेरीहै॥ पुलिन प्रकाश रास बिबिधि बिलास जहां बढ़त हुलासबात बीते होति भेरी है। कैसो यहधाम अभिराम वृंदाबन नाम ऐसी छवि हेरीपरी रोमरोम बेरी है ६ ॥ दोहा ॥ उपमा वृन्दा विपिनकी कहिधौंदीजै काहि॥ कोटिकोटि बैकुंठहू तिहिसम कहे न जाहि७॥

आयोवृन्दावनबनबासीश्रीगुपालजूसों बोल्योचलौ साखीदेवलईहैलिखाइकै । बीतेकैऊयामश्यामसुंदरजूप्र तिमानचलैतौपैबोल्योक्योंजुभाइकै। लागेजबसंगयुगसे रभोगधरउरंगआधेआधपावैंचलेउनूपुरबजाइकै। धुनिते रेकानपरैपाछेजनिडीठिकरैकरैरहौंवाहीठौरकहीमैंसुनाय कै२३६ गयेढिगग्रामकहीनेकुतौचिंताउरहैचितयेतेठाढ़े दियोमृदुमुसुकाइकै। लावौजाबुलाइकहीआइदेखौआये आयसुनतहीचौंकिसबग्रामआयोधाइकै। बोलिकैसुनाई साखिपूजीहियेअभिलाषलाषलाषभांतिरंगभरेउउरभाइ कै। आयोनसरूपफेरिबिनयकरिराख्योघेरिभूपसुखढेर दियेअबलौंबजाइकै २३७॥

सुखढेरदियो ॥ कबित्त ॥ लागीजबआश तबउतरयोआ काशहूंते सिंधुजलजंत रसचीन्हेंपानकीन्होहै। देख्योहि तसार वाकोउदर बिदारि कढ़यो चख्योमे लभारी वाससं पुटनिलीनोहै। चाहतकिशोरभ्रम्योदशदिशिओर लग्यो ब्रजचितचोर जियवारि फेरिदीनोहै। उरकेसुलाक मोती नासिका बुलाकभयो बड़ोईचलाक मोहिंलाकमन कीनो है १ बदनसुराहीमें छबीलो छबिछातौमद अधरपिया

लाक्षणलक्षणसंगहहुहै। अलसाइके पोटत कपोलपर्य्यंकपर कबहूंगजकनानि भषनचहहुहै। प्रेमनगसाधी येतौसदाई अथंकभरि छकोईरहत को।जककुन कहतु है। भुकि परै बातके कहते अनखातन्यारो वेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै २ दृष्टांतसिद्धकोचौबेने तमाचोदियो३ ॥

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवर हैरहैरामदासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये। जागरणएकादशी करैरणछोरजूकेभयोतनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये।बोलेभ रभाइतेरोआइबोसह्योनजाइचलौंघरधाइ तेरेलावौगाड़ी भारिये। खिरकीजुमंदिरकेपाछेतहांठाढ़ीकरौभरोअकवा रमोकोबेगिहीपधारिये २३८ करीवाहीभांतिआयोजाग रणगाड़ीचढ़िजानीसबवृद्धभयोथकीपांवगतिहै। द्वादशी कीआधीराततैकैचलेडमोदगातभूषणउतारिधरे जाकेसां चीरतिहै। मंदिरउघारिदेपरिखेहैउजारितहांदौरेपाछेजा निदेखिकहीकौनमतिहै। वायीपधराइहांकिजानिसुखपा इरहौगहैचलैजातिआनिमारेउघावअतिहै २३९ दखेच हुंदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहरि पछितावौकरिकहैभक्तिकैल गाईहै। बोलिउठेउएकयह ओरयहगयोहतोदेखेजाइबा वरीकोलेहूलपटाईहै। दासकोजुडारीचोटओटिलईअंगमें हीनहीमैंतौजाहुविजयमूरतिबताईहै। मेरीसरसोनोलेहु कहीजनतोलिदेहु मेरेकहाबोलेउवारीतियाकेजताईहै २४० लगेजबतोलिबेकोवारीपाछेडारिदईनईगतिभईप लाउठेनहींवारीको। तबतौखिसानेभयेसबैउठिघरगयेकै सेसुखपावैफिरौमतिहीमुरारीको। घरबिराजैंआपकहेउ भक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैफुरैरूपलालप्यारीको। बलबं

धनामप्रभुबांधेबलिभयोतब आयुधकोक्षत सुनिआयेचोट मारीको २४१॥

द्वारका से दोसौ कोस काह्नमंडलमें डाकोरगांवहै खिरकीकी गेलबताई जैसेरुक्मिणी श्रीकृष्णनेहरीही भगवान अपनेगुण अपनेभक्तनको सिखावैं सांचीरति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठाकुरकीसेवामहतको देतिहीसोउन कही दर्शनकरि लेहिंगे अंगमेंही ओटिलई तुमअपराधी भक्तमारेउ मरैंगे महाप्रलयकरौहत्यानहीं मेरीसरसोंनों अवअपनोनहीं बलवंधननास इहांघावप्रति छवौनाह्वैरहे याचकारको नमतिहै महबूवा देशहरबिचिकोईआनित मासाजोवैदीनक॥

मूल॥ बच्छहरणपीछेबिदित सुनोंसंतअचरजभयो। जसूस्वामिकेवृषभ चोरिव्रजबासीलाये। तैसेइदियेश्याम वरषदिनखेतजुताये। नाभाज्योंनन्ददासमुईइकवच्छ जिवाई। अम्बअलहकौनयेप्रसिद्धजगगाथागाई। बारमु खीकेमुकुटकोश्रीरंगनाथकोशिरनयो। बच्छहरणपीछे विदितसुनोंसंतअचरजभयो ५४ जसूस्वामीकीटीका॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैं साधुसेवाताकोखेती उपजावहीं। चोरीगयेबैलताकीइनकोनसुधिकछू तैसेश्या महलजुतेमनभावहीं। आयेव्रजबासीपैठवृषभनिहारिक हीइहैंकौनलायोघरजाइदेखिआवहीं। ऐसेबारदोइचारि फिरेउनठीकहोत पूछीपुनिल्यायेआयेइन्हें पैनपावहीं २४२ बड़ोईप्रभावदेख्योतैसेप्रभुबैलदिये भयोहियेभाव आइपाइनमेंपरेहैं। निपटअधीनदीनभाषिअभिलाषजा निदयाकेनिधानस्वामीशिष्यलैकेकरेहैं। चोरीत्यागिदई

अतिसुधिबुधिभईनईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरेहैं। अन्नपहूंचावैंदूधदहीदैलड़ावैंआवैंसंतगुणगावैंवअनंतसुखभरेहैं २४३॥

साधुसेवैंरागीहैं॥ हरिको सांचौ सनेह तौ तबहींजानिये जब हरिके प्यारिन में सनेह होइ १ संतसे बाहिरि प्रसन्न भजनू कोतो साखामकरी लैलै की गली में देखौ करै द्विज दोष साधु सेवा के प्रताप सौं बड़ो वैभवभयो ताहि देखिके २॥ श्लोक॥ काककुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरपोषकाः॥ स्वजातिपरिहंतारोश्वानसिंहगजद्विजाः ३ तापैदृष्टांतराजामहतकोअरुभतध्यको॥

नन्ददासकीटीका॥ निकटबरेलीगांवतामेंसोहबोली रहेनन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागीहैं। करैंद्विजदोषतासोंमुईएकबछियाले डारिदईखेतमांझगारीजकलागीहैं। हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसों लरैंहिन्दूसोनमारैंयह बड़ोईअभागीहैं। खेतपरजायवाहिलईहैजवाइदेखिपरदोषी पांइभक्तिभावमतिपागीहैं २४४अल्हकीटीका॥ चलेजात अल्हमगलगेबागदीठिपर्‌यो करिअनुरागहरिसेवाबिस्तारिये। पकिरहेआंनमांगैमालीपासभोगलियेकहोलीजैकहीझुकिआईसबडारिये। चल्योदौरिराजाजहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीतिअलुटतपांवधारिये। आवतहीलौटिगयोमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसादभक्तिभावईसँभारिये २४५॥ वारमुखीकीटीका॥ वेश्याकोप्रसंगसुनोंअतिरसरंगभर्‌योभर्‌योधरधनअहोऐयेकौनकामको। चलेमगयाचनकोठौरस्वच्छआईमनछाई भूमिआसनसोंलोभनहीं

दामको। निकसीझमकिद्वारहंससेनिहारिसबकौनभागजा गेभेदनहींमेरेनामको।मोहरनिपात्रभरिलैमहंतआगेधरय ढरयोजलनैनकहींभोगकरोश्यामको २४६ पूछीतुमको नकाकेमौनमेंजनमलियो कियोसुनिमौनमहा। चिंताजियध रीहै। खोलिकैनिशंककहोशंकाजिनिआनोमनकहीबार मुखीऐयेपाइआइपरीहै। भरयोहैभंडारधनकरोअंगीकार अजूकरियेबिचारजोपैतोपैयहैएकहै। उपाइहाथरंगनाथ जूकेअहोकीजियेमुकुटजामजातिमतिहरीहै २४७॥

कौनकामको॥ धर्मशास्त्रे॥ दशछ्वानसमोचक्रीदशचक्री समोध्वज:॥ दशध्वजसमोवेश्यादशवेश्यासमोन्टप: १ काक भुशुण्डपैनबैठेहंस सतद्रव्यऐसेकोनभाग ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यास्याद्यमस्थानांकुंगावामंभयायतत्॥ सर्वंभवंतिगांगेयकौ नसेवितबुद्धिमान् २॥ छप्पै॥ ज्ञानवंत हठकरै निवल परि वार बढ़ावैं। बिधवाकरैंश्रृंगार धनीसेवाको धावैं॥ निर्धन समझै धर्मनारि भरता नहिंमानैं। पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ वरिजानैं॥ कुलवंत पुरुष कुलबिधि तजैं बंधु न मानत बंधु हित। संन्यास धारिधन संग्रहैं सुये जगमें मूरुख बिदित ३ भेदनहींनामको ॥ श्लोक॥ नह्यंमयानितीर्था निनदेवामृच्छिलामया॥ तोपैदहमरीरै॥ दोहा॥ सबसु- खपावैंजासुते सो हरिजूको दास। दुख पावै कोउ जासु ते सो भ दासरै दास॥ रंगनाथ को मुकट॥ तेजीयसांन दोषायवह्नेस्सर्वभुजोयथा ४॥

बिप्रह्नैनछुवैजाकोरंगनाथकैसेलेत देतहमहाथतोकोर हैइहांकीजिये। कियोईबनाईसबघरकोलगाईधनवनिठ निचलीथारमध्यधरिदीजिये। सन्तआज्ञापाइकेनिशंक गईमन्दिरमेंफिरीयोंसशंकधृगतियाधर्मभीजिये। बोलें

आइयाकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशम-
तिभीजिये २४८ ॥ मूल ॥ औरयुगनतेकमलनयनकलि
युगबहुतकृपाकरी। बीचदियेरघुनाथभक्तसंगठगिया ला
गे। निर्जनबनमेंजाइदुष्टकृमकियेअभाग ॥ बीचदियेसो
कहारामकहिनारिपुकारी। आयेशारंगपाणिशोकसागर
तेतारी। दुष्टकियेनिर्जीवसबदासप्राणसंज्ञाधरी। और
युगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी ५५ टीका ॥
बिप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाकेहूनोंरंगजा
कीबातलैजनाइये। मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजात
जहां तुमजातयामेंमननपत्याइये।पंथकोछुटायोचाहैबनमें
लिवाइजाइकहैअतिसूधोपैंड़ोउरमेंनआइये। बोलेबीचरा
मतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामकहापा-
इये २४६ ॥

बिप्रह्व न छुवै राजाने ऋषिन्यौ ते सो छोड़ि गये बन
में कुत्ताको खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय
बार अंडकोश प्याजनख लहसन हाड़मरी मूड़ तरबूजसो
ऐसो मेरो धान्यनिषिद्ध है १ नेकुधकधकी ॥ कुंडलिया ॥
बैरी बंधुवा बावरो जुवारी चोरलवार।व्यभिचारी रोगी
ऋणीनगरनारिको यार।नगरनारिकोयार भक्तिपरतीति
नकोनै।सौं हैंसौसौ खाइ चित्तमें एक न लीजै। कह गिरि
धर कबिराइ न्याइमेंभायोऐसे। सुखसोंहितको कहै पेट
में बैरीजैसे २ कमलनयन बहुत सूझै तीनयुग आयुर्दाबुद्धि
बल धनरोग नहीं कर्म करसोइबनै कलियुगमें कछू न बनै
नामबतायो कृपाकरि ३ ॥

चलेलागिसंगअवरंगकोकुरंगकरयो तियापररीझेभ-
क्तिसांचीइनजानीहैं। गयेबनमध्यठगलोभलगिमारयो

बिप्रक्षिप्रलैकैचलेबधूअतिबिलखानीहै। देखैफिरिफिरि पाछेकहैकहादेखोमार्यो तबतोउचार्योदेखोवाही बिच प्रानीहै। आयेरामप्यारेसबदुष्टमारिडारेसाधुप्राणदैउबा रेहितरीतेयोंबखानीहै २५०॥ मूल ॥ एकभूपभागवत कीकथासुनतहरिहोइरति। तिलकदामधरिकोइताहि गु रुगोबिंदजाने। षटदरशनीअभावसर्बथाघटकरिमाने। भांड़भक्तकोभेषहासहितभंडकुललाये। नरपतिकेदृढ़नेम ताहिपैपाइँधुवाये। भाँड़भेषगाढ़ोकह्योदरशपरसउपजी भगति। एकभूपभागवतकीकथासुनतहरिहोइरति५६॥

चलेलगि संग॥ कवित्त॥ विप्रसोईपढ्यो चारोबेदहूको भेदजाने स्मृति षट शास्त्र मतिन्यादूसबरव्योहै। सोई पढ्यो भारतपुराण पढ्यो पिंगलसों सबै कोश पढ्यो सोतौ काव्यकोषकाव्योहै। पढ्यो आगम सो अगम बिचार चित्तसोई पढ्यो जोतिस सो जोतिरस मढ्यौहै। सोईपढ्यो ब्याकरण जानिलिये शब्द बर्ण सोईसब पढ्यो जोई रामनाम रव्यो है॥ दोहा॥ जोहै जाकै आसरै ताहीको शिरभार। कहूहरुईतोसरी खेइलगावै पार २ ॥सवैया ॥ कामसे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शीलगणेशसमाने। हरिचंदसे सांचे बडेबिधिसे मघवासे महीप बिषै सुख साने। शुकसे मुनि शारद सेवकता चिरजीवनलोमससेंअधिकाने। ऐसेभयेतौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम न जाने ३ तिलक दामधरि चारि आश्रम हरिके अंगते संत शरीर। वैष्णवो सम्मदेहस्तु॥ तुलसी काष्ठधारीन॥ वैष्णवो। भक्तिवर्जितिः॥ पूजनीयंमहीपाल:॥ षटदरशनीषटश।स्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावैं धन हरिको जैसे गुमास्ता दश रुपया महीना पावै ऐसे ४॥

टीका॥ राजाभक्तराजडोमभांड़कोनकाजहोइभोइ

गईयाकेंग्रनहरिकोनदीजिये । आयेभेषधारीलैपुजाइना चेदैकैतालनृपतिनिहारिकहीयोंनिहालकीजिये । भोजन कराइभरिमोहरनिथारलाये आगेधरिबिनयकरीअजूयह लीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावैनाहिंबांहग-हेरहेकैसेचलेमतिभीजिये २५१ ॥ मूल ॥ अंतरनिष्ठनर पालइकपरमधरमनाहिंनधुजी । हरिसुमिरनहरिध्यान आनिकाहूनजनावै । अलगनइहिबिधिरहैअंगनामरमन खावै । निद्राबशसोंभूपबदनतेनामउचार्‌यो । रानीपति परीझिबहुतबसुतापरवार्‌यो । ऋषिराजशोचिकह्यो नारिसोंआजमक्तिमेरीकुजी । अंतरनिष्ठनरपालइकपरम धरमनाहिंनधुजी ५७॥

राजाभक्तराज ॥ श्लोक ॥ दृढतरनिबद्धमुष्टेःकोशनिषण स्यसहजमलिनस्य कृपणस्यकृपानस्यचकेवलमाकारतोभे दः १ भईभक्तराशि ॥ कवित्त ॥ जलकेसनेही मीन बिछुर-त तजैंप्राण मणिबिन अहिजैसे जीवतन लहिये। स्वाति बूंदकेसनेही प्रगट जगतमांझ एकसीपि दूजेपुनि चातकहूं कहिये। रविके सनेही बसैं कमल सरोवरमें शशिके सने-ही या चकोर जैसे रहिये। तैसेहीसुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछुदेखिकाहू औरनाहिं बहिये १ राजाने तब बांहगही ॥ सवैया ॥ तजे पितुमात तिया सुत भ्रात कियेजगभात पितातनऔरै। नंदकुमार भजैनहिं मूढ़ भजै सोइरूप ठहरात न ठौरै। लेत न शीष सिखावत औरै सुदौरतभोग दिशाकार कौरै। भांड़भयो विषयी न भयो सुकछ्योकछूऔर नचयो कछू औरै २॥

टीकाअंतरनिष्ठराजाकी॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपैनभ क्तपायोरहैमुरझायोमनशोचबड्योभारीहै । मरमनजान्यो

निशिसोवतपिछान्योभाव बिरहप्रभावनामनिकस्यौबि-
हारीहै। सुनतहीरानीप्रेमसागरसमानीभोरसंपतिलुटाई
मानोंनृपतिजियारीहै। देखिउत्साहभूपपूछौसुनिवाहि
कह्योरह्योतनठौरनावजीवयोंबिचारीहै २५२ देखितन
त्यागिपतिभईऔरगतियाकी ऐसीरतिवानमैंनभेदकछू
पायोहै। भयोदुखभारीसुधिबुधिसबटारी तब नेकनवि
चारीभावराशिहियेछायोहै। निशिदिनध्यानबिरहप्र
बलतजेप्राणभक्तरसखानरूपकापैजातगायोहै। जाके
यहहोइसोईजानेरसभोइयामें डारैमतिखोइसबप्रगटदि
खायोहै २५३ ॥

नामनिकस्यौबिहारीहै॥ कवित्त॥ कुटिल अक्रूरक्रूर
बैरीकाहूजनमकोहै चेटकसोडारि शिरलैकेबज भूरिगो।
व्याकुल बिहालबाल बंशीधरलाल बिन मीनज्यों तर-
फितन प्रेमरस भूरिगो। चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम
चढ़ि चिंताके चकित भईचैनसब चूरिगो। बारबारकहत
बिसरअलैनैनपूरि धूरि न उड़ति आली अबरथदूरिगो १
भ्रमैंभौंर ठौरठौर केतकीलुसुद और तनक जो लाज करै
पंकजकेसंगकी। चंचलचलाकचित चोकरीकी भूलमति
घायलज्यों घूम्योकरै लगनि कुरंगकी। और नहींस्वाद
है विवाद काहू बातनिको मनमें न मनसाहै औरके
प्रसंगकी। जगमें सराहिये सनेहकी नवलरीति बिछुरनि
मीनकी औ मिलनि पतंगकी २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितबचनशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीतिगा-
ढ़ीगह्यो। अनुचरआज्ञामांगिकह्यौकारजकोजैहौं। आवा
रजइबाततोहिंआयेतकेहैं। स्वामीरह्योसमाइदासदर-

शनकोआयो। गुरुकीगिराबिश्वासफेरिसबघरमेंलायो। शिष्यपनसांचोकरनकोबिभुसबसुनतसोईकह्यो। गुरुगदितबचनशिष्यसत्यअतिदृढप्रतीतिगाढ़ोगह्यो ५८॥टीका गुरुनिष्ठकी ॥ बडोगुरुनिष्ठकछूघटिसाधुइष्टमानेस्वामी संतपूजोमानेकैसेसमुझाइये। नितहीबिचारैपुनिटारैये उचारै नाहिंचल्योजबरामतिकोकहीफिरिआइये। शपथ दिवाइनजराइबेकोदियोतन लायोयोंफिराइवहेबातजूजताइये। सांचौभावजानिप्राणआइसोबखानकियोकरैभक्त सेवाकरीबर्षलौंदिखाइये २५४॥

दृढ़प्रतीति करिके मानों गुरु के बचन को पर यामें गुरु का शिष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै ताप घोराको दृष्टांत। बड़ौगुरुनिष्टनारदवाक्यं ॥ यस्य साक्षात्भगवतिज्ञानदीपप्रदेगुरौ। मर्त्यबुद्धिश्रुतंतस्यसर्वं कुंजरशौचवत् १ आचार्यंमाविजानीयात् ॥ करी भक्तसेवा नाभाजूकहीहै भक्तभक्तिभगवंत गुरुगहीन भक्त कामनहीं ॥ आदिपुराणे ॥ अस्माकंगुरवो भक्ताः भक्तानां गुरवोवयं। अस्माकं बांधवोभक्ताः भक्तानांबांधवोवयं।वैष्णवके अपराधों को गुरुअरुहरि न बचावै २ दोउन के अपराधोंको साधु बचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरुब्रह्मादादा गुरु हरि परम गुरु न बचायसके अंबरीष ने बचायो साधुही सब अपराधसों बचावैं और की सामर्थ्य नहीं सो छोड़ावै याते साधु त्रैलोकी में बड़े हैं ५ ॥

मूल ॥ संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीबिमलरैदासकी। सदाचारश्रुतिशास्त्रबचनअविरुद्धउचार्यो। नीरक्षीर बिवरनपरमहंसनउरधार्यो। भगवतकृपाप्रसादपरम

गतिइहितनपाई । राजसिंहासनबैठिज्ञातिपरतीतिदि-
खाई । बर्णाश्रमअभिमानतजि पदरजबंदहिजासकी ।
संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीबिमलरैदासकी ५९ टीकारै
दासजूकी ॥ रामानंदजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएक गहै
ब्रह्मचुटकीकोतासोंकहैबानिये । करौअंगीकारसीधोक
हांदशबीसबारबरषैप्रबलधारातामेंवापैआनिये । भोग
कोलगावैप्रभूध्याननाहिंआवैअरे कैसेकरिलावैजाइपूछी
नीचमानिये । दियोशापभारीबातसुनीनहमारीघटिकुल
मेंउतारीदेहसोईयाकोजानिये २५५ ॥

बाणीबिमलरैदासकी केवल भक्ति ही गाई ॥ पद ॥ धन्य हरि भक्ति त्रयलोक यश पावनी । करै सतसंग इहि बिमल यश गावनी । वेद पुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति प्रगट कीनी । भक्ति ते प्रेम प्रेमते लक्षणा बिना सतसंग नहिं जाति चीनी । गंगा पापहरैं शशिताप अरुकल्पतरुदीनता दूरि खोवैं । पाप अरु ताप सब तुच्छ मति दूरि करि अमी की दृष्टि जब संतजोवैं । विष्णुभक्त जिते चित पर्यंततिते मन बच करम करि बिश्वासा । संत धरणी धरी कीर्त्ति जग बिस्तरी प्रणत जन चरण रैदास दासा १ नीरक्षीर ॥ गीतायां ॥ निर्मानमोहाजितसंगदोषा अध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामा ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढापदमव्ययंतत् २ राजसिंहासन पै कहूं चमारहू बैठेहैं तब कही गुरु की संतन की कृपाते बैठि जात हैं कामनहीं स्वरूप मुख्य है ३ ॥

भातदूधथावैयाकोछुयोहूनभावसुधिआवैआवैसबप
छिलीसोसेवाकोप्रतापहै । भईनभबाणीरामानंदमनजा
नीबड़ोदंडदियोमानिबेगआयोचल्योआपहै । दुखीपितुमा

तुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजियेउपाइकियेशिष्यगयोपा पहै। स्तनपानकियोजियोलियोउन्हैंईशजाननिपटअजा मफेरिभलेपायोतापहैं२५६बड़ेईरैदासहरिदासनिसोंप्री तिबड़ीपितानसुहाइदईठौरपिछवारही।हुतौधनमालकन दियोहूनिहालतियापतिसुखजालअहोकियेजबन्यारही। गाढ़ेपगदासीकाहूयतनप्रकाशिलावै खालकरैजूतीसाधु संतकोसंभारही।डारिएकछानिकियोसेवाकोस्थानरहैंचौं ड़ौअपजानिबांटिपावैयहैधारही २५७॥

पितानसुहाई॥ कबित्त॥ पैसेबिन बापकहै पूततौ कपूत भयो पैसेबिन भाईकहै जीकोदुखदाईहै। पैसे बिन यारकहै मेरो यह यारनाहीं पैसेबिन ससुरकहै कौनको जमाईहै। पैसेबिन बंदेकी प्रतीति नहीं पंचनमें पैसेबिन आइघर रोइ रोटी खाईहै। कहैं अलमस्त सजे बजेसहौ आठौयाम आजुके जमानेमें पैसेकी बड़ाईहै १ धर्मकर्म प्रीतिरीति सज्जन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजसो बिलाइगो। अंतर मलीन ह्वैकै कलह प्रवेशभयो नरनक- लेश निशिदिन सरसाइगो। नहीं रागरंग नहीं चरचा चतुरता की नहीं सुखसेज घनआनँद नशाइगो। देखिकै निराश जियलहतन हुलासमन देखतही देखतहीऐसोस- मोआइगो २ बड़ेईरैदास॥ दोहा॥ नंदनँदनकी भक्ति बिन बड़ो कहावै सोइ। जैसे दीपक बुझनको बड़ोकहै सबकोइ ३॥

सहैंअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंगआयेहरिप्यारेलि योभक्तिभेषधारिकै। कियोबहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वै कैदीनोकह्योपारसहैराखियोसँभारिकै। मेरेधनरामकछू पाथरनसरेकामदाममेंनचाहौंचाहौडारौंतनवारिकै। राई

एकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखोराख्योवह छानिमांझ लेहुगोनिकारिकै २५६ आयेफिरिश्यामसमासतेरहबिती तभयेप्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकीरीतिको। वाहीठौरली जैमेरोमननपतीजैअब चाहौसोईकीजैमैंतौपावतहौंभीति को। लैकैउठिगयेनयेकौतुकसोसुनोपावैसेवतमुहरपांच नितहीप्रतीतिको। सेवाहूकरतडरलाग्योनिशिकहेउहरि छांड़ोअरआपनीऔराखोमेरीजीतिको २६० ॥

याते हरिभक्तिही बड़ीहै कियेशिष्य ॥ श्लोक॥ अंत्यजा अपितद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः॥ सुधिआवै राजाइंद्रद्युम्नअ गस्तस्नापगज भयेकिथौ बङ्गमान ॥ पद ॥ आजुके द्यौसकी जाऊंबलिहार। मेरेगृह आयाराजा रामजीका प्यार। करो दंडवत चरण पखारौं। तनमन धन संतनि परवारौं। आंगन भवन भयो अति पावन। हरिजन बैठे हरियश गावन। कहैंकथा अरुअर्थ बिचारैं। आपतरैं औरनिको तारैं। कहैरैदास मिले हरिदासा। जनम जनमकी पूजी आसा १ पाथरनसरै काम पारसतौ सोई जोपार उतारै सोतौ एक रामनामहै ३ इत्यादयो ॥ श्लोक ॥स्तेयंहिंसा नृतंदंभ कामःक्रोधस्मयोमदः। भेदोवैरमविश्वासः संस्पर्द्धा व्यसनानिच। एतेपंचदशानर्थाह्यर्थमूलामतांनृणां तस्मा दनर्थमर्थाख्यंश्रेयोर्थीदूरतस्त्यजेत् ५ ॥ चौपाई ॥ कैसा- याकै हरिगुण गाई। दोनों सेती दोनो.जाई ६ श्लोक ॥ विषयाविष्टचित्तानांविष्णावेशसुदूरतः। वारुणीदिग्गतंव स्तुव्रजन्नैंद्रीकिमाप्नुयात् ७॥

मानिलईबातनईठौरलैबनाइचाइ संतनिबसाइहरिमं दिरचिनायोहै। बिबिधिबितानतानगनौंजोप्रमानहोईभो ईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै। दरशनआवैलोगनानाबि

विरागभोगरोगभयोबिप्रनकेतनसबछायोहै । बड़ेईखि लारीवेरहेहीछानिडारिकरीघरपैअटारीफेरिद्विजनसिखा योहै २६१ प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहैघरमेंदुरा इलोकरंजनादिटारीहै । प्रेरिदियेहृदयजाइद्विजनपुकार करीभरीसभानृपआगेकहेउमुखगारीहै। जनकोबुलाइस मुझाइन्याइप्रभुसौंपिकीनोजगयशसाधुलीलामनुहारीहै। जितेप्रतिकूलमैंतौमानेअनुकूलयातेसंतन प्रभावमनिकोठ रीकीतारीहै २६२॥

लोकरंजनादिटारिये ४॥ सवैया ॥ हमतौंमनमोहन सों हित है चुगली करिकोऊ कहा करि है। अबतो बजि के बदनामी भई गुरु लोगनि के जु कहा डरि है। कबिधीर कहैअटकी छबि सों ब्रज में भटकी बिसर्‌यौ घर है। तुम को यह बातसौं काम कहा अपने कोउ नान कुंवा परि है १ मुखगारी है॥ पुष्करमाहात्म्ये ॥ अपूज्योयत्रपूज्यंते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ तत्रतत्रप्रवर्त्तन्तेदुर्भिक्षंमरणंभयं २ न्याइ प्रभुसोपि॥ छन्द॥ सदाकृपानिधान हौ कहा कहौ सुजानहौ अमान हान मानहौ समान काहि दीजिये। रसाल प्रीति के भरे खरे प्रतीति के निकेत रीति नीतिके समुद्र देखि देखि जीजिये। टीको लगी तिहारियेइ सु- आइयोनिहारिये लोक रंजनादि टारिये समीप यों बिहारिये उमंग रंग भीजिये। पयोदमो ददाइये बिनोद को बढ़ाइये। बिलंब छांड़ि आइये किधौं बुलाइलीजिये ३ तारी है॥ दोहा॥ ज्योंज्यों आवै विघन डर त्योंत्यों प्रेम उलास। जैसे दीपक तम चढ़ै सतगुन होत प्रकाश॥ मन कोठरीकी तारी है हिरण्यकश्यप दुखदिये तब प्रह्लाद गुण प्रगट ऐसे ४॥

बसतचितौरमांझ रानीएकझालीनाम नामबिनकाम

खालीशिष्यआनिभईहै । संगहुतेबिप्रसुनिक्षिप्रतनआ गिलागीभागीमतिनृपआगेभीरसबगईहै।वैसेहीसिंहास नपैआईकैबिराजेप्रभूपढ़ैवेदबाणीपैनआयेयहनईहै । प तितपावननामकीजियेप्रगटआज गायोपदगोदआइबैठेभ क्तिलईहै २६३ ॥

पद गायो ३ ॥ पद ॥ आयो आयो हौ देवाधि देवतुम शरण आयो। सकल सुखकी मूल जाकी नाहिंसम तूलसो चरण मूल पायो। लियो बिबिधि जौन बास यमकीअगम त्रास तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरयौ॥ माया मोह बिषय रस लंपट यह दुस्तर दूर तरयौ। तुम्हरे नाम बिश्वास छा-ड़िये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै। रैदास दासकी सेवा मानकुं देवापतितपावन नाम आजप्रगट कीजै १ ॥ सवैया ॥ म्रतको ढौर ढोवन कुल जाको हरि मूरति खो दूनमें अरको। सेवन लग्यौ जग्यौ जग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी। हरि प्रसन्न शिर चढ़ौ सिं-हासन जैति धुनि काशि नगर की। लाल कृपाल प्रेमरस बंधन निर्भय भक्ति राधिकाबरकी॥ जैमिनिपुराणे॥ मोर ध्वजस्थाने । अंत्यजाअपितद्राष्टेशंखचक्रांकधारिणः ॥ संप्राप्यवैष्णावीदीक्षांदीक्षताइवसंवभौ ३ ॥ सप्तमे ॥ वि-प्राद्दिषटगुणयुताद्दरविंदनाभपादारविंदविमुखात् स्वपचं वरिष्टं। मन्येतदर्पितमनोवचनेहितायप्राणंपुनातिसकुलंन तुभूरिमानः ४ ॥

गईघरझालीपुनिबोलिकैपठायेअहोजैसेप्रतिपालीअ बतैसेप्रतिपालिये । आपढूपधारेउनबहुधनपटवारेबिप्र सुनिपांवधारेसीधोदैनिकारिये। करिकैरसोइद्विजभोजन करनबैठेद्वैद्वै मधिएकपोरैदासकोनिहारिबे ॥ देखिभई

आंखैंदीनभाषैंशिष्यभयेलाधें स्वर्गकोजनेऊकाढ्योत्वचा कीनोन्यारिये २६४ ॥ मूल ॥ कवीरकानिराखीनहींब- र्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिबिमुखजोधर्मसोअधर्मकरि गायो। योगयज्ञव्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो॥ हिंदू तुरकप्रमानरमैंनीसवदीसाषी।पक्षपातनहिंबचनसबहिके हितकीभाषी॥ आरूढ़दशाह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिंनभ नी। कवीरकानिराखीनहींबर्णाश्रमषटदरशनी ६० ॥

पतितपावन नामकीजिये प्रगट आजुगायो पदआपुबैठे भक्ति मनभाईहै निहारिये॥ भूतानांदेवचरितं॥ देखेतेज्ञान आयो॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञा १ जानिगये॥एकतेअनेकभये परमभागवतहीहैंभृंगीभयतेभृंगहोत ॥ शुकोहंशुकोहं॥ इत्यनिसैंदिखायो ऐसे इनको जीत्योतव सोनेको जनेज दिखायो भक्ति बिमुखजो धर्म सो अधर्म करि गायो २॥ भागवते॥गुरुर्वैष्णवोगोविप्रंहरिअर्थसबकोपूजै पैग्रहव्यती पातदेखैसोइअधर्मस्वर्गनरकसंसारकारणधरमबहै जगछूटै॥ सोहरिकीशरणजायतबऐसे ३ तुच्छदिखायो ॥ दोहा॥ रामनाम तौ अंक है अरु सब साधन शुन्य॥अच्चरके सन्मुख रहै शून्य शून्यदशगुन्य॥पच्चपातनहीं॥ छप्पै॥ पाड़ भली कथा कहिजानै॥ औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वार- थ लपटानै। ज्यों दीपक घर करै उजारो निज तनतम सन ठानै। महिषी चीर स्रवै औरनि को आपु भुसहि रुचि मानै। श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारजफिरै भुलानै। यह कलि छल सब कीमति गाठी समझत लाभ न हानै। हितकी कहत लगत अनहितकी रजराजसमें सानै॥ क- हत कबीर बिना रघुवीर हित यह पीरहि कोजानै ५ भजनबिन ॥ सकर्मासर्वधर्माणांभक्तोयस्तवकेशव॥ सकर्ता सर्वपापानांयोनभक्तस्तवाच्युत ६ यदिमधुमथनत्वदंघ्रिसे

वांहृदिचिदधातिजहातिवाबिरक्ती ॥ तदखिलमपिदुःखतं चिलोकव्रतमक्षतंतुकृतंकृतंचसर्वं १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजातिपांतिसबटारिये। भईनभबाणीदेहतिलकरबानीकरौकरौगुरुरामानंदगरेमालधारिये। देखैनहांमुखमेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडारिये। रजनीकेसेसमयआवेससोंचलतआपपरैपगरामकहैंमंत्रसोंबिचारिये २६५ कीनीवहीबातमालातिलकबनाइगातमानिउतपातमातशोरकियोभारिये। पहुंचीपुकाररामानंदजूकेपासआइकहीकोऊपूछेंतुमनामलैउचारिये। लावौजूपकरिवाकोकबहमकियोशिष्य लायेकरिपरदामेंपूछीकहिडारिये। रामनाममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमेंखोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये २६६ ॥

सबतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेतिपरंजाप्यंतारकंब्रह्मसंज्ञकं ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमितिवेदविदोविदुः १ ॥ कवित्त ॥ रहैगो नराज रजधानीपै न पानीपुनि कहै बाकबानी जिमीआसमान जाइगो। सप्त पाताल अरु सात दीप भाइ सत एक बेर चांद सूर ज्योतिहू बिलाइगो। जोइ कछू सृष्टि रची करताकी दृष्टिहीसो एक बेरसृष्टिहूको करता समाइगो। कहैं कबि काशीराम औरकछू थिर नाहिं रहिबे को एक रामनाम रहिजाइगो २ छप्पै ॥ यत बिन योगी अफल अफल भोगी बिन माया। जलबिन सरवर अफल अफलतरुवर बिनछाया ॥ शशि बिन रजनी अफल अफल दीपक बिन मंदिर। नर बिन नारी अफल अफल गुण बिन सबसुन्दर ॥ नारायणकीभक्तिबिन राजा परजा सब अफल। तत्ववेत्तातिऊंलोकमें रामरटैं ते नर सुफल ३ ॥

बुनैतानोबानोहियराममडरानोकही कैसेकैबखानोव हीरीतिकछुन्यारिये । उतनोहीकरैतामेंतननिरबाहहोइ भोइगइऔरैबातभक्तिलागीप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपट बेचनलैजनकोऊआयेमोकोदेहुदेहमेरीहैउघारिये।लग्यो देनआधोफारिआधेसोंनकामहोयदियोसबलैओजोपैयही उरधारिये २६७ तियासुतमातमगदेखेभूखेआवैंकबदबि रहेहाटनमेंलावैंकहाधामको । सांचौभक्तिभावजानिनिप टसुजानवेतोकृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । बाल दलैधायेदिनतीनियोंबितायेजब आयेधरिडारिदईलहेउ हैपरामको । माताकरैशोरकोऊहाकिममरोरिबांधैडारो बिनजानेसुतनहींलेतदामको २६८ गयेजनदोइचारिढूंढ़ि केलिवाइलायेआयेघरसुनीबातजानीप्रभूपीरको । रहेसु खपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसबबोलिभक्तभीर को। दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोसधा येसुनिबिप्रतजिधीरको। क्योंरेतेजुलाहेधनपायोनाबुला येहमैंशूद्रनिकोदियोजावोकहैयोंकबीरको २६९ ॥

बुनै तानो बानो दोऊकरैंसो दोऊकैसे बनै मनतौ एक हीहै मनको अभ्यास भजनको इंद्रियनको अभ्यासक्रिया को जैसे जड़भरत शरीर त्यागतीबार १ देवानांगुणलिं गानां ॥ अथवा हरि आपही मड़राइ २ सुखसरसानो एक फकीर तापैफकीर आवैकहीगुजर कैसे हैतबकहीह मैंसाहिब देताहै जबखातेहैं संतसंतोषसों परेरहैते दूसरो कहीऐसे हमारी गलीकेकुत्ताहू करतेहैं आपकैसे देताहै तब बांटि खातेहैं तबतौ आनँद मानेहैं ३ ॥

क्योंजूउठिजाऊंकछूचोरीधनलाऊंनित हरिगुणगाऊं

कोऊराहमेंनमारीहै । उनकोलैमानकियोयाहीमेंअमान भयो दयोजेपैनाइहमैंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोनाहीं मंडीजांउतुमरहौबैठे नीठिकेछुड़ायोपैड़ोछिपैठ्याधिटारी है। आयेप्रभूआपद्रव्यलायेसमाधानकियो लियोसुख होयभक्तिकीरतिउजारीहै २७० ब्राह्मणकोरूपधरिआये छिपिबैठेजहां काहेकोभरतभूखौजावोजूकवीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदेतहैअढ़ाईसेर बेरजिनिलावोचलेजावोयों वहीरको। आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौ-तुकसोकैसेरहैधीरके। बारमुखीलईसंगमानोवाहीरंगरंगे जानोयहबातकरीउरअतिभीरके २७१ संतदेखिदुरेसुख भयोईअसंतनिके तबतौबिचारिमनमांझऔरआयोहै । बैठीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकचीजउठि जलढरकायोहै । राजाजियशोचपर्यौकह्यौकहाकह्यौतब जगन्नाथपंडापांवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभरिनृपने पठायेनर लायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायोहै २७२ ॥

नयेनये ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाईजगतकी कूकरकी पहिं-चांनि । प्रीतिकियेमुखचाटिहै बैरकिये तनहानि १ हाथ कछू न लगै भजन गांठिकोजाइ ऐसे बिषयिनको संगहै जैसे सेवरिके सुवाको कछू हाथ न लगै देखतही में सुंदर सेवत बिचारी बड़ाई खोईआपही आवैगे २ बारमुखी लईसंग या कुसंगसों कबीर परम साधुताकी महिमा घटीबिषै कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी दे-खोकरिकै ख्यास। महिमा घटी समुद्रकी बस्यौ जुरावन पास ३ जल ढरकायो ऋषभदेव यद्यपि क्रुपा देखि जगत बुरोहोय ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभई आंचलागीहियै अबकहौकहाकीजिये । चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोझ भारी गरेसोंकुल्हारीबांधि तियासंगभीजिये । निकसे बजारह्वैकेडारिदईलोकलाज कियोमैंअकाजछिनछिन तनछीजिये। दूरिजेकबीरदेखिह्वैगयोअधीरमहा आयो उठिआगेकह्योडारिमतिरीझिये २७३ देखिकेप्रभावफेरि उपज्योअभावद्विज आयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै । बिमुखसमूहसंगमाताहूमिलाइलई जाइकेपुकारेजूदुखा- योसबगांवहै । लावौरेपकरिवाकोदेखौरेमकरकैसो अ- करमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै। आनिठाढ़ेकियेकाजीकहत सलामकरौ जानैंनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै २७४ बां- धिकैजँजीरगंगातीरमांझबोरिदियो जियौतीरठाढ़ौकहै यंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिअगिनिप्रजारिदई नईमानोंभईदेहकंचनलजावहीं । बिफलउपाइभयेतऊ नहींआइनये तबमतवारोहाथीआनिकझुकावहीं। आवत नढिगओचिंघारिहारिभाजिजाइ आगआपसिंहरूपबैठे शोभागावहीं २७५ ॥

भाजिजाइ भगवान सिंह रूप हाथी के पास सन्मुख आइ ठाढ़े भये हाथी चिंघारि के भाज्यौ बादशाह नेक- ही हाथी क्यों नहीं पेले कही महाराज सन्मुखसिंह है तौ मोहिं क्यों नहीं देखै सन्मुख आवै तब देखो जबआ- यो तब देखतही बड़ो डरकियो यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रच्छा को मगट्यो है याते संतनि के संमुख तब हरि दीखै १ भगावही॥ दोहा ॥ बधिक बान का दुष्ट नर जो दून चीत्यौहोइ । तुलसी या संसार में साधु

जीवै कोइ २ राजा ऋषीसों बूझें कृष्ण सान्दीपन को पढ़ें दक्षिणा मांगो सो कही ऋषीसों पूछैंतब प्रभास में बूड़ि गयोपुत्र सो ल्याइ देव ऐसे पंडित पूछे विफल उपाव॥ जलेविष्णु स्थलेविष्णु र्विष्णु:पर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुलेविष्णु:सर्वंविष्णुमयंजगत् ३ ॥

देख्यो बादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखीकरामाति मातभयेसबलोकहैं । प्रभुपैबचाइलीजैहमैंनगजबकीजै लीजैसोईभावैगांवदेशनानाभोगहैं । चाहैंएकरामजाको जपैआठौयामऔर दामसोंनकामजामेंभरेकोटिरोगहैं । आयेघरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीतिजिन्हैं हरिकीप्रतीति वेईगायबेकेयोगहैं २७६ होइकेखिसानेद्विजनिजचारि विप्रनके मूड़निमुड़ाइभेषसुंदरबनायेहैं । दूरिदूरिगांवन मेंनामनिकोपूछिपूछि नामजोकबीरजूकेझूठेन्योतिआये हैं । आयेसबसाधुसुनियेतोदुरिगयेकहूं चहूंदिशिसंतनि केफिरेंहरिधायेहैं । इनहीकोरूपधरिन्यारन्यारेठौरबैठे एऊमिलिगयेनीकेपोखिकेरिझायेहैं २७७॥

गहेपाव॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कबीर । जबते हरि चरणन रुचि उपजी तबते बुन्यौनचीर । दीनो लेहिं न यांचै काहू ऐसो मनको धीर । योगीयती तपीसंन्यासी इनकी मिटी न पीर । पांच तत्वते जनम न पायो कालन ग्रस्यौ शरीर । व्यास भक्तको खेत जुलायो हरि करुणामय नीर १ मेरौमन अनतहीसचुपावै । जैसे उड़त जहाजको पक्षी फिरि जहाजपैआवै । ज्ञानकमलनैनको तजिकेआन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगा तटप्यासो दुर्मति कूप खनावै । जिन मधुकर अंबुजरस चाख्यौ ताहि करीलनभावै । सूरदास प्रभुकामधेनु तजिछेरी कौन दुहावै २ ॥

दोहा॥ कहा करै रसखानि को कोऊ दुष्ट लबार॥ जो पति राखनहार है माखन चाखनहार ३ हरिको निश्चय मानि के बनिज करै जोकोइ॥ तुलसी मन बिश्वास सों दाम चौगुना होइ४मछरीमीनखाईकुत्ता बिलाईते बचै॥

आईअप्सराछरिबेकेलियेबेसकिये हियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींलागीहै।चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोबड़ोबड़भागीहै। शीशधरेहाथतनसाथ मेरेयामआवो गावोगुणरहोजौलोंतेरीमतिपागीहै। मग मेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइबहु फूलनिमँगाइपौढ़िमिल्योहरिशागीहै २७८॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहितनहींभये जैसे नारदजी१॥पद॥ तुम घरजावौ मेरी बहिना।यहां तिहारो लेना न देना रामबिना गोबिंदबिना बिष लागैं ये बैना। जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिन के हार। इन्द्रलोकते मोहन आई सोहिं करनभरतार। इनबातन को छांड़ि देऊरी गोबिंदके गुनगावो। तुलसीमाला क्यों नहिं पहिरो बेगिपरम पदपावो। इन्द्रलोक में टोट परयोहै हमसों और न कोई। तुमतो हमें ठिगावन आई नाऊ दईकीखोई। बऊते तपसी बांधि बिगोये कच्चेसूत के धागे। जो तुमयतनकरो बहुतेरा जलमें आगि न लागै। होतो केवल हरिके शरणै तुमतो झूठीमाया। गुरुपरताप साधुकी संगति मैंजु परमपद पाया। नाम कबीर जाति जुलाहा गृह बनरहौं उदासी। जो तुमआन सहत करि आईतो इकमाइ दूजे सासी १॥ कवित्त॥ वहमति कहां गई अब मति औरौभइ ऐसी मतिको जोमति आपनी बिगारोगे।सुधि कहूं सोइगई बुद्धिकहूं बूड़िगई अबक्यों न भई सोतानई बाट पारोगे॥ निपटनिरंजन निहारिकै

बिचारि देबो एकही बिचारि कहा दोसरो बिचारोगे। तुमसों न उद्धारो प्रभु मोसों न पतितभारो मोहिंमति तारो बैकुंठको बिगारोगे २ ॥

मूल ॥ पीपाप्रतापजगवासनानाहरकोउपदेशदियो। प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो । सत्यकह्योतिहि शक्ति सुदृढ़हरिशरणबतायो ॥ श्रीरामानंदपदपाइ भये अतिभक्तिकीसींवा । गुणअशंखनिरमोलसंतधरिराखत ग्रीवा ॥ परसप्रनालीसरसभई सकलबिश्वमंगलकियो। पीपाप्रतापजगबासना नाहरकोउपदेशदियो ६१ ॥ टीकापीपाकी ॥ गांगरोलगढ़बठपीपानामराजाभयोलयोप नदेवीसेवारंगचढ्योभारिये । आयेपुरसाधुसीधोदियो जोईसोईलियो कियोमनमांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये। सोयो निशिरोयोदेखिसुपनोबिहालअति प्रेतबिकरालदेहिधरि कैपछारिये । अबनसुहाइकछूबहुपाइंपरिगईनईरीतिभ ईयाहिभक्तिलागीप्यारिये २७६ ॥

आयेपुरसाधु ॥ पीपाकी दयारहै भक्तिअंगमें ॥ कवित्त॥ देवी सेठि शीतला बराही जा जगावैराति अजत पितर पंचपीरको मनावैहैं। खेतखाल गूंगारवभैरव भूपालादिक नाना देवता मनावै नगरकोट जावैहैं। ब्याहकाज छोंकि कपरोजन सराध भात काटिके करजयों उदारता दि-खावैहैं। केवल जगतहरासमुझिहै न सीतारामको पैजब धर्मराज नरकको पठावैहै१ पीपाजी भवानी को सेवैंपद-या भक्ति अंगरहै याते साधुआये दियो सीधो जोईसोई लियो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः २ कियो मनमांझ साधुनिने भोग धरिके हरिसे कही जेइंके चुपकरि मति ह्वै रहियो रानाके भक्ति उपजाइयो

३ भागवतेएकादशे॥ भूतानांदेवचरितंदुःखायचसुखायच। सुखायैवहिसाधूनांत्वादृशामच्युतात्मनां ५॥

पूछोहरिपाइबेकोमगजबदेवीकही सहीरामानंदगुरु करिप्रभुपाइये। लोगजानैबौरोभयोगयोयहकाशीपुरी फुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये। द्वारपैनजानदेतआ ज्ञाईशलेतकहीराजमीनहेतसुनिसबहीलुटाइये। कहीकुं वागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदरशदि खाइये २८० कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहियेकही अबजावोगेहसेवासाधुकीजिये। बितयेबरषजबसरसट हलजानिसंतसुखमानिआवैघरमध्यलीजिये। आयेआ ज्ञापाइधामकीनीअभिरामरीति प्रीतिकोनपारावारचीठी लिखिदीजिये। हूजियेकृपालबहीबातप्रतिपालकरौचले युगबीशजनसंगमतिरीझिये २८१॥

पूछौहरिपाइबेको मग जैसे राजा मुचकुंदने देवतन पै मुक्तिमांगी देवता बोले हमपै मुक्तिकहांहाइ तौ हमहूं मुक्तिनहोइं तापैदृष्टांत शीतलाको तब सोइबो मांग्यो मु क्तिही दुल्यहै देवीने रामानंद बताये धरीहरिभक्तिहिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आंधेको अपनो बडो अ- भ्यास जैसे अज्ञानी विषयीको तौ विषैको खतेसिद्धि ज्ञान॥ सवैया॥ जबतै तुमआवन आसदई तबतै तरफौं कब आइहौजू। मन आतुरनामनहीं में लखौं मनभावन जानसुनाइहौजू। विधिकै छिनलौं दिन बाटपरौ यह जान वियोग बिताइहौजू। सरसौ घन आनंद वारस सौं सुभद्वारस कोबरसाईहौ जू १॥

कबीररैदासआदिदाससबसंगलिये आयेपुरपासपीपा

पालकीलैआयोहै । करिसाष्टांगन्यारीन्यारीविनयसाधु निकोधनकोलुटाइसोसमाजपधरायोहै । ऐसीकरीसेवाव हुमेवानानारोगभोगबाणीकैनयोगभागकापैजातगायोहै। जानीभक्तिरीतिघररहौकैअतीतिहोहुकरिकैप्रतीति गुरुप गलगिधायोहै २८२ लागीसंगरानीदशदोयकहीमानीन हींकष्टकोबतावैडरपावैमनलावही । कामरीनकारिमधि मेपलापहरिलेवोदेवोडारिआभरणजोपैनहींभावही। का हूपैनहोहिदियोरोइभोइभक्तिआइ छोटीनामसीतागरैंडा रीनलज्यावहीं । यहूदूरिडारौकरौतनकोउधारोकियोद योरामानंदहियोपीपानसुहावहीं २८३ जोपैयापैकृपाक रीदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामेंकहीबारबारहै। सोंह कोदिवाइदईलईतबकरधरि चलेढरिविप्रएकछोड़ेनबिचा रहै। खायोबिषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसबआयोसोसमा जद्वारावतीसुखसारहै । रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइनरहि बेकीकूदेसिंधुमांझचाहउपजीअपारहै २८४ ॥

करी साष्टांगधनको लुटाय॥ कवित्त॥जिन जिनकरना ईतिन करआई तिन करननाईतिन करनआईहै । का- गर लिखाइ जिन कागरै लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धूरि खाईहै। दैदै लवराई जिन लईहै पराई अब ताकूं पास नेकुहूं न रहति रहाईहै। जिनजिन खाई तिन उदरसमाती खाई जिननखवाईतिन खाईबकताईहै १ श्लोक॥बोधयंतीनयाचंति भिक्षांकाराःगृहेगृहे ।दीयतां दीयतांनित्यमदातुफलमीदृशं २अहंताममताविनछूटहरि प्रापतिनिश्चयनयातेकुंवागिरौ प्रतीति गुरुपगलगि सूर- दासग्रामकी खबरिराखे परग्रामकीः नहीं ऐसेजीवबिषे ण।नेहरिको नहींसो इनकाही गुरुआश्रयरहिये तोभलौ

छायसौंहको दिखाइदई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त बैराग्य बलखबुखारेको बादशाह फकीर एक संगकी कही ऐसे आज्ञा ॥ कवित्त ॥ सबसुख दैके शरणागत को एकैबार भक्ति को दिबेपै और ठाठ ठठवत हौ। पावन पतित यह बिरद तिहारो ताको दोष दुख पुंजपलहीमें मिटवतहौ। सुजन कहत ताहि अपना कै राखौद्वार मेरी बारहीको क्यों अबार हटवत हौ। देवकार काकेवेद दानतार का-को मोहिं नाथद्वारकाके द्वारकाके पठवत हौ १ ॥

आयेआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखीद्वारावतीकृष्णमिलेबहुभाइकै। महलमहलमांझचहलपहललखीरहेदिनसातसुखसकैकौनगाइकै। आज्ञादईजाइबेकोजाइबोनचाहेंहियेपियेबहुरूपदेखोमोहिंकाजुजाइकै। भक्तबूड़िगयेयहबड़ोईकलंकभयोमेटौतमअंकशंकगहीअकुलायकै। २८५ चलेपहुंचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहाबिनजलमीनजैसेऐसेफिरिआयेहैं। देखिनईबातगातसूकेपटभीजेहियेलियेपहिंचानिआनिपगलपटायेहैं । दईलैकैछापपापजगतकेदूरिकरोढरोकाहूओरकहिसीतासमझायेहैं । छुटेईमिलानबनमेंपठानभेंटभई लईछीनितियाकियाचैनप्रभुधायेहैं २८६ अभूलगिजावोघरकैसेकैसेआवेडरबोलीहरिजानियेनभावपेनआयोहै । लेतहौंपरिमैंतौजानौंतेरीशिक्षाऐयेसुनिदृढ़बातकानअतिसुखपायोहै । चलेमगदोसरैसतामेंएकसिंधुरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमुझायोहै।आयोऔरगांवशेषशाहीप्रभुनाव रहैकरेवासहरेटरेचौंधरसुहायोहै २८७॥

आयेआगेलेन॥ श्लोक॥ चीरेणात्मगतोदकापनिषि

लादत्तापुराखगुणा: । चीरितापमवेद्यतेनपयसाखात्मा
क्षमानौकृत: २ गंतुंपावकमुन्मनास्तदभवद्वातुंचमित्रापदं।
युक्तंतेनजलेनशाम्यतिसतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ३ ॥ दोहा ॥
सीतापति रघुनाथजी तुमलगि मेरीदौर । जैसेकागजहा-
ज को सूझत और न ठौर ४ ॥

दोऊतियापतिदेखेंआयेभागवतऐयेघरकीकुगतिरसां
चीलैदिखाईहै । लहँगाउतारिबेंचिदियोताकोसीधोलियो
करोअजूपाकबधूकीटमेंदुराईहै । करिकैरसोईसोईभोगल
गिबैठेकहेउआवौमिलिदोऊलेहुपाछेसीतभाईहै। वाहूको
बुलावौलावौआनिकैजिमायोतब सीतागईवाहीठौररनग
नलखाईहै २८८ पूछेंकहोबातयेउघारेक्यों हेंगातकहीऐ
सेहीबिहातसाधुसेवामनभाईहै । आवेंजबसंतसुखहोतहै
अनंततनढक्योकैउघारेउकहाचरचाचलाईहै । जानिगई
रीतिप्रीतिदेखीएकइनहींमेंहमहूंकहावेंऐयेछटाहूनपाईहै।
दियोपटआयोकारिगहिकैनिकारिलई भईसुखशैलपाछे
पीपासोसुनाईहै २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वार-
का ह्वै आये हैं वेई छाप लायेहैं श्रीकृष्ण जूने दईहै १
सो तुन्हेंलगावैगो सो मोहीपै आवैगो तवसे गोरसे
पीपाजी हैं वर्षतीस में अरु सीताजी वर्षपंद्रह में सर्वांग
सुन्दरी गौरांगी मानोंसीताहीहैं उनको दर्शन साक्षात्
श्रीकृष्णहीहैं याते नितकी बाटदेखैं २ ॥ दोहा ॥ आज
हैजतिथि है सखी शशिजग्यौ आकाश । मेरेदृग अरुपीव
के हैं दोउराकेपास ३ रति सांची जैसे नटकीसी कला
लै ऐसे महले ४ ॥

करैवेश्याकर्मअवधर्महैहमारोयही कहीजाइबैठीजह नाजनकीढेरीहै।घिरिआयेलोगजिन्हैंनयननकोरोगलखि दूरिभयोशोकनेकुनीकेहूनहेरीहै। कहैतुमकौनवारमुखी नहींमोनसंगभरुवासगहैंमोनसुनिपरीबेरीहै। करीअन्न राशिआगे मोहररुपैयापागे पठैदईचौधरकेतहीनबेरीहै २६० आज्ञामांगिढोड़ेआयेकभूभूखेकभूयायेओचकहीदा मपायेगयेस्नानको। मुहरनिभांड़ाभूमिगड़ेउदेखिछोड़ि आयोकहीनिशितियाबोलीजावोशरआनको। चोरचाहैंचो रीकरैढरसुनिवाहीओरदेखैंजोउघारिसांपडारेहतेप्राणहैं ऐसेआइपरीगनीसातसतबीशभई तोरेपांचबांटकरेएक केप्रमाणको २६१ जोईआवैद्वारताहिदेतहैअहारऔरुबो लिकैअनंतसंतभोजनकरायोहै। बीतेदिनतीनिधनधाइ ध्याइछीनकियोलियोसुनिनामनृपदेखिबेकोआयोहै। दे खिकैप्रसन्नभयोनयोदेवोदीक्षामाहिं दीक्षाहैआतीतिकरै आपसोसुहायोहै। चाहौसोईकरौहवैकृपालमोकोढरौअ जूधरौआनिसंपतिऔरानीज्याइलायोहै २६२ ॥

करै वेश्याकर्म क्योंकि हमहूं देखा देखी आगेको बढ़ैंवह तनकौन कामकोहै और तनसबकाम आवैबैल भैंस सुरह गऊ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमैं कोऊलेइतौ हमहूं िकैं सीता बोलीं हमारे पीछे लगिलेऊ तुमकैसे बिकौगे बारमुखी होहिंगी सोसत्संगते रंगचढ़ो। गहगह्योतीनि बार पुटनि में गहगह्यो चढ़ाहै एक पुट पीपाजीसों दूस री चौधरजीसों तीसरो चौधररानी जीने गहगह्यो कह्यो। ऐसे आनिपरी पीपाजीनेकही कहाकरौगी कही अब बाधा न करैंगी १ इतिप्राण॥ श्लोक॥ लिखिता चित्र

शुभेन ललाटेऽष्ट मालिका ॥ नसापिचालितुंशक्या पंडितैर्विदशैरपि । लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवै पड़ा फूल ढेरी लोह शुञ्जा मांगे॥

करिकैपरीक्षादईदिक्षासंगरानीदईभईहैहमारीकरौपरदानसंतसों । दियोवनघोराकछूराख्योदंनिहोराभूपमानतनछोराबड़ोमान्योजीवजंतुसों । सुनिजरिवारिगयेभाईसेनसूरजकंऊरजप्रतापकहाकहैसीताकंतसों । आयोबनजारोमोलल्लियोचाहैखेलनको दियोबहकाइकहौपीपाजूअनंतसों २६३ बोलेउबनिजारोदामखोलिखैलादीजियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठायेहैं । गयेउठिपाछेबोलिसंतनमहोछोकियो आयोवाहीसमयकहीलेहुमनभायेहैं । दरशनकरिहियेभक्तिभावभरेउआनिआनिकैवसनसचसाधुपहरायेहैं । औरदिनन्हानगयेघोड़ाचढ़िछोंड़िदियोलियाबांध्योदुष्टननेआयोमानोलायैहैं २६४ गयेहैबुलायेआपपाछेघरसंतआये अन्नकछुनांहिंकहूंजाइकरिलाइये । बिषईबणिकएकदेखिकैबुलाइलई दईसबसौंजकहीसहीनिशिआइये । भोजनकरतमांझपीपाजूपधारेपूछीबारेतनप्राणजबकहिकैजनाइये । करिकैशृंगारसीताचलीझुकिमेहआयोकांधेपेचढ़ाइबपुबनियांरिझाइये २६५ ॥

दईदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राज्ञश्चामात्यजादोषा पत्नीपापं स्वभर्त्तरि॥ यथाशिष्याजितंपापं गुरुप्राप्नोतिनिश्चितं १ दईसबसौंज ॥ कवित्त ॥ कामिनि को मोतीचुगावतहै रैनि दिन हंसनि को चुनी चूर कांकरी समेतहै । चरीकोंचूड़ा अरु सुन्दर दुशालालाल गौलह्र की बात कभूं हियेह्रं

न लेतहै। गुणीतिगुमानता गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अज्ञान तासों निपट कछुहेतहै। कोऊ जोसीमांगैसी घा सूधहीजवाब देतकंचनीको कांचनउधार लैलैदेतहै २॥

हाटपैउतारिदईद्वारआपबैठिरहेचहेसूकेपगमातांकैसे करिआईहै। स्वामीजुलिवाईल्यायकहांहैनिहारोजाइआई पाइपर्यौठर्योराखोसुखदाईहै। मानोंजिनिशंककाजकी जियेनिशंकधन दियाबिनअंकजापैलरैमरैभाईहै। मर्यो लाजभारचाहैंअर्योभूमिफारिहग बहैंनीरधारदेखिदई दीक्षापाईहै २६६ चलतचलतबातनृपतिश्रवणपरी भरी सभाबिप्रकहैबड़ीबिपरीतिहै। भूपमनआईयहनिपटघ- टाईहोति भक्तिसरसाईनहींजानैंवटीप्रीतिहै। चलैपीपा बोधदैनद्वारहीतिसुधिदई लईसुनिकहीआवोकरौसेवारी- तिहै। बड़ोमूढ़राजासोजगाठेवठ्योमोचीवर सुनीदौरि आयोरहेठाढ़कौननीतिहै २६७ हुतीघरमांझबांझरानी एकरूपवती मांगीवहीलावोबेगिचल्योशोचभारीहै। डग मगपांवधरैपीपासिंहरूपकरै ठाढ़ोदेखिडरैइतआवैआप ख्वारीहै। जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतनयोनयोभ्रम परकलाजानीनतिहारीहै। प्रगट्योस्वरूपनिजखिचिकै प्रसंगकह्यो कहांवहरंगशिष्यभयोलाजटारीहै २६८॥

माता वैसे॥ सवैया॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपनेमें परी नवनेसुक नींद निहोरि। कंतकोआइबो त्योंहीं जगाइ कह्यो सखिवैन पियूषनिचोरि। योंमतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों दृगजोरि। ज्योंपटमें अतिहीं चट- कीलो चढ़ै रँग तीसरी बार कै बोरि १ याको शुद्धहृदय

अबहों कैसे ह्वै गयो सीताजी के दर्शनते सीधेकी बेरक्यों न भयो तीनपुट में रंगहै द्वैबिधि दर्शन एक बिधि भोजन बिप्र कहैं यहां राजाके ब्राह्मणनको पीपाजीको बोध क्यों न भयो ब्राह्मसीपकेलासी पतब्रासो पाच मेदहै २॥

कियोउपदेशनृपहृदयमेंप्रवेशकियो लियोवहीप्रण आपआयेनिजधामहैं। बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहु तिया लेहुकहीभागोसंगभागीसीताबामहैं। प्रातभयेचलै नाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभु चल्योहारिआगेघरघरदेखी ग्रामहैं। आयोवाहीठौरचलौमातापहुँचाइआऊं आयगहे पांवभावभयोगयोकामहैं २९९ बिषयीकुटिलचारिसाधु भेषलियोधारि कीनीमनुहारिकहीतियानिजदीजिये। करिकैश्रृंगारसीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैंसंगआतुरह्वै अजूजाहुलीजिये। गयेजबद्वारउठीनाहरीसुफारिबेको फारिनहींबानोजानिआइअतिखीजिये। अपनोबिचारो हियोकियोभोगभावनाको आनिसांचभयोशिष्यप्रभुमति धीजिये ३०० गूजरीकोधनदियो पीयोदहीसंतनने ब्राह्मणकोभक्तकियोदेवीदीनिकारिकै। तेलीकोजिवायोभैं सिचारनपैकेरिलायोगाड़ीभरिगेहूंतनपांचठौरजारिकै। कागदलैकोरोकरोबनियाकोशोकहर्यो भर्योघरत्यागि डारीहत्याहूउतारिकै। राजाकोऔसरभईसंतकोजोबिभ-वदई लईचीठीमानिगयेश्रीरंगउदारकै ३०१॥

गयो कामहै॥ दोहा॥ मनपंछी जबलग उड़ै बिषै बा-सना माहिं॥ प्रेम बाजकी झपटमें जबलगि आयो नाहिं
१ बिषयी कुटिल॥ चरण रंगेलोचनरँगे चले मराली चा-

ल॥ नीर क्षीर बिवरण समय बकउघरयो त्यहिकाल १ गजरीको धनदियो साधुबोले ठाकुर जीको मन दुखीपै बेल्योहै ठाकुर क्योंकहैं अपनोही क्यों न कहैं २ ब्राह्मण को भक्तिकियो॥ श्लोक॥ वांछितकल्पतरोभ्यश्चकृपासिं धुभ्यएवच॥ पतितानांपावनेभ्योवैष्णवेभ्योनमोनमः ३॥

श्रीरंगकेचेतधरेउतियहियभावभरेउ ब्राह्मणकोशोक हरेउराजापैपुजाइकै। चँदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैल दियोदियोपुनिघरमांझभयोसुखआइकै। बड़ोईअकालप रेउजीवदुखदूरिकरेउपरेउभूमिगर्भधनपायोदैलुटाइकै। अतिबिस्तारलियेकियोहैबिचारयहसुनेएकबारफिरिभूले नहींगाइकै ३०२॥ मूल॥ धन्यधनाकेभजनकोबिनही बीजअंकुरभयो। घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूमखवाये। तातमातडरखेतथोथलंगूरचवाये॥ आसपासकृषीकारखे तकीकरतबड़ाई। भक्तभजेकीरीतिप्रगटपरतीतिजुपाई। अचरजमानतजगतमेंकहुनिपज्योकहुबैबयो। धन्यधना केभजनकोबिनहिबीजअंकुरभयो ६२॥ टीका॥ खेतकी तोबातकहीप्रगटकबित्तमांझ औरएकसुनौभईप्रथमजुरी तिहै। आयोसाधुबिप्रधामसेवाअभिरामकरैटरोढिगआ इकहीमोहदीजैप्रीतिहै। पाथरलैदियोअतिसावधानकि योयहछातीलाइजियोसेवैजैसीनेहनीतिहै। रोटीधरिआ गेआंखिमूंदिलियोपरदाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभी तिहै ३०३॥

चितधरयो तिया हियेभावभरयो ऐसीस्त्रीजाति कैसेभाव भरयो सतसंगति एकादशे॥ सतसंगेनहिदैत्या यातुधानाख-

गामृगाः। गंधर्वाप्सरसोनागासिद्धाश्चारणगुह्यकाः २॥ विद्याधरमनुष्येषुवैश्याशूद्राःस्त्रियोंत्यजा ३॥ घरआयेहरिदास॥ कुंडलिया॥ घरआयेनागनपूजई बांबीपूजन जाइ। बांबीपूजननजाइ भटकिभ्रमसबरैआवै। हरिजन हरहर हँसेतिनहिंतनि अंतहिधावै। नकटीभूषणकोटिकरैशोभा नहिंपावै। घरमें कनिहत होइबाहरपरिवारजनावै॥ अगर भूखभाजैनहीं सुपनेसोमन खाइ। घरआये नागनपूजईबांबीपूजननजाइ ४ प्रीतिहै॥ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानात्मयि भावोनुकीर्त्तनात् ५॥

बारबारपांवपरैऔरभूखप्पासतजीधरैहियेसांचौभाव पाईप्रभुप्यारिये। छाकनितआवैनीकेभोगकोलगावैजोई छोड़ोसोईपावैप्रीतिरीतिकछुन्यारिये। जाकोकोऊखाइ ताकोटहलबनाइकरैलावतचराइगाइहरिउरधारिये। आयोफिरिबिप्रनेहखोजहूनपायेकिहूं सरसायोचातेलैदिखासोश्यामजारिये ३०४ द्विजलखिगाइनमेंचाचनिसमात नाहिंभाइनकीचोटदृगलागीनीरझरीहै। जायकेभवनसातारवनप्रसन्न करैबड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरीहै। घनाकोदयालहोइकैआज्ञाप्रभुदईठरौकरौगुरुरामानंदभक्त मतिहरीहै। भयेशिष्यजाइआयछातीसोंलगाइलियेकियेगृहकाजसबैसुनीजैसीधरीहै ३०५॥

द्विजलखिगाइनमें॥ कबित्त॥ गोरजबिराजैभाल लहलहीबनमाल आगे गैया पाछेग्वाल गावैंमदुबानिरी। जैसीधुनि बांसुरीकी मधुर मधुर तैसी बंकचितवनि मंदमंद मुसुकानिरी। कदम बिटपके निकट तटनीकेतटअटाचढ़ि चाहिपीतपट फहरानिरी। रसबरषावै तनतपनि बुझावै नैननैननिरिझावैवऊआवैरसखानिरी१॥ भूपकेतेल लगा-

या यहतौ बड़ोआश्चर्यहै वैष्णवकीतौ टहलकरै पै अभक्त राजा ताके तेलंगगायो तहां टीकाकारने कह्योहै वही भगवंत संत प्रीतिको बिचारकरै घरदूरि ईश्वताई पांडव निसों करीहै २॥

मूल॥ बिदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके प्रभूदासकेकाजरूपनापितकोकीनो। क्षिप्रछुरहरीगही पानदर्पणतहँलीनो। ताढशिह्वैतिहिकालभूपकेतेललगा यो। उलटिरावभयोशिष्यप्रगटपरचौजबपायो। श्यामर हतसम्मुखसदाज्योंबच्छाहितधेनुके। बिदितबातजगजा- नियेहरि भयेसहायक सेनके ६३ टीका॥ बांधोगढबास हरिसाधुसेवाआशलगीपगीमतिअति प्रभुपरचौदिखायो है। करिनितनेमचलेउभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमेलसं तफिरिघरआयोहै॥ टहलबनाइकरीनृपकीनशंकधरीध राउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै। पाछेसेनगयोपंथपूछे हियेरंगछयोभयोअचरजराजाबचनसुनायोहै ३०६ फे रिकैसेआयेसुनिअतिहीलजाये कहीसदनपधारेसंतभई योंअबारहै। आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरि शिरनायोदेखीमहिमाअपारहै। भीजिगयोहियोदासभा वढ़लियोपियोभक्तरसशिष्यह्वैकेजान्योसाईसारहै। अबलौंहूंप्रीतिसुतनातीभई रीतिचलैंहोइजोप्रतीतिप्रभु पावैनिरधारहै ३०७॥

नापति॥ दशमे॥ अनुग्रहायभक्तानांमानुषंदेहमास्थि- तः॥ भजतेताद्दशीक्रीडायाश्रुत्वातत्परोभवेत् २ ऐसे व- मने नाऊरूपधर्‍या तौ हमनाऊके शिष्य॥सोरसमुझये॥ न

शूद्राभागवतभक्तास्तेविभागवतोत्तमाः॥ सर्ववर्णेषुतेशूद्रा ये नभक्ताजनार्दने१ पदरचना॥मधुपुरीक्योंनचलोश्यामहरी। दूनचारणान की बलिजाऊं रजधानी कैसेछांड़िगो कुलघर सोंग्राम। नंदयशोदाकी रट मेटो वेगिचलोउठिधाम॥ निशिवासरकछुंकाननपरतिहैसुमिरततेरोनाम॥ तबतुमवेनुबजाइ बुलाईकालिंदीकेतीर। अबवैबातेंक्योंबसरैंगी हरि हलधरदोउबीर। गोपवधू ब्रजमंडल मंडन सबमिलिजोरें हाथ।सुखानंदस्वामी सुखसागरतुमबेगिचलोउठिसाथ२॥

॥ मूल ॥ भक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरसासु खसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी । पदरचनागुरुमंत्र मनोआगमउनहारी । निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवतभूधर ज्योंनिर्झर। हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभर । संतकंज पोषणबिमलअतिपियूषसरसीसरस । भक्तदान भयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ६४ ॥ मूल ॥ महिमा महाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी एकसमयअध्वाचल तबरावाकछुलपाये। देखादेखीशिष्यतिनहुंपीछेतेखाये। तिनपरस्वामीखिजेबवनकरिबिनबिश्वासी । तिनतैंसेप्र त्यक्षभूमपरकीनीरासी । सुरसुरीसुवरपुनिउदकलैपुहप रेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांची करी ६५॥ मूल॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीको रहेउ । अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहबनकोगवने। अचरज भयोतहांएकसंतसुनिजिनहोबिमने। बैठेहुतेएकांतआइअ सुरनदुखदीयो। सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिकोकीयो। सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराखेउनरसिंहज्यों । महास तीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ ६६ ॥

तबप्रतिमारनछोरनीकी ॥ बहुतदिनबसे नगरद्वारका नँदी गोमतीतीर। ब्रजबासी दरशनको तरसें परम्रत श्यामशरीर। प्रेम तीन प्रकारको तापै कबूतरको दृष्टांत॥ दोहा॥ हितकरि तुमपठयोलगी वा व्यजनाकी वाइ॥ गईतपति तनकीतऊ उठी पसीनान्हाइ१ महिमाप्रसाद॥ पाद्मे॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकंचयत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहियथाविष्णुस्तथैवतत्॥ विचारंयेवकुर्वंतितेनग्रयं तिनराधमाः॥ विष्णौ॥ गुरोराज्ञासदाकुर्यात् नतदाचरणं क्वचित्॥ महादेवजीने विषपियो औरकोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न छाइजाइ तापैरोटीको दृष्टांत॥ दोहा॥ गौनेव्याह उछाहको संतअन्न नहिंखाय॥ जहां तहांके पायते भजन तेज घटिजाय२॥

मूल॥निपटनरहरियानंदकोकरदातादुरगाभई।झर घरलकरीनाहिंशक्तिकोसदनउदारै॥ शक्तिभक्तसोंबोलि दिनहिंप्रतिवरहीलैडारै। लगीपरोसनिहोसभवानीभैसों मारै॥ बदलेकीबेगारिमूंड़वाकेशिरडारै। भरतप्रसंग ज्योंकालिकालइदेखितनमैंतई। निपटनरहरियानंदकेक रदातादुरगाभई६७ कबीरकृपातेपरमतत्वपद्मनाभपरचो लह्यो। नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापूजा। जपतपती- रथनामनामबिनऔरनदूजा। नामप्रीतिनामबैरनामकहि नामीबोलै। नामअजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै। नाम अधिकरघुनाथतेरामनिकटहनुमतकह्यो॥ कबीरकृपातेप रमतत्वपद्मनाभपरचोलह्यो६८॥टीका॥ काशीबासीसाह भयोकोठीसोंनिबाहकैसेपरिगये कृमचल्योबड़िबेकोभीर है। निकसेपदमआइपूछीढिगजाइकहीगहीदेहखोलोगु- गान्हाइगंगानीरहै। रामनामकरैबेरतीनिमेंनवीनहात

भयोईनवीनकियोभक्तमतिधीरहै।गयेगुरुपासतुममहिमा नजानीअहोनामाभासकामकरैकहीयोंकबीरहै॥ ३०८॥

कबीर॥ दोहा॥ समभिपढ़ेकैपढ़ि समभिकहो कहो द्विजराय॥ सुनियहबातकबीरकी पण्डित रह्योहिराय१ तपजपतीरथनाम॥नामलिखो जिनसबकियो योगयज्ञआ-चार॥जपतप तीरथपरशुराम सबैनामकीलार२॥नामबैर॥ कबित्त॥ कोऊ एक यमनजठर संगजात कहूंसूकरकेधाव-कनेमारयोताहिधायकै॥ जोरसोंपुकारयोमोहिं मारयो हैहरामजाति ऐसेकहिबेगि प्राणगयेअकुलायकै। गोपद समानभवसागरसोंपारगयो नामकेप्रताप ऐसो पदकहो गायकै। प्रेमसों कहैगो कोऊनामरूपारामकौन अचरज रामधामदेतहैं जुवायकै ३॥

मूल॥तत्वाजीवादक्षिणदेशबंशीधरराजतविदित।भक्ति सुधाजलसमुद्रभयेबेलावलिगाढ़ी।पूरबजान्योरीतिप्रीति उतरोत्तरबाढ़ी। रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणसदाधर्मर-त। शूरधीरउदारदयापरदक्षअनन्यव्रत । पदमखंडप-द्मापधितप्रफुलितकरसविताउदित । तत्वाजीवादक्षि-णदेशबंशीधरराजतबिदित६६॥ टीका॥तत्वाजीवाकी॥ तत्वाजीवाभाईउभैबिप्रसाधुसेवापन मनधंसेबाततातेशि ष्यनहींभयेहैं गाड़ेउएकठठहारहोइअहोहरीडारसंतचर णामृतकोलैकैडारिनयेहैं। जबहींहरितदेखेंताकोगुरुकरि लेवैंआयेश्रीकबीरपूजीआशपावलयेहैं । नीठिनीठिनाम दियोदियोपरचाइधामकामकोइहाइजोपैआवोकहिगयेहैं ३०९ कानाकानीभईद्विजजानीजातिगईपांतिन्यारीक रिदईकोउबेटीनहींलेतहैं। चलेउएककाशीजहांबसतकबी

रघीरजाइकहीपीरजबपूछेउकौन हेतहै । दोऊतुमभाईक शोभ्रापुमेंसगाईहोइभक्तिसरसाईनघटाईचितचेतहै । भ्रा इबहेकरीपरीजातिखरभरीकहैकहाउरधरी कछूमतिहूभ्र चेतहै ३१०॥

भक्तिसुधा अमृतमैंह्वैगुणमादिकतामिष्ट भक्तिरूपी अ-मृतक्षमादिक अतिमिष्टपैवहनक्षर अर यह स्वमुख कर्त्ता वह सन्मुख कर्त्ता बेलाबेलघाटहै १ ॥ मनघटी ॥ दोहा ॥ तोलोबरोबरिगोगधी मोलबरोबरिनाहिं ॥ भेषबरोबरि परशुराम भेदबरोबरिनाहिं २ नामदियो ॥बातपरीक्षा लई सबतीरथ करत कबीरजी आये ३ चितचेतहै ॥चितमें बिचारी सम्बन्ध तो सबसोंहै वे तो अभक्त तुम भक्तसोंस-म्बन्ध कामको नहीं परपराको देख्यो स्वयंभूमुनि कर्दम ऋषि ४ वंशीधर प्रह्लाद कहो पिता उद्धार इकीशकुली ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्य कश्यप नाना फूफा मामा मौसी पूरब जान्यो ॥ आरम्भगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वी पुराहृद्धिमतीचपश्चात् । दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्नाच्छाये वमैत्रीखलसज्जनानां ॥ दोऊतुम भाईकरी ब्रह्माके अंगते स्वयंभूमनु सतरूपा तिनते देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदिहई ॥

करैंयहीबातहमैंऔरनासुहातआये सबैहाहाखातयह छाड़िहठदीजिये । पूंछिबेकोफेरिगयेकरौठ्याहजोपैनयेद ष्टकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये । तबदईसुताळईयात नप्रसन्नह्वैकैपांतिहरिभक्तनसोसदामतिभीजिये। बिमुख समूहदेखिसमुखबड़ाईकरैंधरैंहियमांझकहै पनपररीझिये ३११ ॥ मूल ॥ बिनयठ्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहित माधवकियो। पहलेवेदबिभागकथितपुराणअष्टादश भार

तपादिभागवतमथितउद्धारेउ। हरियशअबसोधेसबग्रंथ अर्थभाषाविस्तारेउ। लीलाजेजयजयतिगाइभवपारउ तारेउ।श्रीजगन्नाथइष्टवैरागसींवकरुणारसभीज्योहियो। बिनयव्यासमनोप्रकटह्वै जगकोहितमाधवकियो ७०॥

भाषाबिस्तार्यो ॥ पद ॥ हरिहरिनामउचारिये हरि यश सुनिये काना। हरिको मस्तक नाइये हरिहैं सकल गुणके निधाना। हाथ न हरिके कर्म करि पावनपरिक-मांदीजै। नैन निरखि श्री जगन्नाथ आत्मा समर्पणकी नै। कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत बिचारा।वासुदेव की भक्ति बिननहीं नरकोनिस्तारा १॥ श्लोक॥ स्त्रीशूद्र द्विजबंधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरा। कर्मश्रेयसिमूढ़ानांश्रेयमेवं भवेदिह२इति भारत माख्यानंकृपया।मुनिनाकृतम् ३॥स्मृ तौ॥ आदौत्रयोद्विजाप्रोक्तास्तेषांवैसंचसत्क्रियाः ४ ऐसं व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदास जीने॥ मृषा गिरस्तान्यसतीरसत्कथा ॥ तापै भट्टजी अरु कूबा को दृष्टांत ५॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधवदासद्विजनिजतिया तनत्यागकियोलियोइनजानजगऐसोईब्योहारहै। सुत कीबढ़नयोगलियेनितचाहतहौभईयह औरलैदिखाईकर तारहै। तातेतजिदियोगेहवैईअबपालैंदेहकरैअभिमान सोईजानियेगँवारहै। आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधु तीरअतिमतिधीरभूखप्यासनबिचारहै ३१२ भयेदिनती नियेतौभूखकेअधीननहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपरेउभारि ये। दियोसेनभोगआपलक्ष्मीजूलैपधारीहाटककीथारीझि नझनपांवधारिये। बैठेहेकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरंगेबिजु

रीसीकौंधिगईनीकेननिहारिये । देखिसोप्रसादबड़ोमन
अह्लादभयोलयोभागमानिपात्रधरेउईबिचारिये ३१३॥

माधवदास कनौजिया ब्राह्मण हैं यह बिचारे हैं लरि-
कास्याने होहिंतौ माता स्त्री कीटहलकोछोंड़िकै बैराग
लेहिंतौलौंस्त्री पाइगईउलटीटहललरिकनिकीआइपरी
जैसेकोई सवारी चाहैहो उलटौ शिरपै घोड़ा को बा-
चा धर्यो १ दिखाई पालन सबको हरिही करैहैं अब
जो लरिकनको बढ़िबो बिचारौं फिरि सगाई व्याह
फेरि छूछक इतने में शरीरकी छुट्टि ह्वैगई गृहकारज
तौ बड़ो नाथके पहाड़हैं कब छूटैंगे यह दिखाइकै नि-
कार्यो जैसे बलख के बादशाहको २ हिये रूपरंग सा-
धु द्वै जातिके एक भगवतकामी एक स्थानी एक गमनी
गमनी द्वै जातिके एकपर उपकारी एक अन्तकामी स्थि
री द्वैजातिके एक भगवतकामी एक अर्थकामी शोभादेश
चारी ग्रामचारी ग्रामचारी के तीनभेद एक हठानव्रती
एक स्थान व्रती एक ध्यानक माधवदास हरिकामीहैं सो
साधुनके भेदहैं ॥

खोलैजोकिँवारथारदेखियेनशोचपरेउकरेउलैयतनढूं-
ढ़िबाहीठौरपायोहै । लायेबांधिमारीबैनधारीजगन्नाथदे
वभेवजबजान्योपीठिचिह्नदरशायोहै । कहीतबआपमेही
दियोजबलियोयानेमानेअपराधपांवगहिकैक्षमायोहै । भ
ईयोंप्रसिद्धबातकीरति नमातकहूंसुनिकैलजातसाधुशील
यहगायोहै ३१४ देखतस्वरूपसुधितनकीबिसरिजातिर
हिजातिमंदिरमेंजानेनहींकोईहै । लग्योशीतगातसुनोबात
प्रभुकांपिउठेदईसकलातआनिप्रीतिहियेभोईहै । लागेजब
बेगबेगीजाइपरेसिंधुतीरचाहैजबनीरलियेठाढ़ेदेहधोईहै ।

करिकैबिचारयोंनिहारिकहीजानेमैंतौ देतहौंअपारदुखदई शतालैखोईहै ३१५ कहाकरोंअहोमोपैरहोनहींजातनेकु मेटौव्यथागातमोकोव्यथाबहुभारीहै। रहैभोगशेषअौरत नमेंप्रबेशकरैतातेनहींकरोदूरिईशतालैटारीहै। वहूबात सांचयाकीगांसएकऔरसुनोसाधुकोनहँसेकोऊ यहमैंबि चारीहै। देखतहीदेखतमैंखीड़ासीबिलाइगईनईनईकथा कहिभक्तिबिस्तारीहै ३१६ ॥

अहूयोंप्रसिद्धिबात॥सोज्योंज्योंसुनेजगन्नाथनेमाधवदा- सकेलियेआपवैतपायेत्यौंत्यौंयेलजात अरुकहैंहमाराकुना- सभयोहै जिनकोपुष्पादिसोंपूजिये तिन्होंनेवैतपायेसाधुन केलक्षणहैं जैसेसुदामाकहीमेरोदरिद्रगयो मेरेदरिद्रको॥ ख्यातकियोहै सबकहैहैंसुदामागरीबभक्तहै १ देहधोइये श्लोक॥ यद्यद्वांछतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामतंद्रितः॥ रह्योन- हींजातसब जग जगन्नाथकीसेवाकरैहै। जगन्नाथजीमाधव दासकीसेवाकरैहैं॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोआरंभकियो दियोकाहूवा ईपोताखीजतचलाइकै। देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रक्षा लिकरिकरीदिव्यबातीदईदियेमेंबराइकै। मंदिरउजारो भयोहियेकोअँध्यारोगयोगयोफेरिदेखिबेको परीपाइंआइ कै। ऐसेहैंदयालदुखदेतमेंनिहालकरैंकरैंलैजैसेवाताको सकैकौनगाइकै ३१७ पंडितप्रबलदिगबिजयकरिआयो आपबचनसुनायोजूबिचारमोसोंकीजिये। दईलिखिहार काशीजाइकैनिहारपत्र भयोअतिहारलिखीजीतिवाकीखी जिये। फेरिमिलिमाधवजूकोवैसेईहरायोएकखरकोबुला

योकहीचढ़ौजीउधीजियै । बोलेउजूतीबांधौकानगयोसु
निन्हानआनजगन्नाथजीतेलैचढ़ायोवाकोरीझियै ३१८॥

भिक्षाकोआरंभ॥ दोहा॥ धरतीतौखूंदनसहै काठसहै बनराइ॥ कुवचनतौसाधूसहै औरपैसहोनजाइ १ हार॥ कवित्त॥ दूनोभलोसुपथपैन कुपथजनोभलो सूनोभलोगेह पैनबलसाथकरियै। अनलकोलपट औकपटअलीनाहरकी कपटीकेकपटसों दूरिपरिहरियै। यहैजगजीवन परमपुरषारथहै परघरजाइफेरि रससोनिकरियै । हारिमानिलीजियेनकीजैबादनीचनसों सर्वस्वदीजैपैनपरबशपरियै २ दोहा॥ हारेतौहरिजनभले जीतनदौसंसार॥ हारेहरिपै जाहिंगे जीतेयमकेद्वार ३ जगन्नाथजीतेतजगन्नाथकही गदहापैचढ़ौतेरेसुखन्यायहै। जैसेवानेकही काजीकेसुख न्यायहै ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैंनीलाचलमांझमनभईचाहजाइनयननिहारियै । चलैवृन्दाबनमगलगिएकगांवजहां वाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारियै । बैठेयेप्रसादलैतलैतहगभरिआहेकहौकहाबातदुखहियेकोउघारियै। सांवरोकुँवरयहकौनकोभुराइलाये माइकैसेजीवैसुनिमतिलैबिसारियै३१६चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमनमांझआगेबिनतीहूकरीहै। गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔरघर भावभरितियाआयपायँनमेंपरीहै । ऊपरमहंतकहीअबएकसंतआयोयहांतौसमाइनाहिंआईअरबरीहै । कीजियेरसोइजेइसिद्धसोइलावोहूधनीकेकैपियावो नाममाधवआशभरीहै ३२० गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनाम सुनिअभिरामदौरेसंगहीमहंतहै। लियेजाइपाइलपटाये

सुखपायमिले झिलेघरमांझतियाधन्यतोसोकंतहै । संत पतिबोलेमैंअनंतअपराधकियेजियेअबकहीसेवोसीतमानि जंतहै । आवतमिलापहोइयहीराखौबातगोइआयेवृन्दा-वनजहांसदाईबसंतहै ३२१ ॥

सवैया ॥ भीने भगामें दगाही भरी औ लगाही लगा सँग डोलतहैं । देवै पगान जगा जगमें सुभगाकुल कानि के गोलतहैं । नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान बिखोलतहैं । लरिकानमें डोलतहैं जगन्नाथ ऊरुरू कुरुरू करि बोलतहैं १ धूरिमें धूरिभरे सबगात सुनातपु-कारत डोलतहैं । अलकावलि राजतिहैं बिथुरी सुथरी बरगोल कलोलतहैं । अंबुज लोचन चारुचितौनिसुभाल बिशाल बिलोलतहैं । लरिकानिमें डोलतहैं जगन्नाथ ऊरुरू कुरुरू करिबोलतहैं २ माधवदास पंडितसों बोले आपबड़े उतावले इतनेमेंआऊं तोलों आपही चढ़िबैठे तबलाजमें दबिगयो तब माधवदासजी जगन्नाथजीसेबोले यह दिग्विजय करि आयेहौ सो सब खारकरी मरेऊ बुरौभयौ वह आछो न कियो मेरे बदले चढ़ायो जैतौ अपने बदले चढ़ायोहै तब अपने हाथसों अपराध क्षमा करायो ये साधुताके लक्षणहैं ३ न्याये ॥ विद्याविवादाय धनंमदायशक्तिः परेषांपरिपीडनाय॥ खलस्यसाधोविपरी तमेतज्ज्ञानायदानायचरक्षणाय४ पठकापाठकाश्चैवयेचा न्येशास्त्रचिंतकाः॥ सर्वेव्यसनिनोमूढायःक्रियावान्सपण्डि तः५॥दोहा॥ भक्तिबिनाश्रीभागवतकहैं.सुनैजेग्रंथ॥त्यौंदर्वी व्यंजननिमेंस्वाद न जानेमंद ६ ॥ छप्पै॥ पंडितपढ़िभागवत भक्तिभक्त निजुसिखवत॥ महिषी ज्योंपयस्रवत आपसो स्वाद न पावत । मृगजुनाभि नहिंलखैलेतलण सिलमधि मानै। कटआगरकर परवहै ये मरम न जानै।तैसेदर्वीन्या यबतुरभुज भक्तिबिना मंडक धुनि । दर्पण दियो जुनैनबिन त्यों अंधअंधेरो डोरिपुनि ७॥ सप्तमे॥ यथा खरस्चंदन

खरवाही भारस्यवेत्तानतु चंदनस्य॥ यथाखरविप्राश्रुति शास्त्रयोगामक्तहीनाखरवद्वहंति ८ तापैगंगला तेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ९॥ संतपति॥ दोहा॥ नैन निकट काजर बसै पैदर्शन हरधाइ॥ ज्योंसाधनके संगबिन हरिमुख छबि न लखाइ ५॥ कबित्त॥ बेदहूकी निंदाकरै साधहूकी निंदाकरै गुरुकी आज्ञाबिष्णु शिवभेदमानिये। नामही के आसरे आइ बहुपापकरै अश्रद्ध वानही सों उपदेशलै बखानिये। एकअर्थ बादअरु व्याख्याकुतर्ककरै महिमा सुनतहिये अश्रद्धान आनिये। नामको समान सब धर्म समान कहै नामन अफलअपराध दश जानिये॥

देखिदेखिवृन्दावनमेंमगनभये गयेश्रीबिहारीजूकेच नातहीपायेहैं।कहिरह्योहारपालनेकमेंप्रसादलालयमुना रसालतटभोगकोलगायेहैं। नानाबिधिपाकधरैस्वामीध्या पध्यानकरैबोलैहरिभावैनाहिंवेईलेखवायेहैं।पूछेउसोजना योढूंढ़िलायोआगेगायोसब तुमतौउदासहासरससमझा येहैं ३२२ गयेब्रजदेखिबेकोभांडीरमेंपैमरहेनिशिकोदुरा इपाइकमलेदिखायेहैं। लीलासुनिबेकोहरियानेगांवरहैं जाइगोबरहूपाथिपुनिनीलाचलधायेहैं। घरहूकोआयेसुत सुखीसुनिमाताधायीमारगमेंसुपनदैकैबगिकमिलायेहैं। याहीबिधिनानाभांतिचरितअपारजानेजितेकछुजानेतिते गाइकैसुनायेहैं ३२३॥ मूल॥ श्रीरघुनाथगुसाईंगरुड़ ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं। शीतलगतसकलातबिदितपुरुषो त्तमदीनी। शौचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीकीनी। जगन्ना थपदप्रीतिनिरंतरकरतखवासी। भगवतधर्मप्रधानप्रस न्ननीलाचलबासी। उत्कलदेशउड़ीसानगरबैनतेयसब

कोऊकहै ॥ श्रीरघुनाथगुसाईं गरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़े रहैं ७१ ॥

बिसारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करौ तौ रन है काज ठौर ॥ तुमहौ जैसी कीजियो अहो रसिक शिर मौर ॥ तुमतौ उदास हास रस समझायो तुम जगतसों बिरक्त भये सोतौ आछो पै हरिसों बिरक्तभये सो आछो नहीं माधव दास कही मैं तुम्हारे ठाकुर कीसचिक्कणता देखी सो प्रसंग २ निशिको दुराइ खाइ क्रमसों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा बिश्रामघाट झारो संत चरणोदक शीत सेवनकरो सोई कियो मूलमें नाभाजी ने धरे हैं खेम गुसाईं खेमकर लीला सुनिबे को हरियाने गोली गांवरहे गोबर पाथो सो प्रसंग ॥

टीका॥ अतिअनुरागघरसंपतिसोंरहेउपागिताहकरि त्यागनीलाचलकियोबासहै । धनकोपठावैंपिताऐपैनहीं भावैकछूदेखिबोसुहावैमहाप्रभुजूकोपासहै । मंदिरकेद्वार रूपसुंदरनिहारोकरै लग्योशीतगातसकलातदईदासहै। शौचसंगजाइबेकीरीतिकोप्रमानवहै बसेसबजानौमाधव दाससुखरासहै ३२४ महाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकीआज्ञा पाइआयेवृन्दाबनराधाकुंडबासकियोहै।रहनिकहनिरूप चहनिकहनिसकैथकैसुनितनभावरूपकरिलियोहै । मान सीमैंपायोदूधभातसरसातहिये लियेरसनारीदेखिवैदक हिदियोहै । कहांलौंप्रतापकहौंआपहीसमझिलेहुदेहूव हीरीझिजासोंआगेपायजियोहै ३२५ ॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढ़िकर मैन तुरंग पर चलिबा पावक माहिं ॥ प्रेम पंथ ऐसो कठिन सब कोउ निबहत

नाहिं १ यह स्वरूप मोमरूपी भावना हरिकी अग्निरूप सो कैसे निबहै या शरीरको सखी भावरूप अष्टधातु को किया अग्निरूप रस तामें प्रवेश किया ॥ दोहा ॥ भजन रसिक रघुनाथजी राधा कुंड निवास ॥ लोन तक्र ब्रज को लियो आसु नहीं कछु आस २ राधाकुंडबास ॥ यथाराधा तथाविष्णु: यथाकुण्डप्रियंतथा ॥ सर्वगोपसु सैवैकाविष्णो रत्यंत बल्लभा ३ ॥ छप्पै ॥ रतन जड़ित नगखचित घाट सिढ़ियन की शोभा। गुंजत भोर मराल भरे आनंद की गोभा ॥ माधव काज तमाल इच्छ सबही भक भूमैं। छबि की उठतितरंग निरखि नंदलालजुघूमैं ॥दोहा॥ श्रीमहारानी राधिका अष्टसखिन के झुंड। डगर बहारें सांवरो सुजय जय राधाकुण्ड ॥

मूल ॥ श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशि बिस्तरी। गौड़देशपाषंडमेटिकियोभजनपरायन। करुणा सिंधुकृतज्ञभयेअगतिनगतिदायन।दशधारसआक्रांतिमह तजनचरणउपासे। नामलेतनि:पापदुरिततिहिनरकेना से। अवतारबिदितपूरबमहीउभयमहतदेहीधरी। श्रीनि त्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिबिस्तरी ७२ ॥ नि त्यानंदकीटीका ॥ आयबलदेवसदाबारुणीसोमत्तरहे चाहेमनमान्योप्रेममत्तताईचाषिये। सोईनित्यानंदप्रभुम हंतकीदेहीधरीभरीसबआनितऊपुनिअभिलाषिये। भयो बोझभारीकिहूंजातनसँभारीबात ठौरठौरपारषदमांझधरि राखिये। कहतकहतअरुसुनतसुनतवाकेभयेमतवारेबहुग्रं थताकीसाखिये ३२६ ॥

देहीधरी ॥पद॥ अबतौहरी नामलौ लागी साधोहरी नामलौ लागी। सबजग को यह माखनचोरा नाम धरो

वैरागी। कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली कहं छोड़ी सब गोपी। मूंड़मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी। मात यशामति माखन कारण बांधे जाको पांव। श्यामकिशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव। पीतांबर को भाव दिखावै कटिकोपीनकसे। दासभक्त की दासीमीरा रसना कृष्ण बसे १॥ दशमे॥ आसन्वर्णास्त्रयोह्यस्यगृह्णंतोऽनुयुगंतनुः। शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः २ एकादशे॥ कृष्णवर्णंत्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं॥ यज्ञैसंकीर्त्तनप्रायैर्यजंतिहिसुमेधसः ३ चाषिये॥ दोहा॥ भूतलगे मदिरापिये सबकाहुसुधिहोई॥ प्रेमसुधारसजिनपियोतिहिन रहै सुधिकोइ ४ जैसेगंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गोरतन अंतर कृष्ण स्वरूप ५॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभूकी॥ गोपिनकेअनुराग आगेआपहारेश्यामजान्यो यहलालरंगकैसेआवैतनमें। येतौसबगोरतनीनखशिखबनीठनी खुलेउयोसुरंगरंग अंगरँगेबनमें। श्यामताईमांझसोललाइहूसमाइजाइताते मेरेजानफिरिआईयहमनमें। यशुमतिसुतसोईशचीसुत गौरभयेनयेनयेनेहचोजनाचेनिजगनमें३२७॥

हरिश्याम॥ पंचाध्यायी॥ भगवानपिताराचीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः वीक्ष्यरंतुंमनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः २ कवित्त॥ पाग जिमिरागही भरयोहै या वांसुरी में ताको तानेशिखा सुनि गोपी कांतचतिहै। कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बाती बरै नाहिंनै उपाइ कोऊ बाद जहीं पचतिहै॥ बनके पखेरू उठि पांखन बयारि करैं गोकुल की कुलबधू कैसेकैबचतिहै। जरिगई अतिताती तातै तकिनेहो कान्हें फूंकिफूंकि गहैं तऊ आगरी नचतिहै २ एकओर बीजना डुरावति चतुरनारि एकओर झारी लिये करज-

ल पानको। पाछेते खवासिनी खवावैं पान खोलिखोलि राधे सुख लाली मानों तन करतान की॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँदनंदन जू आई सुधि वाही ब्रज कुञ्जकी लतान की। बांयें गिरि मोर वारों दाहिने समीर वारो पाछे पान दान वारो आगे वृषभान की ३ बिसगदापग अंधनिको इन चालिबो आछिनिहूँको निवारयो। सूरति याह दिखावत वे इन प्रेम अथाह के बारिधि डारयो। बेसग्रास बसावत हैं इनबास छुड़ाइ उज्यारनियारयो। देखो अहो हरि की बंसुरी इन कैसे सुवंश को नामबिगारयो ४ दियाकैउज्यारितिय दूधसीरो करतिही संगवाके आसपास भावजनभीरकी। लौनेहू ते सुलखसलोनीसाठि सोनेकीसी गौनकीसीआई किधौं आई सुनासीर की॥ काशीराम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहूंवाके कान परोबंशी बलवीरकी॥ सानोलागी तीरकी यापरीहै अहीरकीसँभार न शरीरकी न ओरकीनछोरकी॥ भूलीसी फिरति फिराति कुंजकुंजनि में कैतो समझाइ रही बैठी रहौगेहमें। तबतो न मानी कान्ह सुनिबे को जातिता न मानी नहीं कान्ह तरुणाईकेतिहमें। अबतो प्रह्लाद डसी बिरहके भुवंगम ने अंग रोम रोम बिखरमिगयो शरीरमें। सांसरीभरनलागी आंसुरी ढरनलागी पांसुरी निकसि आई बांसुरीके नेहमें २ इनजेते सुरलीने तेतेबंध उरकीने जेतेराग तेते दाग रोम रोम कीजिये। अंतरकी सूनीघर करसून औरनिके भेदसुनि श्रवण बसेरो बनकीजिये। ताननको तीखी उर बाननचलाये देतचीरी चीरि अंगनि तुणीर तनकीजिये। बांसुरीबसेंगीतौ हमन बसेंगी ग्यास बांसुरीबसाइ कान्ह हमें बिदा कीजिये १ बाजी उठिआई बाजी देखिबेको दौरी आई बाजीसुनि आई पौरिबंशी गिरिधरकी। बाजी हँसि बोलें बाजीसंग लगी डोलें बाजी भईबौरी बाजिन बिसारीसुधिघरकी। बाजी न धरतधीर बाजिन सँभारे चीर बाजिन की छाती पर

पीर दावानल की। बानी कहैं बानीपुनि बानी कहैं कहां बानी बानीकहैं बानीबंसी चंचल चतुरकी ३ श्लोक॥ तासांतत्सौभगमदंवीक्ष्यमानञ्चकेशवः। प्रशमायप्रसादाय तत्रैवांतरधीयत ४॥ कवित्त॥ जाही कुंजपुंजतर गुंजत भवँरभीर ताहीतरुवरतर धीमधुनियतहैं। नाहीरसनासे कहीरस की रसीली बात ताही रसना सों आप गुण गुनियतहैं। आलमबिहारीलाल हियेतें अचेत भये येहो दईहेत खेत कैसेलुनियतहैं। जेइकान्ह आखिनिके तारे हुते निशिदिन तेईकान्ह काननि कहानी सुनियतहैं ५ मंजुरची रससों रुचिकै सुगुलानकी मेंड़ खसाइ गयोरी। याह बताइ हसैं सजनी अँधियारमें छांड़ि नशाइ गयोरी। खेल संयोगको नेक दिखाइ बियोग फनीये कटाइ गयोरी। प्रेमकेफंद फसाइ गयोइतमें घरकान्ह बसाइ गयोरी २ कदम करीलतीर पूंछति अधीर गोपी आनन रुखौहौं गरौंखरौंई भरौहौंसों। चोरहैंहमारो प्रेमचौतरानि तारयो गदरानि कसि भाज्यो ह्वैकै करिलजौहांसों। ऐसेरूप ऐसेभेषहमेंहू दिखैयो अति देखतहीं रस खानिनैननचुभौंहौंसों। मुकुट झुकौहौं हियहारहैं हरौहौं कटिफेटापियरौहों अंगरंग सबरौहौंसों ३ श्लोक॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदार जम्ब्वर्कबिल्ववकुलाम्रकदंबनीपाः। येन्येपरार्थभविकायमुनोपकूलेशंसंतुकृष्णपदवींरहितात्मनांनः ४ पंचाध्यायी॥यमुनाकेविटप पूंछिभई निपट उदासो। क्योंकहिहै सखिमहाकठिन ये तीरथवासी॥ श्लोक॥ पुनःपुलिनमागत्यकालिंद्याः कृष्णभावनाः। समवेताजगुःकृष्णंतदागमनकांक्षया ५ तबगोपीअधीनह्वै इतन सोंबेलिन सों पूंछतभई महाविह्वल शरीरह्वैगये सोकहैंहैं तुमकहूंश्रीकृष्णदेखेहैं॥श्लोक॥ भजतोपिनवैकेचिद्भजंत्यभजतःकुतः।आत्मारामाह्याप्तकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः ६ नपारयेहंनिरवद्यसंयुजांस्वसाधुकृत्यंविबुधायुषापिवः। यामाभजनदुर्जरगेहशृंखलां संवृश्च्यतद्वःप्रतियातुसाधुना ७॥

दोहा॥ कसत कसौटी हेमको लोकरीतियहनेम। प्रेमनगरकी पैठमें भयो कसौटीहेम ८ बातेंश्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारे इनके प्रेमको देखिकै महाप्रफुल्लित ह्वैकै हाथजोरिकै आइमिले ९॥

आवैकभूप्रेमहेमपिंडवततनह्वैइकभूसंधिसंधिछुटिअंगबटिजातहैं। औरएकन्यारीरीतिआंसूपिचकारीमानों उभैलालप्यारीभावसागरसमातहैं। ईशताबखानिकहा करोसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षेत्रनेत्रनिरखिसाक्षातहैं। चतुर्भुजषटभुजस्वरूपलैदिखायदियो दियोजोअनूपहित बातपातपातहैं ३२८ कृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभयो अतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहैं। जितोगौड़देशभक्ति लेशहूनजानेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंबोरेउकहिहरीहैं। भयेशिरमौरएकएकजगतारिबेको धारिबेकोकौनसाखि पोथिनमेंधरीहैं। कोटिकोटिअजामीलवारिडारेदुष्टतापै ऐसेहूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहैं ३२९॥

आवैकभूप्रेम॥पद॥ रासमंडल बनेन्टत्यनीकीबनी। गौर गोबिंदके नयन अरबिंद सों छुटत आनंद मकरंद चङ्दिशि घनी। ताल बसमृदु चरणधरत धरणी झुलसि बिलस हस्तकभेदचलन लोयनअनी। पुलकाआयाद घन कंपभरि थरहरनि परसत प्रस्वेद सुरभेदभारी बनी। अहितसित आरकत धरत जड़ता नवहिंवहिठाढ़े रहतगहतवानकफनी। निपट अवसन्नजब तबहिं छिति धुकिपरत अंगनहिं हलत गत श्वासकी निगमनी। तासमयजगतमें जीवजेति कबसत प्रेमआनंदके होत सबरे धनी। चकत सब पारषद गन्द सुखमें मिलत लगी टकटकी यहसुख मनोहर भनी॥

मूल ॥ सूरकबित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै। उक्तिचोजअनुप्रासवरनअस्थितअतिभारी । बचनप्रीतिनिर्वाहअर्थअद्भुततुकधारी। प्रतिबिंबितदिव्यदृष्टिहृदैहरिलीलाभासी। जन्मकर्मगुणरूपसबैरसनापरकासी। बिमलबुद्धिगुणऔरकीजोयहगुणश्रवणनिधरै।सूरकबित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक॥ किंकवेस्तस्यकाव्येनकिंकांडेनधनुस्मतः।परस्यहृदयेलग्नायन्नघुर्णयतिशिरः २दोहा॥ किधौं सूरको शरलग्यो किधौं सूरकी पीर। किधौंसूरका पदसुन्यो योंशिरधुनत अधीर २ ॥ कबित्त ॥ जासों मनहोत तासों तनमन दीजियत जासों मनभंग तासों कछू न विशेषिये। बोलै तासों बोलि अनबोलै तासों अनबोलिप्रेमरस चाहै तासोंप्रेमरसपेखिये। प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीति रीतिजानियत नातरु अनेक रूपसबही अलेखिये। नर कहा नारीकहा खूबी महाबूबी कहा आपको न चाहै ताहि आपहू न देखिये ३ कहावतऐसेत्यागी दानि।चारिपदारथ दिये सुदामा गुरुके सुतदियेआनि। बिभीषणै निजलंकादीनी प्रेमप्रीतिपहिंचानि। रावणके दशमस्तक छेदे दृढ़गहि शारँगपानि। प्रहलाद की जिन रक्षाकीनी सुरपतिकियोनिधानि। सूरदासपरबहुतनिठुरतानैननहू की आनि ४बचनप्रीति॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी। खोयो गयो नेह न गुनपै प्रीति कोठरीभई पुरानी। यहलैअधर सुधारस सींची कियोपोषबहुलाड़लडानो। बहुरौ किया खेलशिशु को गृह रचना ज्यों चलतिबिनानो।ऐसी हितकीरीति दिखाईपन्नग कांचुरी ज्यों लपटानी। फिरिहू सुरतिकरत नहीं ऐसे त्यागत भँवरलता कुम्हिलानी। बहुरंगीजितजाति तितैसुख एकरंगी दुखदेह दहानी। सूरदास पशुधनी चोरकी खायो चाहैं दानोपानो ५ ॥

मूल ॥ ब्रजबधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत।पौगंडबालकिशोरगोपलीलासबगाई । अचरजकहाइहिबातहुतौयहलौजुसखाई । नयननिनीरप्रबाहरहतरोमांचरैनिदिन । गदगदगिराउदारश्यामशोभाभीजेउतन । शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेसदेत । ब्रजबधूरीति कलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत ७४ श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताबिस्तरी । काशमीरकीछापपायतापनजगमंडन । दृढ़हरिभक्तिकुठारआनधर्मबिटपबिहंडन । मथुरामध्यमलेच्छवदकरिवरबटजीते । काजीअजितअनेकदेखिपरचेभयभीते।बिदितबातसंसारसबसंतसाखिनाहिंनदुरी। श्रीकेशवभटनर मुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी ७५ टीकाश्रीकेशवभट्टकी॥आपकाशमीरसुनीवसतबिश्रामतीरतुरकसमूहद्वारयंत्रइकधारियै। सहजसुभाइकोऊनिकसतआइताकोपकरतधाइताकेसुनतनिहारियै । संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहा अरैवाहीठौरबोलेनीचपटटारियै। क्रोधभरिझारेआयसुवापैपुकारैवेतौदेखिसबैहारेमारेजलबोरिडारियै ३३० ॥

पौगंडबालकिशोर॥ रसामृते॥ कौमारंपंचमाद्दान्तं पौगंडंदशमावधि ॥ आषोडशंचकैशोरं यौवनंस्यात्ततःपरं १ हरिकुठार ॥ दोहा ॥ व्यासबिषयजलबटिरह्यो नीचसंगजलधार॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि कटतनलागेबार २ ॥ वाराहे ॥ अहोमधुपुरीधन्या वैकुंठाच्चगरीयसी ॥ विनाकृष्णप्रसादेनक्षणमेकंनतिष्ठति २ ताकेसुनतनिहारियै ॥ श्लोक ॥ मणिमंत्रमहौषधीनांअचिंतशक्तिः ४ जलबोरिडारियै ॥ कवित्त ॥ गयेसबदौरिजहांकाजीकी जुपौरिअति

कियोतिनसोई अजूकोमियेपुकारहै।औजुकोजरैसोएक आयोहै जुमथुरामेंसंगहै हजारशिष्यतेगकानपारहै। लैकै भारकारे धरकारेमति भांतिकह्यो क्योंरे अधर्मी हिंदूधर्म कियो छ्यारहै। होऊतुमरांडकियो पुरुषारथ भांडजोई हरिसोविमुख ताकोनहीं पारावारहै २ कानीअतिडरेउ हियेपरेउखरभरेउ यहकौमआईअरेउअबकरोकाउपाइ मैं। रचेभूतबैताल मूठि डीठि मायाजाल सुदर्शन कियेख्वा- ल सहजसुभाइमैं। असुरकै तनमें सोअगिनि लगाइदई ह ईकहो दईकहा कहाकियो हाइमैं। येतौहैंबड़ेप्रतापी मैं तौरहौं महापापी अहो मतियापी आवैंपरो भेद पाइ मैं २ आइपाइंपरेउ नीर नयननितेढरेउ बैन कहैमरेउ म- रेउ प्रभुमेरी रक्षा कीजिये। तबस्वामीकह्यो तोहिलैहौंमैं बचाइ पुनिएकहै उपाइ सीख सुनिमेरी लीजिये। फेरिजो अधर्मऐसो करौगे न कर्मआव मेटौसबगर्भसदा शीतलह्वै जीजिये। और जितेवादी हरि विमुख प्रमादी तिन्हैंलीये जीजिये। और जितेवादी हरि विमुख प्रमादी तिन्हैंलीये

मूल ॥ श्रीभटसुभटप्रगट्यौअघटरसरसिकनमनमोद घन। मधुरभावसंमिलितललितलीलासुबलितछबि। नि रखतहरषतहृदैप्रेमबरषतसुकलितकबि। भवनिस्तार नहेतदेतदृढ़भक्तिसबननित। जासुसुयशशशिउदैहरत अतितमभ्रमश्रमचित। आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृषभानु सुताभजन। श्रीभटसुभटप्रगट्योअघटरसरसिकनमन

मोदघन ७६ श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदी- क्षादई। खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै। बिदित बातसंसार संतमुखकीरतिगावै। बैरागिनिकेवृन्दरहत सँगश्यामसनेही। ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितबैदेही। श्रीभटचरणरजपरसिकैसकलसृष्टिजाकोनई। श्रीहरि व्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ७७॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस॥ पद॥ राधिका आजु आनंद में डोलैं। सांवरचंद गोबिंद के रस भरी दूसरी कोकिला मधुरसुरबोलैं। पहर पट नीलतान कनक हीरा वली हायलै आरसी रूप को तौलैं। जै श्री भट आजु नागरि नीकी बनीकृष्णके शीलकी ग्रंथको खोलैं २ संतो- सेव्य हमारे श्री प्रियप्यारे वृन्दाविपिन बिलासी। नंदनँ दन वृषभान नंदिनी चरण अनन्य उपासी। मतप्रणय बस सदा एक रस विविधि निकुंज निवासी। जै श्रीभटयुगुल बंशीबट सेबत मूरति सब सुख रासी २ तौ नंद वृषभान कहैं इनके उपासिक श्री राधाकृष्णके संतहैं ३॥ दोहा॥ साधुसराहैं सोसती सतीजोषिता जानि। रज्जबसाचे सूर को बैरी करै बखान॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी॥ चढ़थावरगावबागदेखिअ- नुरागभयोलयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये।देवीकोस्था नकाहूबकरालैमारोआनिदेखतगिलानिइहांपानी नहींपी जिये। भूखेनिशिभईभक्तितेजमिटिगईनई देहधरिल- ईआइलखिमतिभीजिये। करौजूरसोईकौनकरैकछूऔरै भोईसोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ३३१ करीदेवी शिष्यसुनिनगरकोसटकीयों पटकीलैखाटजाकीबड़ोसिर

दारहै । बढ़ीमुखबोलैंहोंतौभईहरिदासदासीजौनदासहो हुतौपैअभीडारौमारहै। आयेसबभृत्यभयेमानौंतननयेलये गयेदुखपायतापकियेभवपारहै । कोऊदिनरहेनानाभोग सुखलहेएक श्रद्धाकेसुपचआयोपायोभक्तिसारहै ३३२॥

पायोभक्तिसारहै॥ श्लोक॥ अश्वत्थंकाकविष्टायांजन्मो पिउच्यतेबुधैः। वैष्णवानामपिन्हथावै पूज्यएवनसंशयः॥२॥पद॥ जातिभेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो अतिपापी। तातेभलो वधिक पर निंदक गुरुताजप मद रापी। बायस की बिष्टा सों उपजै पीपर नामकहावै। परिकमा दंडवत करै द्विज सब जग पूजन आवै। तुलसी जो घूरपैउपजै दोष न कोई धरई। ता तुलसी के पातफूल दल हरि पूजन को रहई। कूकर मरै गोमती संगम अश्व चक्र हैंजरूही। तिनचक्रन को सब जग बंदै दोष न कोऊ कहिही। ज्यों जल बरषै पुरवीथिन सें गंगामें बहिआवै। सोतिहि परशि महाअप- राधी कलमष सबै नशावै। सेन धना रैदासकबीरा और कितै परवाना। इनको दरशन हीनोहै हरिप्रगट सबै जग जाना। जोग यज्ञ जप तप व्रतसंयम इनमें तो हरि नाहीं। गंगा राम हित नवल युगुलवर बसत भक्त उरमाहीं २॥

मूल॥अज्ञानध्वांतअन्तहिकरनद्वितियदिवाकरअवत रयो।उपदेशेनृपसिंहरहतनितआज्ञाकारी। पक्ववृक्षज्यों नायसंतपोषकउपकारी । बानीभोलारामसुहृदसबहिन परछाया । भक्तचरणरजयांचिविशदराघवगुणगाया । करमचंदकश्यपसदनबहुरिआइमनोंबपुधरयो । अज्ञान ध्वात अंतहिकरनद्वितियदिवाकरअवतरयो ७८ श्रीबिट्ठ लनाथव्रजराजज्योंलाललड़ाइकेसुखलियो । रागभोग नितविविधिरहतपरिचर्याततपर । शय्याभूषणबसनरु

चिररचनाअपनेकर । वहगोकुलवहनँदसदनदीखतको सोहै। प्रगटविभवजहँघोषदेखिसुरपतिमनमोहै। वल्लभ सुतबल्लभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो। श्रीविट्ठलनाथ ब्रजराजज्यों लालल‍ड़ाइकेसुखलियो ७६ ॥ टीका॥ कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयो कर्योऐसोपनशीत दगलापठाइये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवेताते अतिभावैनाथअंगपहिराईये । आयोकोऊकालनरपति तेबिहालकियोभयोईशठ्यालनेकुघरमेंनखाइये । वही ऋतुआईसुधिआई आंखिपानीभरि आईएकबातिदीठि आईवेलिलाइये ३३३ ॥

चरणरजयाचि देवप्रसन्न कियो वरमांगौं वह्वचतुर अध वंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरामें दूध प्यावते देखो ऐसे आत्म हरिज्ञान १ ब्रज राज ज्यों॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेइ फल फलत श्री वल्लभ देव। जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आनि बसे करि गेह। तेये गोपवधू हुतीवन में आवतेई वेद ऋचाभई येह। छीतस्वा- मी गिरिधरन श्रीविट्ठल वेई वेई येपै ईकछु न सँदेह २ भेदियाकी प्रेरणा हईआये इन वे ३ ॥

वेंचिकेबजारयोंरुपैयाएकपायोताकोलायोमोटोथान मात्ररँगलालगाइये। भोज्योंअनुरागपुनिनयनजलधारभी ज्योभीज्योदीनताईधरिराखो औरैआइये। कोऊप्रभुजन आइसहजदिखाईदई भईमनदियोलैभँडारीपकराइये। काहूदासदासीके नकामकोपैजाउलैकेबिनतीहमारीजूगु साईंनसुनाइये ३३४दियोलेभंडारीकरराखेधरिपटवाये निपटसनेहीमाथबोलेअकुलाइके। भयेहेजड़ायेकोऊबे-

गिहीउपायकरैविविधिउठायेअंगवसनसुहाइके। आज्ञा पुनिदईयोंअगीठीबारिदईफेरि बहोभईसुनिरहेअतिही लजाइके। सेवकबुलाइकहीकौनकीकबाइआईसबैसोसु नाईएकवहलीबचाइके ३३५ सुनीनत्रिपुरदासबोल्यो धननाशभयोमोटौएकथानआयोराख्योहैबिछाइकेलावो बेगियाहीक्षणमनकीप्रबीनजानि लायोदुखमानिव्योंति लईसोसिमाइके। अंगपहराईसुखदाईकापैगाईजातिक हीजबबातजाड़ोगयोभरिभाइके। नेहसरसाईलैदिखाई उरआईसबै ऐसीरसिकाईहृदयराखीहैबसाइके ३३६॥

नेहसरसाई॥ दोहा॥ हरिरहीम ऐसीकरी ज्योंकमान शरपूर। खैंचि आपनीओर को डारि दियो अति दूर १ यह कहिके मंदिर के द्वारपै गोविंद कुण्ड कीछचीपैजाय बैठे गुसाईं के टहलुवा प्रसाद लाये सो न लियो तबनाथ जी आपही लाये॥दोहा॥ खैंचिचढ़निटीली ढरनि कहो कौनयहप्रीति॥ आजकालिहमोहनगही बंशदियाकीरी ति॥ कवित्त॥ जबलौंन कोऊ पीरलागतिहै अपने उर तब लौं पराईपीर कैसेपहिंचानि हौं। आजुलौं न जानत हौं लग्योहैनेह काहूसोंजबनेह लागिहैतौहितउन मानिहौं। कहतचतुरकबि मेरेकहिबेकीतौ एकौ न रहेगी तबसमझि जियआनिहैं। जैसेनीकेमोहिंतुम लागतहौप्यारेलाल तैसोनीको तुम्हैंकोऊ लागिहै तौजानिहैं १ तबरहीम पीठि फेरिलई नाथजी थार धरिके अंतरध्यान होतभये तबयहपदगायौ॥पद॥ छबि आवन मोहनलालकी। लाल काछनी काछे करमुरली पीतपिछौरी सालकी। बंक तिलककेसरिको किये द्युतिमानों बिधुबालकी। बिसरत नाहिंसखीमोमनतेचितवनिनयनविशालकी। नीकीहँसनि अधरसधरनिकी छबिछीनीसुमनगुलालकी। जलसोंडारि

दियोपुरइनपर डोलनिमुक्तामालकी ॥ आपमोलबिन मोलनडोलनि बोलनिमदनगोपालकी। यहस्वरूपनिरखै सोइजानै इस रहीमकेहालकी २ कमलदल नैननिकीउन मानि। बिसरतनाहिंसखीमोमनते मंदमंदमुसकानि। यह दशननिद्युतिचपलाहूते महाचपलचमकानि। बसुधाकी बशकरीमधुरता सुधापगीबतरानि। चढ़ीरहैचितउरबि-शालकी मुक्तमालथहरानि। नृत्यसमयपीतांबरहूकी फ-हरफहर फहरानि। अनुदिनश्रीवृंदावनब्रजते आवनआ-वनजानि। छबिरहीमचिततेनटरति है सकलश्यामकीबानि ३ ॥ दोहा ॥ मोहनछबिनैननिबसी परछबिहगनिसुहाइ। भरीसराइ रहीमज्यों पथिकआइफिरिजाइ ४ अंतरदाँव लगीरहै धुवां न प्रगटैसोइ। केजियजानैआपनोकैजाशिर बीतीहोइ ५ तिहि रहीम तनमनदियो कियोहियेमेंभौन। तासोंदुखसुखकहनकी बातरहीअबकौन ६ लोकोकती कोदृष्टांत ७ ॥

मूल ॥ श्रीबिट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोबर्द्धनधरध्याइये। श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोबिंदजुसाथहि। बालकृष्णय शबीरधीरश्रीगोकुलनाथहि। श्रीरघुनाथजुमहाराजश्री यदुनाथहिभजि। श्रीघनश्यामजुपगेप्रभुअनुरागीसुधि सजि। येसातप्रकटविभुभजनजगतारततसयशगाइये। श्रीबिट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोबर्द्धनधरध्याइये ८० गिरि धरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो। श्रीबल्ल भगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर। कबित्तनोपनिर्दूषनाथ सेवामेंनागर। बाँणीबंदितबिदुषसुयशगोपालअलंकृत। ब्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्बसुचित। सानिध्यसदा हरिदासवर्यगौरश्यामदृढ़ब्रतलियो। गिरिधरनरीझिकृ ष्णदासकोनाममांझसाझोदियो ८१ ॥

यदुनाथ॥ सवैया॥ श्रीषदिनेशतपैनिहिवार सुवारहि बारबिहारीकोएवो । बासमेंबैरिनिआरजलाज सुएकहु बारबनैनचितैबो । सोचयहैसजनीरजनीदिन कौनसेअव सरअवसरपैबो । जानतहौंयदुनाथ यहै कबहूंकमहोसनि हीसरिजैबो २॥ पद ॥बातनहीं हौंपतितपावन । मोते कासपरेणानोने बिनरणधूरकहावन॥सतयुगत्रेताद्वापरहू के पतितनकीगतिआपी। हमेंउन्हेंबहुतेअंतरहै हमकलि- युगकेपापी॥ कोजटांकद्वैटांकपसेरा बड़ीबड़ाईसेर। हौं पूरनपतिताईऐसो ल्यौंआननिमेंमेर ॥ हौंदिनमनिख- द्योतआनखल अविद्याकोगुउनागर । गोपदपावनकोन सरबरैं हौंदुर्मतिजलसागर पतितपावनहै बिरदतिहारो सोईकरौपरवान । पाहननावपारकरौनाभाको केहर पकरौकान २॥

टीका॥ प्रेमरससरासिकृष्णदासजूप्रकाशकियोलियोनां थमानिसोप्रमाणजगगाइये । दिल्लीकेबजारमेंजलेबी सोनिहारिनयनभोगलेलगाईलगीबिद्यमानखाइये । रा मसुनिभक्तनकोभयोअनुरागबसिशशिमुखलालजूकोजाइ कैसुनाइये। देखिरिझवाररीझिनिकटबुलाइलयेलईसंग चलेजगलाजकोबहाइये ३३७ नीकेअन्हवाइ पटआभर णपहिराइसुगन्धहूलगाइहरिमंदिरमेंलायेहैं। देखिभईम तवारीकोनीलै अलापचारीकह्यो;लालदेखिबोलीदेखेमोह भयेहैं। नृत्यगानतानभावमुरिमुसुकानिदृगरूपलपटानी नाथनिपटरिझायेहैं । ह्वैकैतदाकारतनछूटेउअंगीकारक रीधरीउरप्रीतिमनसबकेभिजायेहैं ३३८ आयेसूरसाग रसोकहीबड़ेनागरहौकोऊपदगावोमेरीछायानमिलाइये। गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजूप्रभातआनिक

रिकैसुनाइये। परेउशोचभारीगिरिधारीउरधारीबातसुंद रबनाइसेजधरेउयोंलखाइये। आइकेसुनायोसुखपायोप क्षपातलैं बतायोहूमनायोरंगछायोअभूंगाइये ३३६॥

दिल्लीके सेवकनको प्रसाददियो काहूनेतौ लियो कहीअधिकारी भ्रष्टभयो है काहूलयो पै पायोनहींवि- चारो बड़ेनकी क्रियामेंमनहीजै कौनभावसोंभोगलगाइ ये तापैदृष्टांत नारदजीको नृत्यागान॥पद॥ओमनगिरिवर छबिपर अटक्यो। ललितत्रिभंगीअंगनपर चलिगयो तहां हींठटक्यो। सजलश्याम घनबरण लीलह्वै फिरिचित अंत नभटक्यो। कृष्णदासकी प्राणनिछावरि यहतन जगभिर पटक्यो॥२॥ दोहा॥ सखियाऋखियाहाथहै लनराख्यौ ठहराइ। मनहरिमंदिराछबिछक्यो दईनारि छुटकाइ॥२ अभूंलगिगाइये॥पद॥ आवतबनकान्ह गोपबालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलिकावली। भौंहमन्मथचाप वक्रलोचनबाण शीशशोभित मत्तमोरचन्द्रावली। उदित उडराज सुंदर शिरोमणि बदन निरखिफूली नवलयुवति कुमुदावली। अरुण सकुचत अधरबिंबफलउपहंसतकछुक प्रगटहोत कुसुद दशनावली। श्रवण कुंडल तिलकभाल बेसरि नाक कंठकौस्तुभमणि शुभग त्रिवलीवली। रत्न हाटक खचित उरसिपद कनकपांति बीचराजतशुभभ- लकमुक्तावली। वलय कंकणि बाजुबंद आजानुभुजमुद्रिका करतलबिराजत नखावली। कुणितकर मुरलिका अखिल मोहित बिश्वगोपिका जनमन ग्रंथित प्रेमावली। कटि क्षुद्रघंटिका कनक हीरामई नाभ अंबुज बलित इंगार रोमावली। धाइकबकुंक चलत भक्तहितजानि पियगंड मंडल रचितश्रम जलकणावली। पीतकौ शेय प्रधान सुंदर अंग बजत नूपुरगीत भरत सदावली। हृदयकृष्ण दास बलि गिरिधरनलालकी चरणनख चंद्रिका हरत तिमिरावली२॥ यहपदगावत सुनतप्रभु हर्षतहिय सुख

धाइ। छबिनिरखत हरि आपनी मनहींमन मुसिक्याइ॥

कूवामैंईखिसिलदेहछुटिगईनईभईभयोअशंकाकछुऔरैउरआईहै।रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथ दियो दरशाइतनग्वालसुखदाइये । गोवर्द्धनतीरकहीआगेबल बीरगयेश्रीगुसाईंवीरसोंप्रणामयोंजनाइये । धनहुबता योखोदिपायो।बिश्वासआयो हियेसुखछायोशंकएकलैबहाइये ३४०मूल ॥श्रीबर्द्धमानमंगलगँभीरउभैथंभहरिभक्तिके। श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीबहाई । अमल करीसबअवनितापहारकसुखदाई। भक्तनसोंअनुरागदीनसोंपरमदयाकर। भजनयशोदानंदसंतसंघटकेआगर । भीषमभटअंगजउदारअतिकलियुगदातासुगतिके। श्रीबर्द्धमानमंगलगँभीरउभैथंभहरिभक्तिके८२रामरामप्रताप तेखेमगुसाईंखेमकर । रघुनंदनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो।सर्बसुसीतारामऔरुकुछुउरनहिं आन्यो । धनुषबाण सोंप्रीतिस्वामिकेआयुधप्यारे। निकटनिरंतररहतहोतकबहूंनहिंन्यारे।शूरबीरहनुमंतकेसदृशपरमउपासकप्रेमभर। रामरामप्रतापतेखेमगुसाईंखेमकर८३ ॥

माथुर बाराहपुराणमें लिख्योहै सब ब्राह्मणनके मुकुट माथुर सोमथुरियनि के मुकुटमणि बिट्ठलदास ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियावैश्या शूद्रावायदिचेतरः॥ विष्णुभक्तिसमायुक्ताज्ञेयःसर्वोत्तमोत्तमः २ मानदद॥ तृणादपिसुनीचेनतरोरिवसहिष्णुना ॥ अमानिनामानदेन कीर्त्तनीयःसदाहरिः २ गुनहिगुनअंतरधारतो संतनिको सुभाव सूपको सोहैसारही लेहिं असार फटकिडारैंअसंत को सुभाव चालिनीकोसों ३।४।५।६॥

विट्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद।तिलक दाससोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ। भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ।सरलहृदैसंतोषजहांतहँपरउपकारी उत्सवमेंसुतदानकियोकृमदुष्कृतभारी।हरिगोबिंदजयजयगोबिंदगिराहुसदआनंदकृत। विट्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद८४टीका॥ भाईउभैमाथुरसोरानाकेपुरोहितहेलरिमरेआपसमेंजियोएकजामेंहै।ताकोसुतविलसुदाससुखराशिहियेलियेबैसथोरीभयोबड़ोसेवैश्यामेहै। बोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुत क्षिप्रलैकेआवौकही कहोपूजेकामहै। फिरिकैबुलायोकरोजायरणायाहीठौरका हूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामहै ३४१ गयेसंगसाधुनलै बिनयरंगरँगेसबरानाउठिआदरदैनीकेपधरायेहैं। किये जाबिछौनातीनिछातिनकेऊपरलैनाबिगाईआयेप्रेमगिरे नीचेआयेहैं।राजामुखभयोश्वेतदुष्टनकोगारीदेतसंतभरि अंकलेतघरनधिलायेहैं। भूपबहूभेंटकरीदेहवाहीभांतिप रीपाछेसुधिभईदिनातीसरंजगायेहैं ३४२ उठेजबमाप नेजनायसबबातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेबिचारि कै। आयेयों छूटीकरामें गरुड़गोबिंदसेवा करतमगन हियेरहतनिहारिकै । राजाकेजोलोगसुतौ ढूंढ़िकररहे बैठितियामातुआइकरें रुदनपुकारिकै। कियलेउ- पाइरहीकितौ हाहाखाइयेतौ रहेमड़रायतबबसीमनहारिकै ३४३॥

बिनयरंगरँगे॥ कवित्त॥ कविता रसिकतादि गुन सब उर बसे नम्रता सज्जनता न रीझि आप पासमें। बातें

गढ़ि छोभिकहैं पोलिको न पारावार रीझे नचि चारु बनवासी के बिलासमें। इनके जे गुण तिन्हैं उपमानपाई कहुं चहुंदिशि हरिहरिकियो लैप्रकाशमें। काहू न सुहायत जिजायसो भवनवैठे जैसेचांदनीसरसआई पूस मास में २छायेकछू॥ श्लोक॥ रथ्यमन्यस्त्रमन्यस्त्र दुर्लभेदुःख कारिणि परान्नंदुर्लभंलोके देहोयंचपुनःपुनः२॥ दोहा॥ तुरसीकुरसीसोंकबोंचढ़ईहरिकेअंग॥ पीवतहीबैकुण्ठको लियोजातिहै भंग २॥

देख्योजबकष्टतनप्रभुजीस्वपनदियोजावोमधुपुरीऐसे तीनबारभाषिये। आयेजहांजातिपांतिआये कछूऔरेरंगदे ख्योएकखातीसाधुसंगअभिलाषिये। तियारहैगर्बवर्तीस तीमतिशोचरतीखोदतभूमिपाईप्रतिमाधनराखिये। खा तीकोबुलाइकहीलहीयहलेहुतुम उनपांइपरिकह्योरूपसु खचाखिये ३४४ करैसेवापूजाअरुकामनहींदूजाजलिग ईभक्तिमयेशिष्यवहुभाइकै। बड़ोईसमाजहोतमानोंसिंधु सातआयेबिबिधिबधायेगुणीजनउठगाइकै। बफैआईए कनटीरूपगुणयनजटी वहगावै-तानकटीचटपटीसीलगा इकै। दियेपटभूषणलैभूषणमिटतिकहुंचहूंदिशिहेरिपुत्र दियोअकुलाइकै ३४५ रंगीराइमातताकीशिष्यएकराना सुताभयादुखभारीनेकुजलहूनपीजिये। कहिकैपठाईवा सोंचाहोसोईलीजैधनमेरोप्रभुरूपमेरेनयननकोदीजिये। द्रव्यतोनचाहौरीझिचाहो तनमनदियो फेरिकैसमाजकि योबिनतीकोकीजिये। जितेगुणीजनतिन्हैंदियेअनगनदा न पाछेनृत्यकरेउआपदेतसोनलीजिये ३४६॥

भूषणमिटत॥कबित्त।हायिनको अंकुशबनायेपुनिघोरन

कालोहेकी लगाम सुखदखन चबातकी । योगिनको पुरी राज्य रोगिनको पथपुरी जातेज्वरजातहै विषम उरपात की। सांपनकोमंत्र भूतप्रेतनकोयंत्र रचि पानी पढ़िदियेते न व्यथारहै गातकी। अवनीमेंआय विधिरचेहैं उपायऐपै तासों न बसाय जेपचावैं रीझबातकी॥ दोहा ॥ रूपचोच कीबातपुनि औरकटीलीतान। रसिकप्रबीणनके हिये छेदनको येबान २॥

ल्याईएकडोलामेंबैठारिरँगीराइजूकोसुंदरश्रृंगारकही वारतेरीआइये। कियोनृत्यभारीजोबिभूतिसोतोवारीलि येभरीअंकवारीभेटकियेढ्ढारजाइये । मोहननिछावरिमेंभ योमोहिलेहुमतिलियोउनशिष्यतनतज्योकहांपाइये । क ह्योजूचरित्रबड़ेरसिकबिचित्रनिको जोपैलालमित्रकियो चाहौहियलाइये३४७ ॥मूल॥ हरिरामहठीलेभजनबल रानाकोउत्तरदियो।उग्रतेजउदारसुघरसुथराईसींवा। प्रे मपुंजरसराशिसदागदगदसुरग्रीवा । भक्तनकोअपराध करैताकोफलगायो । हिरण्यकश्यपप्रहलादप्रगटदृष्टांत दिखायो । सरुकुटबकाजगतमेंराजसभानिधरकहियो। हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तरदियो ८५ टीका॥ रानासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरें ऐसोसोसन्यासीभू मिसंतकीछिनाईहै । जाइकेपुकार्योसाधुझिरकिबिडा र्योपर्योबिमुखकेबशाबातसांचीलैझुठाईहै। आयेहरिरा मजूपैसबहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलौआगेआवोभा ईहै । गयेबैठेआवोजनमनमेंनलायोतब नृपसमझायोझा र्योफेरिभूदिवाईहै ३४८॥

रानासोंसनेह ॥ दोहा ॥ बिषय बिषम जे भरिरहे

राजामद रँग भोइ । तिनके द्वारे रहतजे बिषयी जानो सोइ २ भाईहैंहमारो दनिपाल करी के नातेमाने हमारो तौनाता कंठीकोहै ॥ अस्माकंवदरीचक्रो युष्माकंवदरी तरु: २ अथवा भाईहै साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजो गुणन्दपतिकोरहेहैं नहींतौ महाअपराधलगैहै तौ तिहारो काम न होइ तौकाहेकोरहैंगे ॥ दोहा ॥ धनुषबाण धारे रहैंअग्रदासकेकाज।भीरपरैहरिभक्तपैसावधानतवराज३ ॥

मूल ॥ कमलाकरभटजगतमेंतत्ववादरोपींध्वजा । पंडितकलाप्रवीणअधिकआदरदेआरज । संप्रदायशिरछत्र द्वितीयमनोंमध्वाचारज । जेतिकहरिअवतारसबैपूरणकरिजाने । परिपाटीध्वजविजैसदृशभागवतबखाने । श्रुतिंस्मृतिसंमतपुराणतप्तमुद्राधारीभुजा । कमलाकरभटजगतमेंतत्ववादरोपीध्वजा ८६ ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो । गोप्यस्थलमथुरामंडलजिसेबाराहबखाने । तेकियेनारायणप्रकटेप्रसिद्धपृथ्वीमेंजाने । भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन । परमरसज्ञअनन्यकृष्णलीलाकोभाजन । ज्ञानस्मारतकपक्षकोनाहिंनकोउखंडनवियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो ८७ टीका ॥ भट्टश्रीनारायणजूभयेब्रजपरायणजायताईग्रामतहांब्रतकरिध्यायेहैं । बोलिकैसुनायेइहांअमकोसरूपहैजू लीलाकूडधामश्यामप्रगटदिखायेहैं । ठौरठौररासकेबिलासलैप्रकाशकियेजियेयोंरसिकजनकोटिसुखपायेहैं । मथुरातेकहीचलौबैनीपूछेबैनीकहोऊंचेगावआइखोदसोतलैदिखायेहैं ३४६ ॥

ब्रजभूमि ॥ कबित्त ॥ ब्रजनामब्यापक अखंडप्रेमब्रह्मजैसे

सच्चितआनंद मायाविगुणते न्यारोहै । जाकेबनउपबन ग्रामनदी परबत हरिरूपरचे हरिखेलेखिलख्यारोहै । र-त्नमयभूमि अरु अमृतमय जल ताको मारतसुगंधनिसों भरोहरियारो है । ब्रह्मा शिव नारद मुनींद्रकहैं वेद चारो खेदमिटिजाइ जाकेसुमिरेउचारोहै २ ॥ दोहा ॥ ब्रजवृन्दाबन अवटरस राधाकृष्णस्वरूप। नामलेत पातक कटैं ज्योंहरिनाम अनूप २ ज्ञानकथारत सोज्ञान अद्वैत वेदांतसोंसुखीरहतहै ३ ॥

मूल॥श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये। नृत्यगानगुनिनिपुणरासमेंरसबरषावत। अबलीलाललितादिबलितिदंपतिहिरिझावत। अतिउदारनिस्तारसुयश ब्रजमण्डलराजत। महामहोत्सवकरतबहुतसबहीसुखसाजत। श्रीनारायणभट्टप्रभुपरमप्रीतिरसबशकिये।श्रीब्रजबल्लभबल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये ८८मूल॥ संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो । गौड़देशबंगालहुतेसबहीअधिकारी। हयगयभवनभँडारबिभवभूभुजअसुहारी । यहसुखअनित्यबिचारबासवृन्दाबनकीनो । यथालाभसंतोषकुंजकरबामनदीनो । ब्रजभूमिरहस्यराधाकृष्णभक्ततोषउद्धारकियो । संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो ८९ ॥

संसारस्वाद॥भागवते॥ जह्नौयुवैवमलवदुत्तमश्लोकलालसा॥भर्तृहरीशतके ॥ यांचिंतयामिसततंमयिसाविरक्तासाप्यन्यमिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः । अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्याधिक्तांचतंचमदनं चइमांचमांच २॥कबित्त॥ जितेमणिमाणिकहैं जारेमणिमाणिकहैं धरामेंधराधरही मिलाइबी । देहदेहदेहफेर पाइहैन ऐसी देह कौनजानै

कौनदेह कौनयोनिजाइबी। भूखएक राखैमति राखैभूख भूषणकी भूषणको भूषणते भूषणनपाइबी। गगनके नगमगन गगननदेहघाते नगन चलेंगेसाथ नगन चलाइबी। भुवन अनुहारि बादशाहीकी उनहारि तापैदृष्टांत गुलामको अनित्यबिचार॥श्लोक॥धनं हि पुरुषो लोके पुरुषधनमेवच। अवश्यमेकं त्यजति तस्मात्किं धनतस्त्वया ४॥ विनापरमे-श्वर निबोह काहूका नहीं५॥

टीका॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजू वेगईयो निवरतुकपांचलागीआंचहै। रहीएकमांझधरयौकोटिक कवित्तअर्थयाहीठौरलैदिखायोकविताकोसांचहै। राधा कृष्णरसकीआचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटछपै बानीनाथहै। बड़ेअनुरागीयेतोकहिबोबड़ाईकहा अहो जिनकृपाहष्टप्रेमपोथीबांचहै ३५० वृंदाबनब्रजभूमि जानतनकोऊप्राय दईदरशाईजैसीशुकमुखगाईहै। रीति हूउपासनाकीभागवतअनुसारलियो रससारसोरसिक सुखदाईहै। आज्ञाप्रभुपाइपुनिगोपेश्वरलगेआई कियेग्रंथ भाइभक्तिभांतिसबपाईहै। एकएकबातमेंसमातमनबुद्धिज ब पुलकितगातदृगझरीसीलगाईहै ३५१ रहैनंदगांवरू पआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखीरकीलगाइये। नेकुमनआइसुखदाईप्रियालाड़िलीतू मानोकोऊबालकी सुसौंजसबलाइये। करिरसोईसोईलैप्रसादपायोभायोअ-मलसोंआयोचढ़िपूछीसोजनाइये। फेरिजिनऐसीकरौयही दृढ़हियेधरौढरोनिजचालिकहिआंखेंभरिआइये ३५२॥

सांचहै॥दोहा॥ थोड़ेअक्षररसमहितकहैंसुनैरससार। ताहिमनोहरनानियो रसिकचतुरनिरधार॥ कवित्त॥

भक्तरसरूपराधाकृष्णरसरूपपद रचनाकेरूपयातेरूपनाम भाषिये। त्यागरूपभागरूपसेवासुखसाजरूप रूपहीकी भावनाश्रौरूपसुखचाखिये। कृपारूपभावरूपरसिकप्रभाव रूप गावतजातरूपलखिमनअभिलाषिये। महाप्रभुकृष्ण चैतन्यजूकेहृदयरूपश्रीगुसाईंरूपसदानयननिमेंराखिये२ शुकमुखसों रज यमुनागाई रत्नादिकनगाये ३॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासब अतिअकुलानप्राणमुरछासीआईहै। बड़ेश्रापधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधि बुधि मेंनश्रावैऐसीबातलैदिखाईहै। श्रीगुसाईंकर्णपूरिपाछे आइदेखेआछे नेकुढिगभयेश्वासलाग्योतबपाईहै। मानों आगआँचलागीऐसोतनचिन्हभयो नयोयहप्रेमरीतिकापै जातिगाईहै ३५३ श्रीगोबिंदचंदआइनिशिकोसुपनदियो दियोकहिभेदसबजासोंपहिचानिये। रहोंमैंखरिकमांझ खोखैनिशिभोरसांझ सींचैदूधधारगाईजाइदेखिजानिये। प्रगटलैकियोरूपअतिहीअनूपछबि कबिकैसेकहैंथकिरहे लखिमानिये। कहांलौंबखानोंभरेसागरनगागरमें नागर रसिकहियेनिशिदिनआनिये ३५४॥

ऐसीबात॥दोहा॥ हृदयसरोवरछलछलहिदंतगयंद झकोर। महासमुद्रछिपरैंजब पावतओरनछोर२॥कवित्त॥ पावकप्रचंडहूकेपुंजतेअधिकताते वज्रसोंबिचारौकहाता कीसमतूलहै। कोटिककटककीमुकुटताकेआगेकहा महा दुखदारुणकेडरहूकोमूलहै। जाकेडरमीचहूनश्रावैपान लेतश्रौर सोईरैनिदिनमोहीसरकोशूलहै।मरयोहूनजाय कितौजियोहाइहाइयह नेहकिधौंबैरीदैवताहीमतिभूल है२ कौनेकह्यौबधिरे अवधिकेकरैयालागि येरेबिनकैहैं ऐसोकाम करियतुहै। जासोंभजैघूटियेन डरेहूअहूंटियेजू

टूटिवैपतंगज्यौंपुकारेपरियतुहै। नंदनवनकेमौंऔरगोकुल
कचंद कौसौंहरिहरिहाइहाइकरैमरियतुहै। कहाकहि
कासौं तोसौं बावरे विरंचि ऐसो पावककों नामकहूंमेल
धरियतुहै ॥

रहैंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनदिवसतीनि
दूधलैकैप्यारिये। सांवरोकिशोरआपपूछैकिहिओररही
कहैंचारिभाईपितारीतिहूउचारिये। गयेग्रामबूझिघर
हरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनयनभरिडारिये। अब
कैजोआवैफेरिजाननहिंपावैशीशलालपागभावैनिशिदिन
उरधारिये ३५५ कहीब्यालीरूपबेनीनीरखिस्वरूपन-
पन जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये। राधासरतीर
द्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफानिगतिमतिवारिये।
आयेयोंअनुजपासफिरेआसपासदेखि भयोअतित्रासगहे
पांवउरधारिये। चरितअपारउभैभाईहितसारपगे जगे
जगमाहिंमतिमनमेंउचारिये ३५६ ॥

श्रीशलालपाग ॥ सवैया ॥ बरषाउघरैंऋतुसावनकी
निकस्यौसखछैलमहाछलडारै। फूलअनारकेरंगरंगीपगि
याखिरकीनवनायसंवारै॥ तादिनतेंरंगऔरकछैहोसखी
सुनश्यामासुनेझिझकारै। झुकेदृगवाललखेतवलाल सुभाल
पैलालहीपागनिहारै १ ॥ ब्यालीरूपदेखतसफलफानि ॥
कवित्त ॥ पीतपटमाकतही दीठिडसिलेतीफिरि फेलिके
विरहविष रोमरोमछावतो। होतौअबऐसोहाल केतेब्रज
बासिनको ऐसोकोऊगारुड़ कहांतेंढूंढ़िलावतो। ईश्वर
दुहाईजोपैहोतोऐसीनागिनतो कालीकोनथैयाकान्ह
काहूकोकहावतो। मुरिमुसकानिमंत्रजानतिनराधेजीतो
बेनीकिडसनिव्रजवसननपावतो १ बेनीब्यालांगनाफणीर२॥

मूल ॥ श्रीहरिबंशगोसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोई जानिहै ॥ श्रीराधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढ़उपासी। कुंजकेलिदंपतितहांकीकिरतखवासी ॥ सर्वसुमहाप्रसाद प्रसिद्धताकेअधिकारी। विधिनिषेधनहिंदास अनन्यउत कटव्रतधारी। व्याससुवनपथअनुसरैसोईभलैपहिंचानि है।श्रीहरिबंशगुसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै ९१॥

हरिबंशगुसाईं ॥ पद ॥ बंदौंराधिकापदपदम। परम कोमलशुभगशीतल कृपायुतसुखकदम ॥ चरणचिंततअमल उरसिज जगतसबहीछदम। भालपरअक्षरअनयाससोहै होतपरसतरदम ॥ कृष्णअलंकृतस्वहस्तपूजन निगमनूपुर रदम। रसिकजनजीवनसमूली अग्रसरबसुसदम ॥ रीति सुकृत॥ कवित्त ॥ जाकेहितहेतधनधामतजिदेतपुनि बन वासलेतमुनिक्लेशनकरतहैं। तारीलैलगावैंदेहसुधिबिस- रावैंतऊ उरमेंनआवैतवदुखमेंजरतहैं।बहुतउपायकरैंमरि- बेतेनाहिंडरैंगिरिहूतेगिरैं नदीमाहिंनपरतहैं। ऐसेनंद नंदनमहावरसुजाकेदेततांकोव्यासनंदनजूध्यानहीधरतहैं। सुधानिधौ ॥यस्याकदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्य पवनेनकृतार्थमानी।योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपितस्या- नमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि २ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ राशब्दंकुर्वतेरा धोददासिभक्तिमुत्तमां। धाशब्दंकुर्वतेपश्चात्यामिश्रवन लोभितः ३ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुंवरिचरण अंकित धरणि देखतजिहि जिहिठौर। प्रियाचरण रज- जानिकै लुटत रसिक शिरमौर ५ जिहिउर सरराधा कमल बसौलसौ बहुभाय। मोहनभौंरारैनिदिनरहै तहां मड़रायइचौपाई॥जाकेहियेसरहितजलनाहीं॥ राधापद कमलतानमाहीं। चरण कमल उदै होइ जौलौं। मोहन भवँरन आवै तौलौं २ ॥ कवित्त॥ब्रह्ममें ढूढ़ौ पुराणमें ढूं- ढ़ौ वेदरचापढ़िचौगुने चाइन। जान्यों नहीं कबहूं वह

कैसो है कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन। हेरत हेरत हार पर्‌यो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन। देखो कहां दुर्‌यो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाइन २ कहा जानौं कौने बीचन देखो उन प्राणप्यारी तादिन ते मिलिबे के यतन करत हैं। पानीपान भोजन भुलानो भवन सोजनस-निदंक बनाइ कनधीरज धरत हैं। दैगई महावर तिहारे तरवानिमांझ ताके करपल्लवकी पौरै पकरत हैं। नयननसों लाइ उरलाइ कहे हाइहाइ बारबार नाइनके पाइन प-रत हैं ३॥ पद॥ भजमन राधिकाके चरण। सुभग शीतल परम कोमल कमल कैसे बरण। क्वणितनूपुरशब्द उचरत विरहसागरतरण। ललिताहिपरमानँदवलिवसियाभजा कीशरण ४ राधेजूके चरणपलोटतमोहन। नीलकमलकेदलन लपेटे अरुण कमल दलसोहन। कबहुंकलैलै नयनन लावत अखिधावत ज्योंगोहन। जैश्रीभट्टकुवीलौराधेहोतजगतेछो हनपू राधासुधानिधे॥ योब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरा लक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य॥ सद्योवशीकरणचूर्णमनंत शक्तिंतंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ३ आगमे॥ ब्रह्मानंदर सादनंत गुणतोरम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वल प्रचमधुरःश्रीगोकुलेन्द्रोरसः॥ तस्मानंतचमत्कृति प्रतिसुहः सद्वल्लवीनांपरः श्रीराधापदपद्ममेवपरमंसर्वस्यभूतंममशद शमे॥ नेमंविरंच्योनभवोनश्रीरप्यंगसंश्रया॥ प्रसादंलेभिरे गोपीयत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ८ ब्रह्माडे॥ श्रुणुगुह्यतमंतात नारायणमुखात्श्रुतं॥ सर्वेश्वपूजितादेवीराधावृंदावनेवने२ माधुर्येमधुराराधामहत्वेराधिकागुरुः। सौंदर्यैसुंदरीरा धाराधैवाराध्यतेमया॥ प्रधानकोअर्थ॥ कवित्त॥ भूपतिके संपतिसों भरे हैं विविधि कोषदीनी तहांछापकहौ रंक पालै कैसे है। बिनारीझि रावरी निहारि सकै राजूकौन पांगुलो सुमेरु चढ़िसकै नहींजैसे है। राजाहूकी दई एमै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिमेंप्रमाण बात कहियेजू ऐसे हैं। राधिका चरण रतिपावै हितरूपाही सों नाभाजो प्रधान

तादिखाईयह ऐसेहैं ३ हठउपासीसुखानिधौ॥धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयजां किंतद्वृथा वार्त्तया सैकांतिकहरिभक्तियोगपदवी त्वारोपितामूर्द्धनि याद्वृंदावनसीम्निकाचनघना श्चर्य्यं किशोरीमणि स्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचित्तेनमेरोचते ४ करतखवासी॥ तांबूलंक्वचिदर्पयामिचरणौसंवाहयामि क्वचितमालाद्यैःपरमंडयेक्वचिदहोसंवीजयामि क्वचित्॥कर्पूरादिसुवासितंक्वचिपुनःसुखादुरंभोमृतं यायाम्येवगृहेक्वेदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ५॥ कवित्त॥ जहां नव नागरी रसिक नागर दोऊप्रेमसोंबिबश ह्वैकरतहांसी। कुलस कुलसात लपटातातन सुखिजात परस्पपरबात रस की बिलासी। इतैअनखातउतबानापगपरनिकीहै चरणकी छबि हियेहरि प्रकासी। वहां हगसैनकी बात समझान हेत हितभरी खरी हरिवंशदासीं६परस्पर बात॥दोहा॥ बतरस लालच लालकी मुरली लई लुकाइ। सौंहकरै भौंहन हसै देनकहै नटजाइ ७ सर्वसुमहाप्रसाद॥ सवैया॥ काहूलियोजपकाहू लियो तप काहू महाव्रतसाधिकियोहै। काहूलियोगुणकाहूलियो धनकाहू महाउनमाद हियोहै। रंचक चारु चकोरनि दंपति संपति प्रेमपियूष पियोहै। राधिकावल्लभलालकेयारको श्रीहरिवंशप्रसाद लियोहै८॥कवित्त॥आदरोप्रसादऔनिरादरी जगत रीतिदूहहीकी मिष्ट बात सबहीमन भाईहै। सुहृयजिमाये गौरश्याम रस रीति प्रीति अथौ भयोगुणातीतनेम कौ भलाई है। पर्म धर्म बरण्यो चरणोदक प्रसाद सुख सर्वसु सो मान्यो भक्ति बेलिही बढ़ाई है। शुद्ध रस मारग चलायो लोक शंकनाहिं युगुल उच्छिष्ट की अधिकारता यों पाई है २ आदिपुराणे॥ एकादशीसहस्राणि द्वादशीनांशतानिच॥ कर्णिकायांप्रसादस्य कलांनार्हंतिषोड़शीं ३ गरुडपुराणे॥ आकंठभक्षितंनित्यं पुनातिसकलांहसः॥ सर्वरोगोपशमनंपुत्रपौत्रादिवर्द्धनं ४ विधि निषेध॥ स्मर्तव्योसततंविष्णु विस्मर्त्तव्योनजातुचित्॥ सर्वेविधिनि

बेधास्युरितयोरेवकिंकराः ५ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हितहरि वंश बिन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभान नंदनी सों प्रीति करिये। कौन सोंहै धर्म जासों कर्मनिको भर्मजाय सुत वित्त राज पाय कैसे ध्यान धरिये। रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकोन कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये। जोपै नंदनंदन को चहै जग बंदनको तोपै व्यास नंदन को नाम उच्चरिये ६ ॥ दोहा ॥ रसना श्री हरिबंश भज जो चाहत बिश्राम ॥ जिहि रस सबब्रज सुन्दरी छाड़िदिये सुख धाम ७ जयजय श्री हरि बंश सहहंसनि लीलारति। जयजय श्रीहरिवंश भक्ति में जाकी दृढ़ म-ति ॥ जयजय श्रीहरि बंश रटन श्री राधा राधा। जय जय श्री हरिबंश सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ व्यास आश हरिबंशकी सु जयजय श्रीहरिबंश ॥ कवित्त ॥ तूही हरि बंशी हरि करसों प्रसंशी है राधा गुण गानहेत अधर पै वसना। नईनई तानन से कानन में पैठि पैठि दंपति के आनन में तेरी ये बिलसना। प्यारेके हिये लागि प्यारी के अनुराग उत और प्रेम दूत रूपह्वै बरसना। हिय में हित भई चित्त में चोपनई नयननि में नेह नई रस रस रसना ८ ॥

टीका श्रीहरिबंशीगुसाईं ॥हितजूकीरीतिकोईलाखन मेंएकजानेंसधाईप्रधानमानैंपाछेकृष्णध्याइये। निकटबि-कटभावहोतनसुभावऐसोगुणहीकोकृपादृष्टिनेकु क्योंहूं-पाइये । बिधिऔनिषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजियेनिज दासनिशिदिनवहैगाइये । सुखदचरित्ररसरसिक बिचि त्रनकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ३५७ आयेघर त्यागरागबढ्योपियाप्रीतमसों बिप्रबड़भागहरिआज्ञादई जानिये। तेरीउभैसुताब्याहिदेवोलेबोनाममेरोउनकोजो

बंशसोप्रसंशजगमानिये। ताहीद्वारसेवाबिस्तारनिजभ-क्तनिकीआगतनकीगतिसोप्रसिद्धपहिचानिये। मानिप्रियबातगृहगयोसुखलह्योतब कह्योकैसेजातयहमनमनआनिये३५८राधिकाबल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासोप्रकाशऔबिलासकुंजधामको। सोइबिस्तारसुखसारदृगरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षबामको। निशिदिनगानरससाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्यामाश्यामको। गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैंलहैंमनमोहजैसेऔरनहींनामको ३५६॥

मानिप्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस बिधि करि देखौ सबकोय ॥ पीवकबैसो कीजिये आपुनहीं बस होय २ ॥ पद ॥ प्रीतमप्रीति सो बस होइ। मंत्र यंत्र अरु टोनाटामन काम न आवत कोइ। जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ। तौ काहेको और ठौर वह नात प्रीतिपति खोइ। हित के गुणमें प्रीतमकोमन मानिकली जैखोइ। सुर बिहसति राखै अपने मन तन मजूष में गोइ। गवौ भार गरब को सजनी अबतो तू जिहि ठौरहिजोइ। उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु बोइ।

मूल ॥ आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी। युगुलनामसोंनेमजपतनितकुंजबिहारी। अवलोकतरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी। गानकलागंधर्बश्यामश्यामाकोतोषे। उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे। नृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी। आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी ६२॥

रसिकछाप हरिदासनी रसिकहरिदास ॥दोहा॥ श्री

स्वामीहरिदासको यशचैखोक बिस्तार। आपपियोप्यारोरसिक नवलनिकुंज बिहार ॥ कबित्त ॥ रतनसुदेशमई अवनिनिकुंजधाम अति अभिराम पियप्यारी केलिरासहै। रमत रमतदोऊ सुमति सुरतिसेज अमित कटाक्षनकेहाव भाव हासहै। भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगान रटैं वाते लोक लोकनमें सुयश सुवासहै। सखी रङ्गनिसपानकरै रसिक शिरोमणिश्रीस्वामी हरिदासहै २ ॥ पद ॥ रसिक अनन्यनको पंथबांको। जापंथको पंथलेत महामुनिसूरति नयनगहे नितनाको। जापंथको पछतातहै वेदलहै नहिंभेद रहैजकजाको। सोपंथ श्रीहरिदासलहेउरसरीतिकीप्रीति चलायनिशाको। निशान बजावत गावत गोबिंद रसिक अनन्यनको पथबांको ३ ॥ युगुलनामसोंनेम ॥ दोहा ॥ तुलसी जनककुमारिबिन जैसेवतरघुबीर। जैसे चंदारैनि बिन अवै न अमृतसीर ४ ॥ कबित्त ॥ वहैहैशरदचंददिन में उदोत देख्यो ज्योतिकोन लेशलागै थारीकै अकारहै। रैनिरस हैनसांभ चैनको समूहहोत सोतज्योप्रकाशरास ताको योंबिचारहै। शब्दसुधाकर औपाच निशिबासरहै तासरनकोजजामें सारनिरधारहै। रसिकप्रवीणद्दचकोर रजनीशहीसों युगुल स्वरूपगुण नामही अधारहै ५ ॥ संमोहनीतंत्रे ॥ गौरतेजोविनायस्तु श्यामतेजोसमर्चयेत्। जपेद्वाध्यायतेवापिसभवेत्पातकीशिवे २ ॥सखीसुख ॥ कबित्त ॥ विपिनबिहार फूलफूलेहैंअपारलाल लाड़िली निहारमन आईयोंश्रृंगारिये। बीनिबीनिफूल मृदुअंगकीसुसमलैलै भूषणरचतसीरिनीकैकै सँवारिये। सन्मुखहीमोहनहियेमें लख्योप्रतिबिंब सोहन सनेह मोहभरी अंकुवारिये। यहै जानि श्यामा पीठिदई अतिबामा येहोजीती चतुराईयों भुराइ परवारिये ३ ॥ पद ॥ होड़परीमोरहिं अरुश्यामहिं। आवौचलो सखि सबकीशतिलीजे रंगभौंकामहिं। हमारे तिहारे मध्यस्थराधे औरजाहि बदौ पूछदेख्यो लगदै कहाहै यामहिं। श्रीहरिदासके स्वामी श्यामाको

चौपरिकोसो खेलएकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुरगुणदीजै
री जाकेनामहिं ४ पियको नचावन सिखवतीप्यारी।
वृन्दावनमें रासरच्योहै शरद रैनिउजियारी। रूपभरी
गुणहाथ छरीलिये डरपत कुंजविहारी। व्यासस्वामिनी
निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ५ महाराज
कौन याको ख्यालकरैहै टपदैके पूछे द्वैबेर भोरीकह्यो
तौश्रीलालजीको अंकमें भरिलयो कहौतोहमाम को ख्याल
करैहैजैसो चौपरि की तरह एकबेर कह्योहोय फेरिपकै
सोईचौपरिको खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तब
प्रियाजीने रीझिकै रसिकछापदई ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चहुं
ओर बैठेभोर दाबिबारो आरतते जोत्योमनमथ राख्यो
मनहिं दुहाईमें। कस्तूरी अरगजाकोतिलक बिराजैभाल
भागभरे यौवनकी जगमग जाईमें। अलक चमर घनश्याम
बाजे नूपुरादि हसनि अवलोकनि सो बटति बधाईमें।
थिरचरऐसोराज देखो देखौसखी आज दुहूनिरजाईपा
ई एकही रजाईमें २ सवैया॥ जैसे अनखानि सतरोनिल-
पटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग बरषे। जैसेकि
रजान अति दीनता निदान पान आपने प्रमाण छहिमि
खिपानकरषे। कटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ
प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे। ऐसी कुंजकेलि रस
बेलि सुखझेलिरही बिना हरिदास दासी ताहिकोन
निरषे २ पद॥प्यारीतेरी पुतरी काजरहूते कारी। मानों
द्वै भवँर उड़ेहैं बराबर। चंपकीडारबैठे कुंदअलि लागी है
लैबअराअर। जब आइ घेरत कटक कामको तबजियहोत
दरादर। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी दोउ
मिल लरत भराभर। अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरि
दास। श्रीकुंजबिहारीसेये बिनछिननकरीकाहूकीआस।
सेवा सावधान करिजाने सुघर गावतदिन रसरास। देह
विदेह भये जीवतिही बिसरे बिश्वविलास। श्रीवृन्दावन
रजतनमन भजतजि लोकवेदकी आस।प्रीति रीति कीनी

सबहिनसोंकिये नखासखवास। यहअपनोव्रत औरनि-बाह्यो नबलगकंठ उसास। सुरपतिभूपति कंचिनकामन तिनकेभावैघास। अबकेरसिक व्यासहम ऐसे जगतकरत उपहास ३ ऐसोह्वैव सदासर्बदा जोरहैबोलत नितमोर नि। नीकैबादर नीकेघनकचहूंदिशि नीकोह्वंदावनआछी नीकी मेघनिकी घोरनि। आछीनीकी भूमिहरीहरी आछीनीकीरगनिकामकोरोरनि। श्रीहरिदासकेस्वामी श्यामाको मिलगावत बन्योरागमलार किशोरकिशो-रनि ४ ॥

टीका॥ स्वामीहरिदासरसराशिकोबखानिसकैरसिक ताछापजोईजायमध्यपाइये। लायोकोऊचोवावाकोअतिम नभोवावामें डारयौलैपुलिनयहैखोवा हियेआइये। जानि कैसुजानकहीलैदिखावोलालप्यारे नेसुकुउघारेपटसुगंध उड़ाइये। पारसपषानकरिजलडरवाइदियो कियोतबशि ष्यऐसेनानाबिधिपाइये ३६० मूल ॥ उत्कर्षतिलकअरु दामकोभक्तइष्टअतिव्यासको। काहूकेआराध्यमच्छक च्छशूकरनरहरि। बावनफरसाधरनसेतुबंधनशैलकर। एकतकेंयहरीतिनेमनवधासोंल्याये। सुकलसमोखनसु वनअच्युतगोत्रीजुलड़ाये॥ नौगुनतौरनूपुरगुह्योमहत सभामधिरासको। उत्कर्षतिलकअरुदासकोभक्तइष्टअति व्यासको ६३॥

लायौ कोऊ चोवा ॥ दोहा॥ कै सुगंध सोंधौ सरस कैउत्तम कलगान॥ इनहीके करमीचहै मेरीमेरेजान २ दुखाइदियौ॥ कुंडलिया॥ रानीरानसिंगारपटधोबीको धुवरोट। धोबीकोधुवरोट कियोदुर्लभमानुषतन। सुलभ त्रिषैसबजोर ब्रह्म आधीनजगतजन॥ कौड़ीकामिनिकुटुम्ब

तिनहिंहितहीराहारयौ । ज्योंबनिजारोबैल थक्यौतब मगमेंडारयौ । नेगनलाग्यौरामके कगरबड़ोयहखोट। रानीराजसिंगारपट धोबीकोधुवरोट॥ गाडरआनीऊन को बांधीचरैकपास । बांधीचरैकपास विमुखहरिलोंन हरामी। प्रभुप्रतापकोदेह कुछित सुखसोईकामी॥ नठर यातनाअधिक भजनबदिबाहरआया । पवनलगतसंसार कृतमीनाथभुलायो।चाकरीचौरहाजिरकुंवरअगरदूतेपर आस। गाडरआनीऊनकोबांधीचरैकपास३॥ उत्कर्षतिल कअरु॥पद॥ मेरेभक्तहंदेवादेऊ। भक्तनिजानौभक्तनिसानौ निजजनमोजिवतेऊ।मातपिताश्रीभक्तभाईयाभक्तदमादस जनवसनेऊ। सुत संपति परमेश्वरमेरे हरिजनजातिजनेऊ भवसागरको बेरोभक्तहै हरिखेवटकुरखेऊ। बूड़तबड़तउ बारेभक्तनलियेउबारिजरेऊ। तिनकीमहिमा व्यासकपि-लकहि हारे सबपरवेऊ। व्यासदासकी प्राणजिवन घन हरिपरिवारबड़ेऊ। रासकेलि॥ कबित्त॥ शरदउज्यारी फुलवारीमें बिहारीप्यारी श्रीगोविंद तैसीबाणी मंडली सखीनकी। प्रेमको प्रकाश रासरसको विलासतामें राग रागनीहै सुरसात ग्राम तीनकी। उरपति रपकेसंगीतनि के भेदभाव नीकी धुनिनूपुर किंकिणी चुरीनकी। लीन भईमुरली मृदंगकी नवीनगति बीनकीबजनि औबजावन प्रवीनकी २॥ उचकिउचकि पगधरत धरणिपर झिझकि झिझकि करकरन उचतहैं। ललक ललक गतिलेत सुवह पुनि झपक झपक दृगपलन सुचतहैं। ठुमुक ठुमुक पगबजत घुंघुरुधुनि मधुर मधुर सुरतानन खचत हैं। मुलक मुलक मनहरत सकलजन ब्रजराज व्रजराज रासमेंनचतहैं ३॥ ऐसेरासमें जनेऊ तोरिकै श्रीप्रियाजूको नूपर गुह्यो तब यहपद गायो॥पद॥ रसिकअनन्य हमारीजाति। कुलदेवी राधाबरसानो खेरो ब्रजबासिन की पांति। गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरि मंदिर भाल। हरिगुण गानवेदधुनि सुनियत मंजुपखावज कुशकरताल। शाखा

यमुना हरिलीला षटकर्म प्रसाद प्राणधनरास। सेवा बिधि निषेध सतसंमतग्रसत सदा वृन्दावनबास। स्मृतिभागवत कृष्णध्यान गायत्री जापबंशीबटधि निजसान कल्पतरु व्यास अधीशनदेत सराय॥

टीका॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहियेपागिहोइन्यारोतासोंखीजिये। राजालैनआयोऐपैजाइबोनभायोश्रीकिशोरअरुझायोमनसेवामतिभीजिये। चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिलजाइ लेहुजूबँधायनहींआपबांधिलीजिये। गयेउठिकुंजसुधिआईसुखपुंजआयेदेख्योबंध्योमंजुकहिकैसेमोपैरीझिये ३६१ संतसुखदेनबैठेसंगहीप्रसादलेतपरोसततियासबभाँतिनप्रबीनहैं। दूधबरताइलैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोखतनवीनहैं। सेवासोंछुड़ायदईअतिअनसनीभईगईभूखबीतेदिनतीनितनक्षीनहैं। सबसमुझावैंतबदंडकोमनावैंअंगआभरणबेचिसाधजैंबैयोंअधीनहैं ३६२ सुताकोबिवाहभयोबड़ उत्साहकियोनानायकबानसबनीकेबनिआयेहैं। भक्ननिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदलगायेहैं। आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपावोजाइपोटनिबँधायचाइकुंजनपठायेहैं। बंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमेंचिरीयादेहितसोबसायेहैं ३६३॥

आयेवृन्दाबन॥ सवैया॥ भूमिहरी द्रुमकूमिरहे लखि ठौररहे हगठौर सुहाते। न्यारेसेलोगरँगेरसतहांके मिले हँसिप्रेम हियेसरसाते। नाम न आवै औआवे गरोभरि नामलियो नहिंजातहै याते। सांवरी एक नदीपैबसै सो कहौकिसि कोउ या गांवकी बातें २॥ खीजिये॥पद॥ सु-

धारोहरि मेरोपरलोक। वृन्दावनमें कीनोदीनो हरि अपनो निजओक। माताकोसों हितकियो हरिजानि आपनेतोक। चरणधूरि मेरेशिरमेली औरसबनिदै रोक। जेनर राकस कूकर गदहा ऊंट वृषभ गजवोक। वृन्दावन तजि बाहर भटकत तेशिर पनहीं ठोक २॥ जाइबोनभा वै॥ वृन्दावनकेरूप हमारे मात पिता सुतबंध। गुरुगोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनको गंध। इन्हैंपीठिदै अनत दीठिकरि सोअंधनमें अंध। व्यासइन्हैंछोडैरुछुड़ावैताको परियो कंध ३॥ दोहा॥ वृन्दावनको छांड़िकै औरतीर्थ कोजात। छांड़ि बिमल चिंतामणी कौड़ीको ललचात ४॥ राधाबल्लभ कारणै सहीजगत उपहास। वृन्दावनके प्रव-पचकी जूठनिखाई व्यास १॥ वृन्दावन छांड़ियेनहीं ६॥ खिजवठ पद॥ तिया जोनहोइ हरिदासी। सोदासीग-णिकासम जानो दुष्टराड़ मसवासी। निशिदिन अपनो अंजन मंजन करत बिषयकी रासी। परमारथ कबहूं नहिं जाने आनिपरै यमफांसी। कहाभयो स्वरूप गुणसुंदर नाहिंन श्याम उपासी। ताकेसंग न पतिगति जैहै याते भली उदासी। साकतनारि जुबरमें राखै निश्चय नरक निवासी। व्यासदास यह संगति तजिये मिटैजगतकीहां-सी २॥ अगआभरण बेंचि बीसहजार रुपैयाके बेंचिकै बैष्णव जिमाये तब तिया रसोई मेंलइ मेंश्वेतवस्त्र पहिराइ कैसेवामें आवै २॥ पद॥ बिनतीसुनिये बैष्णवदासी। जा शरीरमें बसत निरंतर नरक बात पितखांसी। ताहिभु-लाइहरिहि यों गहियेहूँसैंसंग सुखबासी। बढ़ै सुहाग ताहिमनदीजे चोर बराक बिश्वासी। ताहिछांड़ि हित करै औरसों गरेपरै यमफांसी। दीपकहाथ परै कूवां में जगतकरै सबहांसी। सबोंपरि राधापतिसों रति करत अनन्य बिलासी। तिनकीपदरज शरण व्यासको गतिवृ-न्दावनबासी २॥ पोटन॥ पद॥ हरिभक्तनतेसमधीप्यारे। आयेभक्त दूरिबैठारौ फोरतकानहमारे। दूरदेशतेसमधी

आये तेबरमें बैठारे। उत्तम पत्तिका सौंरसपेटी भोजन बहुत सँवारे। भक्तनको देखन बनाको इनको सिखबट न्यारे। व्यासदास ऐसे बिमुखनको यमसदा टेरतहारे। तापर दृष्टांत उंगलीसों राहबताई २॥ पोटबँधाइके मिठाई साधुनकोदई तब पुचखिके यहकहा करतहौ २॥

शरदउजियारीरासरचेउपियप्यारीतामेंरंगबढ़ोभारी कैसेकहिकैसुनाइये। प्रियाअतिगतिलईबिजुरीसीकोंधि गईचकचौंधीभईछबिमंडलमेंछाइये। नूपुरसोंटूटिछूटिप र्योअरबर्योमनतोरिकैजनेउकर्योवाहीभांतिभाइये। स कलसमाजमेंयोंकहेउआजकामआयो ढोयोहौजनमताकी बातजियआइये ३६४ गायोभक्तइष्टअतिसुनिकैमहंतए कलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं। भूखकोजतावैबाणी व्यासकोसुनावैसुनि कहीभोगआवैइहांमानेहरिधीरहैं। तबनप्रमाणकरीशंकधरीलैप्रमाद ग्रासदोइचारिउठेमानों भईपीरहैं।पातरिसमेटिलईसंतकरिमोकोदईपावोतुमऔर पावलियेदगनीरहैं ३६५॥

तोरिकै जनेऊ॥ पद॥ इतनोहै सब कुटुंबहमारौ। सेन धनानाभा अरुपीपा अरुकबीर रैदास चमारौ। रूप सनातनको सेवक गंगल भट्ट सुढारौ। सूरदास परमानंद मेहा मीराभक्त बिचारौ। ब्राह्मण राजपूज्य कुलउत्तम करत जातिकोगारौ। आदिअंत भक्तनको सर्बस राधा बल्लभ प्यारौ। इहिपंथचलत श्याम श्यामाके व्यासहि बोरौ भावैतारौ ३॥

भयेसुततीनबाटनिपटनवीनकियेएकओरसेवाएकओर घनधर्योहै। तीसरीजुठौरश्यामबंदनीअरुछापधरीकरी

ऐसीरीतिदेखिबड़ोशोचपर्योहै। एकनेरुपैयालयेएकनेकिशोरजूको श्रीकिशोरदासभालतिलकलैकर्योहै। छोयेदियेस्वामीहरिदासनिशिराशिक्रियोवहीराशिललितादिगायोमनहर्योहै ३६६ ॥

श्रीतकरीपद॥ जूठनजेनभगतकीखात। तिनकेबदनसदननरकनके जेहरिजनन घिनात। कामबिवशकामिनकेपीवतअधरनलारचुचात। भोजनपरमावीमूततहैं जिहिजेंवत नाहिंसकात। बाजदारकीपांतिव्याहमें जेंवतबिप्रबरात। भेंटत सुतहिंरैटसुखलागत सुखपावतनड़तात। अपरसहृै भक्तनिछुइछुतिह। तेलसचेलअन्हात। भक्तनपीछेसबडोलत हैं हरिगंगाअकुलात। साधुचरणरजमांझव्याससेकोटिकपतितसमात२ आदिपुराणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिव।भक्तानामनुगच्छंतिमुक्तय:श्रुतिभि:सह २ भागीरथकेपीछेडोलीहीहैं आपजगमें तीर्थहीहैं ३ वहीरीति ॥पद॥लालललटकता यौवनसंता खेलतरासअनंता। यमुनातीरभीरयुवतिनकीबांहजोरि मंडलीबनाईमध्यराधिकाकंता॥ एकनि के कर कंजकपोल पर रंभनि देतहसंता। किशोर दासके स्वामी कुंजबिहारी बिहारिन के संग विहरत केलि करंता ४ ॥

मूल॥श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर। बेलाभजन सुखककषायनकबहूंलागी।वृन्दाबनदृढ़बासयुगुलचरणनिअनुरागी॥ पोथीलेखनपानअघटअक्षरचितदीनो। सदग्रंथन कोसारसबैहस्तामलकीनो॥ संदेहग्रंथछेदनसमर्थरसराशिउपासकपरमधीर। श्रीरूपसनातनभक्तिजल श्रीजीवगुसांईसरगँभीर ६४ टीका॥कियेनानाग्रन्थहदैग्रन्थदृढ़छेदडारैंवनयमुनामेंआवैचहूंओरते।

कहीदाससाधुसेवाकीजेकहैंपात्रजान करौंनीकेकरीबो
ल्यौकटिकोपजोरते । तबसमझायौ संतगौरवबढ़ायो
यह सबकोसिखायो बोलेमीठेनिशिभोरते । चरितअ-
पारभावभक्तिकोनपारावार कियोहूंवैरागसारकहैंकौन
छोरते ३६७ ॥

भक्तजजपद॥जयजयभेरेप्राणसनातनरूप। अगतनकीगति
दोऊभैयायोगयज्ञकेजूप। श्रीवृंदावनकीसहजमाधुरीप्रेम
सुधाकेकूप। करुणासिंधुअनाथबंधुजय भक्तसभाकेभूप। भक्त
भागवतमतआचारज चतुरकुलचतुरभूप । भुवनचतुरदश
विदितविमलयश रसनाकेरसतूप । चरणकमलकोमलरज
छाया मेटतकलरजधूप । व्यास उपासक सदाउपासी
श्रीराधाचरणअनूप॥ बोले कवित्त ॥ सीखव्याकरणकोष
काव्यऔपुराणसीखे सीखेवेदपढ़बो जोधर्मनकोमूरिहै।
न्यायवेदान्त आदि सीखे षटशास्त्रवरपंडिताई चतुराई
जानैभरिपूरिहै। सीखेघटपटसांपजेवरीबखानिबेको मा-
याब्रह्मजाकीअतिजीवनिकोमूरिहै । भक्तनकीसभाबीच
प्रेमरस सींचिसींचि बोलिबो न सीख्यो सबसीखिवे में
धूरि है २॥

प्रसंगमजरंपासमात्मनःकवयोविदुः । सएवसाधुसु-
कृतंमोक्षद्वारमपावृतं १ मूल॥ श्रीवृन्दाबनकीमाधुरीइन
मिलआस्वादनकियो। सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजा-
गर । हृषीकेशभगवानबिपुलबिट्ठलरससागर ॥ थाने
श्वरीजगन्नाथलोकनाथमहामुनिमधुश्रीरंग। कृष्णदास
पंडितउभैअधिकारीहरिअंग॥ घमंडीयुगलकिशोरभूगर्भ
जीवदृढ़ब्रतलियो। श्रीवृंदाबनकीमाधुरी इनमिलिआ-
स्वादनकियो ६५ ॥

इनमिल बिषै सखादीको मिलबोकहा राजाकोदूस रोनहै अरु दत्तात्रेयह्नेकारी कन्याकी चूरी दूसरीह्न दूरिकरीपैकैसेमिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेधकियो उपासकनकोनहीं ब्रह्मज्ञानीबिधवातुल्य हैं उपासकसुहागवती तिनको संगचूरीचाहिये जैसेचूरीको शब्दपतिकोप्यारोलगै ऐसे संगरूपचूरी को शब्द कृष्ण पतिको प्यारोलगैयातेब्रह्मज्ञानीकेकृष्णपतिनहींतिनहीं कोसंगचूरीत्यागहैयातेइन्हैंनेमिलिकै रूपमाधुरीकोस्वाद लिये ॥ पद ॥ जोकोउवृन्दावनरसचाखैं। खारीलगतखांड़ अरुखारकआनदेशकीदाखैं । प्राणसमानतजैनहिंसीवा लोभदिखावतलाखैं। भूखैरहिकै पावैभाजी निरखि रहै तरुशाखैं । परे रहै कुंजनिके कोने कृष्णराधिकाभाखैं। जनगोविन्द बलवीरकृपाते पटरानी जूराखैं २ क्योंकि राधेको वृन्दावन वेदनमें गायोहै ॥ सवैया ॥ पौरिकैपौ रियाद्वारकेद्वारिया पाहरुवा घरके घनश्यामहैं । दासी केदाससखीनके सेवक पारपरोसिनके धनधामहैं । श्रीधर काम्हभरेहित भामरमानभरी सतभामासी बामहैं । एक वहीबिश्रामथली वृषभानलली की गलीके गुलामहैं २ ॥

टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेरसाल बसेलसेयोंप्रगटराधारवनस्वरूपहैं । नानाभोगरागकरैं अतिअनुरागपगे जगेजगमाहिंहितकौतुकअनूपहैं । वृंदा बनमाधुरीअगाधकोसवादलियो जियौंजिनपायोशीतभ येरसरूपहैं । गुणहीकोलेतजीव औगुणकोत्यागदेत करु- णानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ३६८ ॥ टीका अलिभगवान की ॥ अलि भगवानरामसेवासावधानमनवृन्दावनआइक छूऔरैरीतिभईहै । देखेरासमंडलमेंबिहरतरसरास बाढ़ी छबिब्यासदृगसुधिबुधिगईहै । नामधरिरासऔविहारी

सेवाप्यारीलगी खगीहियमांझगुरुसुनीबातनईहै । बि-
पिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमरेतुमसुखपायोक-
हिदईहै ३६६ ॥

बाटीछबि पद ॥ रहौकोउकाहूमनहिंदिये । मेरेप्राण
नाथश्रीश्यामा सपथकरौतृणछिये । जेअवतारकदंबभजतहैं
धरिदृढ़ब्रतजुहिये । तेऊउमँगितजतमर्यादा बनबिहार
रसपिये । खोयेरतनफिरतजेघरघर कौनकाजअपजिये ।
जयश्रीहितहरिवंशअनंतसचनाहींबिनयारततांहिलिये २
आनिदेशकीगैलहरिति श्रीकृष्णदौरिसेवातीलूटलैहैं जो
रावरी । सोईअखिलभगवानको लूटिलियो जोजोरावर
रासहोतौबचायलेतोमोमुकदेखजीनेब्रह्मनेटकोलूटिलियो
दोहा ॥ अनन्याहोहोसेबकरैंव्याहीलेतउसास । गौनेकी
मौनेरही देखरामनहुहास ॥

टीकाबिट्ठलबिपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासनाम
बिट्ठलहैं गुरुकेबियोगदाहउपज्योअपारहै । रासकेसमाज
मेंबिराजसबभक्तराजबोलिकैपठायेआयेआज्ञाबड़ोभारहै।
युगुलस्वरूपअवलोकनानाभेदनृत्य गानतानकानसुनिर
हीनसँभारहै। मिलिगयेवाहीठौरपायोभावतनऔरकहेंरस
सागरसोताकोयोंबिचारहै ३७० टीकालोकनाथकी ॥ म
हाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूकेपारषदलोकनाथनामअभिराम
सबरीतिहै । राधाकृष्णलीलासोंरंगीनमेंनवीनमनजल
मीनजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै । भागवतगानरसखानसो
तौप्राणतुल्यअतिसुखमानिकहैगावैजोईनीतिहै । रसिक
प्रवीणमगचलतचरणलागि कृपाकैजताइदईजैसीनेहरी
तिहै ३७१ ॥ टीका मधुगुसाईंकी ॥ श्रीमधुगुसाईंआये

वृन्दावनचाहबढ़ीदेखेइननयननसोंकैसोधौंस्वरूपहै । ढूं ढ़तफिरतबनबनकुंजलताद्रुमभिटीभूखप्यासनंहींजानेछांहधूपहै । यमुनाचढ़तिकाटिकरतकरारेजहांबंशीबटतदीठिपरेवेअनूपहै । अंकभरिलियोदौरिअजहूंलौंशिरमौरचहैभागभालसाथगोपिनाथरूपहै ३७२॥

पायोभावतन ॥ पद ॥ प्यारीनेकु निरखौ नवरँगलालै। युवपद पंकजतल रजबंदत तिलक बनावतभालै । तेरेबरण बसन आभूषण उरधरि चंपकमालै। बीठल बिपुल बिनोद करोबल भुजभरि बाहुबिशालै ॥ जलमीनजैसे॥ दोहा॥ मीनमारि जलधोइये खायेअधिक पियास। बलिहारी वा चित्तकी सुये मित्तकीआस २॥ परसा हरिसों प्रीतिकरि मछरीकीसी न्याइ। जीवत मरतनछांड़हीं जलबिनरह्योन जाइ ३॥

गुसाईंश्रीसनातनजूमदनमोहनरूपमाथेपधरायकहीसेवानीकेकीजिये। जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारीभयेभटश्रीनारायणजूशिष्यकियेरीझिये। करिकैशृङ्गारचारुआपहीनिहारिरहेगहेनहींचेतभावमांझमतिभीजिये।कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांतिअबलोंबिराजमान देखिदेखिजीजिये ३७३ श्रीगोबिंदचंदरूपराशिसुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले। सेवाअनुरागअंगअंगमतिपागिरहीपागिरहीमतिजोपैतोपैयाहिमानिले। प्रीतिहरिदासनसोंविविधिप्रसाददेतहियेल्याइलेतदेखपद्धतिप्रमानले। सहजकीरीतिमेंप्रतीतिसोंबिनीतकरैंटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ३७४॥

मतिमागिरही ॥ कबित्त॥ गोबिंदरगीले रंगरंगनि शृं-
गारकियो लिये करछरी हिये सबको बिलोयेहैं। इतरात
जातधरे पगधरणीपर यौवन उमंगआप अंगअंग भोयेहैं।
चितवनिमें न सनी सैननसों बातैंकरै हरैमनलाड़ भरेनेह
सींसभोयेहैं। ऐसोकबिकौन सकै नयनन स्वरूपकहिलाल
लाल कोयनमें केतेघर खोयेहैं २ प्रसाददेत ॥ कुंडलिया ॥
राइनि भाइनि जासको खँड़ाबरा देहाथ । खँड़ाबरादै
हाथ देतप्रभुको तुलसीदल । कैदोनाभरि फूलकै करवा
भरिकैजल। भोजन गटकत आप रजोगुण दैपुनि हरषै ।
यावाकूथल सांझ दयानिधिको लै बरषै । भवभोरे सेवा
खड्ग लैकाटत निजमाथ। राइनि भाइनि जासको खँड़ा
बरा देहाथ४।५ अलोनी रोटी गलेमें अटकै कही कहा
गीता विस्तार करोगे ॥

गुसाईंभूगर्भवृन्दाबनदृढ़बासकियो लियोसुखबैठिकुं
जगोबिंदअनूपहैं । बड़ेईबिरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताही
कोसवादलेतमिलेभक्तभूपहैं । मानसीबिचारहीअहारसो
निहाररहेगहेमनवृत्त्यवेईयुगुलस्वरूपहैं। बुद्धिकेप्रमाणउ
नमानिमेंबखानकियो भरयोबहुरंगजाहिजाने रसरूपहैं
३७५ मूल ॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगज हिउप
देशदियो । तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकहि ।
दिब्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमहि । श्रीवृन्दाबन
चंदश्यामश्यामारँगभीने । मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेब
हुदीने। श्रीहरिप्रियश्यामानंदवरभजनभूमिउद्धारकियो।
श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो ९५ ॥
टीका ॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाबिस्तारकियोपावैकौन
पाररीतिभांतिकछुन्यारिये । संतचरणामृतकेमाठगृहभरे

रहेताहिकोग्रामपूजाकरिउरधारिये। आवैंहरिदासतिन्हैंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोबिचारिये। करेंगुरुउत्सवलैदिनमानसबैकोईद्वादशदिवसजनघटालगीप्यारिये ३७६ संतचरणामृतकोलावोजायनीकीभांतिजीकीभांतिजानिबेकोदासलपटायोहै। आनिकैबखानकियोलियोसबसाधुनको पानकरिबोलेसोसवादनहींआयोहै। जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोऊमहिमानजानेकनजानीछेड़िआयोहै। पूछीकह्योकोटीएकरह्योआनीलायोपियोदियोसुखपासनयननीरढरकायोहै ३७७॥

आनौ॥ चैतन्यचरितामृते॥ दृष्टैःस्वभावनिरतैर्वपुसश्चदोषैर्नप्राक्ततत्वमिहभक्तजनस्यपश्येत्। गङ्गाम्भसानखलुबुद्बुदफेणपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छतिनारधर्मैः १॥ सौप्याईनएकतिसाई जैसेप्रीतिकरि शालिग्रामसोंपूजे॥

नृपतिसमाजमेंबिराजभक्तराजकहैं गहैंवेविवेककोऊकहनप्रभावहै। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेवोदूजीसौंटासंगकैसेआवेभावहै। पातरिउठाइश्रीगुसाईंपरडारिदईदईगारिसुनीआपबोलेदेखौदावहै। सीतासोंबिमुखमेंतौआनिमुखमध्यदियोकियोदासदूरिसेतसेवामेंनचावहै ३७८ बागमेंसमाजसंतआपचलेदेखिबेकोदेखतदुरायोजनहूंकोशोचपर्‌योहै। बड़ोअपराधमानिसाधूसनमानचाहैंघूमितनबैठिकहीदेख्योकहूंधर्‌योहै। जाइकैसुनाईदासकाहूकेतमाखूपास सुनिकैहुलासबढ़ेउआगेआनिकर्‌योहै। झूठहीउसासभरिसांचेप्रेमपाइलियेकियेमनभायेऐसेशंकादुखहर्‌योहै ३७६ उपजतअन्नगांवआवैसाधुसेवा

ठांवनयोनृपदुष्टआय कावाकावकियोहै।ग्रामसोंजवतकरौ करेउलैबिचारआपश्यामानंदजूसुरारिपत्रलिखिदियोहै। जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवोयहां आयेहाथबांधि करिआयेहूंनलियोहै। पाछेसाष्टांगकरीकरीलैनिवेदनसो भोजनमेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ३८० ॥

शीतसोंविमुख ॥ दोहा ॥ जानिअजानी ह्वैरहै तातलेइ जोजानि। अगिला होवै अगनसम आपुनहोवै पानि २ ॥ कियोदास दूरि रसोई पावोले महाराज लाज कैसे रहै सोंटाको मांगेहै सोंटाहू खाइहै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटाखाइचारिसेर कैसेमहाराज जबसोंटासों भांगघोटि कैपीवैं तब चारिपनवारे उड़ाइजाइ सोंटाहीतौ खाइहै दासको दूरिकरिदियो ३ शोचपर्‌यो संतके लच्छणहैं कुछ न क्रियाकरै तौ लाजकरै नाहींकाहेकोकरै३।४।५।६॥

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरज हांतहांआपआयेहैं। मिलेमुत्सद्दीशिष्यआइकैसुनाईबा- तजावोउठिप्रातयहनीचजैसेगायेहैं। हमहींपठावैंकाम करिसमझावैंसबमनमेंनआवैजानीनेहडरपायेहैं। चिंता जनिकरौहियेधरौनिहचिंतताई भूपसुधिआईदिनाती- नकहांछायेहैं ३८१ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरेघर देखौकरामातिबातपहलैसुनाईहै। कह्यौआनिअभूजावो चलौउनमानदेखें चलेसुखमानिआयोहाथीधूमछाईहै। छोड़िकेकहारभागयेननिहारिसके आपरससारबानीबो- लीजैसीगाईहै। बोलौहरिकृष्णाकृष्णाछाड़ौगजतमतन सनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ३८२ बहैदृगनीरदेखि होइगयोअधीरआपकृपाकरिखीरकियोदियोभक्तभावहै।

कानमेंसुनायोनामनामदेगोपालदास मालापहिरायगरे प्रगट्योप्रभावहै। दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभयोहियेअतिचावहै । निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनदियेलियेकरजोरिमेरोफल्यौभागदावहै ३८३॥

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरुमें भाव भक्ति की नीमहै जैसे हवेली की नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहींतौ गिरिपरै ऐसेही गुरु में भक्ति होइ तौ दशधाभक्ति दशखण्डी सिद्ध होइ उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजै रोग को उनमान देखिये बोले हरेकृष्ण॥ भागवते॥ प्रविष्टाःकर्णरन्ध्रेणस्वानांभावसरोरुहे।धुनोतिसमलंकृष्णः सलिलस्ययथासरित्॥ प्रभाव है ॥ शृण्वतांस्वकथाकृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः॥ हृद्यन्तस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सता ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदेखकरतप्रणामहै । आनिडारैगौनबनिजारिनिकीवारिनिसोंआयेईपुकारनवेजहांगुरुधामहै । आवतमहोछेमध्यपावतप्रसादशीतबोलेआपहाथीसोंयोंनिन्दबहुकामहै। छोड़िदईरीतितबभक्तनिसोंप्रीतिबढ़ी संगहीसमूहफिरैफैलिगयोनामहै३८४ संतसातपांचसातसंगजितजाततितलोकउठिधावैंलावैंसीधैवहुभीरहै । चहुंओरपरीहईसुवासुनिचाहभई हाथपैनआवतसोआनैकोंऊधीरहै । साधुएकगयोगहिलयोभेपदासतन मनमेंप्रसादनेमपीवैनहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिजललैपिवावैधारिगंगाजूनिहारिमध्यतज्योयोंशरीरहै ३८५ मूल॥भवप्रवाहनिस्तारहित अवलंबनयेजनभये ।सोझासींवांअधारधीरहरिनामत्रिलो

चन। आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन। काशीश्वर अवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो। सोभूउदारामनामडूंगर व्रतधरियो। पदमपदारथरामदासबिमलानंदअमृतसृये। भवप्रबाहनिस्तारहितअवलम्बनयेजनभये ६६॥

निंदबडकामहै॥ वैष्णवोबंधुसत्क्षत्य २ महाराज बंधुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइतौ करै ताते यह काम छांड़िदे भेटमुक्ती आइरहैगी बहु भीरहै पांचसौ सातसै वैष्नवनकी भीररहै संग जहां चलै गोपाल दास हाथी सीधे चलै आवै और याते भीर बहुत रहै वैष्नवनकी गूदरी तौ लाद लेहै और हारौ नीरो साधुहु चढ़िलेहि ऐसो महंत कहा पाइये और महंत तौ वैष्णवन कंधे लादे यह वैष्नवन को सब बोझलैचलै २॥

टीका॥सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसेवारहबानीसोनेकीकसौटीकसआईहै। जीवकोनबधकरैऐपैकुलाचारढरैबेचैमासलाइप्रीतिहरिसोंलगाईहै। गंडकीकोसुतबिनजानेतासेतौल्यौकरैभरेदृगसाधुआनिपूजेपैनभाईहै। कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमोकोदेवो सुनौ गुणगानरीझैहियेकीसचाईहै ३८६ लैकेआयोसाधुमेंतौबड़ोअपराधकियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै। येतौप्रभुरीझैतौपैजोईचाहौसोईकरौगरीभरिआयोसुनिमतिबिसराईहै। वेईहरिउरधारि डारिदियोकुलाचारि चलेजगन्नाथदेवचाहउपजाईहै। मिल्योएकसंगसंगजातवेसुज्ञातसबतबआपदूरिदूरिरहेजानिपाईहै ३८७॥

सुनौगुनगान॥ पद॥ मैंतौ अतिही दुखित मुरार।

पांच ग्रह गीलत हैं सोको गज ज्यों करौ उधार ॥ नाम गरीब निवाजउजासों करन विषै हठतार। सदना को प्रभु तारौ ऐसे बहत है कारी धार २ ॥ कवित्त ॥ वहपद भाषा के है एक करि गावत हौ हम तुम्हैं गावत हैंसदा वेदबाणी सों। मास भरे हाथनि सों आइ तुम्हैं छूवतहौ हमै कौऊ मास बीतेतुम्हरीकहानीसों ॥ लक्ष्मीनारायण जू बड़े रिझवार तुम्हारीभ्रूनिकसत है तुम्हारी रजधानीसों। हम निरमल गंगा जलसों न्हवावैं नित तुम रीझेसदना के बदना के पानीसों २ डारिदियो ॥ पद॥ तजो मन हरि विमुखनको संग। तिनके संग कुमति उपजत है परत भजन में भंग ॥ कागै कहा करपूर चुनावै मरकट भूषण अंग। खरको कहा अरगजालेपै श्वानअन्हाये गंग ॥ काह भयो पयपान कराये बिष नहिं तजत भुवंग। सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग ३।४।५॥

आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयोनयोरूपदेखको ऊतियारीझपरीहै। बैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरकह्यो रह्योनिशिसोइआईमेरीमतिहरीहै। लेवोमोकोसंगगरोका टौतोनहोइरंगबूझीऔरकाटीपतिग्रीवपैनडरीहै । कही अबपागौमोसोंनातैंकौनतोसोंमोसों शोरकरिउठीइनमारैभीरकरीहै ३८८ हाकिमपकरिपूछैकहैहँसिमारोहम डारयोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचलेहरिरंगमांझझिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये। जगन्नाथदेवआगेपालकीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांचढ़ नबिचारिये। चढ़ेआयेप्रभुपाससुपनोसोंमिट्योत्रासबोले दैकसौटीहूपैभक्तबिस्तारिये ३८६ गुसाईंश्रीकाशीश्वर आगेअवधूतबरकरप्रीतिनीलाचलरहेलागेनीकोहै। महा प्रभुश्रीकृष्ण चैतन्यजूकीआज्ञापाइ आयेवृन्दावनदेखि

भयोभायोहीकोहै।सेवाअधिकारपायोरसिकगोविंदचंदचा हतमुखारविंदजीवनजोजीकोहै। नितहीलड़ावैभावसाग रछुड़ावैकौनपारावारपावैसुनैंलागैजगफीकोहै ३६० ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ ढाक चढ़त बारी गिरै करै रावसों रोस। करै रावसों रोस दोस हरिको कहंदीजै॥ आपुन कुमति कमाय परेखा काकोकीजै। तृषावंत ह्वैजीव सरोवर पै चलिआवै॥ यह नहिं देखी सुनी आइ सर तृषा बुझावै।अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अदोस ॥ ढाकचढ़तबारी गिरै करै रावसोंरोस २ पालकी पठाई ॥ श्री जगन्नाथदेवजी कहई औषधि दैपिछिले जन्म को अपराधखोयोचाहैं तब बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जनको है तन भलो सज्जनको भलो बास॥ जोसूरज अधिकीतपै तौ बरषन की आस २ न्याइ के कर्त्ता न्याइ करतही हैं ॥

मूलं ॥ करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे । जतीरामरावलश्यामखोजीसंतसीहा। दलहापद्मनोरथएकाद्यौगूजपजीहा। जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपा। पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरकीतामनकोजिहिमेटउआपा। मति सुंदरधीधागैश्रमसंसारचालनाहिंनचे। करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ६७ टीकाखोजीजूकेगुरुहरि भावनाप्रवीनमहादेहअंतसमयबांधिघटासोंप्रमानिये।पा वैंप्रभुजबतबबाजिउठेजानौयहैपायेनबाज्यौबड़ीचिंतामन आनिये।तनत्यागबेरनहीहुतेफेरिपाछेआयेवाहीठौरपौढ़ि देख्यौआवपक्योमानिये।तोरताकटूककियेछोटोएकजन्त मध्यगयोसोबिलाइबाजउठेजगजानिये ३६१ शिष्यकी तौयोगताईनीकेमनआइआजुगुरूकीप्रलवलऐपैनेकुघटि

क्योंभई।सुनोयहीबातमनबातबतकहीसहीलैदिखाईऔर कथाअतिरसमई।वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछेआछो फलदैखिहरियोगउपजीनई। इच्छासोसफलश्यामभक्त बशकरीवहीरहीपूरपक्षसबव्यथाउरकीगई ३६२॥

मतिसुन्दर धीधागै॥ मृदंगकैसीमतिहीसोंसुन्दर ठह- राई है पैहैझूठी ताकी चालमें सब संसारनचैहै १॥ कवि- त्त॥ आयो सदाकाल पैन पायो कहूं सांचो सुख रूपसों बिमुख दुख कूप बास बसा है। धर्म को संघाती है न मद्दादी अफाती पुनि ऐपै यह सन्निपात कैसी युत दसा है। माया कोउ पटि गहै काया सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में वहीरको सों ससा है। ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके नगेते निर्वाण पद घसा है २ ऐसे ध्रम करिकैनहीं नचैसंसारकीचालमें रह्योंहै ३।५।६॥

टीकाराकाबांकाकी.॥ राकापतिबांकातियाबसैपुरपं- ढुरमेंउरमेंनचाहनेकुरीतिकुछुन्यारिये।लकरीनबीनिकरि जीविकानबीनैकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये। बिनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजूसों कीजैदुखदूरिकहीमेरी मतिहारिये। चलोलैदिखाऊंतबतेरेमनभाऊंरहेबनछिप दोऊथैलीमगमांझडारिये ३६३ आयेदोऊतियापतिपा- छेवधूआगेस्वामीऔचकहीमगमांझसंपतिनिहारिये।जा नीयोंयुवतिजातकभूमनचलिजात यातेवेगिसंभ्रमसोंधूरि वापैडारिये। पूछीअजूकहांकियोभूमिमेंनिहुरितुमकहीव- हीबातबोलीयनहूबिचारिये। कहैमोकोराकाऐपैबांकाआ जूदेखीतुहीसुनिप्रभुबोलेबातसांचीहैहमारिये ३६४॥
जीविकानवीन करै॥ उतनीही लावै उतनीही त्ल

करै अथवा साधुन को देकै बचै सो आप पावै यह नवीन-
तातो काहूपै न बनै बिनतीकरतानामदेव ॥ दोहा ॥
कहूंकहूं गोपालकी गई सिटलौ नाहिं। काबुल में मेवा
करी ब्रज में टेटीखाहिं २ कहूंकहूं गोपालकी गई सिट-
लौ नाहिं। बिमुख लोग घोड़ाचढ़े काठबेंच जनखाहिं।
२ कहा भयो जल में जल बर्षत बर्षत नाहिंखेत जहँ
सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं मरत
जहँभूखा ३ ॥ सवैया ॥ श्रीहरिदास के गर्भ भरे कमनेत
अनन्य निहारिनि के। महा मधुरे रस पानकरैं अवसान
खतासिल हारिनि के। दियौलै नहिं लैहन मांगत काहू
पै जोरत नेहतिहारिनिके। किये रहे अंड बिहारिय सों
हम ठेपर बाह विहारिनिके ४ । ५ ॥

नामदेवहारेहरिदेवकहीओरैबात जोपैदाहगातचलौ
लकरीसकेरिये । आयेदोऊबीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरीहै
हूमिलीपावेतेउहाथनहींछेरिये । तबतौप्रगटश्यामलायो
योलेवाइघरदेखिमूढ़फोशकह्योऐसेप्रभूफेरिये । बिनती
करतकरजोरिअंगपटधारोभारो बोझपरोलियोचीरमात्रहे
रिये३६५मूल॥परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगके
लक्षिमनलफरालडूसतजोधपुरत्यागी। सूरजकुंभनदास
बिमानीखेमबैरागी । भावनबिरहीभरतनफरहरिकेशट
टेरा।हरीदासअयोध्याचक्रपाणिदियोसरयूतटडेरा। तिलो
कपुषरदीबीजुरीउद्धवचनचरबंशजे। परअर्थपरायणभक्त
येकामधेनुकलियुगके ६८ टीका॥ लड़नामभक्तजाइनिक
सेबिमुखदेश लेशहूनसंतभावजानेपापपागेहैं । देवीको
प्रसन्नकरैमानसकोमारिधरैलैगयेपकरिजहांमारिबेकोलागे
हैं । प्रतिमाकोफारिबिकरालरूपधरिआईलेकेतरवारमू

ड़काटेभीजेवागेहैं। आगेनृत्यकरैद्दगभरैसाधपावधरैंऐसे रखवारेजानिजनअनुरागेहैं ३९६ ॥

नहीं छेरिये॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेहिंगे लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको मुहड़ो देख्यौ होले जैतो न जानियेकहाहेतौ॥ अचाहसों कंगोलकह्यो दोहा॥ घरघर डोलत दीन ह्वै जन जन याचत जाइ। दिये लोभ चसमाचखन लघुपुनिबड़ोलखाइ १ जैसे लोभी को लघु बड़ो दीखे तैसे त्यागी को बड़ेहैं ते लघु दीखेहै। प्रयंत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त॥दोहा॥ रामअ-मलते रहैं पीवै प्रेम निशंक॥ आंटगांठिकोपीन में कहेइंद्र सों रंक ३ बेपरवाही वैष्णव ऐसे २ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्यो गह्योनेमभिक्षाब्रतगांवगांवजाइके। आयेघरसंतपूछेति यासोंयोंसंतकहासंतचूल्हेमांझकहीऐसेअलसाइके। बानी सुनिजानीचलेमगसुखदानीमिलेकहौंकितहुतेसो बखानी उरआइके। बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्यानमेरे आ निग्रहफिरिकियेमगनजिवाइके ३९७ टीकातिलोककी॥ पूरबमेंओकसोंतिलोकहौसुनारजाति पायोभक्तसारसा धुसेवाउरधारिये। भूपकेबिवाहसुताजोराएकजेहरिको गढ़िबेकोदियोकह्यौनीकेकैसँवारिये। आवतअनंतसंतऔ सरनपावैकिहूंरहेदिनदोयभूपरोसयोंसँभारिये। लावोरे पकरलाये छाड़ियेमकरकही नेकुरह्यो कामआवै नातैमा रिडारिये ३९८ आयोवहीदिनकरछुयोहूनइननृपकरै प्राणबिनबनमांझछिप्योजाइकै। आयेनरचारिपांचजानी प्रभुआंचगढ़िलियोसोंदिखायोसांचचलेभक्तभाइकै। भूप

कोसलामकियोजेहरिकोजोरादियो लियोकरदेखिनयन
छोड़ैनअघायकै। भईरीझभारीसबचूकमेटिडारीधनपायो
लैमुरारीऐसेबैठेघरआइकै ३६६ ॥

बानीसुनिजानी चले ॥ सवैया ॥ होतही प्रातजोघात
करै नित पार परोसिन सोकलगाढ़ी। हाथ नचावति मू-
ड़ खुजावति पौरि खड़ी अतिकोटिनि बाढ़ी॥ ऐसीबनी
नखते शिख लौं मनों क्रोध के कुंडमें बोरिके काढ़ी। ईंट
लिये पियको मुख जोवत भूतसी भामिनि भौनमें ठाढ़ी
२ ऐसी कलहा को बचन सुनि के साधू उठि चले क्योंकि
जिनके बचन सुनिकै भूतहू भाजिजाहिं २ राजाके पुरो-
हित कुरला डारा अपनी स्त्री पदोह संपति और शरीर
सुख विद्या अरु बरनारि मांगेमिलैंन चारि बिन पूरब के
पुण्य बिन अनंतसंत॥ पंचमे ॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गं
नपुनर्भवं॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः ३ स-
त्संगको मार्ग आछोहै ४ ॥

भोरहीमहोत्सवकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवा
नरसखानस्वादलागेहैं। संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोद
भरिगयेजहांपावोंजोतिलोकग्रहपागेहैं। कौनसोत्रिलोक
अजूदूसरोत्रिलोकीमैंन बैनसुनिचैनभयोआयोनिशिरागे
हैं। चहलपहलधनभर्योघरदेखिढर्योप्रभुपदकंजजानी
मेरेभागजागेहैं ४००॥ मूल॥अभिलाषअधिकपूरणकरन
येचिंतामणिचतुरदास। सोमभीमसोमनाथविकोविशाषा
लमध्याना। महदामुकुंदगयेसत्रिबिक्रमरघुजगजाना।
बालमीकिवृद्धव्यासजगनझांझबीठलआचारज।हरभूला
लाहरीदासबाहुबलराघवआरज। लाखाछीतरउद्धवकपू

रघाटमघूराक्रियोप्रकास। अभिलाषअधिकपूरणाकरनये चिंतामणिचतुरदास ६६ भगतपालदिग्गजभगतयेथाना पतिशूरधीर। देवनंदबरहरियानंदमुकुन्दमहीपतिसंतरा मतमोली। खेमश्रीरंगनंदविष्णुवीदावाजूसुतनोरी। छी तमद्वारकादासमाधवमांडनरुपादमोदर। भलनरहरिभ गवानबालकन्हरकेशवसोहेंघर। दासप्रियागलोहंगगुपा लनागूसुतगृहभक्तभीर। भक्तपालदिग्गजभगतयेथानाप तिशूरधीर २००॥

खहलपहल॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतहो बीचहि स्वारथहोइ। खेतीकोजै नाजको सहजघासतहँहोइ २॥ घाटम पद॥ जोनर रसनानाम उचारै। कोतिकबात आप तरिवेको कोटिपतित निस्तारै। कामक्रोध मदलोभ तजै जो जीवदया प्रतिपालै। तीरथ जेतिकतेबसुधापर तिनहूं के अघटारै। मेनाजाति यद्यपि कुलनीचो सतगुरु शब्द बिचारै। घाटमदास रामजो परचै तीनलोक उद्धारै। था- नापतिक्योंनभये॥ क्षुधारूपिणी कूकरी हरिनेदईलगाई। परसा टूका डारिकै गोबिंदके गुणगाई ३।४।५॥

मूल॥ बद्रीनाथउड़ीसेद्वारकासेवहरिभजनपर। के शवपुनिहरिनाथभीमखेतागोबिंदब्रह्मचारी। बालकृष्ण भलभरतअच्युतअपपाव्रतधारी। पंडागोपीनाथमुकुन्दाग जपतिमहायसु। गुणानिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्ब सु। श्रीअंगसदासानिधिरहैकृत्यपुण्यपुंजभलभागभर। बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवहरिभजनपर २०१ टीकाप्र तापरुद्रराजाकी॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोबखानकियो लियोभक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं। कियेहूउपायकोटि

ओटिलैसंन्यासलियो हियोअकुलायअहो कहूंमोकोपेख हीं। जगन्नाथरथआगेनृत्यकरैंमत्तभयेनीलाचलनृपपाइ पर्योभागलेखहीं। छातीसोंलगायोप्रेमसागरबुड़ायोभ योअतिमनभायोदुखदेतयेनिमेषहीं ४०१॥ मूल॥ हरि सुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकबिजनअतिशयउदार। विद्या पतिब्रह्मदासबहोरणचतुरबिहारी। गोबिंदगंगारामलाल बरसानियामंगलकारी। पियदयालपरशुरामभक्तिभाई खाटीको। नंदसुवनकीछापकबित्तकेशवकोनीको। आ शकरणपूरणनृपतिभीषमजनदयालगुणनहिंपार। हरिसु यशप्रचुरकरिजगतमेंयेकबिजनअतिशयउदार. २०२॥

प्रेमसागर॥ महाप्रभुजू प्रेमभक्ति देतभये॥ श्लोक॥ ज्ञानतःसुलभामुक्तिःभुक्तिःयज्ञादिपुण्यतः। सेयंसाधनसाहस्रैर्हरि भक्तिर्दुर्लभा २ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ सांच बोले ऐसेभक्तनसों बँधेहैं पै हरिके बँधेहीमें शो- भाहै॥ श्लोक॥ तवकथामृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंक- ल्मषापहं। श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुविगृणंति येभूरिदा जनाः ३॥ भूरिदा कहिये बड़ेदाता जन्मकर्मके दूरिकरने हारे सोइन कबिनहरिकेगुणरूपद्दी बर्णनकरेहैं तिनगुणा- रबिन्दनको बांचिकै जगत तरिजाइगो बिश्वासमानि ३॥

टीकागोबिंदस्वामीकी॥ गोबर्द्धननाथसाथखेलेसदा झेलेरंगअंगसख्यभावहियेगोबिंदसुनामहै। स्वामीकरि ख्यालताकीबातसुनिलीजेनीके सुनेसरसातनयनरीतिअ भिरामहै। खेलतहोलालसंगगयोउठिदांवलैकैमारीखेंच गिलीदेखिमंदिरमेंश्यामहै। मानिअपराधसाधूधकादैनि कारिदियोमतिसोअगाधकैसेजानेवहबामहै ४०२ बैठे

कुंडतीरजाइ निकसैगोग्राइबन दियोहैलगाइताकोफल भुगताइये। लालहियेशोचपर्योकैसेजातभर्योवहअटेउ मगमांझभोगधर्योपैनखाइये। कहीश्रीगुसाईंजीसोंमोपै कौनभावैककूचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये। वाको हुतोदांवमोपैसोतौभावजानौनाहिं कहैमोसोंबातैंशोकमा रैबेगिलाइये ४०३ बनबनखेलेबिनबनतनमोकोनेकुभ नतजगारीअनगनतलगावैगो। सुधिबुधिमेरीगईभईबड़ी चिंतामोहिंलाइयेजुढूंढ़िजबचैनढिगआवैगो। भोगजेलगा येमैंतौतनकनपायोरंसवाकीजबजाइजबमोहिंकछूभावैगो। चलेउठिधाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिरमेंखाइमिलिक हीगरेलावैगो ४०४॥

सख्यभाव॥ नवप्रकारकी भक्तिहैं तामेंसख्यबड़ीकठिन है तामेंईश्वरताकोगंध न रहै दृष्टांत बादशाहके खिलवतन- खाने अरु दोस्तिचनका २ ॥ विश्वासंसमता नित्यंसख्यतं भावरुच्यते २ पन्हैयांपहराईं नाथजीको खेलत पाषाण कीमूरति चैतन्य ह्वै कैसे खेलनलगी ३ यादृशी भावना यस्य४ गोविन्दस्वामी के अजलों मनभावनारहै याते संग खेले एकगोपहूौं सो नंदजीके मंदिरसें जाइकै पगड़ी उ तारिलायोलालाकी सगाईमारिजाइहै ५॥

गयेहैंबहरभूमितहांकृष्णाझूमिआये करीबड़ीधूमआक बौड़निसोंमारिकै। इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजु कौतुकअपारसख्यभावरससारिकै। मातामगचाहैबड़ीबेर भईआईतहांकहीबारबारओटपाईउरधारिकै। आयोयों बिचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगकभूंकरतसं भारिकै ४०५ आवतहौभोगमहासुंदरसोमंदिरकोरहेउ

मगबैठिकहीआगेमोहिंदीजिये। भयोकोपभारीथारडारि कैपुकारकरीभरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये। बोलिकै सुनाईअहोकहामनआईतब खोलिकैबताईअजूबातकान कीजिये। पहिलेजुखाइबनमांझउठिजाइपाछेपाऊंकहांधा इसुनिमतिरसभीजिये४०६मूल॥जेबसेबसमथुरामंडल तेदयादृष्टिमोपरकरौ। रघुनाथगोपीनाथरामभद्रदासूस्वा मी। गुंजामालीचित्तउत्तमबीठलमरहटनिःकामी। यदु नंदनरघुनाथरामानंदगोबिंदमुरलीसोती। हरिदासमिश्र भगवानमुकुंदकेशवडंडोती। चतुरभुजचरित्रविष्णुदास बैनीपदमोशिरधरौ। जेबसेबसमथुरामंडलतेदयादृष्टि मोपरकरौ २०३॥

आइतहां देखैतौ धूमभचाइ रह्योहैं माताकहै ओट पाइ धूमकौनसों मचाइ रह्योहै इहांतौ कोईहै नहीं माताको कृष्णक्यों न दीखे गोविंद स्वामीको कैसेदीखे गोबिंदस्वामी श्रीकृष्णकी संगते अप्राकृत भयो यातेदीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पकै खटाई जातिरहै मिठाई ह्वै जाइ जैसेध्रुव भगवानके संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोबिंद स्वामीअप्राकृतभये मतिरसभीजिये विट्ठलनाथजी कीमति रसमें भीजिगई सो सख्यभावमें भीजिगयेहैं २॥

टीकागुंजामालीकी॥ कहीनाभास्वामीआपगायोमैं प्रतापसंत बसेब्रजबसेसोतौमहिमाअपारहै। भयेगुंजा मालीगुंजहारधारुनामपर्‍यो कर्‍योबासलाहौरमेंआगे सुनौसारहै। सुतबधूविधवासोंबोलिकैसुनायोलेहु धन पतिगेहश्रीगुपालभरतारहै। देवोप्रभुसेवामांगेंनारिवा-

रिवारयहै डारैसबवारियापैगनैजगछारहै ४०७ दईसे- वावाहिऔरघरधनतियादियो लियोब्रजबासवाकीप्रीति सुनिलीजिये । ठाकुरबिराजैजहांखेलैंसुतऔरनके डारे ईटखोवार्योप्रभुपरखीजिये । दियेबिडारिधर्यो भोग पैनखातहरि पूछीकहीवेईआवैंतबहींतौजीजिये । कह्यौ रिसभरिधूरिनीकेभोरडारौभरि खावौहमहाहाकरीपायो लाइरीझिये ४०८ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराज महिमासबजानेजगत ॥ सीताझालीसुमतिशोभाप्रभुता उमाभटियानी । गंगागौराकुवरीउबीठागुपालीगणेशदे रानी ॥ कलालखाकृतगढ़ौमानमतीशुचिसतभामा । यमु नाकोलीरामामृगादेभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवाकीकमला देवकीहीराहरिचेरीपौषेभगत । कलियुगयुवतीजनभगत राजमहिमासबजानेजगत २०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कांदे ॥ स्त्रियोवायदिवाशूद्रो ब्राह्मणःक्षत्रि योपिवा ॥ पूजयित्वाशिलाचक्रंलभतेसाश्वतंपदं १॥ दोहा॥ राम रंग लाग्यौ नहीं बिप्र जनेऊ बांह ॥ रज्जब लोनता गलगि चक्र चूनरी मांह २ महिमा यह सब भक्त राज है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगति में राखी रानी ब्राह्मणी कोली भटियानी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ है जहां भक्ति तहां भगवान शिवरी के गये अभिमानी ऋषिन के न गये प्रीति की रीति सांची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशऔंड छेको रानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आवैंबहुसंत सेवाकरतअनंतभांतिरह्यौएकसाधुखानपानसुखलियोहै।

निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहां होइतौबताऊंसब तुमजानौहियोहै । मारीजांघछुरीलखिलोहूबेगिभागि गयो भयोशोचजानैजिनिराजाबंददियोहै ४०९ बांधि नीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूंसोंन आयोढिगराजामति आवोतियाधर्महै । बीतेदिनतीनजानीबेदननवीनकछू कहियेप्रवीणमोसोंखोलिसबमर्महै । टारीवारदोइचारि नृपकेविचारपर्‌यो कह्योसावधानजिनिआनौजियभर्महै। फिर्‌योआसपासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभावछां ड़ितियापतिशर्महै ४१० ॥

आवैं बहुसंत बहुतरंग के पै सबही को सेवै कह्यौ सावधान ॥ कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अंत को न पावै या को जानै रसवंत कोईरीझै पहिचानि कै। औगुणन दीठिपरै देखतही नैन भरै ढरै पगओर उर प्रेम भरि आनिकै॥ जोपै कछूघटि क्रिया देखिपतिइनमांझ करिलै बिचारहरिही की इच्छा मानिकै। बालक श्रृंगारकै नि-हारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधुकृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंहही नहीं भक्ति की हानि २ जाकोजैसो सुभाव जायनहिं जीवसों। नींब न मीठीहोइ सींचि गुण घीवसों ३ कोइला होइ न ऊजलानौ मन साबुन लाइ। दरखकोसमझावनो ज्ञान गांठिको जाइ॥ काहू ने कही सुंदर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आश-करन को और साहब जादे फकीरको प्रसंग १ ॥

मूल ॥ हरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदास॥ नरबा-हनबाहनबरीसजापूजैमलवीदावत । जयंतधारारुपा अनभईउदरावत ॥ गंभीरैअर्जुनजनार्दनगोबिंदजीता।

दामोदरसापिलेगदाईश्वरहेमविदीता ॥ मयानंदमहिमा अनंतगुढ़ीलेतुलसीदास । हरिकेसम्मतजेभगततेदासनकेदास २०५टीकानरबाहनजीकी।हैभैगांवनावनरबाहन साधुसेवीलूटिलईनावजाकीबंदीखानेदियोहै। लौंड़ीआवै देनकछुखाइबेकोआईदया अतिअकुलाइलैउपाइयहकियोहैबोलीराधावल्लभऔलेबोहरिबंशनाम पूछैंशिष्यनामकहौपूछीनामलियोहै । दईमँगवायबस्तुराखियोदुराइ बातआपुदासभयो कहीरीझिपददियोहै ४११मूल ॥ श्री मुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही ॥ यहबचनपरिमान दासगावढीजढियानैभाऊ । बूंदीबनियाराममडौतैंमोहन वारीदाऊ ॥ मांडौढीजगदीशलक्षिमखाचटथावरभारी । सुनपथमेंभगवानसबैसलखानमुपालउधारी ॥ जोबनेरि गोपालकेभक्तइष्टतानिर्महो । श्रीमुखपूजासंतकीआपुनते अधिकीकही२०६टीका जोवनेरगोपालकी॥ जोवनेरबास सेंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिर्वाहबातमोकोलागीप्यारियै । भयोहोविरक्तकोऊकुलमेंप्रसंगसुनौआयोयोंपरी क्षालेनद्वारपैविचारियो।आइपर्योपाईंधारोनिजमंदिरमेंसुंदरनदेखौमुखपनकैसेटारियै । चलौजिनिटारौतियारहैंगी किनाशेकरिचलेसबछिपीनेकुदेखियाकेमारियै ४१२ ॥

लूटिकैसेबैतो पायखगैगो जगतकैपापपुरबमिथ्याजाने खप्नवत्ताकोफल दुखसुखकहाजैसेव्यभिचारिणीस्त्रीकेख प्नकोफलझूठो सेवामेंसांचो याहशीभावनायस्य १दईऊंचे कोदेखि याजैसारियै ४१५ मगवाई१कामदारबोलेतीनि लाखतीसहजारकोमाल क्योंफेरिदियोनरबाहनबोले ॥ जोहरिबंशको नामसुनावेतनमनधनतापैबलिहारी। जोह

रिवंश उपासक सेवै सदा सेवंता के चरण बिचारी ॥ श्रीहरिवंश गिरा यश गावै सर्वस देहौंतै हितकारी । जो हरिवंशकोधर्म सिखावै सोमेरे प्रभु तेप्रभु भारी॥पद दिशो॥ पद॥ मंजुलकलकुंजदेश राधा हरिविशद वेशराका नभकुमुद चंद शरदयामिनी। श्यामलद्युति कनकअंग बिहरत मिलि एक संग नीरद मनोनीलमधिलसतदामिनी। अरुण पीतिनव दुकूल अनुपम अनुराग मूलसौरभयुत शीतअनिलमंदगामिनी। किशलयदल रचतसेन बोलत पियचाटुबैन मानसहितप्रतिपद प्रतिकूलकामिनी ॥ मोहनमनमथतमारपरसतकुचनीबिहार नेपथ युतनेतिनेति बदतिभामिनी।नरवाहनप्रभुसकेलिबहुविधि भरभरतिकेलि सोरतिरसरूपनदीजगतपावनी २ चलि हे राधिकेसुजानतेरेहित सुखनिधान रासरच्यो श्यामतटकलिंदनंदिनी। निर्त्ततयुवतीसमूह रागरंगअति कुतूहवाजततमूलमुरलिकाआनंदिनी। वंशीबटनिकटजहां परमरव निभूमितहांसकलसुखदमलयबहैवायुमंदिनी। जातीईषत् विकासकाननअतिशयसुवासराकानिशिशरदमास विमलचांदनी।निरबाहनप्रभुनिहारिलोचनभरिघोषनारि नखशिखसौंदर्यकाम दुखनिकंदिनी। मिलसौभुजग्रीवमेलिभामिनिसुखसिंधुभेलि नवनिकुंजश्यामकेलिजगतबंदिनी ३ आपनतेअधिकपूजाअष्टप्रकारकीब्राह्मणभोजन अग्निहोम जलसंचगोचन वैष्णवउदरऔरइत्यादि ४ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वांगरपिवन्दनं । मद्भक्तपूजाभ्यधिका सर्वभूतेषु मन्मतिः ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोपकियो देवोयाकपोलपैयों बाणीकहीप्यारिये । सुनिआंसूभरिआये जाइलपटायेपां यकैसेकहीजाइयहरीतिकछुन्यारिये । भक्तइष्टसुनेमेरेब ड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोकोभईशिक्षाभारिये। बोले उअकुलाइअजूऐपैकहांभायएैसाधुसुखपायकहेंयहीमेरो

ज्यारिये ४१३ मूल ॥ परमहंसबंशनमेंभयोबिभागीबा
नरो। मुरधरिखंडनिबासभूपसबआज्ञाकारी । रामनाम
बिश्वासभक्तपदरजब्रतधारी । जगन्नाथकेद्वारदंडवतप्र
भुपरधायो। दईदासकोदादिहुंडीकरिफेरिपठायो। सुरधु
नीओघसंसर्गतेनामबदलिकुछितनरो । परमहंसबंशनमें
भयोबिभागीबानरो २०७ टीकालाखाभक्तकी॥लाखाना
मभक्तताकोबानरोबखानकियो कहेंजगडौमजासोंमेरोशि
रमौरहै। करैसाधुसेवावहुपाकडारिमेवासंतजेवतअनंतसु
खपावैंकौरकौरहै ॥ ऐसेमेंअकालपर्योआमेंघरमालजा
लकैसेप्रतिपालकरैंताकीओरठौरहै। प्रभुजीस्वपनदियो
कियोमैंयतनएकगाड़ीभरिगेहूंभैंसआवैकरौगौरहै४१४॥

विभागीबानरो॥ भगवानकीभक्तिरूपी संपतिचारोंबां
टिपावैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र काहूसोंघटतीनहीं जैसे
काहूकेचारिपुत्र पंडित मूरखनिर्धनपंगुलासबहीबांटिपावै
कुछित॥नारदपंचरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपिस्थानाद्गंगायामं
भआपतत् । सर्वंभवतिगांगेयकोनसेवतबुद्धिमान्१ दोहा ॥
तुलसीनारोजगतको मिलैसंगमेंगंग । महानीचपनआदि
को शुद्धकरैसतसंग २ नीरनगरकोपरशुराम तासमरत
अज्ञान । साधुसमागमसुरसरी मिलइकहोतसमान ३ ॥

गेहूंकोठीडारिमुहुंमूंदिनीचेदेखौखोलि निकसेअतोलि
पीसिरोटीलैबनाइये। दूधजितोहोइसोजमाइकैबिलोईली
जेदीजेयोंचुपरिसंगछांछदैजिमाइये । खुलिगईआंखेंभा
षेंतियासोंजुआज्ञादई भईमनभाईअजुहरिगुणगाइये ।
भोरभयेगाड़ीभैंसिआईवहीरीतिकरी करीसाधुसेवाकीप्री
तिहूबखानिये४१५ प्रीतिहूबखानकीजेलीजेउरधारिसार

भक्तिनिरधारहै। रहै ढिगगांवतहांसभाएकठांवभईडाटिग
येभाईसोउगाहीकोबिचारहै। बोलिउठ्यौकोऊयोंठ्योहार
कोतौभारचुक्योलीजियेसँभारिलाखासंतभवपारहै।लाज
दबितिनदियेगेहूंलैपचासमन दईनिजभैंससंगसबसरदा
रहै ४१६ मारवाड़देशतेचल्योईसाष्टांगकियेहियेजगन्ना
थदेवयाहीपनजाइये। नेहभरिभारीदेहवारिफरिडारीकै
सेकरैंतनधारीनेकुश्रमसुरझाइये। पहुंच्योनिकटजाइपा
लकीपठाइदईकहैंलाखाभक्तकौंनबेगदेबताइये। काहूक
हिदियोजाइकरगहिलियोअजू चलौप्रभुपासइहिक्षणाहीं
बुलाइये४१७ कैसेचलौपाउकीमैंप्रणप्रतिपालकीजेदीजे
मोकोदानयाहिभांतिजानिहारिये। बोलेप्रभुकहीआपुसु
मिरनीबनाइलायेअबपहराइमोहिंसुनिउरधारिये। चढ़च
ढ़िबढ़कियोचाहेंयहजानी मैंतौपढ़िपढ़िपोथीप्रेममोपैबि
स्तारिये। जाइकैनिहारेतनमनप्राणवारेजगन्नाथजूकेप्या
रेनेकुढिगतेनढारिये ४१८ ॥

बोलोदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहैनदेइ तौ
तातेलाखाकोदीजै २ एकोपिकृष्णस्यकृतप्रणामोदशाश्व
मेधावभृयेनतुल्यः। दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामी
नपुनर्भवाय॥ बडेगहै करहोतबड़ज्योंबावनकरदंड। मौजी
प्रभुको संगबड़गयोअखिलब्रह्मांड॥

बेटीएककारीठ्यहिदेतनबिचारीमनधनहरिसाधुनको
कैसेकैलगाइये। कीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेली
जेमोपैद्रव्यउरनेकहूनआइये। बिदापैनभयेचलेदृगभन
लयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकीअटकाइये। दियोहैस्वपरि

प्रभुजनिहठकरोअजू हुंडीलिखिदईलईबिनयकै जताइये ४१९ हुंडीसोहजारकीलैगृहद्वारआयेजब तामेंतेलगाये सौकबेटीब्याहकियोहै । औरुसबसंतनबुलाइकैखवाइ दिये लियेपगदासमुखराशिअभिलियोहै । ऐसेहीबहुत दामवाहीकेनिमित्तलैलैसाधुभुगताये अतिहरषतहियोहै । चरितअपारकछूमतिअनुसारकहेउलहेउजिनस्वादसोतौ पाइनिधिजियोहौ ४२० ॥

पद ॥ हरिकेजनकी अतिठकुराई । महाराजऋषिराज देवमुनि सकुचिरहत शिरनाई । दृढ़बिश्वास दियोसिंहासन तापरबैठेभूप । हरिजस छत्र बिमल शिरराजत राजत परम अनूप । निश्चिन्तदेश राजकरताको लोकन अति उत्साह । काम क्रोध मद मोहलोभ ये भयेचोरते शाह । अर्थकामकहुं दुरिगये दुरिधर्ममोक्षशिरनाये । बुधिबिबेक दोउ पवंरि पवँरिया समय न कबहूंपाये । अष्टसिद्धिनव निद्धि चातुरी करजोरे आधीनी । छरीदारबैरागबिनोदी भरक बाहिरीकीनी । हरिपदपंकजप्रीतिप्रियाबरताही सों अनुराता । अंबीज्ञान न अवसरपावै बातकहत सकुचाता । मायामोह न व्यापेकबहूं जोयह भेदहि जाने । सूरदास पदरतन टारि गुरुप्रसाद पहिंचाने १ ॥ धनहम तो गुनलाऐसे ॥

मूल ॥ जगतबिदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावन करी । महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने । मालामुद्रा देखितासुकीनिंदाठाने । ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवत शिरोमनि । ऊसरतेसरकियोषंडदोषहिखोयोजिनि । बहुत ठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी । जगतबिदितनरसी

भगतजिनगुज्जरधरपावनकरी२ ०८ टीकानरसीमहिता की॥ जूनागढ़बासपितामाततननाशभयो रहैएकभाईऔभौ जाईरिसिभरीहै। डोलतफिरतआइबोलतपिवावोनीरभा भीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै। आवतकमायेजलप्याये विवसरैकसैपियोयोजुवाबदियोदेहथरहरीहै। निकसेबि चारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै ४२१ बीतेदिनसातशिवधामतेनजातचार परैकाहूतुच्छद्वा रसोऊसुधिलेतहै। इतनीबिचारिभूखप्यासदईढारिलियो प्रगटस्वरूपधारिभयोहितहेतहै। बोलेबरमांगिअजूमां गिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोइप्यारोसोइदेवोचितचेतहै। प र्योशोचभारीमेरीप्राणप्यारीन्यारीतासों कहतडरतवेद कहैंनेतिनेत है ४२२॥

पावनकरी पहले अपावनता कैसीहै जाहिपावनकियो जैसेखाईंगढ़ अरावी बड़ीहोइतौ ताकोसरकरै सोअरमा कहावै अत शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन कीशोभा सोनरसीतौ अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्य कियो १ महास्मारतक लोग स्मारतकृतौयच्छकर्मकरिकै नामलीजे कैसरिजाइ॥ अष्टमे॥ मंत्रतस्तंचतच्छिद्रं देशका लार्हवस्तुत:। सर्वंकरोतिनिच्छिद्रंनामसंकीर्तनंतव ३ ऐसो क्योंबांकीगढ़ी सुरंगसोंटूटैहै॥

दियोमैंवृकासुरकोबरडरभयोजहां वैसेबरकोटिकोटि पापैवारिडारेहैं। बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोम नकोबिचारकहादीजेप्राणप्यारेहैं। जोपैनहींदेतमेरोबोलि बोअचेतहोतदियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं। लायेद्व

न्दाबनरासमंडलजटितमणिप्रियाअनगतबीचलालजूनि
हारेहैं ४२३ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरचतअ
पारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनीन
समतारीदेतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये । ग्रीवकीदुर
निकरअँगुरीमुरनिमुखमधुरसुरनिसुनिश्रवणातापारिये ।
बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछबिनिजीकी
ज्यारिये ४२४ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभईलाल
दीठिपरीकोऊनईयहआईहै । शिवसहचरीरंगभरीअटक
रीबातमृदुमुसुकातनयनकोरमेंजताईहै ।चाहैयाहिटारयो
यहचाहैप्राणवारयोतब श्यामढिगआइकहिनीकेसमुझाई
है । जादोयहध्यानकरौकरौसुधिआऊंजहां आयेनिजठौर
चटपटीसोंलगाईहै ४२५ ॥

बजतमृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारीदोऊमिलरासकोम-
चाइरहेदेखैजोनिहारिबारिहरहीनसंभारहै । तताथेईथेई
करतनृत्यतगति लेतरंगसौभरतपेखसकुचतमारहै । बाजत
मृदंगमुरचंगउठतउमंग गावतहैतालसंगलाग्योप्रेमभारहै।
शरदसमानबनवृन्दाबनप्रगटभयो कहैकबिकौनजाकोपा
वैनहींपारहै १ भागवते ॥ वलयानांनूपुराणांकिंकिणीनांच
योषितां । सप्रियानामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले२ वक्ता
रतेमानिये ३ ॥

कौनीठौरन्यारीविप्रसुताभईन्यारीएकसुताउभयवारी
जगभक्तिबिस्तारीहैं। आवैबहुसंतसुखदेतहैंअनंतगुणगाव
तरिझावतऐसेसेवाविधिधारीहैं। जितीद्विजजातिदुखभा-
योअतिगातमानीबड़ोउतपातदोषकरैनबिचारीहैं। येतोरू
पसागरमेंनागरमगनमहा सकैंकहाकरिचहूंओरगिरिधा-

रीहै ४२६ तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकोऊहुंडीलिखिदे हिंहमैंद्वारकासिधारिबे। जेवरहैदूषिकहीजातहीभगावैभ्र खनरसीविदितसाहआगेदामडारिबे । चरणपकरिगिरि जावेसुलिखावौअहो कहौबारबारसुनिविनतीनटारिबे । दियोलैबतायघरजायवहीरीतिकरीभरीअंकवारिमेरेभाग कहावारिये ४२७ सातसैरुपैआगनिढेरीकरिदईआगेला गेपगदेबोलिलिखिकहेबारबारहैं। जानीयहँकायेप्रभुदाम देपठायेलिखि कियेमनभायेसाहसांवलउदारहैं। वाही हाथदीजेपैलेकीजियेनिशंककाज गयेयदुराजधानीपूछी सोबजारहैं। ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमींड़िडारेपुर तजि भयेन्यारेदुखसागरअपारहैं ४२८॥

कीनीठौरन्यारी॥सवैया॥ देवऔदानवदोऊछलेबलिहू कोछल्योबलिबावनयातें। आनिछल्योसिगरोब्रजवीपुनि ऐसाछलीनहिंऔरहैयातें। होऊछलीछलसोंकह्योविद होजानिपरीनकिशोरकीबातें। सोहिंवरीकुंजिवायोचहै तौकरौकिनवाहीविश्वासीकीबातें२आवैवऊसंत॥दोहा॥ नागरसोहरिरूपपरनागरपगनरसाल। सतआगरजागर सदासेवतसंतमराल२दोष॥दुसहेंदुअतिकठिनहैकठिन अंदमसुसार। अतिअंजुतमेंदुरितरच्यौकाटैकाटअपार ३॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकान्हथैलीधरि कोनपासहुंडी दामलीजियेगिनाइकै। बोलिउठेढूंढ़हारेभलेजूनिहारआ जुकहीलाजहमैंदेतमेंहूपायेआइकै। मेरोहैइकसौवासजा नैकोऊहरिदास लेवोसुखराशिकरोचीठीदीजेजाइकै । घरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोबेरबेर फेरिआइपातीदईलईगरे लाइकै ४२६ देखिआयेशाहदौरिमिलेउत्साहआगेवउरंग

बोरेसतसंगकोप्रभावहै।हुंडीलिखिदईदामलियेसोखवाइ दियेकियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै। सुतासुसरारिभयो कछूकविचारसासदेतबहुगारिजाकेनिपटअभावहै। पिता सोंपठाइकहीछातीलैजराईइन जोपैकछूदियोजाइआवो इहिदावहै ४३० चलेगाड़ीटूटीसीलैबूढ़ेउभैबैलजोरिपहुंचे नगरछोरद्विजकहीजाइकै। सुनतहिआईदेखिमुहपियराई फिरीदामनहींएकतुमकियोकहाआइकै।चिंताजनिकरौजा इसासूढिगढरोलिखिकागदमेंधरौअतिउत्तमअघाइकै। क हीसमुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोपरिहासलिख्यौ गांवखुनसाइकै ४३१॥

आये॥कवित्त॥ बलिजुकेनित्तचित्तरहतहीमेरेहियेहरि जूकीभक्ति मेरेआईहैकिनादिनै। मोरध्वजकरतविचार यहबारबार कबहुंकप्रभुअपनाइहैंकिनाहिंनै। पारषद दोऊसोऊचहतहैंमनको निवेसऔरदेशहमैंहोइगोकि नाहिंनै। गुणगणवानिभगवानजोईलीलाकरैं साधुसुख इच्छाहेतुऔरहेतुनाहिंनै १ जानेहरिदास बोलेहमहरि दासनहीं तुमदामदासहौ मिलेकैसे नरसीजीकेसंगते जो कछूनरसी को लिख्यौ चिट्ठीमेंआयो सोसबदेनौ २॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजा तपाथरलिखायेहैं। रहिबेकोदईठौरफूटीदईपौरिजहां बै- ठेशिरमौरआपबहुसुखपायेहैं। जलदैपठायोभलीभांतिकै औटायोभई बरषासिरायोसेसमोइकैअन्हायेहैं। कोठरी सँभारिआगेपरिदासोदियोडारि लैबजायेतालवैसअगि- नितआयेहैं ४३२ गांवपहरायोछबिछायोयशगायोअहो

हाटकरजतउभैपाथरहूआयेहैं। रहिगईएकभूलेलिखनअ नेकजहां लैहौताहीपासजापैसबमिलपायेहैं। बिनतीक रतिबेटीदीजियेजूरहेलाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबुला येहैं। अंगनसमातिसुतातातकोनिरखिरंग संगचलीआई पतिआदिबिसरायेहैं ४३३॥

नलदैपठायौजललावनवारिबोलेमूड़तौढकोतबकहीबा वरेहोंमूड़उघारिकेलउआछोड़िकै हरिकोभजनकरियेये अपनीओरखैंचेंअपनीओरखैंचें जैसेनिपटऔरबादशाह कोप्रसंग १ लैबनायेताल॥ कवित्त॥ लैकरितालबानीबोले सोरसालसुनियोंनंदलालमैंकहावतबजराजको। तुमगणि-कासीरीतारीप्रह्लादभीरटारी कुबिजासुधारीकान्ह द्रौपदीकीलाजको। चरणछोहीवधिकतारयौगननेपुका-रयौअति केवलरासआयेश्रीसुदामागृहकाजको। नरसी कीबारहरिक्योंअवारलागेआव आयेततकालरूपधरिकै बजाजको २ रहैलाज नाहींतौनाककटैगी तबनरसीजी बोलेकैनाककटैगीतौकृष्णकीरहैगी तापैदृष्टांतबनोहलाल खारीको सुतादोइनरसीकै कुवरसेनारतनसेनायेतौबेठो निकेनामहै आगेविस्तारकह्योहै ३॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमेंएकपतित्यागिएक पतिहूनकियोहै। भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसों धनसोंनभेटकाहूनामकहिदियोहै। आइलागीगाइबेको कहीसमुझाइअहोपाइबेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै। चाहै हरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीजैकीजैबारदूरिरहीप्रेमरस पियोहै ४३४ मिलीउभैसुतारंगझिलीसंसगाइनि बचा-इनिसोंनृत्यकरैभाइनिबताइकै। सालंगहैनाममामामंड-लीकमंत्रीरहै कहैविपरीतिबड़ीराजासोंसुनाइकै। बड़ेबड़े

दंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीभंडीदेशदीजियेकु ड़ाइकै। आयेचारिचोबदारचलौजूबिचारकीजैभयेदरबा रहमेंदियोहैपठाइकै४३५ चारौतुमजावोदूरिभयोहमैंश- जाडर सकैकहाकरिअजूचलेसंगसगही। नाचतबजावत येचलीढिगगावत सुभावतमगनजानीभीजिगईरंगही। आयेवाहीभांतिसभाप्रबलबहुतभई तऊबोलेरीतियह युवतीप्रसंगही। कहीभक्तिगन्थदूरिपढ़ेपोथीपरीधूरि श्री शुकसराहीतियामाथुरनभंगही ४३६॥

पतित्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजैनआपनोसपनेहू भरतार। गुंगपंगुबहिराबधिरअंधअनाथअपार॥ अंधअ- नाथअपारवृद्धबावनअतिरोगी। बालकपंडकुरूपसदाकु- बचनजड़याोगी॥ कलहीकोटीभीरुचोरज्वारीव्यभिचारी॥ अधमअभागीकुटिलकुमतिपतितजैननारी २॥छप्पै॥ पिता बचनप्रह्लादमेटिअपनोमतठान्यो। बलिराजागुरुबचन नेकुहिरदेनहिंआन्यो। दईराभिकोपीठिबिभीषणकुल सरवायो। गोपिनपतिव्रतत्यागिकियोअपनोमनभायो॥ निगमनिरूपहिमंदकर्मकीलगीनहींप्रतिबाइ। हरिधर्मके साधेनगन्नाथअधर्मधर्महैजाइ २ पोथी॥ दोहा॥ पोथीतौ थोथीभईपंडितभयोनकोइ। एकैअच्छरप्रेमको पढ़ैसुपं- डितहोइ १ शुकसराही॥ भागवते॥ धिग्जन्मनःत्रिवृद्वि- द्यांधिग्व्रतंधिग्बहुज्ञतां। धिक्कुलंधिक्क्रियादाक्ष्यंविमुखा येत्वधोक्षजे॥ पद॥ हमसबहिमंदभागभगवानसोंबिमुखभ येधन्यवेनारिगोविंदपूजे। मूंदिरहेनैनहमसबै उलूकज्यों भानुभगवानआयेनसूझे ३ संगगोधनलगेखेलरसरंगमगेभा रकेनिकसिभूखेंआइये। देहुतौभातकरजोरग्वालनकह्यौ अहोभूदेवहमपैपठाये ४ केवलकरुणाटरनिप्रातभोजनका- रनि निगमहूअगमहिआवतावै। कहांप्रभुकौयचनिहम रेमदकीमचनिदेवकीरचनिकछुकहिनजावै५ शौचआचा

रघुकुलहिसेवाकछूकुटिलकरकसहियेबुद्धिदीनी। देखो इनतियनिकोभागयाजगतमें सच्चिदानंदकोरंगभीनी ६ उमंगिपहिलेचलीपारसंसारके सांवरोकुँवरहियमांझपोयो। धरिरहेक्रूरसुरलोकआशाअलपपाइ अमीआशअमतनिचोयो ७ तियाकौतुकमिलीकछुकजानीचली कमलिनीहियोमननामिलावैं। शेषत्रिपुरारिब्रह्मादिसनकादिसुख चरणकोरेणुशिरपरचढ़ावैं ८ यदपिनारायणअवताखदुकुलविषे सुन्यौबहुभांतितौमननआये । देखोयादैवकीमायाअतिमोहनी दईदगधूरि हमसबभुलाये ९ धिकजन्मजातिकुलक्रियास्वाहास्वधा योगयज्ञजपतपसकलधुगहमारे । ज्ञानविज्ञानधनधर्मकछुकर्मनहीं इसपद विमुखआरंभनसारे॥ गृहआगारसंसारदुखसंभवै मिथुन मृगनिरमयामननिलावै । सूरकीशारहरिविमुखनगमें बड़ेबूभिगयोदीपनबबड़कहावै॥ ऐसेसंसारीजीवबड़ेकहावैंसाधुउन्हैंछोटोमानैं॥

बोलिउठोविप्रएकछकप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभरयोढरयोनृपपाइमें। कह्योजूबिराजेगाजेनितसुखसाजेजो जाइकियेहरिराइबशभीजेरहौभाइमें। धारोउरऔरशिर मौरप्रभुमंदिरमेंसुंदरकेदारोरागगावैभरेचाइमें। श्यामकंठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरेविमुखसुभाइमें ४३७ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायोकाचेसूतमें पुहायोहारटूटैख्यातकरीहै। माताहरिभक्तभूपकहोजननिकोकानतऊबाणिराजसकीमायामतिहरीहैं। गयोढिगमंदिरकेसुंदरमँगाइपाटतागोबटवाइकरिमालागुहिधरीहै । प्रभुपहिराइकहेउगाइअबजानिपरै भरैसुररागऔरगायोपैनपरीहै ४३८ विमुखप्रसन्नभयेतबतौउदारनैदेनयेनयेचोजहरिसन्मुखभाषिये। जानेग्वालबालएकमालगहिर

हेहिये जियेलग्योयहीरूपकहेउलाखलाखिये। नारायण बड़ेमहाअहेमेरेभागलिख्यौ करैकौनदूरिछबिपूरिअभि- लाषिये। मरौकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हें राखियेनिशं कहारभक्तिमारिनाखिये ४३६ ॥

नयेनयेबोज ॥ सवैया ॥ अतिसूधोसनेहकोमारगहै जहँ नेकुसयानप बांकनहीं । तहँसांचेचलें तजिआपनपौ झिझकैंकपटी जुनिसांकनहीं। घरआनँदप्यारेसुजानसुनोइत एकतिदूसरोआंकनहीं। तुमकौनधोंपाटीपढ़ेहौललामनले तपैदेतछटांकनहीं १ ॥ प्रणराखिलियोतुमभीषमको रण मेंगजराजके काजकोधायो। देतबिलंब न लायोसुदामहि पावकते प्रहलाद बचायो। दीनदयाल सुने मनोराम सु याहीतें मैं चितदै गुणगायो। मैंतौ गरीब गरीबरह्यो तुम कैसे गरीबनिवाजकहायो। बड़ीगरीबीगोबिंदा जापैहोइ गरीब २ ॥ मेरेभागलिख्यो ॥ श्लोक ॥ लिखितंचित्रगुप्तेन ललाटेचरमालिका। नसापिचालितुंशक्या पंडितैश्चिद- शैरपि १ ॥ कबित्त ॥ दीननकेपाल ब्रजपाल हौ अवधपाल गाइनकेपाल नेकु इतैहूनिहारिये। बैकुंठकेपाल हरिचौ- दहभुवनपालबिरदकेपालनिज बिरद सँभारिये। भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल हेक्षपाल हूजियेदयाल और भांति न बिचारिये। सुरनके पालकहौ सूरतिबिहाल अब येहोजू गोपाल लाल मोहिंना बिसारिये २ ॥ पद ॥ बधिरभयेलौ देवा बधिरभये लौ। अपमो बिरदक्यों बिसरैलौ। कोपियो सडनीकम्हाने सारिसी। मूढडीक धूलिदाबि थापसी भक्तिकरौतौ नरसी। योमारिथोतौभक्तबछलतारौबिरद जाइसी। मलेछनीजाति कबीर उधारो नामानाछाप॥ रागपौछाई ॥ जैदेवनैपद माधती आपीमालाने अवमूक भाई। जाइ न फूल सूतनौधागौ दोइदमड़ीने मोलपावी नरसी ने एकहार लै आपतांता राबापनावा परेस्योना- वी ३ ॥ दोहा॥ आसिक शिर अपनाअरे धरदैपैरौलाइ

वैनिशाफमहबूबको करै दूर अनखाइ ४ ॥ भूलना ॥ जिसदे पैरनपटी थाकोंडा सोघाव दरदक्याजाने । वेदरदानूइसक सुहेला इस्कांजनादेभाने । थिर लाड लटूदेसके सों कछु इस्कसयाने । कहैभगवान हित रामराइप्रभुहारन दिल विचआने ४ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैलैबिवाहजानैतियाएकभक्तकहेह रिकोदिखाइये। नरसीकहीहाँभलैसोईप्रभुबाणीलई सांचकरिलईगयेरागछुटवाइये। बोलेपटखोलिदियेकियेदर्श नताने तानेपटसोवैवहकहीदेवोभाइये। लियेदामकाम कियोकागदगहायदियो दियोकछुखाइबेकोपायोलैभिजा इये ४४० गहनेधर्योहौरागकेदारोसाहघरधरिरूपनर सीकोजाइकैछुड़ायोहै। कागदलैडार्योगोदमोदभरिगा इउठेआयेझनझनश्यामहारपहिरायोहै। भयोजैजैकारनृ पपाइलैलपटाइगयौगह्योहियेभावसोप्रभावदरशायोहै। बिमुखखिसानेभयेगयेउठिनयेमाहिंबिनाहरिकृपाभक्तिप थजातपायोहै ४४१ करनसगाईआयोपायोवरभायोना हिंघरघरफिर्योद्विजनरसीबतायोहै।आइसुखपाइपूछ्यो सुतसोदिखाइदियोकियोलैतिलकमनदेखतचुरायोहै। अ जूहमलायकनतुमसबलायकहौशायकसोछुटोजाइनामलै सुनायोहै। सुनतहीमाथोठोंकिकहैतालकूटावहबालबो रिआयोजावोफेरिदुखछायोहै ४४२ ॥

गाइबेठे ॥ पद ॥ द्योजीद्योजीराज थारा गजनीमाल म्हानैद्योजीराज। कृपाजुकीजेविमुखपतीजे मुखसोंतौवचन कहौजीराज। केशर बरणी कुवँरिराधिका कस्तूरीबरणा

छोजीराज। सांवरी सूरति माधुरी मूरतियह छबि हियरै रहौजीराज। अनाथन नाथ नघूनावाला सुखनासागर छौजीराज। पैठिपताल कालीनागजुनाथ्यो म्हारीकार-णाल्योजीराज। जुहीनाकूल सूतनेधागो सोकाछै गाढ़ गह्यौजीराज। टिमिझिमि करतौ सांवलियो आयोनरसी महिता तुमल्योजीराज॥ चौपाई॥ अहोवक्री दुष्टाने ष्वायो। मारनताहि कुचन विषलायो। दईधाइकी गति पुनिताहि। तादयालुबिन सुमिरोंकाहि॥ २॥

काढ़िकैअँगूठाडारौ तबसोउचारौबातमनमेंबिचारौकि येतिलकबनाइकै। जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागिसब आवैजबव्याहिवेकोधनदैअघाइकै। लगनहूंलिखिदियो दियोद्विजआनलियोडारिराख्योकहूंगावैतालयेबजाइकै। रहेदिनचारियेबिचारिनहींनेकुमन आयेकृष्णारुक्मिणीजू झूमिमिलेधाइकै ४४३ ठौरठौरपकवानहोततियगानक रैघुरतनिशानकानसुनियेनबातहै। चित्रमुखकियोलैबि चित्रपटरानीआपघोरीरंगबोरीपैचढ़ायोसुतरातहै। करी साज्यवनारतामेंमानसअपारआये द्विजनबिचारपोटबांधी पैनमातहै। मणिमयहीसाजवाजिगजरथऊंटकोरझमकै किशोरआजसजीयोंबरातहै ४४४ नरसीसोंकहैगहैहाथ तुमसाथचलोअंतरिक्षमेंहूंचलौंयेतीबातमानिये। कहीअ जूजानौतुमरमैंतौहियेआनौंयहै लहैसुखमनमेरो फैटताल आनिये। आपहीविचारसबभारसोंउठायलियोदियोडेरा पुरीसमधीकीपहँचानिये। मानसपठायोदिनआयेपैनआ येअहोदेखिछबिछायेनरपूंछैजोबखानिये ४४५॥

आयेकृष्ण॥ पंचाध्यायी॥ अनुग्रहायभक्तानां मानुषंदेह

श्रितः। भजतेतादृशींक्रीडांयांश्रुत्वातत्परोभवेत् ॥ २ ॥ मिलैधाइकै। कोउकहैनरसीने कृष्णको साचात् ठाकुर जाने होहिंगे कैराजा कै साहूकारजानेहोहिंगे सोनहीं पुरके न जाने नरसीने हरिहीजाने १ ॥ दशमे ॥ मल्लाना मशनिर्नृणांनरवरःस्त्रीणांस्मरोमूर्तिमान् गोपानांस्वजनो सतांचितिभुजांशास्तास्वपित्रोःशिशुः। मृत्युर्भोजपतेर्विराट विदुषांतत्वंपरंयोगिनां वृष्णीनांपरदेवतेतिविदितो रंगं गतःसाग्रजः॥

नरसीबरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैंऐसो समझअपारहै। आइकैसुनाईसुधिबुधिबिसराईअहोकरत हँसाईबातभाषोनिरधारहै। गयोजासगाईकरिदरवरआ योद्विजनिजअंगमेंनमातकैसेरंगबिस्तारहै। कहीएकघास धनरासस्योनपूजैकिहूं चहूँदिशिपूरिरहीदेख्योभक्तिसारहै ४४६ चलेअचरजमानिदेखिअभिमानगयोलयोपाछोब्रा ह्मणकोहमैंराखिलीजिये। जाइगहिपांइरह्योभाइभरिद याकरोगयेहगभरेपांइपरेकृपाकीजिये। मिलेभरिअंकलै दिखायोसोमयंकमुखहूजियेनिशंकइन्हैंभोरसुतादीजिये। ब्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानैजितैसु निसुनिजीजिये ४४७ ॥ मूल ॥ दिवदासबंशजसोधरस दनभइभक्तिअनपाइनी। सुतकलत्रसंमतसबैगोबिंदपरा यन। सेवतहरिहरिदासद्रवतमुखरामरसायन। सीताप तिकोसुयशप्रथमहीगमनबखान्यो। द्वैसुतदीजेमोहिंक बितसबहीजगजान्यो। गिरागदितलीलामधुरसंतनआ नँददायिनी। दिवदासवंशजसोधरसदनभईभक्तिअनपा इनी २०६ ॥

नरसीबरात् दृष्टिकूट॥ इन्द्राग्रवासीनचपक्षिराजः दुग्धं स्रवंतीनच कामधेनुः। त्रिनेत्रधारीनचशूलपाणिः नारीवना मानचराजकन्या १॥ इमैंराखिलीनें इमतौ तेरेराखेरहे हैं नहींतौ धनहूं जाइगो अरु अयशहोइगो व्याहकरि आये के ऊकहै नरसीकी ऐसीसहायकरी यह तौ बड़ो अचरजहै कवित्तसबहो जगहै॥ दोहा॥ रामरामसबकोउ कहै दशरथकहै नकोइ। एकबार दशरथकहै कोटियज्ञ फलहोइ। दशरथतौ बड़ेई सामर्थ्यमान्हैं जिनके नामसों आठौंसिद्धि नवोनिधिआगेरहैं ३॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे। लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर। सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर। प्रचुरयपयलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी। सकलसुकलसंबलितभक्तपदरेणुउपासी। चन्द्रहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे। श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे २१०॥

रसिक॥ दोहा॥ घरको परनो परिहरयो कहौकौन उपदेश। तुलसी यासों जानिये नहींधर्मको लेश॥१॥ हम चाकर रघुनाथके जन्मजन्मकेदास। रूपमाधुरी मनहरयो डारिप्रेमकीफांस २॥ कबित्त॥ अधरबंधूक औबदन अधिकाईछबि मानोंबिधि कीनीयहरूपको उदधिकै। कान्ह देखीआवत अचानक सुरछगिरे घूँघटउघारि राख्योसखिनकेसधिकै। गंगगईसारिसर मृगगिरघरबेधे अधिकअधीन भयेचितवनि तधिकै। बाणबेधे बधिक बधेकोफेरि खोजलेत बधिक बधूनखोज लियेबाण बधिकै ३॥ लीलापद॥ पहिले तौ देखौआइ माननीकी शोभालाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोबिंद। करपैदीये कपोल रहीहै नयनन मूंदि कमलबिछाय मानोंसोयोहै पूर्णचन्द। रिसभरीभौं

हैमानों भौंरबैठे अरबरात इंदुतरेआयो मकरंद भयो अरबिंद ।नंददास प्रभु ऐसीप्यारीको रुसैये बलिजाके मुखदेखेते मिटत सबै दुखद्वंद ४ ॥ दोहा ॥ जिहिघटबिरह आवा अगिनि परयकभये सुभाइ। ताहीघटमें नंदहो प्रेम अमीठहराइ५ ॥ कुंजकुंज प्रतिपुंजअलि गुंजतइमि परभात। रबिडर तमसब भजिगयो रोवत ताकोतात ६ ॥ अवला निसरी तीरजब नीरचुबत बरचीर । जनुअंसुवनिलागी भरी तनबिछुरनकी पीर ७ ॥

मूल॥ संसारसकलब्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी। भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन । बुधिप्रबेशभागवत ग्रंथसंशयकोखंडन । नरहरिग्रामनिबासदेशवागडनिस्तार्यो । नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदासनब्रतधार्यो। भक्तिकृपावांछोसदापदरजराधालालकी। संसारसकलब्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी २११ माधवदृढ़महिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति। प्रसिद्धप्रेमकीराशिगढ़ागढ़परचोदियो। ऊंचेतेभयोपातश्यामसांचोप्रणकियो। सुतनातीपुनिसदृशचलतऊहीपरिपाटी। भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिंकिहुंअंगघाटी। नृत्यकरतनहिंतनसँभारसमसरजनकनकीसकति। माधवदृढ़महिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति २१२ ॥

जकड़ी साखी अरीसुनि आतमप्यारी लालमनाइलै। पहिलेरी पहरै रैनिके तेनवसत साजे। यह प्रीतमभनभाव तो तेरेनिकट बिराजे । माननकीजे पीयसों अरीतेरो योबनखाजि । दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो। यह योवन बज्ज मोलको लैबिषमें सान्यो। तीजेरीपहरैरैनिकेतू अनजंन चेती । अंगनदियो सुजानके मैंबकीजकेती। फिरि पाछे पछिताइगी मिलिसाहब सेती । चौथेरी पहरैरैनि

के आगि ज्योतिजुआनी। मैंतौतोहिंबक्ततेकहीतैंचितनहिं आनी। येदेखौ पक्कपीरी भई टरैसरवरपानी। खेमरसिक भये भोरके सुंदरि पछितानी १॥ अतिप्रेम॥ दोहा॥ प्रेम भक्ति एकौपलक कोटिबरषकोयोग। प्रेमभक्तिसब योगहै योग प्रेमबिन रोग २॥

माधवदासजीकीटीका॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधवबढ़िप्रे मभूमिलोटैजबनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी। भूपतिबिमुखझूठ जानिकैपरीक्षालईआनतीनिछातिपरदेखोगतिरंगकी। नू पुरनिबांधिनाचिसांचसोदिखायदियो गिरेहूकराहिमध्य जियोमतिपंगकी । बड़ोत्रासभयोनृपदासबिश्वासबढ़ोम ढ़ेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ४४८ ॥ मूल ॥ अभि लाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो। नगअमोलइकता हिसबैभूपतिमिलिजाचै। श्यामदासबहुकरैदासनाहिनम नकाचै। एकसमयसंकटलेवपानीमेंडार्यो । प्रभुतिहारी बस्तुबदनतेबचनउचार्यो। पांचदोइसतकीसतेंहरिहीरा लैउरधर्यो । अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकि यो २१३ टीकाअंगदभक्तकी॥ राइसैनगढ़बासनृपसोस लाहदीनताकोयहकाकारहैअंगदबिमुखहै । ताकीनारी प्यारीप्रभुसाधुसेवाधारीउर आयेगुरुघरकहैकृष्णकथासु खहै। बैठेभौनदेखिकौनकैसेमौनरहोजातबोल्योतियाजा तिकहाकरौनररूपहै। सुनिउठिगयेवधूअन्नजलत्यागि दियेलियेपांवजाइबिषयबशभयोदुखहै ४४९॥

गढ़ागढ़॥भागवते॥ ज्ञानतःसुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपु- ण्यतः। सेयंसाधनसाहस्रैर्हरिभक्तिःसुदुर्लभा १॥ कृष्णकथा

खहैसोगुरुसों पूछें एकनित्यमुक्तितेन पूछै निरवधिविष
योन पूछैमुमुक्षु पूछैजिज्ञासू २॥ छप्पै॥ तातमात सुत भ्रात
आपको बंधनमाने। छुटेकर्म नहिंलेश यहैउरअंतर जाने।
जन्म मरणकी शंकरहै निशिदिन मनमाहीं। चौरासीके
दुःख नेकु नहिं बरणे जाहीं। इहिभांति सदा शोचत
रहैं संतन सों पूछत फिरै। हैकोऊ सतगुरु ऐसोसोमेरो
कारजकरै ३॥

मुखनदिखावेयाहिदेख्योईसुहावैकहीभावैसोईकरोने
कुवदनदिखाइये। मैहूंजलत्यागिदियोअन्नजातकापैलियो
जीयोजबनीकेतबआपकछूखाइये। बोलीमोसोंबोलोजि
निछाड़ोतनयाहीछिनप्राणसांचोहोतोतोपैसुनतसमाइये।
कहौअबकीजैसोइमेरीमतिगईखोई भोईउरदयाबातकहि
समझाइये ४५० वेईगुरुकरौजाइपायनिमेंपरिगयोचाइ
निलिवायलायोभयोसिखदीनहै। धारीउरमालभालति
लकबनाइकियोलियोसीतप्रीतिकोऊउपजीनवीनहै। च
ढ़िफौजसंगचढ्योबैरीपुरमरिबढ्यो कढ्योढोपीलैकैहीरास
तएकपीनहै। डारैसबबेचिपागपेचमध्यराख्योमुख्यभा
ष्योसोअमोलकरयोजगन्नाथलीनहै ४५१ कानाकानी
भईनृपबातमेंसुनिलईकहीहीरावहदेयतौपैऔरमाफकिये
हैं। आपसमझावैबहुयुगतिबतावैयाकेमनमेंनआवेजाइस
बैकहिदियेहैं। अंगदबहनिलागैवाकीभूवापागैतासोंदेवो
विषमारोफेरितूहीपगछियेहैं। करतरसोईघरगरलमिला
यपाकभोगहूलगायोअजूजैबोबोलिलियेहैं ४५२॥

वेई॥दोहा॥ डरबारस डरपरम गुरु डरकरनीमें सार।
खोजीडरै सुजबरै गाफिल पावैमार१ प्रीति॥भागवत॥य-

स्यदेवे पराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ । तस्यतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः २ बज्रयुगति बताके सामदाम दंडभेद सनेह धनभेद ३ भूवासों बोल्यो तेरोभाई अंगद बड़ोदुष्ट है तेरे निमित्तगांवबहुत दियेहैं सो तो को न दियेअब याहि मारि सबदेश को पट्टातोहीं को करिदेहिंगे४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजेंवनको आईसोछिपाइक हीजेंवोकहूंगईहै । जेंवतनबोधहारीतबसोविचारीप्रीति भीतरोइमिलीगुरैरीतिकहिदईहै । प्रभुलैजिमायेरांड़भांड़कैनिकासद्वारदैकरिकिंवाररसपायोआपनईहै । बड़ोदुखहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू बातसुनीनृपहूनेजैसीभांतिभईहै ४५३ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैंआइघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइसन्मुखलेहुबसनहमारोभूपआज्ञाआयेधाइके । बोलेनेकुरहौमैंअन्हाइपकराइदेत हेतमनऔरजलडार्योलैदिखाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुलीजियेउबारीयहबाणीलागीप्यारीउरधारीसुखपाइके ४५४ एतौघरआयेवेतौजलमधिकूदिधायेअतिअकुलायेनेकुखोजहूनपायोहै । राजाचलिआयौसबनीरकढ़वायोकीचदेखिमुरझायोदुखसागर बुड़ायोहै । जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजायआयकैसुनाईनरतनबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउरपरजगमगरह्यो लह्योसुखनैननिकोकापैजातगायोहै ४५५॥

बैठजेंवनकोअंगद जेंवनको बहिनिकीकन्या वा संगलै बैठतौ कन्यासोइ तौ सनेह सो सनेह में भक्तिकैसी यह साचात् लाड़िली लालकी सखी प्रगट भईहै यह स्वरूप सखाबिना औरुकहां अरुहमारे भक्तन के घरमें जन्मै

सो सामान्य जीवहै सोनहीं परकर की जोतिको भाव कियौ भावही सों प्रीति ह्वै है इतमन और अबसेरो वलनहीं पडु ह्वैतबविचारि कही हरि सबजनै सो जलमें डारिदियो सो भगवान ने अलगही लियौ १ सर्वत:पाणि पादेति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकर्योआवैजोपैभागमेंरेब्राह्मणपठायेहैं । धरनोदैरहेकहेनृपकेबचनसबतबहवैदयालनिजपुरढिगआयेहैं । भूपसुनि आगेआइपाइलपटायगयोलयोउरलाइदृगनीरलैभिजायेहैं । राजासर्वसुदियोजियोहरिभक्तिकियोहियो सरस्यायोगुणजानेजितेगायेहैं ४५६ ॥ मूल ॥ चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै । भक्तआगमनसुनतसन्मुखजोजनइकजाई । सदनआनिसतकारसदृशगोबिन्दबड़ाई । पादप्रच्छालनसुहथराइरानीमनसांचैं । धूपदीपनैबेद्यबहुरितिनआगेनाचैं । यहरीतिकरौलाधीशकीतनमनधनआगेधरै । चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै २१४ ॥ टीका ॥ पुरढिगचार्योओरचौकीराखीयेजनपैयोज नहींआवैतिन्हैंलावतलिवाइकै । मालाधारीप्रभुसनमानिआवैकोऊद्वारजोपैकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै । सुनीएकभूपभक्तिनिपटअनूपकथासबकोभंडारखोलिदेतबोल्योधाइकै । पात्रऔअपात्रमोविचारहीजोनहींतोपै कहाऐसीबातदईनैकुमेंउड़ाइकै ४५७ ॥

जगमगरह्यौ ॥ कवित्त ॥ तरवा ललाईनख चंद्रिका सुछबिछाई हियमें समाई वह कैसे कहिजात है। नूपुरादि

चूरा पगधौती पगि रही लगिछुद्रघंटिका अनूप ज्योति जगमगातहै।अंगा बूटेदारबनमालमोतीहीराकांतिकौन कवि उपमाकहन सकात है। तिलक बिशाल माथे चीरा छविजाल जापैकलगी रसाल देखि अंगद सिहात है १ राजाके हियेताप॥ दोहा॥ विषइनि के शिरपर रहैसाधु फूलके गुच्छ। कैवलतन वसभूमि में परेरहै मनसुच्छ २॥

भागवतगावैभक्तभूपएकबिप्रतहांबोलिकैसुनावैऐसी मनजिनलाइये। पावैआसैकौनहृदयभवनमेंप्रवेशकरिभ रिअनुरागकहाउरमधिआइये। करीलैपरीक्षाभाटभिक्षुक पठाइदियोदियोमालातिलकद्वारदासयोंसुनाइये। गयौ गयौभूलिफूलकुलबिस्तारकियो लियोपहिंचानिअबजान कैसेपाइये ४५८ बीतेदिनतीनिबीसआईबससीखसुधिक हीहरिदासकोऊआयोयोंसुनाईहै। बोलेजूनिशाकजावो गावोगुणगोबिंदकेआयेघरमध्यभूपकरीजैसीभाईहै। भ क्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूंनेकुजान्योजान्योउनमानसोपरी क्षामँगवाईहै। दियालैभंडारखोलिलियोमनमान्योद ईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाइये ४५९ आयोवहीराजा पाससभामेंप्रकाशकियोलियोधनदियोपाछेसोईलै दिखा योहै। खोलिकेलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझिबिचा रैहारैमनमेंनआयोहै। बड़ाभागवतबिप्रपंडितप्रबीण महानिशिरसलीन जानिआनिकैबतायोहै। करयोउन मानभक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहिगुण समुझायोहै ४६०॥

उड़ायकै॥ कवित्त॥ सरलसों सटकहैं बक्रासों ढीठकहैं

विनयकरै तासों कहैं धनको अधीन है। छमीसों निबलकहैं दमीसों अदत्तीकहैं मधुर वचन कहै तासों कहैं दीन है। दातासों दंभीकहै निरनेहीसो गुमानी कहैं तृष्णाघटावै तासोंकहैं भागहीन है। साधुगुण देखेअहो तहांहीं लगावै दोष ऐसोकछू दुरजन को हृदोई मलीन है १ भगतभूप है॥ श्लोक॥ पुष्पाणां स्तवकस्येव द्वयोरीतिर्मनीषिणां। सर्वलोकस्य मूर्ध्नि वा विशीर्य्येत वनेपिवा २॥

राजारीझपांवगहेकहेजूबचननीके ऐपैनेकआपजाइ तत्वयाकोलाइये। आयेदौरिपांइलपटायेभूपभावभरे परेप्रेमसागरमेंचरचाचलाइये। चलिबैनदेतसुखदेतच-लेलोलमनखोलिकेभंडारदियोलियोनरिझाइये। उभैसु वासारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईमानोनिधि पाइये ४६१ आयोराजसभावहुबातनिअखारोजहांवेली उठीसारोकृष्णकहोझारिडारेहैं। पूछेंनृपकहोअहोलहो सबयाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं। कोटि कोटिरसनाबखानोपैनपाऊंपार सारसुनिभक्तिआपशीश पावधारेहैं। राखौयहखगतनमनपगिरह्योश्यामअतिअ भिरामरीतिमिलेऔपधारेहैं ४६२॥

उभय सुवासारो॥ अरिल्ल॥ शिरपैठाढ़ो कालयवेर्ड। दे-हि है। भय धुंधमें अंधकहा करिलेहि है। रामकृष्णकहु मूढ़ फेरि पछितहि है। दुनिया दौलत छांड़ि अकेला जाइहै॥ १ भागयो है सुटमरदम बासीकेदते। बली न जीत्योजाय हजारन जैदते। महाराज में अर्जकरौं सुनु कानदै। अरि हामारि बांधिकै छांड़ि याहि जिनजान दै २ पद॥ कोई सुनियो संतसुजान दियो हरिलारे। जोतूकहै मेरे द्रव्य बहुतहै संगन चलै अधेलारे। जोतू कहै मेरे कटुंब बहुतहै

यमलैचले अकेलारे। कहतकबीर सुनौभाई साधौ मनकौ करिलै चेलारे ३ कछ्ण काज छछण काज छछण काज भाई। छाड़गो वही जो प्रभुने बनाई। राखो॥ तामै येकमाफकीर कोदृष्टांत हमारोहाघर जाइगा॥

मूल ॥ लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधर भजी।सदृशगोपिकीप्रेमप्रगटकलियुगहिदिखायो।नरअं कुशअतिनिडररसिकयशरसनागायो। दुष्टनदोषबिचार मृत्युकोउद्यमकीयो। बारनबांकोभयोगरलअमृतज्यों पीयो। भक्तनिशानबजायकेकाहूतेनाहिंनलजी। लोक लाजकुलशृङ्खलातजिमीरागिरिधरभजी २१५॥

लोकलाज॥ कबित्त॥ छीरमें यों नीर ज्यों समानी बूंद सागर में तनमेंसुमन बासभोइगी सुभोइगी। तेरी देखिबेकी बानि नयननिमेंपरीआनि आनिकुल कानि अबखोइगी सुखोइगी। लोक परलोकहू की भूली सुधि ज्यो रामयहैबात मनमांझ म इगीसुभोइगी। रूपउजि-यारे गुणभारे लालप्यारे आंखैताहीसों लगीहैं होनी होइगी सुहोइगी १ गिरिधर भजी गिरिधरने मीरा बाई भजी अथवा मीराबाई जीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीही नेहकी मूर्त्तिहै २॥ कबित्त॥ नेहराज रूप राज रसिक रसाल राज नैन सुखराजलै उठायो गिरि राजहै। छोटेसे करवरअंगुरी पै धरयो गिरिखभीकोसो छत्रकइ रिलिये गजराजहै। हाथनिललाई तामें पङ्-चनिछबिछाई ऊंचो कियो हाथसम छबिको समाजहै। नयननिकी सैनमिसों कहैं अलबेली सखी चोरि चोरि खायोदधिकाम आयो आजहै २ नेकुजो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकजसे हाथनिलै धारयोगिरि भारोहै। प्रेमसों लपटी कहैनेहभरी बात आली लेहरी

लकटु नेकु देहरी सहारो है५ कहै हंसिआली मिलि कामआयो आजु बल खायो दधिमाखन जो चोरिकै ह-मारो है। नेहभरी बातसुनि हियहुलसात मंद मंद मुसुकात मुख रूपको उज्यारो है १ कबित्त॥ सबहीके ग्वाल बाल गोधनहैं सबहीके सबहीको आनि परी प्राणनकी भीरहै। सबहीपै मेघ बरषतहैं सुगोलाधार सबही की छेदछाती करत समीर है। किधौं यह मेरोई अनो-खोढोटा मांगि आन्यौ याबोभिल पहाड़ तर कोमल शरीर है। नेकु याके हाथते गिरिलेहु क्यों न कोऊ तुम जातिके अहीर पै न काहू हिय पीरहै २ सद्दश गोपिका प्रेम॥ कबित्त ॥ पीरी परिगई अरुणई गई आननते कानन गईही सोसयान सुख भाग्यो है। चलि चलि कहै बैन फिरि फिरि जात नैन भईबिन चैनमैन अंगअंग लाग्योहै। काशीराम औरको यतनुकोन गिनती में छण छण छीजै देहनेह रंगपाग्यो है। हरि अवधूत और हेत सों न नीकोइोति भूत नाहिं लाग्यौ याहि नंदपूत ला-ग्यो है ३॥ पद ॥ अबजो यातनको फेरि बनावैं । तऊनंद नंदन बिन ऊधो औरन मनमें आवैं। जो यातनको त्वचा उचेले लैकरि दुंदुभि सजई। मधुरउतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई। छूटैं प्राण मिलै तनमाटी द्रुमलागै तिहि ठाम। सुनि अनसुर फूलफल शाखा लेतउठे हरि-नाम ४ भक्ति निशान बजायके॥ मांझ॥ जिन दांवनि हम महलोंहपे तिनदावनि तेनहिं जाने। पायं दाज न अंदर पहुंचे निंदाकरत खिसाने। कुंजमहल वासिंदा हमनिंदा अहिसानेमाने। वल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये बजि निंदा सहदाने ५ ॥

टीकामीराबाईजीकी। मेरतौजनमभूमिझूमिहितनेम लगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें। रानाकैसगाई भईकरीब्याहसामानईगईमतिबूड़िवारँगीलेघनश्याम में

भाँवँरैपरतमनसाँवरेस्वरूपमांझ तामरेसीआवैंचलिबेको पतिग्राममें। पूछैंपितुमातुपटआभरणलीजियेजू लोचन भरतनीरकहाकामदाममें ४६३ देवोगिरिधारीलालजो निहालकियोचाहौऔरुधनमालसबराखिये उठाइकै।बेटी अतिप्यारीप्रीतिरंगचढ़योभारी रोइमिलीमहतारीकही लीजियेलड़ाइकै। डोलापधराइदृगदृगसोंलगाइचली सुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै। पहुंचीभवनसासुदेवी पैगमनकियोतियाअरुबरमठिजोरोकह्योभाइकै ४६४ देवीकेपुजाइबेकोकियोलैउपाइसासु वरपैपुजाइपुनिबधू पूजिभाषिये। बोलीजूबिकायोमाथोलालगिरिधारीहाथ औरकोननवैएकवहीअभिलाषिये। बढ़तसुहागयाकेपूजे तातेपूजाकरो मतहठकरोशीशपाइनिमेंराखिये।कहीबार बारतुमयहीनिरधारजानौ वहीसुकुमारजापैवारिफेरिना खिये ४६५॥

बिकायो माथौ॥ सवैया॥ पल काटौं इन नयननके गिरिधारी बिना पल अंत निहारै। जीभकटै न भजै नँद नंदन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारै। मीरा कहै जरिजाऊ हियो पद पंकज बिनपल अंत न धारै। शीशनवै ब्रजराज बिना वह शीशहि काटि कुंवाकिन डारै १॥ दोहा॥ रसनकटै आनहिं रटै फूटैं आन लखिनैन॥ श्रवणफुटैतेसुने बिन श्रीराधा यश बैन २ कहीबारबार॥ दोहा॥ यशुदा बारबार यौंभाषै। हैकोउऐसोहितू हमारो चलतगोपा- लै राखै ३॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबरिगईगईपतिपासयहब धूनहींकामकी। अबहींजवाबदियोकियोअपमानमेरोआगे

क्योंप्रमाणकरैभरैश्वासचामकी। रानासुनिकोपकरयोध-
रयोहियेमारिबोईदईठौरन्यारीदेखिरीझरतिवामकी। ला
लनलड़ावैगुणगाइकैमल्हावैसाधु संगहीसुहावैजिन्हेंला
गीचाहश्यामकी ४६६ आइकैननँदकहैगहैकिनचेतभामी
साधुनसोंहेतमेंकलंकलगैभारिये। रानादेशपतीलाजैबापु
कुलरतीजातिमानिलीजेबातबेगिसंगनिरवारिये। लागे
प्राणसाथसंतपावतअनंतसुख जाकोदुखहोयताकोनीकेक
रिटारिये। सुनिकैकटोराभरिगरलपठायदियोलियोकरि
पानरंगचढ़ेउयोंनिहारिये ४६७॥

लागेप्राणसाथ॥ कोऊकहो कुलटा कुलीन अकुलीन
कहो कोऊकहै अंकन कलंकनि कुनारीहौं। कैसेसुरलोक
नरलोक परलोक सब कीनमैं अलोक लोक लोकनतेन्या-
रीहौं। तनजाऊ मनजाऊ देव गुरुजनजाऊ जीभ क्योंन
जाऊटेक टरत न टारीहौं। वृंदावनवारी गिरिधारीकी
मुकुटपर पीतपटवारेकी मैं मूरतिपै वारीहौं १॥ तारेक्यों
नतजौं रैनि नयनभीश क्योंनतजो जीवक्योंन जाऊ सोउ
अबहीं यातनते। तनक्योंन जरिजाऊ जरिक्योंन छारहोऊ
छार क्योंन उड़िजाऊ बिरह पवनते। सैनकहै वहचलनि
चितवनि वनिमनबसीरी जबते आयेबनवारी बनेबनते।
जानोह्वै सुजाऊ अबरहै सोतोरहो आली माधवजीकी
प्रीति जनिजाऊ मेरेमनते २॥

गरलपठायोसोतौशीशपैचढ़ायोसंग त्यागविषभारी
ताकीझारनसम्हारीहै। रानानेलगायोचरबैठसाधुढिग
ढरितबहींखबरिकरिमारोअहधारीहै। राजैगिरिधारीला
लतिनहींसोंरंगजालबोलतसहतख्यालकानपरोप्यारीहै।

जाइकैसुनाईभईअतिचपलाईआयो लियेतरवारिदैकिवांड़खोलिन्यारीहै ४६८ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहरदियो हमजानी । जिन हरि मेरोन्याव निबेरो छान्यो दूध अरुपानी । जबलगि कंचन कासियतनाहीं होत न बारहबानी । अपनेकुलको परदाकैले हौंअबला बहुरानी । स्वपचभक्तपरवारौंबिमुख सब हौं हरिहाथ बिकानी । मीराप्रभुगिरिधर भजिबेको संतचरण लपटानी १ ॥ दोहा ॥ बड़ीभक्तिमीरागहीराना के बड़ीभूल । चरणामृतकहि बिषदियोभयोसजीवनिमूल २ ॥ चपलाई ॥ चौपरिखेलौं पीवसौं बाजीलावौंजीव । जो हारौं तौपीवकी जोजीतौंतौपीव ३ ॥ वेगिदै बताइये तरवारि हाथमें नांगीहै कैवहबिषयीनरकहांगयो ४ दोहा ॥ निकटबस्तु दीखैनहीं धृगजीवनहैंजिंद । तुलसीऐसेजगत को भयोमोतियाबिंद ५ सबैचतुर अरुबड़े हैं अपने अपने ठौर । सबतजिकै हरिकोभजै सोइचतुर सिरमौर ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंग नानाकहांवहनरगयोबेगिदैबताइये। आगेहीबिराजेकछूतोसोंनहींलाजेअभूदेखि सुखसाजेआंखिखोलिदरशाइये। भयोईखिसानोरानालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानोकियोनेकुमनआइये। देख्योहूप्रभावऐपैभावमेंनभिद्योजाइ बिनहरिकृपाकहोकैसेकरिपाइये ४६९ बिषयीकुटिलएकभेषधरिसाधुलियो कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये। आज्ञामोकोदईआप लालगिरिधारीअहोशीशधरिलेईकछूभोजनहूकीजिये। संतनसमाजमेंबिछाइसेजबोलिलियोशंकअबकौनकीनिशंक रसपीजिये। श्वेतमुखभयोबिषयभावसबगयोनयोपांयन मेंजाइमोकोभक्तिदानदीजिये ४७० रूपकीनिकाईभूपअ

अकबरभाईहियेलियेसंगतामसेनदेखिबेकोआयोहै। निरखिनिहालभयोछबिगिरिधारीलाल पदसुखजालएकतबहींचटायोहै। वृन्दावनआईजीवगुसाईंजीसोंमिलिझिलीतियामुखदेखिबेकोपनलैछुड़ायोहै । देखोकुंजकुंजलालप्यारीसुखपुंजभरीधरीउरमांझआइदेशबनगायोहै४७१॥

भाई अकबरने तामसेनसों पूछी सांवरेपै सबरीभीहैं तबहीं मीराबाईपै तब दर्शनको आयो १॥ पदसुखजाल १ पद ॥ प्यारीके कचबिथुरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे बड़ीबड़ीबूंदें। तामधि मुक्तावग पांति तरौना अलकबीच विज्जुलतासी कौंधनिनैन खंजनरी पिक बोलनि बोलेंरूंदें । लालसारी पहरैहरी कोर मघवा धनुसी. घूंघटकरि चलीपीठपाछे तेतरकेलाल सुनियांसी कांचुकीतनीकी फूंदें। मेहँदीसों आरक्तनखबीरबहूटी ऐसी पावस बनितामिली मीरागिरिधरखुलेकाम प्रीतिकाम हारगूंदें २॥

रानाकीमलीनमतिदेखिबसीद्वारावति रतिगिरिधारीलालनित्यहीलड़ाइये । लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूपजानिअतिदुखमानिविप्रश्रेणीलैपठाइये। बेगिलैकैआवोमोकोप्राणदैजिवावोअहोगयेद्वारधरनोदैबिनतीसुनाइये। सुनिबिदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोराखोहीनलीनभईनहींपाइये ४७२ ॥ मूल ॥ आवैरअछितकूमकेद्वारकानाथदर्शनदियो । श्रीकृष्णदासउपदेशपरमतत्त्वपरचोपायो। निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो। काछबाछनिःकलंकमनोगांगेययुधिष्ठिर । हरिपूजाप्रहलादधर्मध्वजधारीजगपर । पृथ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रमं

डितकियो । आवेरअछितकूर्मकोद्वारकानाथदर्शनदियो २१६ पृथ्वीराजराजाकीटीका॥ पृथ्वीराजराजाचल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंगअतिरसरंगभर्योआज्ञाप्रभुपाइये । सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीपग्योसाधुसेवाभक्तिपुरछाइये।देखियेनिहारिकैबिचारकीजैइच्छाजोईलीजेनहींसाथजावोबातलैदुराइये । आयोभोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरहेउकहोरहोदेशसोनिदेशनसुहाइये ४७३ ॥

बिदाह्वैनगई॥ पद ॥ हरिकरो जनकीभीर। द्रौपदीकीलाजराखी तुमबढ़ायो चीर। भक्तकारण रूपनरहरि धरयोआपशरीर। हिरण्यकश्यप मारिलीनो धरयोनाहिंन धीर। बूड़ते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर। दास मीरालालगिरिधर जहांदुख तहँपीर १॥ सज्जनसुधि ज्यों जानो त्योंलीजे।तुमबिनमेरोऔरनकोईकृपारावरीकीजे। द्योसनभूखरैनि नहिंनिद्रा यहतन पलपलछीजै । मीरा प्रभुगिरिधर नागर अब मिलि बिछुरन नहिंकीजै २॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीस्नानकरों धरोंभुजछापअायमनअभिलाखिये । चिन्ताजिनिकीजै तीनोंबातइहांलीजैअजूदीजैजोईआज्ञासोईशिरधरिराखिये । आयेपहुंचाइदूरिनैनजलपूरिबहेदहेउरभारीकहांसंगरसचाखिये । बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोइ गईभक्तिगिराआइबाणीमध्यभाखिये ४७४ अहोपृथ्वीराजकहीस्वामीहीसोंबानोलहीआयोउठिदौरिवाहीठौरप्रभुदेखेहैं । धम्योकहयोकानधरोगोमतीस्नानकरोसुनिकैअन्हायोपुनिवेनककूपेखेहैं।शंखचक्रआदिछापतनसबठ्यापिगईभईयोंअवाररानीआइअवरेखेहैं । बोलेरह्योनीरमेंशरीरलैसनाथकीजै

लीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ४७५ भयोजबभोर पुरबड़ोभक्तशोरपर्योकर्योआनिदरशनभईभीरभारीहै। आयेबहुसंतऔमहंतबड़ेबड़ेधाये अतिसुखपायेदेहरचना निहारीहै। नानाभेदआवेंहितमहिमासुनावैंराजा सुनत लजावेंजानीकृपाबनवारीहै। मंदिरकरायोप्रभुरूपपधरा योसबजगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ४७६ वि-प्रअंगहीनसोअनाथवैजनाथद्वार पर्योचपचाहैमासकेति कबिहानेहैं। आज्ञाबारदोइचारभईहैफेरिहौंहियाकोहाठ सारदेखिशिवपिघलानेहैं। पृथ्वीराजअंगकेअंगोछासों अंगौछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरबड़रानेहैं। नयोमँग वायोतनछाइदियोछायोनैन खुलेचैनभयोजनलखिसर सानेहैं ४७७॥

मधुभाषिये भगवान ने बिचारी कृष्णदासजी तीन बातें देनीकहि गयेहैं सो देचुको पाछेकृष्णदास द्वारकाआवेंगे उनकी मनुहारि करनी होयगी स्वामी कीसी बाणी कही क्योंकि राजा को कृष्णदासजी की बाणी में प्रीति बहुतरही है॥

मूल ॥ भक्तनकोआदरअधिकराजबंशमेंइनकियो। लघुमथुरामेंरताभक्तअतिजैमलपोषे। टोड़ेभजननिधान रामचन्द्रहरिजनतोषे। अभैरामइकरसनेमनीमाकेभारी। करमशीलसुरतानभगवानबीरभूपतिब्रतधारी। ईश्वर अछैराजराइमलकाहरमधुकरनृपसर्बसदियो। भक्तन कोआदरअधिकराजवंशमेंइनकियो २१७ टीका॥ मेरते वस्तुभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथा क-

हिआयेहैं । करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभईनईए कसुनोहरिकैसैकैलड़ायेहैं । नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दर बिचारीबात छातपरबँगलाकेचित्रलेबनायेहैं । बिबिधि बिछौनासेजराजतउठौनापान दानधरिसोनाजरीपरदा सिवायेहैं ४७८ ॥

नीचेमानमन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरेतहिखाने तामेंखासे खसखाने सोंचे अतर गुलाबन सों ब्यालर पठतिहै । भूधर सुधारेहौद छुटत फुहारे अरु भारे भरतावदान धूपदपट-तिहै । ऐसे में गवन कहि कैसे करि कीजै बलि सौंधकी तरंग आनि अंग लपटतिहै । चन्दन किंवारघनसारके प-गारचारु तऊआनि ग्रीषम की झार झपटति है १ बिछे हैं बिछौना घनसारके नवीने तामें कीनेछिरकाव तरअत-रगँभीरके । गुलवे गुलाबके फुहारे छूटैं ठौर ठौर उठत झकोरतामें त्रिविधसमीरके । सेज अरबिंदन की चंदनकी चोली चारु औ गोबिंद सुमन शृंगारहैं शरीरके । झमक मनक सोवनिका बनिबैठी आजु राधिका रवन संग भवन उसीरके २ ॥

ताकीदारुसीठोकररचनाउतारिधरे भरेदूरिचोकीआ यभावस्वच्छताइये । मानसीबिचारैलालसेजपगधारै पानखातलैउगारडारेपौढ़ेसुखदाइये । तियाहूनभेदजानै सोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोयोंफिरीभोरआइये । पतिकोसुनाईभईअतिमनभाईवाको खिजिडरपाईजानी भागअधिकाइये ४७६ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकर शाहनामकियोलैसफलयाते भेषगुणसारग्राहतजतअसा रहै । ओंडछेकोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारीजा

केऔरनबिचारहै। कंठीधरिआवैकोऊधोइपगपीवैसदाभा
ईदुखघरघरडार्योभालभारहै। पाइपरछालिकहीआजुजू
निहालकियेहियेद्रयेदुष्टपावगहेदगधारहै ४८० मूल ॥
खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन । रैनापरगुण
रामभजनभागवतउजागर । प्रेमीप्रेमकिशोरउदरराजा
रतनाकर । हरिदासनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी । निर्भ
यअनन्यउदाररसिकयशरसनाभारी । दशधासंपतिसंत
बलसदारहतप्रफुलितबदन । खेमालरतनराठौरकेअट
लभक्तिआईसदन २१८॥

भेषगुणसारग्राही भवँरवत् सारग्राही मक्षिकावत्अ-
सारग्राही दोषीभाइनिनेखरको माला तिलकदैकै राजा
केभेज्यो रानाने वाही चरणोदक लियो राना के गुरु
व्यासदेवजू वहींरहेहैं यचपदबनाय॥ पद ॥ भक्तबिनकिनअ
पराधसह्यो। कहा कहानि असाधनि कीनों हरिबलधर्म
रह्यो। अधमरान मदमाति लैरथ सोजड़ भरतनह्यो। पट
झपटत द्रौपदीन मटकी हरि को शरणचह्यो। भक्तसभा
कौरवन बिदुर ज्यों कहाकहानकह्यो। शरणागतआरत
गजपति को आपन चक्र गह्यो। हाहरिनाथ पुकारत
आरत कौन ओर निबह्यो। व्यास बचन सुनि मधुक-
रशाह भक्तिपथ सदागह्यो। कत्मिनसा कत को सुङ्का
रो। साकत मोहिंनदेखेभावत कह बूढ़ो कहबारो। सा-
कतदेखतडरलागतहै नाहरहूतेभारो। भक्तनसों कुबचन
बोलतहैंनेकुडरैमव्यारो। आठैचौदशिकूडोपजतअभागेको
ज्ञान अँध्यारो। व्यासदासयहसंगति तजियेभजियेश्याम
सवारो १॥ पद॥ जो सुख होत भक्त घरआये। सो सुख
होत नहीं बहु संपति बांझहि बेटा जाये। जो सुखभक्तनि
को चरणोदक गातहि गात लगाये। सोसुख सपनेहूनहिं

पइयत कोटिक तीरथन्हाये। जोसुखभक्तनिको सुखदेखत उपजत दुख बिसराये। सो सुखकबहुं होत नहिंकामी कामिन उर लपटाये। जो सुख होत भक्तबचननसुनि नैननिनीरबहाये। जो सुख कबहुं न पइयतुहै घर पूतको पूत खिलाये। जोसुखहोत मिलत साधुनके छणछण रंगबढ़ाये। सोसुखहोतनरंकब्यासको लंकसुमेरछिपाये ३ असार को लेहिंनहीं सारकोसंग्रहै साधुगुणहंसके ४ जैसेमधुकर शाहकामीकृष्ण क्रोधीन्द्रसिंह लोभीबामन मोहीरामचंद्र ऐसे अवगुणमेंगुणलेहिं हरिहीकीइच्छामानै नारदजीभक्तराजहैं पै उनहींने शाप दियो सनकादिक भगवानरूप हैं उनहूंने शाप दियो पैभलोही करयो ऐसे साधु जोकरैं सो भलोही करैं यह सार लै लेहिं ५ ॥ कवित्त ॥ काठ की कठारी करि तपसी भरिवारिलेत काठको सँवारि धाम श्यामकोबैठावहीं। काठकीकमानशरकाठके बनाइ लेतकाठीकाठ चढ़ि शूरशत्रुजीतिआवहीं। काठकीसुमिरनीकै साधुरामनामलेत काठकोपषाणघिसि देवको चढ़ावहीं। काठकी अवज्ञाको कहत बनिआवै नाहिंनावचढ़ि काठकीधौं तबै पार पावहीं ६ काठकी बस्तु महाअमोल गनिये काठ तरणतारण है॥

मूल॥कलियुगभक्तिकरीकमानरामरेणुकैऋजुकरी। अजरधरयआचरयोलोकहितमनोंनीलकँठ। निंदकजगअनिराइकहामहिमाजानेगोभूशठ। बिदितगांधर्वीब्याहकियोदुइकुंतप्रवाने । भरनपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखाने । औरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी । कलियुगभक्तिकरीकमानरामरेणुकैऋजुकरी २१६ टीका॥ पूनोमेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास बिबिधिबिलासनृत्यरागरंगभारीहै । बैठेरसभीजिदोऊबोल्योरामराजारीझिभेटकहाकीजेविप्रकहीजोईप्यारीहै।प्यारकोबिचारैननिहा

रैकहूंनेकुछटासुतारूपघटाआनरूपसेवाज्यारीहै । रहीस भाशोचआपजाइकैलिवाइलाये भेषसोंदिवायेफेरेसंपतिलै वारीहै ४८१ ॥

ऋजुकरीनरसकरी ॥ कवित्त ॥ पनच पुरानी बहिपानी यों धनुषआयो छुवत छूटकभयेताकोकहाकरिये । आलम अलप अपराध साधु जियजानि छमाकीजैछीणकी जकित क्रोध मनधरिये । सूझततौ द्विजवर पूजियेन जूठवर कठिन कुठारआनि कंठपर धरिये । गुरुमति लोपियेन पूजेपरको पियै न तासोपांय रोंपिये न ताकेपाइं परिये १ प्रकाश भयो॥रूपको रीझसों प्रेमपग्यो किधौंप्रेमकीरीतिहिरूप सोंपागी । मनसा बशमें न जगीकबिमंडन कैमनसा बशमैन केजागी । लाजहिलै कुलकान भगी औकिधों कुलकानि लै लाजहिभागी । नयनलगे वहि मूरतिसोंरी किधौंवहि मूरति नयननलागी २ ॥ नृत्यअरु गान बतरान सुसुर कान देखि बिह्वल बिकलह्वैकै सकल बिकैचुके । बड़ेबड़े धर्मदास तेऊलयेमारि सों संभारिहनसकैहरिसर्वसुहृदेचुके । नीर भरी अँखियनको अँखियन येभीरअति ऊरध अधीरगति मति बिसरै चुके । ऐसोऐस देखिकै श और ऐस देखअब मनकेश्रवण नयन यहैपन लैचुके ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासनिसोंरामघरनिसांचीरही । आरजकोउपदेशसुतोउरनीकेधार्यो । नवधादशधाप्री तिआनधर्मसबैबिसार्यो । अच्युतकुलअनुरागप्रगटपुरु षारथजान्यो । सारासारबिबेकबाततीनोंमनमान्यो । दा संतनिअनन्यउदारतासंतनमुखराजाकही । हरिगुरुहरि दासनसोंरामघरनिसाचीरही २२० टीका ॥ आयमधुपु रीराजारामअभिरामदोऊदामपैनराख्यो साधुबिप्रभुगता

येहैं । ऐसेयेउदाररहिखरचसँभारनाहिंचलिबोबिचारभ येचूरादीठआयेहैं। मुद्रासतपांचमेलखोलितियाआगेधरे दीजेबेंचिगयेनाभाकरपहिरायेहैं । पतिकोबुलाइकहीनी कदेखिरीझेभीजेकाटिकैकरजपुरआयेदैपठायेहैं ४८२ ॥

मूल ॥अभिलाषउभैखेमालकातेकिशोरपूराकिया।पांयननू पुरबांधिनृत्यनगधरिहितनाच्यो । रामकलसमनरलीसी सीतातेनहिंबांच्यो । बाणीबिमलउदारभक्तिमहिमाबि स्तारी । प्रेमपुंजशुठिशीलबिनयसंतनरुचिकारी। सृष्टिस राहैंरामसुचलघुवेसलक्कनआरजलिया । अभिलाषउभय खेमालकातेकिशोरपूराकिया २२१ ॥

हरिगुरु दासनसों सांचो होइ भक्तितबहीं सांची जैसे प्रवानेोतौ सांचीभक्तिमेंतौ सबही कहै हैं आप बड़मोल वस्तपहिरै हरिको घोड़मोल लालजूको अथवाभजनकं क- रिकै फलचाहै सो सांचोनहीं और भजनकरतेकछुबिघन होइ तब हरिकोदेइ तौ सांचोही भजनकरिकै भक्तही चाहै सांचौकिशोर १ ॥ कुंडलिया ॥ मारिबफाती खीचरी यहघर आजनकालि। यहघरआज न कालि धौलधरधूवां कैसो। तन तुसार को तार ताहि नर थिर करबैसो । सपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरयो। पुनि जागते कहौ प्रातकाको त्रण तोरयो। जापीसंती फांकियो अगर सुउत्तम चालि। मारिबफाती खीचरी यहघर आजन कालि २३।४।५।६॥

टीका ॥ खैमालरतनतनत्यागसमयअश्रुपातबातसुत पूछेअजूनीकेखोलिदीजिये। कीजेपुण्यदानबहुसंपतिश्रमा नभरीधरीहियेदोईसोईकहीसुनिलीजिये। बिबिधिबड़ाई

संसमाइमतिभईयेननितही बिचारअबमनपरखीजिये। नीरभरिघटशीशधरिकैनलायोऔरुनूपुरिनिबांधिनृत्यकियोनाहिंक्षीजिये ४८३ रहेचुपचापसबैजानीकामआपही कोबोल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजिये। यहीनितकरोनहिंटरौजोलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिक्षातीलाइलीजिये। बहुसुखपायोपायेवैसेहीनिबाहेपनगायेगुणलालप्यारीअतिमतिभीजिये। भक्तिबिस्तारकियोवैसरुघुभीज्योहियोदियोसनमानसंतसभासबरीझिये४८४ मूल॥ खेमालरतनराठौरकेसुफलबेलिमीठीफली। हरीदासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो। भजनभावपरिपक्कहदैभागीरथजलसो। त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरीतिनिबाही। हरिगुरुहरिबल्लभांतितिनहिंसेवादृढ़साई। पूरणइंदुप्रमुदितउदधित्योंदासदेखिबाढ़ैरली। खेमालरतनराठौरकी सुफलबेलिमीठीफली २२२॥

खीजिये॥ दोहा॥ जबलगि रँगह्यो बिन रँग्योहरिरँग माहिंमजीठ। अबमूरखसाथौधुनै अबरँगदीनीपीठ १॥ मनबरूद तनजामगी तुलसी बरकन्दाज। प्रेमपलीतीदगगइ निकसीआहि अवाज २॥ प्रेमबिना हरिना मिलैंकोटि यतनकरिकोइ। जैसेगुणबिनकूपजलआवैहाथनसोइ॥

मूल॥ हरिबंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो गायोभक्तिप्रतापसबहिदासत्वदृढ़ायो। श्रीराधाबल्लभभजनअनन्यताबरगबढ़ायो। मुरलीधरकीक्षापकबित्तअतिहीनिर्दूषण। भक्तनकीअंघ्रिरेणुबहैधारीशिरभूषण। संत

संगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्योहियो। हरिवंशचरणब लचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो २२३॥

गायोभक्तिप्रताप दिखायोजैसेनिपटने॥ छप्पै॥ सुपन पहिरि यज्ञोपवीत करिकथन गहतजब। कारमकरै अघपरै डरैपुनि बिप्रवचासतब। पुनिललाट पाटतिलकदेइ अरु तुलसी मालधरि। हरिकेगुण उच्चरै पायकुलकर्महि परि- हरि। चतुर्भुजपुनीत अंत्यजभयो मुरलीधर शरणो लियो। तिहिपाछे किनिलागिये जिनलोहपलटि कंचनकियो १॥

टीकास्वामीचतुर्भुजकी॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहून देख्योकहूंमानसकामारिइष्टदेवकोबढ़ायोहै। तहांजायदे वताकोमंत्रलैसुनायोकानलियोउनमानिगावसुपनसुनायो है। स्वामिचतुरभुजजूकेबगितुमदासहोहुनातोहोहिनाश सबगांवभज्योआयोहै। ऐसेशिष्यकियेमालाकंठीपाइजिये पांवलियेमनदियेऔअनंतसुखपायोहै४८५॥

जहांजाय देवताको मंत्रलै सुनायो॥ कबित्त॥ छलक- ति छलतजि गोकुलकी गैलभजो कुब्जा चुरैलपगी सनबत कायहै। आयेहैं सुखारीहैंकरतहैं भिखारीप्रीतिपाछिली बिसारी येहो यहकछून्यायहै। अहो घनश्याम यहनीति ब्रजबामसन लहै न बिश्राम मरिरहीकौनज्यामहै। मरण उपाइ यहै देखे सुखपाईजोई काहूकल पाइहै सोकैसेकल पाइहै ३॥

भोगलैलगावैंनानासंतनिलड़ावैं कथाभागवतगावैंभाव भक्तिबिस्तारिये। भज्योधनलैकैकोऊधनीपाछेपर्योसोऊ आनिकैदबायोबैठिरह्योननिहारिये। निकसीपुराणबात करैनयोगातदिक्षाशिक्षासुनिशिष्यभयोगयोयोंपुकारिये।

कह्योयाजनममेंनलियोकछुदियोफारो हाथलैउबारोप्रभु रीतिलागिप्यारिये ४८६ राजारूठमानिकह्योकरोबिन प्राणप्राकोसाधुयेबिराजमानलैकलंकदियोहै । चलेठौर मारिबेकोधारिबेकोसकैकैसे नैनभरिआयेनीरबोल्योतन लियोहै।कह्योनृपसांचोहवैकैझूंठोजिनिहूजैसंतमहिमाअ नंतकहीस्वामीऐसोकियोहै।भूपसुनिआयोउपदेशमनभा योशिष्यभयोनयोतनपायोभीजगयोहियोहै ४८७पकि रह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जितेरखवारेमुखसेतशोर कियोहै। कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबड़ोकामभयोयहतो हमारोसोईआपुसुनिलियोहै। लैकैमिष्टान्नआपुसुमुखब खानकियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै। लैगयो लिवाइनानाभोजनकराइभक्ति वरचाचलाइचाइहितरस पियोहै४८८ मूल॥ चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंत लोंअनुसरी।शक्रकोपिशुठचरितप्रसिद्धिपुनिपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनबिधिगाई।गिरिराजधर णिकीछापगिराजलधरज्योंगाजै।संतशिखंडीखंडहृदयआ नंदकेकाजै। जाड़ाहरणजगिजाड्ताकृष्णदासदेहीधरी। चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंतलोंअनुसरी२२४॥

निकसीपुराणबात ॥भागवते॥ शृण्वतांस्वकथाःकृष्णःपु- ण्यश्रवणकीर्त्तनः। हृद्यंतस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सतां दूसरोजन्म कैसेभयो ॥ आगमे ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेनमा यादूरमुपागतः। कृपयाशुरुदेवस्यद्वितीयंजन्मकथ्यते २ नारदपंचरात्रे॥ श्लोकः॥ पितृगोत्रंयथाकन्या स्वामी गोत्रेणगोत्रिका ॥ श्रीकृष्ण भक्तिमात्रे णाऽच्युतगोत्रेण- गोत्रिका २ दियोफारो॥ दोहा॥ सामनकंघनसारहैजेठ

मास घनसार॥ बनहूमेंघनसारहै भूठेको घनसार ४॥

बिमलानंदप्रबोधबंशसंतदाससीवांधरम । गोपीनाथपदरागभोगछपनभुजाये । पृथुपद्धितअनुसारदेवदंपतिदुलराये । भगवतभक्तसमानठौरद्वैकोबलगायो । कवित्तशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपायो । जनमकरमलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । बिमलानंदप्रबोधबंशसंतदाससीवांधरम २२५ टीका॥ बसतनिमाईग्रामश्यामसोंलगाईमतिऐसीमनआईभोगछपनलगायेहैं । प्रीतिकीसँचाईयहजगमेंदिखाईसबैजगन्नाथदेवआपरुचिसोंजिमायेहैं। राजाकोस्वपनदियोनामलैप्रगटकियो संतहीकेगृहमेंतोजेवोंयोंरिझायेहैं । भक्तिकेअधीनसबजानतप्रवीनजनऐसेहैंरँगीनलालठौरठौरगायेहैं ४८६ ॥

युगत तापैचनागेहूंकैन्यायको दृष्टांत॥ प्रीतिकीसचान जगन्नाथ को छप्पन लगैहैं अपने ठाकुरको गोपीनाथ को मैंहूं लगाऊं घरको धन सब लगायो कर्ज हू काढ्यो तब बिचारो कैतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीतो सबही उड़ाऊंसो भगवानने चोप करिकै राजा को स्वपन दिखायो नामख्यात कियो भूंठोपनहोतो छप्पनभोगकी नाईं बनाहू न मिलते १ भक्ति दियोपावै उद्यम क्यों कियो सो दृष्टान्त हमने न जान्यो २ ॥

मूल॥ मदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल। गानकाव्यगुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधाकृष्णउपासिकरहसिसुखकेअधिकारी । नवरसमुख्यशृंगारबिबिधभांतिनकरिगायो।बदनउच्चरतबेरसहसपायनह्वै

धायो। अंगीकारकीअवयियहज्योंआख्याभ्राताजमल।
श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल २२६
टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनाममैंनकंज
अभिरामफूलेझूलेरंगपीकेनीकेजीकेओरज्यायेहैं। भयेसो
अमीनयोंसंडीलेकेनवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदामबीसगु
णलायेहैं । कहीपूवापावैंआपमदनगुपाललालपरेप्रेम
ख्याललादिछकरापठायेहैं। आयोनिशिभयोश्यामकियो
अज्ञायोगलैकेंअबहींलगावोभोगजरिफिरिपाछेहैं ४६०
पयेदलबनायोभक्तिरूपदरशायोदूरिसंतनिकीपानहींको
रक्षककहाऊंमैं । काहूसीखिलयोसाधुलियोचाहैपरचेको
आयेद्वारमन्दिरकेखोलिकहीआऊंमैं। रह्योबैठिजाइजूजी
हाथमैंउठायलीनीपूरीआशमेरीनिशिदिनगाऊंमैं। भीतर
बुलावैंगुसाईंबारदोईचारि सेवासौंपीसारिकह्योजनपद
ध्याऊंमैं ४६१ ॥

शृंगार॥ कबित्त॥ लालभये लटूभट ठाढ़ेहैं अटाकेनीचे लालची रह्योलुभाइ टकीसी लगाइकै । गोकुलकीबधू बिधु सुखके अवलोकिबेको नीकोएकतान उठ्योबांसुरी बजाइकै। सुनिधुनि वाकी श्रवण परीकाम्बीराम अतिअकुलाइकै झरोखनि झांकी आइकै। खोलिकैकिंवारी बन नारीतहां देखैंझांकि गिरिपरयोहै गोपाल फिरिकीसी खाइकै १॥ प्यकि निहारि पियप्यारीरूप धारिहग ऊरध कैवारी पानकरै लखे बनको। बिरल सुधारकरि अँगुरिन धारिपल गतिहि निवारि भावै अंतरन छिनको। त्योंही वहनारि प्रीतिरीति उरधारि छांड़ असुन तरवारिदेखी प्रेम दुहुनको। सरति निहारियह कीनो निरधारिछांड़ै तन तरवारि देखो प्रेम दुहुयनको॥ पद॥ सखीके पाछे

ठाढ़ी बदन नीको लागत मानों कंचन गिरिते उदयराशिन वसितकिये। सोहतरीमाथेविंदुला कुमकुमको दिये कर दीपलिये नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंगनयनी राकारी संगलिये। सूरदास मदन मोहनके लोचन आतुर चकोर नहिमिहोतनाहिं मधुपानकिये ३॥ कवित्त॥ चरण चितायनखचंद्रिकापै आइपरे उछरति निहारनाभिचिवली झकोरहै। उरज उतंगपुनि पुनि रंगकरि ढरि कटिओर सुख छुयौवेनी छोरहै। पाइरंगभूमि रसभूमि रीझखेल रच्यो मच्योछवि पाइमनडारत मरोरहै। लाड़िलीकोरूपअति लाड़िलोमैं देख्योआली लालदृगगेंदन सों खेलैंनिशि भोरहै ४ दृष्टांत पोल्लीकीरविरीको पदलै बनायो॥पद॥ मेरेगति तुही अनेकतोषपाऊं। चरण कमल नखमणि परिबिषय सुखवहाऊं। घरघर जोड़ोलैं हरितौ तुम्हैंलजाऊं। तुम्हरोकहाइकहो कौनकोकहाऊं। तुम सेप्रभुछांड़ि काहिदीननको धाऊं। शीशतुम्हैं नाइकैअब कौनको नवाऊं। कंचनउर हारछाड़ि कांचको बनाऊं। शोभासब हानिकरौं जगतको हँसाऊं। हाथीते उतरि कहा गदहाचढ़ि धाऊं। कुमकुमको लेपछांड़ि काजर सुऊंलाऊं। कामधेनु घरमेंतनि अजाको दुहाऊं। कनक महल छांड़िक्यों परमकुटीछाऊं। पाइनिजापैलौप्रभुतौ नअनतजाऊं। सूरदास मदनमोहनलालगुणगाऊं। संतन कोपान हीकी हीको रछक कहाऊं २॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकयोंनिशंकरंगपागेहैं। आयेसोखजानोलेनमानोंयहबातअहोपाथरलैभरेआपआधीनिशिभागेहैं। रुक्कालिखिडारेहामगटकेयेसंतननेयातेहमसटकेहैंचलेजबजागेहैं। पहुंचे हुजूरभूपखोलिकैसंदूखदेखे पेखेआंककागदमें रीझेअनुरागेहैं ४९२ लेनकोपठायेकहीनिपटरिझायेहमें मनमेंनलायेलि

खीचनतनडार्योहै । टोडरदिवानकह्योधनकोबिरानकि
योलावोरेपकरिमूढ़फेरिकैसेभार्योहै । लैगयेहुजूरनृपबो
ल्योमोसोंदूरिराखोऐसोमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधार्योहै ।
दोहालिखिदीनोअकबरदेखिरीझिलीनोजावोवाहीठौरतो
पैद्रव्यसबवार्योहै ४६३ ॥

रुक्का ॥ दोहा ॥ तेरहलाख संडीलेउपजे सबसाधन मि-
लिगटके। सूरदास मदन मोहनजी आधीरा तिकोसटके१॥
बनतनडार्योहै बड़ेबड़ेहीकी चाकरीकरें तब बादशाह
कीकरें अबकृष्णकीकरैं तापै चोरकोदृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक
तन अँधियारोकरैशून्यदई पुनिताहि। दशतमतेरचाकरी
दिनमणिअकबर शाहि२ ॥ जावोवाहीठौर॥कवित्त॥सेइदे
खेसाहबसँभारिदेखेबामलोनी सोइदेखोभोरलौंसुगंधभूरि
सोंभरे। खाइदेखे पान पकवान पुंजबारबार पौढ़िदेख्यो
तिया संग निशिखलिकापरे।चढ़िदेख्यो हाथीहय हीरा
उरधारि देख्यो भूषण बिबिधिभांति कोटमणिसोंजरे।
मन न सिरानो किते बिषय रससानो मंदताते बारबार
क्यों न बोलतू हरिहरे ३ ॥

आयेवृन्दाबनमनमाधुरीमेंभीजिरह्यो कह्योसोईपदसु
नोरूपरससरासहै । जादिनप्रकटभयोगयोसतयोजनपैज
नपैसुनतभेदवाटीजगप्यासहै । सूरद्विजद्विजनिजमहल
टहलपायचहलपहलहियेयुगुलप्रकासहै। मदनमोहनजू
हेइष्टदृष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृष्टिअनायासहै ४६४
मूल ॥ कात्याइनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही। मारगजा
तअकेलगानरसनाजुउचारो । तालमृदंगीवृक्षरीझिअंबर
तहँडारो। गोपनारिअनुसारिगिरागदगदआवेसी । जग

प्रपंचतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी । भगवानरीतिअनुराग कीसंतसाखिमेलीसही । कात्याइनिकेप्रेमकीबातजातका पैकही२२७॥

उरझीनकबेशरिसोंपीतपटबनमाल बीचआइ उरझेहै दोऊजन। नयननसों नैनबैन बेनन सों उरझिरहे चटकीली छबिदेखे लपटात श्यामघन । छोड़ाछोड़ी नृत्यकरैं रीझ रीझ अवाभरें ततथेई कहतहैं मगनमन। सूरदास मदन मोहन रासमंडलमें प्यारीको अंचल लै पोंछतहैं श्रमकन॥ १कात्यायनीगौड़देशकी राजकन्या॥ दशमे॥ कस्यांचित्स्व भुजंन्यस्यचलत्याहापरानतु। कृष्णोहंपश्यतगतिंललितामि तितन्मनाः २॥ सवैया॥ खोइगईबुधि सोइगईसुधि रोइहूँ से उनमानजग्योहै। मौनगहेचकचौंकि रहे चलिबातकहै तनदाहदग्योहै। जानिपरैनहिंजानितुम्हेंलखिताहिकहा कछुआहिपग्योहै। शोचतहीपगिये आनंदघनहेतलग्योकि धौंप्रेत लग्योहै३॥पाचजाई॥ श्लोक॥ यानैर्वापादुकैर्वापि गमनंभगवद्गृहे। देवोत्सवाद्यसेवाच अप्रणामस्तदग्रतः१॥

कृष्णबिरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनत्यागियो । बिदितबिलोदागांवदेशमुरधरसबजाने। महामहोछौमध्यसंतपरिषदपरवाने। पगनघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखायो । देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठायो । उपमाऔरनजगतमें पृथाबिनानानहिंवियो। कृष्णबिरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनत्यागियो २२८ टीकाश्रीमुरारिदासजीकी॥ श्रीमुरारिदासरहैंराजगुरुभक्तदास आवतस्नानकियेकानधुनिकीजिये। जातिकोचमारकरैसेवासोंउचारिकहेंप्रभुचरणामृतकोपात्रजोईलीजिये । गयेघरमांझवाकेदेखिउरकांपिउठेलावोदेवाहमैंअहोपातकरिजीजिये। कहीमैंतौनूनतुच्छ

बोलेहमहूतेसुच्छ जानेकोऊनाहिंतुम्हेंमेरीमतिभीजिये। ४६५ बहेहगनीरकहैमेरीबड़ीपीरभई तुममतिवीरनहींमेरेयोगताईहै। लियाईनिपटहठबड़ेपटसाधुतामेंश्यामप्यारीभक्तिजातिपांतिलैबहाईहै। फैलगईगांववाकोनामलैचवावकरै भरैनृपकान सुनिवाहूनसुहाईहै। आयोप्रभु देखिबेको गयोवहरंगउड़ि जान्योसोप्रसंग सुनोवहैबात छाईहै ४६६॥

सन्निन्दासतिनामवैभवकथा श्रीशेषयोभिन्नधीरश्राद्धा श्रुतिशास्त्रदेशिकगिरानाम्न्यर्थवादभ्रमः। नामस्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितत्यागौचधर्मान्तरैः साम्यंनामनिशंकरस्य हरेर्नामापराधादश १. तद्धर्म्मनिरादरात्मनामितितेनाम्नोपराधादश २॥ काशीखंडे। ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदितरः। विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ३॥

गयेसबत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागि गयोसुनीयहबातहै। होतहोसमाजसदाभूपकेबरषमांझदरशनकाहूहोतमानोंउतपातहै। चलेईलिवाइबेकोजहांश्रीमुरारिदासकरीसाष्टांगराशिनयनअश्रुपातहै। मुखहूनदेखयाकोबिमुखकेलेखेअहोपेखेलोगकहैंयहगुरुशिष्यख्यातहै ४६७ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंबोरिकीजेदंडमोपैकोरियोंबहोरिमुखभाखिये। घटतीनमेरीआपकृपाहीकीघटतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखिये। सुनकेप्रसन्नभयेकहेलैप्रसंगनयेबालमीकिआदिदैनानाबिधिसाखिये। आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआयेभयोईसमाजवैसोदेखिअभिलाखिये ४६८ आयेबहुगुणीजननृत्यगानछाईबु

निऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदेखिये । जानिकैप्रबीनउठे नूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये । गायो रघुनाथजूकोबनकोगमनसमय तासँगगमनप्राणचित्रसम लेखिये। भयोदुखराशिकहापैयेश्रीमुरारिदासगयेरामपा सयेतौहियेअवरेखिये ४९९ ॥

गयेसबत्यागि ॥ दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत जित चालैतितसिद्धि।हरिजनचिंता नाकरै सुखआगे नवनिद्धि १ गुरुशिष्यख्यातहै।गुरुनिर्मोही चाहियेशिष्यनछांड़ैप्रीति। बारबछोड़ै हरिमिलैं यहैभजनकीरीति २ ॥ फलटूटो जलमेंपरो खोनीमिटी न प्यास । गुरुतजिकै गोबिंदभजे निश्चयनरकनबास ३ ॥ सप्तसुर ॥ कबित्त ॥ केकीकीकुहक सोंखरिज सुरजानिलीजे चातकके बोलसोंऋषभसुरलेखि-ये । छघरत छागजानि लीजे गंधारसुर जरजकेबोलसर मध्यमही पेखिये । कोकिलाके बैनसुर पंचमलखीजैये नहीं सततुरंग सुरधैवत बिशेषिये । घनकेगरजसोंनिषाद सुरजानिलीजे कहैशिरदार सुरसप्तयों बिशेषिये ४ ॥

मूल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मीकितुल सीभयो । त्रेताकाव्यनिबन्धकरिबसतकोटिरमायन । इकअक्षरउधरेब्रह्महत्यादिकजिनहोतपरायन । अबभक्त नसुखदेनबहुरिवपुधरिलीलाबिस्तारी । रामचरणरसमत्त रहतअहर्निशिव्रतधारी। संसारअपारकेपारकोसुगमरूप नौकालयो । कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मीकितुल सीभयो २२९ ॥

एकअक्षर ॥ रामायणे ॥ चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्र विस्तरं ॥ एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनं १ रामचरण

दोहा॥ पलकनिमगमधिध्यानधरिबरुणीजटाबनाय॥ नैन दिगंबरह्वैरहे रूपभभूतिलगाय॥

टीकातुलसीदासजूकी॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपिता ग्रेहगईभूलीसुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं। बधूअतिलाज भईरिससोंनिकसगई प्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं। सुनीजबबातमानोंह्वैगयोप्रभात वहपाछेपछितायतजि काशीपुरीधायेहैं। कियोतहांबासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनों लीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ५००॥

तियासोंसनेह॥दोहा॥ सकल लोकअपबशकियेअ-पनेहीबलवान॥ सबलासोंअबलाकहै मूरखलोगनजान ३ वाहीठौरआयेहैं॥ दोहा॥ तरसतहैंतुवमिलनबिन दर-शनबिनयेनैन॥ स्रुतितरसैंतुववचनबिन सुनितरुणीरसपैन४ बड़ोनेहतुमसोंलग्योऔरनकछूसुहाइ॥ तुलसीचन्दचको-रज्योंतरफतरैनिबिहाइ ५ कहांलग्योमनभावतो सदा रहैमनमाहि॥ देख्योचाहैनैनभरिबातनिक्योंमतियाहि६ सेवा॥ श्लोक॥ गोप्यःकृष्णेवनंयातेतमनुद्रुतचेतसः॥ कृष्ण लीलांप्रगायन्त्योनिन्युर्दुःखेनवासरान् ७॥

शौचजलशेषपाइभूतहबिशेषकोऊ बोल्योसुखमानिह नूमानजूबतायेहैं। रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछेजातघृणाछायेहैं। जाइपहिंचानिसंगच लेउरआनिआयेबनमध्यजानिधाइपाइलपटायेहैं। करैंसी तकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससाररूपधर्योजैसे गायेहैं ५०१ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूपअतिही अनूपनितनैनअभिलाखिये। कियोलैसँकेतवाहीदिनहीं सोंलाग्योहेतआईसोईसमैचेतकविछबिचाखिये। आयेर

घुनाथसाथलक्ष्मणचढ़ेघोड़े पटरंगबोरेहरेकैसेमनराखि ये । पाछेहनुमानआयेबोलेदेखेप्राणप्यारेनेकुननिहारेमैं तोभलेफेरिभाखिये ५०२ ॥

शौचिजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचांतेचपदांतेचतर्पणांतेतथैवच ॥ हस्ताद्धस्तेअधोहस्तेपंचतोयंसुरासमं १ भूतविशेषदेवतनमें नीचहैं २ निहारिमैंतो ॥ पद ॥ लोचन रघुबरीसोइ । जानिबूझिअकाजकीनोंदयोभुवमेंगोइ।अवगतिजुतेरीगति नजानोरह्योयुगमेंसोइ। सबैरूपकीअवधिमेरेनिकसिगयाढिगहोइ। कर्महीनहिपाइहीरादयोपलमेंखोइ। तुलसीदासजुरामबिछुरैकहोकैसीहोइ ३ ॥

हत्याकरिविप्रएकतीरथकरतआयोकहैमुखरामभिक्षा डारियेहत्यारेको।सुनिअभिरामनामधाममेंबुलाइलियोदि योलैप्रसादकियोशुद्धगायोप्यारेको । भईद्विजसभाकहि बोलिकैपठायोआपकैसेगयोपापसंगलैकेजैयेन्यारेको । पोथीतुमबांचोहियेभावनहींसांचोअजूतातेमतिकाचोदूरि करैनअँध्यारेको ५०३ देखीपोथीबांचनाममहिमाहूकही सांचऐपैहत्याकरैकैसेतरैकहिदीजिये । आवैजोप्रतीतिक हीयाकेहाथजेवेशिवजूकेबैलतबपङ्गतिमेंलीजिये । थारमें प्रसाददियोचलेजहांपानकियो बोलेआयनामकेप्रतापम तिभीजिये । जैसीतुमजानोतैसीकैसेकैबखानोअहो सुनि कैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ५०४ ॥

सुमिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे ॥ सहस्रनामततुल्यंरामनामवरानने ४ अँध्यारोका ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो । कौनकाम गोविंदभक्तिबिनजोपुराणकहिजान्यो । घरघरभटकिफिरि

कामिनिखगेगालफटकि धनश्रान्यो । निशिदिन विषय स्वादरस लंपट तजि पांचनिको कान्यो । स्वपनेहूहरि कियेन अपने हितहरिवंश बखान्यो। सुनेनबचनसाधुकेसुख के चरणपखारि न अचयापान्यो। सारासार बिबेकनजा- न्यो मनसंदेह नमान्यो । दयादीनता दासभावबिन व्यासनह्वोंपहिंचान्यो१ ॥ न्याये॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशा स्त्रंतस्यकरोतिकिं । नयनाभ्यांविहीनस्यदर्पणंकिंकरिष्यति २ नामकेप्रताप ॥ पद ॥ अद्भुत रामनाम द्वै अंक। धर्मांकुर केपावन द्वै दल मुक्तिबधूताटंक। मुनिमन बरकेपंखउभयबर लपउड़ि ऊरधजात । जनम मरण काटिनकोकांतोचणमें बितवतपात। अंधकार अज्ञान हरणको रबि शशि युगुल प्रभात । भक्तिज्ञान बीरजबर बोये प्रेम निरंतरभात ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्याम घनहाथ चापशरलियेहैं । जबजबआवैबाणसाधडरपावैयेतोअति मड़रावैंएपैबलीदूरिकियेहैं । भोरआयपूछेअजूसांवरोकि शोरकोनसुनिकरिमौनरहेआंसडारिदियेहैं । दईसबलुटा इजानीचौकीरामराइदई लईउन्होंदिक्षाशिक्षाशुद्धभयेहि येहैं ५०५ कियोतनबिप्रत्यागिलागचलीसंगतियादूरि हीतेदेखिकियाचरणप्रणामहै । बोलेयोंसुहागवतीमर्यो पतिहोहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहै । बोलिकै कुटुंबकहीजोपैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीवदियोअभि रामहै। भयेसबसाधुव्याधिमेटीलैबिमुखताकीजाकीबास रहैतौनसूझेश्यामधामहै ५०६ ॥

डरपावै मारेक्योंनहीं सङ्गति करप्रोचाहै ॥ श्लोक ॥ ये येहताचक्रधरेणराजन्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन। तेतेगताबि ष्णुपुरींनरेंद्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यं १ ॥ गतिहोइजैसे

चनाचाबिकै पेटभरै एक मोहनभोग खाइकै सो तुलसी-
दासको उपदेश मोहनभोग भगवानको बाण अमोघ झूठो
क्योंपरयो समुद्रहूपै बाण झूठो न परयो मारवाड़मेंडारयो
फेरि कैसोइहां चोरनको अविद्याकोमारयो २ लुटाइये॥
कुंडलिया॥ सुखसोवैनींदकुम्हारिया चोरनमटियालेहि।
चोरनमटिमालेहि भजनसब हाथहोयमन। लगेनग्रहड़ो
तहांरहैसुसदीसंततजन। इंद्रीआराम नहोइसकलमिथ्या
करिजानै। हरिलीला रसपानमत्तनिर्भयगुणगानै। अगर
बसत जोराम पद जमहि चुनौतीदेहि। सुखसोवैनींद कु-
म्हारिया चोर न मटियालेहि ३॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदीपठायेलेनताकोसोसुनायो
सूवैबिप्रज्यायोजानियो। देखिबेकोचाहेंनीकेसुखसोंनि
बाहेआइकहीबहुबिनयगहीचलेमनआनियै। पहुंचेनृपति
पासआदरप्रकाशकियो दियोउच्चआसनलैबोल्योमृदुबा
नियै। दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकियै कहीझूठीबा
तएकरामपहिंचानियै ५०७ देखोंरामकैसोकहिकैदकियै
कियेहियेहूजियेकृपालहनुमानजूदयालहौ। ताहीसमयफै
लिगयेकोटिकोटिकपिनयेलौंचैंतनखेंचेंचीरभयोयोंबिहाल
हौ।फोरेकोटमारेचोटकियेडारैंलोटपोटलीजेकौनओटजाइ
मानोप्रलयकालहौ। भईतबआंखेंदुखसागरकोचाखेंअब
वेईहमैंराखैंभाखेंवारोंधनमालहौ ५०८आइपाइलियेतुम
दियेहमप्राणपावैंआपसमझावैंकरामातिनेकलीजियै।ला
जदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्योभयोघररामजूकोबेगि
छोड़िदीजियै। सुनितजिदियोऔरकर्योलैकैकोटिनयोअ
बहूंनरहैकोऊवामैंतनछीजियै।काशीजाइवृन्दावनआइमि
लेनाभाजूसोंसुन्योहोकबित्तनिजरीझमतिभीजियै ५०९॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाई जगतकी कूकरकी पहिंचानि । प्यारकिये सुखचाटई बैरकिये तन हानि १ ॥ ह्वजिये पद ॥ ऐसीतुम्हें न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे तुमसे जु वसीले । तेरे देखत सिंहके शिशु मेडकलीले । जानतहूं कलितेरेहू मनोगुण गणकीले । हांकसुनत दशकंधके बंधनभयेढीले । सोबलगयो किधौंभयो गहरगहीले । सेवकको परदाफटै तुमसमरथ शीले । अधिक आपते आपनो सनमानसहीले । यहगति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूंकाल तिनको भलो जारामरँगीले २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकहीसहीरामइष्टमेरेदृग भावपागीहै।वैसोईस्वरूपकियोदियोलैदिखाइरूपमनअ नुरूपछबिदेखिनीकीलागीहै । काहूकह्योकृष्णअवतारी जुप्रसंशमहारामअंशसुनिबोलेमतिअनुरागीहै । दशरथ सुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशताबताईरतिकोटिगुणीजा गीहै ५१० ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजकी भलेबिराजे नाथ । तुलसीमस्तक जबनवै धनुषबाणलेउहाथ १॥ वैसाई ॥ किरीट मुकुट माथेधरो धनुषबाण लियोहाथ । तुलसी जनके कारणे नाथभये रघुनाथ २ ॥

मूल॥ गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी । करुणावीरशृँगारआदिउज्ज्वलरसगायो।परउपकारकधी रकबितकबिजनमनभायो । कोशलेशपदकमलअनन्यदा सनव्रतलीनो । जानकीजीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभी नो। रामायणनाटककीरहिसिउक्तिभाषाधरी।गोप्यकेलि

रघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी २३० श्रीबल्लभजूके बंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान।अर्थधर्मकाममोक्षभक्तअनुपायनीदाता।हस्तामलश्रुतिजानसबहीशास्त्रकेज्ञाता।परिचर्य्याब्रजराजकुंवरकेमनकोकर्षै।दरशनपरमपुनीतसभातनअमृतवर्षै । विट्ठलेशनंदनसुभावजगकोऊनहिंतासमान।श्रीबल्लभजूकेबंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान२३१ श्रीबल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति।उदधिसदाअक्षोभसहजसुंदरमितभाषी । गुरुवत्तनगिरिराजभलपनसबजगसाखी। विट्ठलेशकीभक्तिभयोबेलाद्दढ़ताके । भगवततेजप्रतापनमितनरवरपदजाके । निर्व्यलीकआसेउदारभजनपुंजगिरिधरनरति । श्रीबल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति २३२॥

जानकीजीवन॥ कबित्त॥सखाढुरावैंचौंर छत्रवशीउड़ावैं मोर साविची चरण सेवैं महसी महेशकी।बरुणधनेशरान उडुरबिराजगंधर्वीकन्यासुकवारीनागशेशकी।द्वारपैआद्र सब ठाढ़ीहैं सखी तिनमें दामिनिसी दमकि रही अब बानरेशकी। सूरति किशोर रतिपति के समूहरान आस पास तिनबीच बैठी मिथिलेशकी ३॥ सवैया ॥ दूलहश्रीरघुनाथबन्यो दुलही सियसुन्दरि मंदिरमाहीं। गावतगीत सबैमिलिसुन्दरिवेदजुवाजुरिविप्रपढ़ाहीं।रामकोरूपनिहारति जानकि कंकणके नगकीपरिछाहीं। औरसबैसुधिभूलिगई कारटेकिरही पलटारतिनाहीं ३ ॥ उक्तभाषा हनुमान्नाटके ॥ आकृष्टेयुधिकार्मुकेरघुपतौवामोब्रवीद्दक्षिणं। पुण्यैकर्मणिभोजनेचभवतः प्रागल्भ्यमस्मिन्नकिं। वामान्यंपुनरब्रवीन्ममनभो घृष्टंनिजंस्वामिनं छिद्यांरावणवक्त्रपंक्तिमयवाप्येकेकमादिश्यतां १ ॥

टीका गोकुलनाथजूकी॥आयोकोऊशिष्यहोनलायोभें टलाखनकीभाषनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये। कहूंहैसने हतेरोजाकेमिलेबिनादेह ब्याकुलताहोइजोपैतोपैदीक्षादी जियै।बोल्योअजूमेरोकाहूबस्तुसोंनहेतुनेकुनेतिनेतिकहीह मगुरुढूंढ़िलीजियै। प्रेमहीकीबातइहांकरहीपलटिजातग योदुखगातकहोकैसेरंगभीजियै ५११कान्हहोहलालखो रिघोरदियोमनलैकेश्यामरससागरमेंनागररसालहै। नि शिकोस्वपनमांझ निपुणश्रीनाथजीनेआज्ञादईभीतिनईभ ईओटसालहै। गोकुलकेनाथजूसोंबेगिदैजताइदीजेकीजै याहीदूरिक्षबिपूरिदेखोख्यालहै। भोरजोबिचारैनहींधीर जकोधारैवहांजाऊंकोऊमारैपैड़ेपर्योयहुलालहै ५१२ ऐसेदिनतीनआज्ञादेतवैप्रबीननाथ हाथकहामेरेबिनागये नहींसरैगो। गयेद्वारद्वारपालबोलेजूबिचारिएक दीजैसु धिकानसुनखीजैबातकरैगो। काहूनेसुनाइदईलीजियेबु लाइअहोकहो औरदूरिकरोकरेंढुरिढरैगो। जाइवहींक हीलहीआपनीपिछानमिले सुनोमेरोनामश्यामकहौनहीं टरैगो ५१३॥

कहूंहै सनेहतेरो॥ दोहा॥ इहांकिया नहिंइष्कका इस्लामाख संभार। सोसाहबसों इष्कवह्करक्यासकैगँवा र२॥ रससागर॥साक्ष॥लोनासांवरनागरसागरवरमुरली धुनिगरजै। बल्लभरसिकतानलहरै आवतगावतसुरपरजै। मोरपच्छकर डलै डुलै कलगीत पुतरीलौंबरजै। रूपकश्वर दरियाव आबजिन नावधर्मकी लरजै। प्रेमहीकी बातसो प्रेममसोपै न बनै कलिपलटिदै जैसेजलको बरहा प्रेमहरि रूपै न बन्यो लहट चकई डोरिलूटी छाछके स्वभावखट्टे

मीठेकोस्वाद सब बनाये औ सनेह कृष्णसों है तैसो पुत्रन सोंकियोसुतहित कियो सोबलदेवजाने २॥ ओटसालहै नाथजीको भीतिको ओटको बड़ोदुख भयो अरूलरिका कान्हा देखे बिना हलाल औरसों भलीप्रीति करी ३॥ ख्यालहै तापैफकीरको अरु लरकाकी गुड़ीकोदृष्टांत॥

मूल॥ रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको। बातकबित्तबड़चतुरचोखचौकसअतिजानै। सारासारविवेकपरमहंसनिपरवानै। सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी। आरजगुनतनअमितभक्तिदशधाव्रतधारी। दरशनपुनीतआशयउदारआलापरुचिरसुखधामको। रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको २३३॥

बात॥ कबित्त॥ कीरतिको मूलएक रैनिदिन दानदेबो धर्मको मूल एक साधु पहिचानिबो। बढ़िबेको मूल एक ऊंचो मन राखिबोई जानिबे को मूल एक भली बात जानिबो। व्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जानो दारिदको मूल एक आरस बखानिबो। हारिबेको मूल एकआतुरी है रणमांझ चातुरी को मूलएक बात कहि जानिबो १॥ दोहा॥ बात न हाथी पाइये बातनि हाथीपाइ॥ बातनि सों बिष ऊतरै बातनि बिषह्वै जाइ २ तापै केशवदास को अरुबीरबल को दृष्टांत॥ कबित्त॥ आयो एक पंडित अखंडित बिचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रनि को गातुरी। ताने पुनिकही सही हाड़ह को सिंघकरौं लावो लाइदियोलियो अति छलसातुरी। आप द्रुम चढ्यो तिन पानी लैकै पढ्यो पुनि छिरकै तेजियो अति कियो वाको घातुरी। कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिबेद एक ओर चातुरी ३॥ दोहा॥ बात बिडारै भत को बात बचावै

प्रान॥ बात अधिक भगवान तेकही हंस अख्यान ४ हरि आवै पै बातन आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त बिषयमें जाइ बिषय चित्त में जाइ न्यारो कैसेहोय तब उत्तर न आयो तब हंस रूप धरिकै श्रीभगवान ने जुवाब दियो ५ कागाकाको धन हरै कोयलकाको देइ॥ मीठी बाणी बोलिकै जग अपनो करि लेइ ६ प्रस्तावे॥ हेजिह्वे रससारज्ञेमधुरंकिन्नभाषसे।मधुरंवदकल्याणिसर्वदामधुरप्रिये ७ चतुराई बात कहा एक पंडित बीरबलपै आयो वासों पूछी कछू पढ़ेहौ कही पढ़े हैं वेद शास्त्र पुराण कवित्तबात ८ कवित्त बड चतुर॥ कबित्त॥ मेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देखिए ह बरसाने बर मुरली बजावेंगे। सांजि लाल सारीलाल करैलाल सारी देखि बेकी लालसारी लाल देखे सुख पावेंगे। तुही उरबशी उरबशी नाहिं आनतिय कोटि उरबशी तजि तोसों चित लावेंगे। सेन बनवारी बनवारीतन अभुभूषण गोरे तनवारी बनवारी आज आवेंगे १॥

भागवतभलीबिधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो। नामनरायनमिश्रबंशनवलाजुउजागर। भक्तनकीअतिभीर भक्तिदशधाकोआगर। आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे।सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुबिशेखे।सुधाबोधमुखसुरधुनीजसबितानजगमेंतन्यो।भागवतभलीबिधि कथनकोधनजननीएकैजन्यो २३४॥

भागवत॥ छप्पै॥ निगम कलपतरुउदैसोई भागवत प्रमाना। द्वादश मोटी डार सोई अस्कंध बखाना। त्रिंशत पुनि पैंतीस ध्यायसो छोटीशाखा। सूक्ष्म कलीश्लोक सहस्रअष्टादशभाखा। यचअक्षरपुनिपंचलखसहस्रछिहत्तर औरगनि। तत्ववेत्तातिऊ लोक में ब्रह्मवीजभागवतपुनि२

भलीबिधि॥ कबित्त॥ भागवत कथन समुद्रको मथन हरि गुण नाम रूपजैसे अमृत उधारयोहै। मृत्युप्रायजीवजगभक्तिदान दैकैदुस्तरभवसागर कोपारलै उतारयोहै। प्रेम रंगराते कहै नेहभरी बातें सब जगतके नाते करि हातें उबारयोहै। करुणानिधान गुण रतननिकी खानिमानोतै ज्ञान विज्ञान युक्तिजीव बिस्तारयोहै ३ धनजननी जैसे माता एक पुत्रजनै तैसेएक हूनहीं को श्री शुकदेवजीने भागवत दईहै औरनपै कैसे आइ सोपको फल सुवा डारै एकतौ कैसेहै सुखते गिरतेही ऊपरही लैलेहिं। एक जमीन मेंते लेहिं तिनको सवाद नहीं ऐसेसुवादनहीं ऐसे सुवारूपी शुक तिनके मुखते लई ४॥ नाम॥ दोहा॥ नामनरायणमिश्रसी नवलाबंशसुहात। कोटि जनमके तमहरै आतपलों बिख्यात। भक्तन की॥ दोहा॥ साधुतहांहीं संचरै जहांधर्मकीसीर। सरवरसूखे परशुराम हंसन बैठेतीर २॥ कबित्त॥ राजातहँभक्तराज मानस समान प्रेम रसनीर क्षीर गंभीर सुखछायोहै। हरिगुणरूप जालि मानिकरसालमानों छायासों बिशाल जस समुया सरसायोहै। अनीकलहंस मानों भूमिरहे परमहंस अतिही प्रशंस रंगरूप मिरमायोहै। अलबेली अली आश विश्वासहै रसिकनकी प्रेमहीकी राशिसो उछिष्ट शेष पायोहै ३॥ सारशास्त्र भागवते॥ अन्येसुरान्भागवतानथो शेसंरंभमागोभिनिविष्टचित्तान्। येसंयुगेचाहतताच्र्य पुत्रमंशे सुनाभायुधमापतंतं४सुधाबोध॥सवैया॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचनमुख सहजहि बोलैं। परमप्रवीणविचित्रनवीन ग्रँथकी गूढ़ग्रंथको खोलैं। नारायण जगतारण कारण भूमंडलसुर सरिसँगडोलैं। जाकीजस शीतलछांह तरंगबिन अलबेली अलिहंस कलोलैं ५॥ कबित्त॥ मिश्र श्रीनारायणजु मधुपुरीवासकियो पुनि हरद्वारमें नृसिंहारनसों मिले। तिनौं कीसुआज्ञापाइ बद्रिकाश्रमहिं जाइ मिलिशुकदेवजूसस महासुखमेंभिले। आयेफिरि काशी सुखराशी बेसन्यासी

पाये तिनसों जनमनिसुखमनमें मिले। पंडितप्रवीणजितेति नकीकथासोंतितेचितेमोचितेरहेमानोंमहाश्रहिकिले ६॥

कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी। काम क्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी। सूरजज्योंजलग्रहेबहु रिताहीज्योंत्यागी। सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत। गुरुधर्मनिषकनिर्वह्योबिश्वमेंबिदितबड़ोभृत। अल्हुरामरा वलकृपाआदिअंतधुकतीधरी। कलिकालकठिनजगजी तियोराघवकीपूरीकरी२३५हरिदासभलप्पनभजनबल बावनज्योंबढ़योबावनो। अच्युतकुलसोंदोषस्वपनहूउर नहिंआन्यो। तिलकदामअनुरागसबनगुरुजनकरिमान्यो। सदनमाहिंबैराग्यबिदेहनिकीसीभांती। रामचरणमकरंद रहतिमनसामदमाती। योगानंदउजागरबंशकरिनिशिदि नहरिगुणगावनो। हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्यों बढ़योबावनो २३६॥

अच्युत॥ दोहा॥ कामीसाधुहि कृष्णकहिलोभीबामन जानि। क्रोधीकोनरसिंहकहि नहींभक्तकीहानि१ रामच रण॥ जिहिघट नौबतनामकी सोघटछीनीनाहिं। प्रकटे देखिकबीरज्यों दीपकभीडलमाहिं२॥ जंगलीकह्योना- म नलियो सोनाभाजी एककुवांके मनखंडेपै बैठेहैं तहां माथेतिलकधारेमालामारवाड़ीआइगये जबह्वांछप्पैबना- ईजंगली देशकेकहे तिनको आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ३॥

जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारषद। ज्योंचंद नकोपवननींबपुनिचंदनकरई। बहुतकालतमनिबिड़उदय

दीपकज्योंहरई । श्रीमटपुनिहरिब्याससंतमारगअनुसर ई । कथाकीरतननेमरसनिहरिगुणउच्चरई । गोबिंदभक्ति गदरोगगतितिलकदामसदबैदहद ।जंगलीदेशकेलोगस बश्रीपरशुरामकियेपारषद २३७ श्रीपरशुरामजीकीटी का ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनबोल्योजूअनंतह रिसगेमायाटारिये। चलेउठिसंगवाकेपहरिकोपीनअंगबै ठिगिरिकंदरामेंलागीठौरप्यारिये । तहांबनजारोआइसं पतिचढ़ाइदईऔरसंगपालकीहूमहिमानिहारिये। जाइल पटाइयोंपाइभावमेंनजान्योकछु आन्योउरमांझआवैप्राण वारिडारिये५१४ ॥

गदरोगगतिसुजानसुंदर वैद्यलगैतौभारीरोगजाइ४।५ तिलक दाम औषधि दई तिलक दाम इनकी सद औ षधिहै१ श्लोक ॥ तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराजस्यदूतकाः । दृष्ट्वानश्यंतिदूरेण वातोद्धूतंयथादलं २ किरातछप्पै ॥ छप्पै ॥ संत तिलक करतार तिलक शंकर सिरसोहै । ब्रह्माके शिरतिलक तिलक बिन जगमेंकोहै। तिलकबिना शिर अशुभ तिलक राजा पदपावै । तिलक संत सनमान तिलक सों महँत कहावै। जियेयुगति मुये मुकति सुरगण मुनि जन शिर धरैं। तुलसी तिलक सतगुरु कमल बसै भाव सागर तरै २ बैठि गुरुके पास तिलकखिल्लारहि कीजै। बिना तिलक जो अफल तिलक करि दिच्छादीजै। दान पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावै। तिलकधार कछु करौ अनत फल वेद बतावै। तिलक देखि यमहूं डरै तिलक बिनाकहि दीनजन। तत्ववेत्ता तिहुंलोक में भौ- ड़ो सुहड़ो तिलक बिन ३ तिलक है सत अस्नान तिलक ब्राह्मण शिर सोहै। तिलक बिनाकछुकरौ सबैफलनिष्फ- लजोहै । तिलकतिया श्रृंगार तिलक नृप शीश लगावै।

तिलक वेद परमाण तिलक त्रैलोक चढ़ावै। तिलक तत्व युगयुगसदा तिलक मिलैं सिधिपाइये। परशुराम ब्रह्मांड मैंसुयश तिलककोगाइये १ दोहा॥ बानोंबड़ो दयालको तिलक छाप अरु माल। यम डरपै का लूक है भय माने भूपाल २ मायाटारिये॥ मायासगी न तनसगोसगोन यहसंसार॥ परशुराम या जीवको सगोसुसिरजनहार ३ कहतेहैं करते नहीं सुहकेबड़े लवार॥ कारोमुहड़ोहोइ गोसाईं के दरबार। भावमैंन जान्यों आप मैं आपभाव लायो आपु बोले तुम बड़ उपकारीहौ॥पद॥ रेमन संत बड़े उपकारी। यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीव नसों हितकारी। निर्मल जल बोलै अति निर्मल निर्मल कथा दृढ़ावै। निर्मल में मलदेखै कबहूं तो ततकाल छुड़ावै। मायामिलै महोच्छो माड़ै आनँदमेंदिन काटै। करि हरि भक्ति तरै भवसागर और नतारन माड़ै। त्यागैलेह देह पुनित्यागै चित लालच नहिं काई। चतुरदास इन भक्तनि को संग छांड़ि अनत नहिं जाई ५ आपतौ गुणग्राहीहौ तापैऊंट की नारि को दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै तुमताही न निंदा पहुंचै न अभाव पहुंचै ६ कुण्डलिया॥ आकाशै बिजुरी खिवैखरीचलावै लात। खरी चलावै लात बिमुखकृत भक्तनिनिंदा। उलटिपरैतिहि छार छार परसै नहिंचंदा। ज्यों छाया उपहार प्रहारन लागै तनको। त्योंजगकी उपहास कहा पहुंचै हरिजन को। आगर श्यामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात। आकाशै बिजुरी खिवै खरी चलावै लात ७ संतउपकारीपै शाहूकार कोसुई दीनी सो दृष्टांत॥

मूल॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद। सज्जनसुहृदसुशीलबचनआरजप्रतिपालै। निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै। अनन्यभजनदृढ़करन धर्योबपुभक्तनकाजे। परमधरमकोसेतबिदितवृन्दाब

नगाजै। भागवतसुधाबरषैबदनकाहूकोनाहिंनदुखद। गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद २३८॥

निर्मत्सर॥ दोहा॥ बातकहैंनिर्लोभकीभरयोहियेअति लोभ। युगुल प्रेमरस रूपकी कैसे उपजै गोभ १ सो ऐसो वक्ता नहोइ। श्रोताऐसो चाहिये जाकेतनमनश्याम। वक्ताहु हरिको भगत जाकेलोभ न काम २ श्रोताऐसो न होइ॥ कथा सुनै नहिं कीरतन बकै आपनीवाइ। पापी मानुष पशुरासकै औंघे उठिजाइ ३श्याम॥पद॥ सखीहौं श्यामरंगरँगी देखिबिकाइगईवहमूरतिसूरतिमाहिंपगी। संगहुतो अपनो सपनोसो सोइरहीरसखोई। जागेहु आगेदृष्टि परैसखीनेकुन न्यारोहोई।एकजुमेरी अंखियनि मेंनिशिद्यो रह्योकरिभौन। गाइचरावन जातसुनौसखी सोधौं कन्हैयाकौन। कासोंकहौकोपतिपाइरी कौनकरै बकबाद। कैसेकै कह्योजात गदाधर गूंगेको गुरस्वाद॥ कवित्त॥ मोरपच्छ धरेपटपीत बन मालगरे सांवरीसी मूरति प्रबीन मोसोंपगी है। दरतन टारीपल चणहू न होतिन्यारी जैतिकबिसारी बिसरति नाहिं खगीहै। चलतिहौं तौ चलतिहै बैठीहौं तौ बैठीहै सोईहौं तौ सोई हैरी जागीहौं तौ जगीहै। तुमसब मिलिमेरी आंखिनि को दोषदेत येऊतौमें मूंदिराखी तऊतहां लगीहै ५ कानन करति सीख कानन फिरतिसुनि अतिही हठीली फिरिपाछे पछिताईहै। धामभूलि जैहैकाम अंगनि में ऐहै काम नैनशर लागै घूमिघूमि गिरिजाईहै। अबलौंन मानतीही मेरीकही बातसुनि पाछेजल जातनि के पातनि बिछाईहै। दीठिकहुं ऐहै मन मोहन मनोजछबि दौरि दौरि अटनिचढ़िको फलपाई है १॥

टीकागदाधरभट्टजूकी॥ श्यामरंगरँगीपदसुनिकैंगुसाईंजीत्रपत्रदैपठायोउभयसाधुबेगिधायेहैं। रैनीबिनरंग

कैसेचढ्योअतिशोचबढ्योकागदमेंप्रेममढ़ेउतहांलैकैआयेहैं पुरढिगकूपतहांबैठेरसरूपलगे पूंछिबेकोतिनहींसोंनामलै बतायेहैं। रहोकौनठौरशिरमौरवृन्दाबनधामनामसुनिमू र्छाह्वैकेगिरेप्राणपायेहैं ५१५ कान्हकहीभट्टश्रीगदाधर जीयेईजानोमानोउहिपातीचाहफेरीकेजिवायेहैं। दियेप त्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइ बांचतहीचलेबेगिवृंदाबन आयेहैं। मिलीश्रीगुसाईंजीसोंआंखेंभरिआईंनीरसुधनश रीरधीरेधीरवहीगायेहैं। पढ़ेसबग्रंथसंगनानाकृष्णकथा रंगरसकीउमंगअंगअंगभावछायेहैं ५१६ नामह्वोकल्यान सिंहजातिरजपूतपूतबैठोआइकथासोंअभूतरंगलाग्योहै। निपटनिकटबासघोरहराप्रकाशगांव हासपरहासतज्यो तियादुखपाग्योहै। जानीभटसंगसोंअनंगबासदूरिभईक रौलैकैनईआनिहियेकामजाग्योहै।मांगतफिरतहुतीयुवती औगर्बवतीकहीलैरुपैयाबीशनेकुकहौराग्योहै ५१७॥

विषयमहा दुरतहोहै ब्रह्मापुत्रीके पाछेपर्‌यो चंद्रमा गुरुपत्नी के महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्मा करोंगटाके फौंगटाकी मसीकीवुसी पै अध्याससों काढ़िये २॥ कवित्त सूधेकहतू अबै नहिंमानत तूटत फेरिननेकु,चितैहै। भूमिमें आकबनावत मेटतपोथियै कांखलिये दिनजैहै। सांचोहौं भाषतिमोहिं ददाकीसौं प्रीतमकीगतितेरिपिछैहै।मोसों कहा अठिलात अजासुत कैहौं ककाजूसों तोहूं पढ़ैहै ३॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकहो अहोकृपाकरोअ बमेरीसुधिलीजिये। दईलौंड़ीसंगलोभगंगचितभंगकिये दियेलैबताइअबमेरोकाममकीजिये।बोलेआपबैठियेजूजाप

नितकरोहियेपापनहींमेरोगईदरशनदीजिये । श्रोतादुख पाइभापैझूंठीयहिमारिनापैसांचीकहिराखैसुनितनमनछी जिये ५१८ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइश्रोताकहैंबहैदृग नीरहवैअधीरसुधिआईहै। राधिकाबल्लभदासप्रकटप्रका शभासभयोदुखराशितबसुनिसोबुलाईहै । सांचीकहिदी जैनाहींअभीजीवलीजैडरसबैकहिदई सुखलियोसंज्ञाभाई है। काढ़ितरवारितियामारिबेकल्यानगयोदयोसोप्रबोध हैमैकरीदयानाईहै ५१६ ॥

मेरोकामकीजिये पद ॥ साधोजगमें कामिनि ऐसीरे राजारंक सबनिके घरमें बाघिनि ह्वैकै बैसीरे। बसती छो- ड़िरहै बनबासा चावति सूखे पातारे। दांवपरै तिनहूं को मारै दैछातीपर लातारे। ज्ञानीगुनी सूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधेहोइ परैफांसीमें युवतीहाथ बिकानेरे। तीनिलोक में कोउ न छांड्यो दियेदाढ तरसारेरे। हरी दास हरिसुमिरण लागे तबभगवंत उबारेरे १ दियोपर बोधन्याय। कामांधायेनपस्यंति जन्मांधाश्चनपस्यति ॥ न- पस्यंतिमदोन्मन्ता अर्थीदोषो न पस्यति २ ॥ दोहा ॥ बिषयचुगौ जिनि चुगैमन चुगतकछू सुखहोइ ॥ फिरिफां- सी ऐसोपरै तिहिसम दुख:नकोइ ३ रेमन कबहूं जाइ जिनिभूलिबिषै वनरंग। मनमथ ठगमारत तहां लियेबहुत ठगसंग ४ राधाबल्लभ लालबिन ब्यासन पायोसु:ख ॥ डार डारमैंहूंफिर्यो पातपात में दु:ख ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिं आगेलैबैठायेदेखि सबैसाधुभीजेहैं। मेरेअश्रुपातक्योंनहोतशोचसोतपरेकरलै उपाइदैलगाइमिर्चखीजेहैं । संतएकजानिकैजताइदईभह्न जूकोगयेउपसबैजबमिलिअतिरीझेहैं । ऐसीचाहहोइमेरे

रोइकैपुकारकरी चलीजलधारनयन प्रेमआइधीजेहैं ५२० आयोएकचोरघरसंपतिबटोरिगांठिबांधीलैमरोरि क्योंहू उठैनाहिंभारीहै। आइकैउठाइदईदेखीइनरीतिन ईपूछौनामप्रीतिभईभूलामैंबिचारीहै। बोलेआपलैपधारो होतहीसवारीआवैऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीज्यारीहै। प्राण नकोआगेधरोआनिकैउपाइकरोरहेसमुझाइभयोशिष्यचो रीढारीहै ५२१॥

जलधारि॥ दोहा॥ परसा हरियशसुनतहीं अवैन जल भरिआंखि॥भरिभरि मूठीधूरिकी तिनआंखिनसें नांखि १ हरियश सुनिकै नैनजो अवैनभरि भरिबारि॥ परसा मूठी धूरिकी तिनआंखिन में डारि २ फुटोनयन फाटोहियो जरौ सुतनकिहिकाम॥ अवैङ्ग्वै पुलकौनहों तुलसी सुमि- रत राम ३॥ सोरठा॥ हरियश जीवनमूरि तुलसी सु- मिरतदृगअवैं॥तिननैननिमें धूरि भरिभरि मूठीमेलिये ४॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआप भक्तिकोप्रतापजानै भागवतगाईहै। ढेतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरि हीतेदासदेखि आयोयोंजनाईहै। धोवोहाथबैठोआइसुनि कैरिसाइउठसेवाहीमेंचाइयाकोखीजिसमुझाईहै। हियेहिं तरासजगआशकाबिनाशकियो पियोप्रेमरसताकीआशलै दिखाईहै ५२२ मूल॥ चरणशरणचारनभगतहरिगाइ कएताहुवा। चौमुखचौराचंडजगतइश्वरगुणजानें। कर मानंदअरकोल्हअल्हूअक्षरपरवानें। माधवमथुरामध्यसा धुजीवानँदसींवां। दूदानरायणदासनाममांडननतग्रीवां। चौरासीरूपकचतुर्बाणीबरनतजूजुवा। चरणशरणचारण

भगतहरिगायकयेताहुवा१३८।टीकाकरमानंदचारनकी॥
करमानंदचारनकी बाणीकोउचारनमें दारुणजोहियोहै।इ
सोऊपिघिलाइये। दियेग्रहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरेछटु
वासुग्रीवहाथछरीपधराइये । काहूठौरजाइगाड़ेवेहीपध
रायचापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाह
भईवई श्यामकोजताइ बातलईमगवाइ देखिमतिलैभि
जाइये५२३॥

निजकर॥हृषीकेन हृषीकेशं सेवनंभक्ति रुच्यते ५ रामभक्ति
प्रथमैं नहिंदेखी॥ लोचनमोरपक्षकरलेखी॥ सोश्रम
कुलिश कठोर सुछाती॥ रघुपतिचरितनसुनि हरषाती ६
जगआश को बिनाश कियो सवैया॥ आसको दासरहै
जबलौं तबलौं जगको नरदासकहावै॥ त्यागीगुनी कबिपं-
डित कोऊ हो आसलिये सबकोभरमावै॥ स्वर्गमही तलवा
सकहूं करौआस जहांलगि नाचनचावै।तातेसदा सुखपाइ
निराशमें आशतजै भगवान को पावै १ दिखाई है॥कुंडलि-
या॥आपुनजाई सासुरै औरनको सिषदेइ।औरनको सिष-
देइ हिया अपनो नहिंसोधै। नखसिख जटित अज्ञान मूढ़
जगको परमोधै। निजआंखिनके अंध गैलऔरनि उपदेशै।
भवजल भरयो अपार ताहितरि सकैनसेसै। अग्रकहै अप-
स्वारथी परमारथ पूजालेइ।आपुनजाई सासुरैं औरन को
सिषदेइ २॥दोहा॥ सीताराम सुजानतजि करै औरको
जाप। ताकेमुखमे दीजिये नौसादर को बाप ३ फेरिचाह
भई॥हरिसेवा राखिलई गुरको त्यागिदियो मातापिता
पुत्रस्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि हरिकी सेवा क-
रनीनहीं तौघूरिलगाइकै धूरिही फांकनी हरिसेवा घ-
रहीमें क्योंनकरी एकांत बिनानहोइ ग्रहमेंदुख आइल-
गे १ बनमें काहूको दुखहोइ लेनाएकन देनादोइ २ तापै
दृष्टांत डुकरिया कीहसुनीको॥प्रतीक॥अहंभक्तपराधीनः॥

कोल्हअल्हूभाईदोऊकथासुखदाईसुनोंपहिलोविरक्त मदमांसनहिंखातहै । हरिहीकरूपगुणबानीमेंउचारकरै धरैभक्तिभावहियेताकीयहबातहै।दूसरोअनुजजानौंखाइ सबअनुमानोंनृपहीकोगावैंप्रभुकभूगाइजातहै । बड़ेकेअ धीनरहैजोई कहैसोईकरै ईशकरिचाहै आपदीनता में मातहै ५२४ बड़आयकहीचलौद्वारकानिहारिसही मि थ्याजगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्यो आयेपुरलीनभयेनयेचोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै।कोल्ह नेसुनायेसबजेजेनानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारकहैंस कुचातहै । भर्योईहुंकारोप्रभुकही मालागरैंडारोलाय पहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ५२५ दयोपैनयाहिदयो बड़ोअपमानभयोगयोबूडोसागरमेंदुखकोनपारहै । बूड़ तहीआमेंभूमिपाइचलोझूमिप्रीति सोंअनीतिभूलैनाहिमा नोंतरिवारहै ।सोईआयेलैनहरिजनमनचैनझिल्योमिल्यो कृष्णजाइपायोअतिसुखसारहै।बैठेजबभोजनकोदईउभ यपातरिलैदूसरीजुकैसीकहीवहीभाईप्यारहै ५२६ ॥

आपुही बिहातहै॥ पद॥ सुपनो सो धनआपनो श्याम॥ आदि अंततासों न बिछुरिय परतकालसों काम। तनधन सुतदारागृहसर्बसुजाहि भजेलैनाम। देखिदेखिफूलजिनि भलौजगनटबाको धाम। ज्योंबछराकेघोषैं गइयाचाटति है वहचाम। असेव्यास आश्रसब झूठी सांचोहै हरिनाम ४॥ कुंडलिया॥गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ। गिली आपहीजाइ विषैभोगत अज्ञानी।ज्ञानीपरै न बात आपु कित जात बितानी पुनिजैसे जललैन थकै दूरै जलबेली। असैही सबविषै मिटैगुरु चेलाचेली। एक

छेदकी यह दशा देहछिपने देवाइ । गिलति कटोरी वारि को गिली आपही जाइपाछेझलू ॥ सवैया ॥ देश बिदेशके देखनरेशन रीझिकैकोऊजो बूझकरैगो। यातेतनय तनजातगिरयो गुणसौगुणअवगुण गांठिपरैगो । बांसुरी-वारो बडोरिझवारहै श्यामजुनेक सोढारढरैगो । लाडि-लोछैल छबीलोअहीरको पीर हमारे हियेकी हरैगो ॥ नयेनयेचीन ॥ बिरक्तकोआदरसत्कार मंदिरमें भगवान सदाकरैहैं सोनकियोविषयीको कियो यहनयो चोज ॥

सबैबिषभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरमोध वाकी बातसुनिलीजिये। तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकीक थालैबलाईजामेंआपहीसोंभीजिये। प्रथमजनममांझबड़ो राजपुत्रभयोगयोग्रहत्यागिसदामोसोंमतिभीजिये । आ योबनकोऊभूपसंगरागरंगरूप देखिचाहभईदेहदईभोग कीजिये५२७तेरेईबियोगअन्नजलसबत्यागिदियोजियो नहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये। हाथपैप्रसाददीनोआइघ रचीन्हिलीनोसुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासोंकीजिये।द्वार काकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमिपरिदृगभ रिबहेदीजिये। कहीसबबातश्यामधामतज्योताहीक्षण कर योबनबासदोऊमतिअतिभीजिये ५२८ अल्हहीकेबंशमें प्रशंशयाहिजानिलेहुबड़ोऔरुभाईछोटानारायणदासहै। दीरघकमाऊलघुउपज्योउड़ाऊभाभीदियोसीरोभोजनलै भयोदुखरासिहै। देवोमोकोतातोकरिबोली वहक्रोधभरिय हूजाहूकरोभरवावैकियोहासहै । गयोग्रहत्यागिहरियाग करयोवैसेहीजुभक्तिबशश्यामकह्योप्रगटप्रकाशहै ५२९ ॥

दियोप्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ परवतको कहदेखिये पाइन

तरकीदेखि। पाइनतरकी देखि बातजनि कहैपराई। आ
निजरौ कोऊगरौ राखिउर जरतौभाई। सारोराखत
सती सुनेनहिं राखतयारो। अपनो पहरनागि गांठितो
सुतो उबारो। अगरअसत आआप तनिहरिगुण हिरदै
लेखि। परवतकोकह देखिये पाइन तरकीदेखि २॥ गयो
ग्रहत्यागि॥ कबित्त॥ दूरैसेमीठीमीठी बातेंसो बनाइकहै
अंतर कपट तासों पलनपतीजिये। बाणीबिनपंडित विवेक
बिन भूपति औ ज्ञानहीनगुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये।
कहैहरिभक्त राजबिन कैसो रजपूत बिनासनमान ताको
दान कहाकीजिये। नदीबिनग्राम हरिसेवा बिनकाम
कैसो जासेंनहींप्रीति सोई मित्र कहाकीजिये १॥ दोहा॥
याभवपारावारको उलँघि पारकोजाइ। तियछबि छाया
ग्राहिनी बीचहि पकरैआइ २॥ रसन सिसन संयमकरै
हरि चरणनतरबास। तबहीं निश्चै जानियेरामिलनकी
आस ३॥ तनबिलास जे बिषयके जीन प्रेमसोंजाहिं। भानु
उदय तमरहैतो वहैभानहींनाहिं॥

मूल॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकबिराजहुव।
सवैयागीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस।पिंगलकाव्यप्रमा
णविविधिबिधिगायोहरियश। परिदुखबिदुखसलाध्यव
चनरचनाजुबिचारै। अर्थविचित्रनिमोलसबैसागरउद्धारै।
रुक्मिणीलताबर्णनअनूपवागीशबदनकल्यानसुव। नर
देवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकबिराजहुव १४०॥

उभयभाषानिपुण॥ पंडितहैंकैभाषाकोप्रमाणनहींकरै
जामें हरियशहोइजाइ भाषाको बिबेकीहैं तेसब प्रमाण
करैहैं १॥ श्लोक॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रियः२॥
अज्ञानी नहीं प्रमाणकरैहैं तापैदृष्टांत बैष्णवको अरु पं-
डितको ३ हरियश॥ दोहा॥ हरियश रसनहिं कबित
महिं सुनै कौनफलताहि। शठ कठपुतरी संगधुरि सोयेको

फलकाहि ४ बचन रचना॥ सुबरणको चाहतसदा कवि व्यभिचारीचोर। पांवधरतचिंताकरैंअवणसुहातनशोर५॥

टीकापृथ्वीराजराजाकी ॥ मारवारदेशबीकानेरकोनरेशबड़ोपृथ्वीराजनामभक्तिराजकविराजहै। सेवाअनुरागअरुबिषयबैराग्यऐसोरानीपहिंचानीनाहिंमानोदेखीआजहै। गयोहोबिदेशतहांमानसीप्रबेशकियोहियोनहींछुवैकैसेसरैमनकाजहै। बीतेदिनतीनिप्रभुमंदिरनदीठिपरैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ५३० लिखिकैपठायोदेशसुंदरसँदेशयह मंदिरनदेखेहरिबीतेदिनतीनिहैं। लिख्योआयो सांचुबांचिअतिहीप्रसन्नभये लगेराजबैठेप्रभुबाहरप्रबीनहैं।सुनोऔरएकयोंप्रतिज्ञाकरीहियेधरीमथुराशरीरत्यागकरैरसलीनहैं। पृथ्वीपतिजानिकैमुहीमदईकाबिलकीबलअधिकाईनहींकालकेअधीनहैं ५३१ जीवनअवधि रहेनिपटअलपदिनकलपसमानबीतिपलनबिहातहै। आगमजनाइदियोवाहिंइन्हैंसांचोकियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै। चल्योचढ़िसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैस्नानप्राणतजेसुनीबातहै।जयजयधुनिभईव्यापिगईचहूंओरअहोभूपतिचकोरजसचंददिनरातिहै ५३२

मूल ॥ द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल । असुरअजीजअनीतिअगिनिमेंहरिपुरकीधैं। सांगनसुतनैसादराइरनछोरैदीधों।धराधामधनकाजमरणबीज।हूमांडो। कमधुजकुटकेंहुवौचौकचतुरभुजनीचाड़ै। बाढ़ेलवाढ़िकीवीकटकचांदनामचाड़ैसबल। द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल १४१॥

विषयवैराग्य ॥ कवित्त ॥ हांसीमें विषाद बसै विद्यामें बिवादबसै भोगमाहिं रोग पुनिसेवामाहिं दीनता। आदरमें मानबसै सुचिमें गिलानबसै आवनमें जानबसै रूप माहिंहीनता। योगमेंअभोग औसँयोगमें बियोगबसै पुण्य माहिं बंधन औ लोभमें अधीनता। निपट नवीनये प्रवीण नि सुबीनलीन हरिजूसोंप्रीति सबहीसों उदासीनता ६ सांवखाचि तो राजानै बाहर क्योंनदेखे बाहरकी भावना नहीं प्रतिज्ञा देखकी भक्तनिको उपेक्षा नहींहै २॥

टीका॥ क्षावापतिशिवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारा वतिईशयोंप्रकारैरक्षाकीजिये। सदाभगवानआयभक्तप्र तिपालकरैंकरौप्रतिपालमेरोसुनिलतिभीजिये। तुरकअ जीजनामधामकोलगाईआगि लईवागघोरकीआयेद्रक कीजिये। दुष्टसबमारेप्रभुकष्टतेउबारेनिजप्राणवारिडारे यहनयोरसपीजिये ५३३॥

करौ प्रतिपालमेरो॥ दोहा॥ करैनकरावैआपहीनाम न अपनोलेहि। साईंहाथ बढ़ाइयों जिहिभावै तिहि देहि ३॥ भक्तभूप बड़े बड़े राजा सबदिशानको जीतैं पै इंद्री न जीतीजाहिं॥

मूल॥ प्रथ्वीराजनृपकुलबधूभक्तभूपरतनावती।कथाकी रतनप्रीतिभीरभक्तनिकीभावै।महामहोछौमुदितनित्यनँद लाललड़ावै। मुकुंदचरणचितवनभक्तमहिमाधुजधारी। पतिपरलोभनकियोटेकअपनीनहिंटारी।भल्लपनसबैवि शेषहीआबैरसदनसुनखाजिती। प्रथीराजनृपकुलबधूभ क्तभूपरतनावती १४२॥ टीका रतनावतीजीकी॥ मान सिंहराजाताकोछोटोभाईमाधोसिंह ताकीजानोंतियाता

कीबातलै बखानिये। ढिगजोषवासिनिसोश्वासनिभरत नामरटतिजटितप्रेमरानीउरआनिये। नवलकिशोरकभूंनंदकोकिशोरकभूंवृन्दाबनचंदकहिआंखैंभरिपानिये। सुनतविकलभइसुनिबेकीचाहभईरीतियहनईकछूप्रीति पहिंचानिये ५३४॥

भक्तिन होइहून अबलाने इंद्रीजीति कै भक्तिकरी यातें भक्तिभूपकह्यो १ कथा कीर्त्तन मांझ॥ आहपावैंन निवाह कसीदा असीतिसीराहल्लां। इस्क दिलादेना लेना लेम-हिं वूंदीगल्लां॥ साहजुलफछल्लोंतिसछल्ले असीतिसी महल्ला तरसल्ला। वल्लभ रसिकरुमाल लालपर झूमहमे सांझल्लां १ चाहभई॥ कवित्त॥ जादिनते श्रवण पर्योहै कान्ह तादिनते लग्योई रहतरसनामें आठोयामहैं। चोवाचीर पानीपान चंदन चमेलीहार मांगतही सुखनिकसत घनश्यामहैं। शोचिकै सकोचनि हमोचन सकलदुख सुखको दिनेश जियको सोनिजधामहै। प्रीतिरीति तंत्रजगजीतिबेको यंत्र मनमोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है २ जाकोजासों मनलग्यो सोई जाकोराम। रोमरोम मैं रसरह्यो नहीं आनसों काम॥ सुनिबेकी॥

बारबारकहैकहाकहैउरगहैमेरोवहैदृगनीरहोशरीरसुधिगईहै। पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातियहसहैनिजगातरागीसाधुकृपाभईहै। अतिउतकंठादेखिकहैसोबिशेषसबरसिकनरेशनुकीबानीकहिदईहै। टहलछुटाईऔसिरानैलैबैठाईवाहिगुरुबुधिआईयहजानोंरीतिनईहै ५३५॥

बारबार॥ कवित्त॥ कबहूं अंग अंगराइ डारतहै अखिनपै भैरावै क्यौंहू कलन परतिहै। उत्तर सहेली लाई

तिनकी सँदेशसुनि करत प्रसिद्धकवि ऐसेहो अरतिहै।कैसे
कैसे गईकाऊ कैसीकैसी बातैंभईंकहाँहैं ललनसुनि धीरन
धरति है।एकबेर पूंछिफेरि पूछि फेरिफेरि पूछि बेरबेर वे
ईबातें पूछिबो करतिहै १ पूछौंमति। हेरतेवारहि बार
उतेजू बावरी बालकहा धौंकरैगी। जोकबहूं रसषानिल-
षैफिरि क्योंऊन बीररी धीरधरैगी। मानिहैं काहूकी
कानिनहीं जबरूप ठगीहरि रंगढरैगी। यातेकहूं शिषमा-
निभटूयह हेरनि तेरेई पैंडेपरैगी २ प्रीतिकी रीति अ-
नीतिहै प्रीतिकरौ जिनिकोइ।सबदीपक कैसेबरै बिरह
नागजहँ होइ ३ विद्या आदर लच्छिमीऔरज्ञानगुणगर्ब।
प्रेमपौरि पगधरतही गये ततच्छनसर्व ४ नेहनेह सबकोउ
कहै नेहकरोमतिकोइ। मिलेदुखी बिछुरैदुखी नेहीसुखी
न होइ ५ नेहस्वर्ग तेऊतर्‍यो भूपर कीनोंगौन। गलीगली
ढूंढ़तफिरैं बिनशिर को धरकौन ६ जरेजरे सो जरिबुझे
बुझर जरेहू नाहिं।अहमद दाझेप्रेम के बुझिबुझि कै सु-
लगाहिं ७ प्रेमकठिन संसार में नाकीजैजगदीश। जोकी
तौ दीजिये तनमनधन अरुशीश ८॥

निशिदिनसुन्योकरैदेखिबेकोअरबरैदेखेकैसेजातजल
जातदृगभरेहैं। कछुकउपाइकीजेमोहनदिखाइदीजैतबहीं
तौजीजैवेतौआनिउरअरेहैं। दरशनदुरिराज छोडैलोटैधू
रिपैनपावैकुविपूरिएकप्रेमवशकरेहैं। करौहरिसेवाभरिभा
वधरिमेवापकवानरसखानदेबखानमनधरेहैं ५३६ इंद्रनी
लमणिरूपप्रगटसरूपकियोलियोवहेभावयो सुभावमि
लिचलीहै। नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामेंयामि
नीसुपनयोगभईरंगरलीहै। करतशिंगारछबिसागरनपा
रावाररहतनिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै।कोटिकउपाइक
रियोगयज्ञपारपरैअपैनहींपावैयहदूरिप्रेमगलीहै ५३७॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेढिग बातेंकरै जगेंउठत गईबाट॥ कितहूँ आवत जातकित पौरीलगे कपाट १ नखसिख रूपभरे खरेतऊ चहत मुसिकान। लोचनलोभीरूपकेतनै न लोभीबानि २ ॥

देख्योईचहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातकहौ कौनकोसुनाइये। कहीजूबनावोढिगमहलकेठौरएकचौकी लैबैठावोचहुंओरसमुझाइये। आवैंहरिप्यारेतिन्हैआवैवे लिवाइइहांरहेतेधुवाइपाइरुचिउपजाइये। नानाबिधिपा कसामाआगेआनिधरेआपडारिचिकदेख्योश्याम दृगनल खाइये ५३८॥

चाहबात॥ चौपाई ॥ कुवरि कहै सखिको बिसवरहै। जहँवह सांवरो प्रीतमरहै॥ सोदिश हाथसों सखिनि बताई। सोदिश जीवनमूर सीमाई। कमल पत्रलै पत्र बनावै उड्योचहै सोक्यों उड़िआवै। मनसोंकहै कुटिल तू आइ। इकिलोईउठिपिय पैजाइ। नेकतौ नैननिहूं संगलैरे। मोहनमुखको देखनदैरे ३॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारेदिनकिहूंपावँधारेजि न्हैंब्रजभूमिप्यारिये। युगुलकिशोरगावैंनैननिबहावैंनीर ह्वैगईअधीररूपदृगनिनिहारिये। पूछीवाखवासिनिसों रानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभंगसुखभारिये। चली उठिहाथगह्योरह्योनहींजातअहोसहौदुखलाजबड़ीतनक नबिचारिये ५४०॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिमन ढूंढ़न जैये सतगुरकेछोना। घिरकोसाटै पाइयथेराम खिलौना। प्रेमजँजीरजरायको गहि राखो भाई। इनसंतनि के मोहते मिलिहैं रघुराई। कृष्ण

छप्पै नितपढ़त हैं शुचिते चितलागे। पाइँटिकै नहिंपाप के दुखसबही भागे। कहिमलूका सबछांड़ि कै गहिलैयह हाला। जोईजोईमूरति संतकी सोईदेखि गुपाला १ युगुल ॥ कवित्त ॥ वृन्दावनबास आश बढ़त हुलासरास बिबिधि बिलाससदा सुखहरि दासके। भालपै तिलकश्यामबंदनी औकंठमाल तुलसी रचत गुंजछापेंदै प्रकाशके। युगुल कि-शोरहियेमुखमें झकोर नाम नीरबीरभूमिकै सुसूचक विलास के। सदासतसंगविनै अंग अंग पगे पुनिजग जग माहिंनीके लागे श्वास पासके॥

देख्योमैंबिचारिहरिरूपरससारताकोकीजिये अहार लाजकानिनीकेटारिये। रोकतउतरिआईजहांसंतसुखदाई आनिलपटाईपाइँबिनतीलैधारिये । संतनजिमाइबेकीनि जकरअभिलाषलाषलाषभांतिनसोंकैसेकैउचारिये। आज्ञा जोईदीजैसोईकीजैसुखवाहीमेंजुप्रीतिअवगाहिकरोलागी अतिप्यारिये५४० प्रेममेंननेमहेमथारलैउमँगिचलीचली दृगधारसोंपरोसिकेंजिवायेहैं । भीजिगयेसाधुनेहसागर अगाधदेखिनयननिमेषतजीभयेमनभायेहैं। चंदनलगाइ आनिबीरीहूखवाइश्यामचरचाचलाइचषरूपसरसायेहैं । धूमपरीगावँझूमिआयेसबदेखिबेकोदेखिनृपपासलिखिमा नसपठायेहैं ५४१ ह्वैकरिनिशंकरानीबंकगतिलईनईदई तजिलाजबैठीमोड़नकीभीरमें।लिख्योलैदिवाननरआयेलै बखानकियोबांचिसुनिआंचलागीनृपकेशरीरमें। प्रेमसिंह सुतताहीकाल सोरसालआयोभालपैतिलकभालकंठीकंठ तीरमें ।भूपकोसलामकियोनरनजताइदियोबोल्योआवमो डीकेरेपर्योमनपीरमें ५४२ ॥

टारिये॥मेरीकुल पूजितू हीमानी ठकुरानी करितोही नित आंखिनि में हियेमें धरतिहौं। तेरेई संतोषदेत द-च्छिणारसीलेगुन मनमानि आलिनिकी सीख निदरतहौं। आनिबन्यो योग अबमेरे बड़भागिनि तैं ताहीते अधीनता लै दीनता करतिहौं। देखन दैनेक प्राण प्रीतम मुखारबिं-द हायलाज आजुतेरे पाइनि परतिहौं २॥प्रेमसिंह॥ कबित्त॥ सदासाधु सेवारंग नितहीप्रसन्नसुनि भीजिजाइ हियो जान्योप्रीतिकोस्वरूपहै। प्रेमसिंहनामताको अर्थ अभिरामसुनो सिंहसम भक्तिबलहिये ध्यासरूपहै। दोऊ मिलि नामभानों जानो नरसिंहवत रतिकी बड़ाई याते भयो भक्त भूपहै। हरदेवइष्ट सिष्टलागी संतसेवा याको सिष्टि गुणबेस लघु कीरति अनूप है १॥ प्रेम मैन मोर मुकुटपै प्रियादास गोविंदसंगरहैं बरसानेते वाइएक मोह नभोग प्रभातकरिलैगई पाटो दांतुननहींकरी यह क्यों न खावोलकड़ीभली २॥

कोपभरिराजागयोभीतरतेशोचनयोपाछेपूंछिलियोक-ह्योनरनिबखानिकै। तबतोबिचारीअहोमोड़ीहैहमारीजा तिभयोसुखगातभक्तिभावडरआनिकै। लिख्योपत्रमाजी कोतुप्रीतिहियेसाजीजोपैशीशपरबाजीआइराखोतजिप्रा नको।सभामध्यभूपकहीमोड़ीकोबिरूपभयोरहोअबमोडी केहीभूलोमतिजानिकै ५४३ लिख्योदैपठायोबेगिमान सलैआयेजहांरानीभक्तिसानीहाथदईपातीबांचिये। आयो चढ़िरंगबांचिसुतकोप्रसंगबारभी जेजेफुलेलदूरिकिये प्रे मसांचिये। आगेसेवापाकनिशिमहलबसतजाइलाईवा हीठौरप्रभुनीकेगाइनाचिये। अन्ननृपत्यागिदियोलिखिप त्रपुत्रदियो भाईमोडीआजतुमहितकरियांचिये ५४५॥

तनिप्राणको॥दोहा॥ धनदै नीके राखितन तनदैराखो

लाज। लाजप्राण तनिदीजिये एकप्रेमकेकाज। नेहकरैंते बावरे करितोरैंते क्रूर। धुरनिरवाहैं ओकोऊ तेई प्रेमी शूर २॥ प्रेमकीचौपरिमढीहैताजैंबाजीशीश। कायरताकोजगहै तौपावै वहखीश ३॥ दूरिकिये॥ जबलगिशिर पर शिर उतो तबलगि फूलनहार। नाहिं सँभारोजातहै शिर उतरेकोभार ४॥ अन्नन्टप त्यागिदयो॥पाद्मे॥प्रार्थयेत्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्नेन विचक्षणः। सर्वपाप विशुद्ध्यर्थंतदभावेजलं पिबेत् ५॥ मारकंडे॥ अवैष्णवेग्रहेभुक्त्वापीत्वावाज्ञानतोयदि॥ शुद्धिश्चांद्रायणेप्रोक्तोऽस्टषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः६॥ शुद्धं भागवतस्यान्नं शुद्धं भागीरथीजलं। शुद्धं विष्णु परिच्छिन्नंशुद्धं एकादशीव्रतं ७॥

गयेनरपत्रदियोशीशसौंलगाइलियो बांचिकैमगनहियेरीझबहुदईहै। नौबतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृपति सुनाईं कहीकहारीतिनईहै। पूछैंभूपलोककह्योमिटेसब शोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांगकियोबनगईहै। भूपतिसुन तबातअतिदुखभयोगातलयोवैरभावचढ्यो त्यारीइभईहै ५४५ नृपसमुझाइराख्योदेशमें चवावहवैहैवुधिवंतजन आइसुतसों जनाईहै। बोल्योविषैलागिकोटिकोटितनखोयेएक भक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै। पाइपरिमांगिलईदईजूप्रसन्नतुमराजानिशि चल्योजाइकरोजियभाईहै। आयोनिजपुरढिगधरिनरसिले आनिकह्योसोबखानिसब चिंताउपजाईहै ५४६ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजोबुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरवारिये। मारिवोकलंक हूनआवोयोंसुनाईभूपकाहूबुधवंतनविचारिलैउचारिये। नाहरजूपींजरामेंदीजैछोड़िलीजैमारिपाछैतैंपकरिवहबात दाबिडारिये। सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई आया

देखोवाखवासिकहीसिंहजूनिहारिये ५४७ करैहरिसेवा भरिरंगअनुरागदृग सुनीयहबातनेकनयनउतटारेहैं। भावहीसोंजानेंउठिअतिसनमानेंअहो अजूमेरेभागश्रीनृसिंहजूपधारेहैं। भावनासचाईवहीशोभालैदिखाईफूलमाल पहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं। भौनतेनिकसिधायेमानोखम्भफारिआयेबिमुखसमूहततकालमारिडारेहैं ५४८॥

नृसिंहजू पधारे हैं॥तबपूछ्हु लाईक्योंकि सूक्षमअलंकार १ श्लोक ॥ कांतमायांतमालोक्यगताशुरुजनांतिकं। करेकलितमंभोजंसंकोचयतिसुंदरी २ ॥ कबित्त ॥ बांसुरीके बीच एकभौंर डारिलाई सखी मूंद्यौ बड़ यत्नबलयबुधि बलभारीसों। भनत पुरान याके आपही सों धुनि होति कानदैके सुनो कह्यो धरिसुकुमारीसों। रीझिरिझिवार अति मनमें मगन भई आप तनचाह मुख ढांक्यो श्याम सारीसों। अंचलमें गांठिदै बिहंसिउठिचली सखीप्यारी हँसिकह्यो आजु बसिये हमारीसों ३ ॥

भूपकोखबरिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांति आपनआइवैकेआयेहैं। भूमिपरिशाष्टांगकरिकैऊहरीमतिभईदयाआपआइवाकेबचनसुनायेहैं। करतप्रणामराजाबोलीआजूलालजूको नेकफिरिदेखोएकठोरयेलगायेहैं। बोल्योनृपराजधनसबहीतिहारोधारोपतिपै नलोभकहीकरौसुखभायेहैं ५४९राजामानसिंहमाधवसिंहउभैभाईचढ़ेनावपरकहूंतहांबूडिबेकोभईहै। बोल्योबड़ोभ्राताअबकीजियेयतनकौनभौनतियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै। नेकुध्यानकियोतबैआनिकैकिनारोलियो हियाहुलशायोजेठचाहनईलईहै। कह्योआनिदरशनबिनयकरिगयोराजा

अतिहीअनूपकथाहियेठ्यापिगईहै ५५० मूल ॥ पारीष
प्रसिद्धकुलकांभड्याजगन्नाथसीवाघरम।श्रीरामानुजकी
रीतिप्रीतिपनहिरदहिधार्‌यो । संस्कारसमंतत्वहंस ज्यों
बुद्धिविचार्‌यो।सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधितउजागर।
रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर॥पुरुषोत्तमपरसा
दतेउभैअंगपहर्‌योबरम।पारीषप्रसिद्धिकुल० १४३ ॥

मुनिवृत्ति॥राजधानीनलेहिंभारते॥ एकब्राह्मणसिलौक
रैहौतासों अज्ञानीने कही हमारे राजापै जाउतौ
बहुत द्रव्य मिलै तबरोइउठ्यो कृष्णसों कही तेऊ रोइ
उठे युधिष्ठिरसों कहीतेऊ रोइउठे कृष्णसों पूछी याको
हेत कहातब कही ब्राह्मण याते रोयोऐसी निषिद्धिधान्य
बतायो कलियुगमें मांगेहून मिलैगो उभै अंग कवचपहि-
र्‌यो प्रकट अंगमें तौ लोहको राजाके प्रोहित यातेयह
हीरेके अंगमें ज्ञानको बचन बान काहूको न लगै १ ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो । सदा
चारसंतोषसुहृदसुठशीलसुभासै।हस्तकदीपकउदयमेटि
तमवस्तुप्रकाशै। हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबलभारी।
कृष्णाकलससोनेमजगतजानैशिरधारी । श्रीबर्द्धमानगु
रुबचनरतिसोसंग्रहनहिंछांडियो । कीरतनकरतकरसुप
नेहूमथुरादासनमंडियो १४४ टीका॥बासकैतिजारैमांझ
भक्तिरसराशिकरीकरीएकबातताकोप्रकटदिखाईहै । आ
योभेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवा डोलैसिंहासनपैआ
निभीरछाईहै । स्वामीकेजुशिष्यभयेतिनहूंकोभावदेखि
वाहीकोप्रभावकह्योआपहियेभाईहै । नेकुआपचलौवह

रीतिकोबिलोकियेजूबड़ेसर्बज्ञकहीदूपैनहिंजाईहै ५५१ पाइंपरिगयोलैकैजाइढिगठाढ़ेभये चाहतफिरायोपैनफिरै शोचपर्योहै । जानिगयेआपकछूयाहीकोप्रतापओपैमा रोकरिजायोंबिचारमनधर्योहै । मूठिलैचलाईभक्तिते जआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसोमानोमर्योहै । ह्वैकरिदयालजाजिवायोसमझायो प्रीतिपंथदरशायोहि यभयोशिष्यकर्योहै ५५२॥

सुपनेहूं॥सुपनेमेंकौनमांगैहै प्रकटहीमांगैहैदृष्टांतकला-वतको अरु ब्राह्मणको बिश्वास सुगलअरुबनियेको दृष्टांत १ ह्वै करि दयाल॥ हरिजनहंस दिशनियो डोलै। मुक्ता फलबिनवों चनखोलै । मौनगहै कैहरि यशबोलै। असद अलापन कबहूं लोलै। मानसरोवरतटकेबासी। हरिसेवा रति औरउदासी। नीरक्षीरको करै निवेरा। कहैकबीर सोईगुरुमेरा २॥ वाहि यहउपदेशकरयो चौरेहीमें ठा-कुरको बैठावनो। ऐसीक्रिया न कीजै ३॥

मूल॥ नृतकनरायनदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो । पद लीनोप्रसिद्दप्रीतिजामेंदृढ़नातो। अक्षरतनमयभयोमदन मोहनरँगराता । नाचतसबकोउआइकाहिपैवहबनिआ वै। चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगीदेशीजुदिखावै। हंड़िया सराइदेखतदुनीहरिपुरपदवीकोचढ़ो। नृतकनरायणदा सकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो १४५ टीका ॥ हरिहीकेआगे नृत्यकरैहियेधरैयहीढरैदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै। हंडि यासराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमले च्छजानिमीरहै।बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआये

हैसदनगुनाळावोचाहपीरहै।आनिकैसुनाईभईअतिकठिनाईअबकीजैजोईभावैवहनिपटअधीरहै ५५३॥

दृढ़नाती पद॥ सांचोएकप्रीतिकोनाता। कैजाने राधिका नागरी कै मदनमोहन रँगराता। यह ह्रंखला अधिक बलवंती जिनबांध्यो मनगजमाता। मीराप्रभुगिरिधर सँगहिलिमिलि सदा निकुंज बसाता १॥ दोहा॥ हित चित चाहन चतुरई बोल न आवत गात। राधा मोहनप्रेमकी कहतबनै नहिंबात २॥ आइकलाइकजगत हित जानि सुदेशविदेश। परउपकारी साधुयेनहिंअधरस कोलेश ३॥ त्रिभंगदेखी सुधीजोकुछडरगड़ैसोनिकसदुख होइ। कुंवर त्रिभंगीजहँगड़ै सोदुख जानै सोइ ४ पंडित कबिता ढाढ़िया कहिवेहीलोंदौर॥कहि कान्हाजूभै नहीं जूझनवारे और ५॥ हंड़ियासराइ प्रागते छहकोश ६॥ हरिहीकेआगे॥ दोहा॥ मनमजूस गुणरतनहैं चुप कढ़िदै हटतार। पारखि आगेपोलिये कूंचीबचन रसाल ७ तापैदृष्टांत अकबरशाहको तानसेन को हरिहीकेआगे गावै ८॥

बिनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहैसेवावाकेआगेकहौकैसेबिस्तारिये। कियोयोंबिचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहरिगानकर्योभारिये। एकओरबैठोमीरनिरखैननयनकोरमगनकिशोर रूपसुधिलैबिसारिये। चाहैंकछुवार्योपरेऔचकहीप्राणहाथरीझिसनमानकियोमीचलागीप्यारिये ५५४ मूल॥ गुणगणबिशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा। बोहितरामगोपालकुंवरगोबिंदमांडिल। क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदभल। हरिनाभमिश्रदीनदासबछपालकन्हरयशगायन। गोसूराम

दास नारदश्यामपुनिहरिनारायन। कृष्णजीवनभगवान जनश्यामदासबिहारीअमृतदा। गुणगणविशदगोपाल केयेतेजनभयेभूरिदा १४६ निर्वृत्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब। उद्धवरामरेणुपरशुरामगंगाधू पेतनिवासी। अच्युतकुलकृष्णदासबिश्रामशेषसाहीकेवासी। किंकर कुंडाकृष्णदासखेमसोंठागोपानंद। जयदेवराघवबिदुर दयालदामोदरमोहनपरमानंद। उद्धवरघुनाथीचतुरोनगनकुंजओकजेबसतअब। निर्वृत्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब १४७॥

भूरिदा॥ दशमे॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितं। कलमषापहंश्रवणं मंगलंश्रीमदाततंभुविग्रणन्तिते भूरिदाजना १॥ संतजनबड़ेदाता भक्ति संपतिके देनहारे जनतो सामान्य मनुष्यनको कहेहैंसोनहीं॥ श्लोक॥ सालोक्य सार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत:॥ दीयमानंनगृह्णंतिबिनामत्सेवनंजना: २॥ जेऐसेननतौनहींघुटकीटूकमांगतडोलैं दोहा॥ रामअमल मातेफिरै पीवैप्रेमनिशंक। आठगांठिके धीनमेंकहैइंद्रसोंरंक ३॥

टीका॥ झीथडैटिगहीमेंजैतारनबिदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामतिपागीहै। वरषानभईसबखेतीसूखिगई चिंतानईप्रभुआज्ञादईबड़ोबड़भागीहै। खेतकोकटावोओगहावोलैउड़ावोपावोदोहजारमनअन्नसुनीप्रीतिजागीहै। करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीति होतिगायेहरिमीतराशि लागिअनुरागीहै ५५५ मूल॥ श्रीस्वामीचतुरोनगनमगरै निदिनभजनहित। सदायुक्तअनुरक्तभक्तिमंडलक

पोषत। पुरमथुराब्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत। परमध रमदृढ़करनदेवश्रीगुरुआराध्यो। मधुरवैनसुनिठौरठौर हरिजनसुखसाध्यो। संतमहंतअनंतजनयशविस्तारेजा सुनित। श्रीस्वामीचतुरीनगनमगनरैनिदिनभजनहि त १४८ आवैंगुरुग्रेहयोंसनेहसोंलैसेवाकरैंधरैहियेसांच भावअतिमतिभीजिये। टहललगाइदईनईरूपवतीतिय दियोवासोंकहीस्वामीकहैंसोईकीजिये। सेवाकैरिझायेय तेप्रेमउरनितनयोदयोघरघरबधूकृपाकरिलीजिये। धा मपधराइसुखपाइकैप्रणामकरि धरींब्रजभूमिउरबसेरस पीजिये ५५६॥

खेतीसूखिगई॥ भेषहरयोभयो बङ्तचढ़िगयो भगवान भेषबढ़ायो चाहै तौअकालपरै सोपरयोतबविचारी कहूं उठिजाइये १ मगनरैनिदिन सतोगुण इतिते रजोगुणतम को निर्वत भक्तमंडलको पोषत द्वारपैरमत॥ सवैया॥ डो- लतहैं इकतीरथ एकनिबार हजार पुराण बकेहैं। एकलगे जपमें तपमें यक सिद्धिसमाधिनमेंअटकेहैं। इभिओदेखत हौरसखानिजु मूढ़महा सिगरे भटकेहैं। सांचहैंवे जिन आपनज्यो इहिसांवरे ग्वालपैवारिछकेहैं २॥ टहललगा ई लाहौरमें कान्हाफकीर तुलसी खचानी सेवाकरै ३॥

श्रीगुबिंदचंदजूकोभोरही दरशकरिकेशवशिंगारराज भोगनंदग्राममें। गोबर्द्धनराजाकुंडह्वैकैआवैवृन्दावनम नमेंहुलाशनितकरैंचारियामममें। रहैंपुनिपावनपैभूखदिन तीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणायेऊरँगेश्यामममें। मांग्योनेकु पानीछाबोफेरिवहआनीकहां दुखमतिसानीनिशिकह्यो कियोकाममें ५५७॥

मांग्यो नेकुपानी॥ दोहा॥ सबसोंबुरोजुमांगिबो माःगत निकसै जीव॥ पानिपचाहैं आपनी तो मांगिन पाःनीपीव १ मांगन जापै जाइये जाकेमुखमें लाज॥ आगेते जु प्रसन्नह्वै पूजै मन के काज २ आवत देखेसाध के पुलःकि उठैसब अंग॥ तुलसी ताके जाइये कीजैतासोंसंग ३॥

पानीसोंनकाजब्रजभूमिमेंविराजदूधपियोघरघरआज्ञाप्रभुजूनेदईहै। येतौब्रजबासीसदाक्षीरकेउपाशीकैसेमोकोलेनदेहैकहीदेहैसुनीनईहै।डोलैघामश्यामकह्योजोईमानिलियोदियोलैपरचौहूप्रतीतितबभईहै। जहांजाछिपावैपात्रवेगिढूंढ़िआपलावैअतिसुखपावैकीनी लीलारसमईहै५५८ मूल॥ मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंवलिहारकियो। गोमापरमानंदप्रधानद्वारिकामथुराखोरा। कालषसांगानेरभलौभगवानकोजोरा। बीटलटोडेपेमपंडागूंनौरेगाजै। श्यामसेनकेवंशवीधरपीपारबिराजै। जैतारनगोपालकोकेवलकूवैमोललियो। मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहारकियो १५१॥

चीरकेउपासी॥ माता यशोदाने तुमको डारिदूधउफनातो राख्यो॥ सवैया॥ जपयज्ञ सुदान सुमौन करै वज्ञकूपरु वापी तड़ागबनावैं। करैंब्रतनेम सुइंद्रिय निग्रह उग्रह योगसमाधि लगावैं॥ कहै रसखानिहृदै जिनके कबहूं नहिं सो सुपने मैंनआवैं। ताहि अहीर की छोहःरिया छछिया भरिछांछि को नाच नचावैं ४ लछिमीसी जहां मालिनिडोलै बंदनवारैं बांधति पूजापै दृष्टांत रुःक्मिनीजी के बेटाको ६॥

टीका॥ कहतकुम्भारजगकुल निस्तारकियोकेवल सुनामसाधुसेवाअभिरामहै। आवैवहुसंतप्रीतिकरीलैअ

नंतजाकोअंतकोनपावैअपैसीधोनहींधामहै। बड़ीपैगरज चलेकरजनिकासिबेकोबनियानदेतकुवाखोदौकीजो काम हैं। कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलिकरिहितसोंजि मायेजिन्हैंप्यारौएकश्यामहैं ५५६ गयेकुवाँखोदिबेकोसू वाज्योंउचारैनामहुवाकामबानैजानीभयोसुखभारीहै। आईरेतभूमिझूमिझूमिमाटीदबिरहेवामैंकेतक हजारमन होतकैसेन्यारीहै।शोककरिआयेधामरामनामधुनिकाहूका नपरीबीत्योमासकहीबातप्यारीहै। चलेवाहीठौरसुरसुनि प्रीतिभौरपरेरीतिकछुऔरसुधिबुधिअतिटारीहै ५६० ॥

क्षरन॥एकादशे॥मद्भक्त पूज्यभ्यधिका वैश्नवोबंधु सत्कथा १ सनबंधी को उधारयो लाइकै सबकोई सत्कार करैहै यहधर्म साधुसेवा धर्म २ आदिपुराणे ॥ योमेभक्त जनापार्थ ३ न्यारीहै॥कूवानो माटीमेंरहैं जैसे तिवारी महरावमैंपै एकहाथ ऊचोजल प्रसाद पहुंचै माटीक्योंन दूरि करीसिधाई लगैयातें तोमहरावक्योंन ऊंचोराखी॥ कूवां देखि कै यहबात यादि रहै जैसे सिद्ध को गुफामें बैठारै सिद्धाइको रंगद्वार खानपानपहुंचै असेहरिने करी ४ ॥

माटीदूरिकरीसबपहुंचेनिकटतबबोलिकैसुनायो ह रैबानीलागीप्यारियै। दरशनभयो जाइपाइलपटाइरहे महरावसीहवैकूवहूंनिहारियै। धरयोजलपात्रएकदेखिब ड़ेपात्रजानेआनिनिजग्रेहपूजालागीअतिमारियै। भईभी रद्वारनरउमड़िअपारआयेमहिमाअपारबहुसंपतिलैवारि यै ५६१ सुंदरसरूपश्यामलायेपधराइबेकोसाधुनिज धामआइकुवांजूकेबसेहैं। रूपकोनिहारिमनमेंबिचारकि

योआपकरैंकृपामोपैप्रभुअचलह्वैबसेहैं। करतउपाइसंत
टरतननेकुकहूंकहीजूअनंतहरिरीझेस्वामीऐसेहैं। धर्यो
जानराइनामजानिलईहियेबात अंगमेंनमातसदासेवासु
खरसेहैं५६२चलेद्वारावतिछापलावैयहमतिभईआज्ञाप्र
भुदईफिरिघरहीकोआयेहैं। करौसाधुसेवाधरौभावहिये
दृढ़मांझटारौजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं। येहहीमेंशंख
चक्रआदिनिजदेहभयेनयेनयेकौतुकप्रगटजगगाये हैं। गो
मतीसोंसागरकोसंगमहोरह्योसुन्योसुमिरनीपठाइके यो
दोऊलैमिलायेहैं ५६३ भयेशिष्यशाषाअभिलाषासाधु
सेवाहीकीमहिमाअगाधजगप्रगटदेखाईहै। आयेघरसंत
तियाकरतिरसोईकोईआयोवाकोभाईताकोखीरलै बनाई
है। कुवाजूनिहारिजानीवाकोहितसादरसोकीजियेविचा
रएकसुमतिउपाईहै। कहोभरिलावोजलगइडरकलपैन
लईतसमईसबभक्तनिजिमाईहै ५६४॥

कूवहूंनिहारिये॥ महीनाभरि भूमिमें दबेरहेसो कूवा
भयो रघुपति ने रच्छाकियो सो प्रसंग गोमतीसों सागर
को संगम रह्यो सुमरनीदै पठाई॥ संगम भयोसो प्रसंग१
भयेशिष्य साषाद्वै प्रकारकेफरसा।फूकी कानफूका२।३।४।५॥

बेगिजललाईदेखिआगिसीबराईहियेझांकेमुखभईदु
खसागरबुडाईहै। बिमुखविचारितियाकुवाजूनिकारिदई
गईपतिकियोऔरऐसीमनआईहै। पर्याईअकालबेटाबे
टीसोनपालिसकेतकैकोऊठौरमतिअतिअकुलाईहै। लिये
संगकर्योजोईपुत्रपतिभूषभोई आइपरीझोंथडामेंस्वामी
कोसुनाईहै ५६५॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय न राम वैदेही ॥ सो त्यागिये कोटि वैरीलों यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत महतारी ॥ बलि गुरु ब्रजयुवतिन पति-त्याग्यो जग भये मंगलकारी ॥ नातौ नेह रामसों सांचौ हूँदै सुशील जहालौं। अंजन कहा आंखि जो फूटै बहुती कहौं कहालौं॥ तुलसी सोई हितबन्धुन प्रीतम पूजि प्रानते प्यारो ॥ जासँग बाढ़ै नेह राम सों सोई निजहितू हमारो १ ॥ दोहा ॥ साधा आया अनमनो माया आयासूरि ॥ कौरवा कूवायो कहैं तु निकसि वाहरी पूरि ॥ पहिलेतो मूरख का संग होइ पाछेते सतसंग सो ज्ञानपाइ कै त्याग करै ॥ भर्त्तरी ॥ यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यऽन्यमिच्छति जनो स जनोन्य सक्तः ॥ अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या धिक्तां च तं च मदनं चइमां चमां च ॥

नानाबिधिपाकहोतआवैसंतजैसेसोतसुखअधिकाईरीतिकैसेजातिगाईहै। सुनतबचनवाकेदीनदुखलीनमहानिपटप्रवीनमनमांझदयाआईहै। देखिपतिमेरोऔरतेरोपतिदेखियाहिकैसेकैनिवाहिसकैपरीकठिनाईहै । रहौद्वारझारौकरौपहुचैअहारतुम्हें महिमानिहारिदृगधारलैबहाईहै ५६६ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालमास भयोजबसमैबिदाकीनीउठिगईहै। अतिपछितातिवहबातअबपावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमईहै । करैंजाकोशिष्यसंतसेवाहीबतावैं करौजोअनंतरूपगुणचाहमनभईहै। नाभाजूबखानकियोमोकोइनमोलळियो दियोदरशाइअतिलीलानितनईहै ५६७॥

दयाआईहै॥ साधवो दीनवत्सला३ ॥ दोहा॥ कबीरा॥ साधु मिलै तौ हरि मिलै अंतर रही न रेष॥रामदुहाई सतक-

हा साधूआय अलेष४ हरितेअबहरि जननिते रंचकअंतर नाहिं॥ येईबाहिं पावनकरै चितवतहीछिनमाहिं५॥

मूल॥-श्रीअग्रअनुग्रहतेभये शिष्यसबैधर्मकीधुजा। जङ्गीप्रसिद्धिप्रयागबिनोदीपूरनबनवारी। भलनृसिंहभगवानदिवाकरदृढ़व्रतधारी। कोमलहृदयकिशोर जगतजगनाथसलूधो। औरौअनुगउदार खेमखीचीधर्मधीलधुऊधो॥त्रिविधितापमोचनसबै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा। श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकीधुजा १५२ भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगटाअंगदपरमानंददासयोगीजगजागे। खरतरखेमउदारध्यानकेशवहरिजनअनुरागे। स्फुटत्योलाशब्दलोहकरबंशउजागर। हरीदासकबिप्रेमसबैनवधाकेआगर। अच्युतकुलेसबैसदादासंतनदसधाअघट। भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगट १५३ मधुपुरीमहोछौमंगलरूपकान्हरकोसोकोकारै। चारिबरनआश्रमरंकराजाअन्नपावै। भक्तनिकोबहुमनबिमुखकोऊनाहिंजावै। बीरीचंदनबसनकृष्णकीरंतनवरषै॥प्रभुकेभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै। बीठलसुतबिमल्योफिरैदासचरणरजशिरधरै। मधुपुरीमहोछौमंगलरूपकान्हरकोसोकोकरै १५४ भक्तनिसोंकलियुगभलैनिवाहीनिंबाखेतसी। आवहिदासअनेकउठिवआदरहरिलीजै। चरणधोइदंडौतसदनमेंडेरादीजै। ठौरठौरकरिकथाहरिअतिहरिजनभावै। मधुरबचनमहुलाइबिबिधिभांतिनिजलडावै। सावधानसेवाकरैनिर्दूषणरतिचेतस भक्तनिसोंकलियुगभलै निवाहीनिबमखेतसी १५५॥

त्रिविध॥तृतीये॥शारीरामानुषा दिव्यावैश्यैयेचमानुषा॥ भौतिकाश्चकथंक्लेशावाधंतेहरिसंश्रयान् १ कोऊ कहैदूरि कैसे होइँगे शरीर सो लगेहैं सतसंगतेआत्मज्ञानआ-त्मज्ञान तेमिटे २ अच्युतः॥ दोहा॥ पिंडसुपीडा परश-राम हितकारी कोउ एक। और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक २ आवैं जाहिं सुकौतुकी पूछै मनकी बात। परसामीतम बाहरी कोपूछैकुशलात३ ॥

बसनबढ़ेकुंतीवधूत्योंत्योंवरभगवानकेयह अचिरजभयो एकपांड़घृतमेंदावरषै । रजतरुकमकीरेलसृष्टिसबहीमन हरषै। भोजनरासबिलासकृष्णकीरंतनकीनों। भक्तनिको बहुमानदानसबहीकोदीनों । कीरतिकीनीभीमसुतसुनि भूपमनोरथआनिकै। बसनबढ़ेकुंतीवधूत्योंत्योंवरभगवान के १५६ ॥ टीका ॥ बीततबरषमासआवैमधुपुरीनेमप्रेम सोंमहोक्षोराशिहेमहीलुटाइये । संतनिजिमाइनानापट पहराइपाछेद्विजनिबुलाइकछूपूजेपैनभाइये। आयोकोऊ कालधनमालजाबिहालभयेचाहेपनपारयोआये अलपक राइये।रहेबिप्रदूखसुनिभयोसुखभूखबढ़ीआयोयोसमाज करौघारीमनआइये ५६६ ॥

बसनबढ़े॥कबित्त॥ ऐसी भीरपरे पर पीरको हरन हार गिरिको धरन हार सोई धीर धरिहै। दीननिको बंधव बिरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै। पंडनिकी पतनी कहत ठाढ़ी पंचनिमें लप ख्योहै चीर सोतौ कैसेकै निवरिहै। कैसौ क्यों न आनि दूशासन सदशक और मोर पक्ष धरिहै सो मेरी पक्ष करिहै १ पांडवकी रानी गहिरावर सों आनी सिरो-मणिबिलखानी बिललानोपैन चेतहै। घटत घटाये पटन

घटत ऐंचेपटदूशासन बार बार ढेरकैकै लेतहै। पांचतन छित आंचतनकन लागो तन लखि कै बिपति यदुपति की नीहैतहै।गोपिनके चोरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेईआनैजोरि जोरि द्रौपदी कोदेतहैं २ आनि कुल बंशकोअकरम उदय होत बाढ्यो छल दुऊं और बंधुनके ग्रह में। पंडवनको तौ मान खंडन सभा के बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोबिंद सनेह में। अंबरके ह्वैगये अंटबर आकाश लगि खैंचि खैंचि हारी खल पावत न छेह में। भक्तनिके काजब्रज राजलाज राखनको आपह्वै बजाज बैठ द्रौपदी कीदेहमें ३होसही॥ कबित्त॥ जिनजिन करनाई तिनतिन करआई करनही नाईतिनिकरनहीआईहै॥का गदलिखाई जिनकागरैलिखाई पाई धरामैं धराई तिनध राधूरिखाईहै॥ दैदैलवराई जिनलईहैपराइअबताह्रपा-सनै कह्रन रहति रहाईहै॥ जिनजिन खाई जिनउदर समाती खाई जिनन खवाई तिनखाई बहुताईहै १॥दोहा॥ वांसचढी नटिनीकहै अतिकौतु नटनी होइ ३ सैंनटकैं न टिनीभई नटैसु नटिनी होइ २ दीयाजगत अनूपहै दिया करौ सब कोइ।घरको धरौन पाइये जो करदियान होइ ३ नारदते बरघाइकै प्रथम सुंदरी होइ॥ पतिव्रतते सूरी भईसुतव्रते पुनिसोइ ४ तापै नारदजी को अरु ब्राह्मण को दृष्टांत॥

अशिसनमानकियोलायेजोईसौंपिदियोलियोगांठिबा धितबबिनतीसुनाइये। संतनिजिमावोभावैरासलैकरावो भावैजैवौंसुखपावौकीजैबातमनभाइये। सीधोलाइकोठै धर्योरोकहीसोथीलीभर्योद्विजनिबुलाइदेतक्योंहूं निघ टाइये। जितनोंनिकासैंतातेसोंगुनोबढ़तऔरएकएकठौर वीशगुनोदैपठाइये ५६७॥

निघटाइये॥ दोहा॥ बुरोबिचारैं दुष्टजन चाहैंकियो

बिगार ॥ जिनकोकामन बीगरै रचकनंदकुआँर १ जैमाल इनको बडोभइयासोवडो भक्त हो ॥ सोरठा ॥ बेटाबाषत नेहसोपै चीन्है चालनी॥ जननी काहि जनेह भांड़मुख भोंडो तनहिं २ ॥

मूल॥जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखीराठवडाभक्तन सोंअतिभावनिरंतरअंतरनाहीं। करजोरैंइकपाइमुदितम नआज्ञामाहीं। श्रीवृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीडारुचिभावै। श्रीराधवल्लभलालनित्यप्रतिताहिलड़ावै। परमधरम नवधाप्रधानसदनसांचनिधिप्रेमजड़। जसवंतभक्तिजैमा लकीरूडाराखोराठवड़ १५७हरीदासभक्तनहितधनिज ननीएकैजन्यो॥अमितमहागुनगोप्यसारवितसोईजानै। देखतकौतुलाधारदूरिआसैउनमानैं। देइदमान्योपैजवि-दितवृन्दावनपायो। राधावल्लभभजनप्रगटपरतापदि-खायो। परमधरमसाधनसुदृढ़कलियुगकामधेनुमेंगन्यो। हरीदासभक्तनिहितधनिजननीएकैजन्यो१५८॥टीका॥ हरीदासबनिकसोकाशीढिगवासजाको ताकोयहपनतन त्यागोब्रजभूमिहीं। भयोजुरनारीछीवछोड़िगयेवैदतीनि बोल्योयोंप्रबीनवृन्दावनरसझूमिही। बेटीचारिसंतनिको दईअंगीकारकरौधरौडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़ झूमिही। चलेसावधानराधाबल्लभकोगानकरैं करैंअचिरजलोगप रोगामधूमिही ५६८ आवतहीमगमांझछूटिगयोतनपन सांचोकियोश्यामवनप्रगटदिखायोहै।आइदर्शनकियोइष्ट गुरुप्रेमभरिपर्योभावपूरोजाइचीरघाटन्हायोहै। पाछे आयेलोगशोगकरतभरतनैन वैनसबकहीकहीतादिनही

आयोहै। भक्तिकोप्रभावयामैंभावऔरआनौंजिनिबिनह रिकृपायहकैसेजातपायोहैं ५६६॥

श्रीवृन्दावन दृढ़वास॥अरिल्ल॥ चिंतामणिकीराशिबि-पिनतजि गाइये। अंतमिलैहरिआपु तऊनहिंजाइये॥ श्री वृन्दावनकी धूरिसु धूसर तनरहै। अरिहांयह आसार है चित्तकहूं को नाघहै ३ राठवड ॥ दोहा॥ साधनमेटे भरिभुजा पदरज धरीन शीश॥ बडीबडी करनीकरी सो सबहै गइूषीस ४ बांधैसो बांधामिलै कबहूं छोड़ैनाहिं॥ मिलै आनिमिर्वत्तसो छुटैजु पलकै माहिं ५ येमेभक्ता न-नापार्थ नमेभक्ता स्तुतेजना: ६॥

मूल॥भक्तभारजूड़ैयुगुलधर्मधुरंधरजगविदित। बावो लीगोपालगणनिगंभीरगुनारट। दक्षिणदिशविष्णुदास गांवकासीरभजनभट। भक्तनिसोंयहभावभजैगुरुगोबि-न्दजैसे। तिलकदासआधीनसुबरसंतनिप्रतिजैसे। अच्यु तकुलपनएकरसनिबह्योज्योंश्रीमुखगदित। भक्तभारजूड़ै युगुलधर्मधुरंधरजगविदित १५६॥ टीका॥ रहैगुरुभाई दोऊभाईसाधुसेवाहियेऐसेसुखदाईनईरीतिलैचलाईहै। जाइजामहोछनैंबुलायेहुलसायेअंगसंग गाड़ीसामासोभँ डारीदैमिलाईहै। याकोतातपर्यसंतघटतीनसहीजातिबा तवेनजानैसुखमानैंमनभाईहै। बड़ेगुरुसिद्धजगमहिमा प्रसिद्धिबोलबिनैकैउचारीसोईकहिकैसुनाईहै ५७०॥

जूडैयुगुल॥ दोहा॥ हरदी तौ जरदीतजै चूनातजै सु-पेत॥ प्रीतिजु ऐसीचाहिये दोउमिलि एकैहेत १ दोऊ एकमन ह्वै भक्ति को बोझउठावे तौ उठतौ गुरुगोविंद

वैस्नवसब एकरूपहै १ भक्तभक्ति भगवंतगुरु चतुर नामबपु एक २ ॥

चाहतमहोछोकियोहुलसतहियोनितलियोसुनिबोलेकरौवेगिदैतियारिये। चहूंदिशिडारयोनीरकसौन्यौंतौऐसेधीरआवैबहुभीरसेतठौरनिसवारिये। आयेहरिप्यारेचारोंखूंटतेनिहारेनैनजाइपगधारेशीशबिनैलैउचारिये। भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्योपटपहराइसुखदियोअतिभारिये ५७१ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरिआसपासमहासुखराशिनामदेवजूनिहारिये। उज्ज्वलबसनतनएकलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमैंधारिये। वेईदेबताइश्रीकबीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदक्षिणाबिचारिये। प्रथमनिरखिनामहरषिलपटिपगलगिरहेछोडतनबोलेसुनौधारिये ५७२ साधअपराधजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसबसंततहींआइये। देखीसोप्रतीतिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकबीरपाइये। आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधारैचली बोलेहँसिआपकोईमिल्योसुखदाइये। कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणायोंरे वाकोप्रतापकहौकहांलगिगाइये ५७३॥

बिनैलै उचारिये॥ महाराज संततौ बहुत आयेसामा कहांयेतो॥ गुरुबोले मनमानौं जितौ देतजावो घटैगीनहीं देनहारो समर्थहै १ आसपास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञैंको भोगको फेरिजन्म धरै दंडौत सौं जन्मकटैगो २॥

मूल॥ कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिष्यप्रगट। आशकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु। चतुरदा

सजगअभयछापछीतरजुचतुरबर। लाषाअद्भुतराइमलषे ममनसाक्रमबाचा। रसिकराइमलगोंदुदेवादामोदरहरि रँगराचा। सबैसुमंगलदासदृढ़धर्मधुरंधरभजनभट। कीलहकृपाकीरतिविसदपरमपारषदशिषप्रगट १६० रसु राशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्म्मलबैन। आगमनिगमपुराणशास्त्रजुविचार्यो। ज्योंपारोदैपुटहिसबहिकोसारउधार्यो। श्रीरूपसनातनजीवभट्टनारायणभाष्यो। सोसर्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो। फनीबंशगोपालसुवरागाअनुगाकौऐन। रसराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्म्मलबैन १६१॥

रसराशि उपासिक॥ कवित्त॥ रसराशि शिंगारताके उपाशिक नाथभट्टहैं शिंगार रसमें चारौरसहैं सांतमनकी लगन निश्चय दासस्वामी के आधीन सष्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्ययनहोइ॥ वात्सल्य पुत्रवत लडाये॥ शिंगार कांतकांता समप्रीति आशक्ति सो अशक्तिमे चारौरसरहैं जैसेपृथ्वी को गुणसुगंध अरुतत्वमें नमिलै चारौतत्व प्रथवीमेंमिलें अपतेज वायु अकाश ऐसेही रसराशि शिंगार रसकहावै१ भागवते॥मन्येसुरान् भागवतान्त्र्यधीशे संरंभमार्गाभि निविष्टचित्तान्॥ येसंयुगचक्षततार्क्ष्यपुत्र मंसेसुनाभायुधमापतंतं २ फनीबंशगोपालदासके पुत्रनारायण दासऊंचेगांववाले के पुत्र ३॥

कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहिकलंकरही। नस्वरपतिरतित्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी। सबैजगतकीफांसतरकितिनुकाज्योंतोरी। निर्म्मलकुलकांथडाधन्यपरसाजिहिजाई। विदितवृंदाबनबाससंतमुखकरतब

ड़ाई। संसारस्वादसुखबातकरिफेरिनहींतिनतनचही।
कठिनकालकलियुगमेंकरमैंतीनिहिकलंकरही १६२॥

कठिनकाल॥ अन्नोंचन को दियो है बाहर तौरहै स्वानखावै॥ भीतर रहैतौ भूसोखावै अन्नीकी भक्तिकथा कथाकही हो याकठिन कालमें करमैंतीही निष्कलंक रही सतयुगमें बिषै में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बड़े राजा दिग्वजीतिपै इंद्रीनजीती नाहिं याअबलाने सबइंद्रीजीति कै मनबश करि वैराग्य कियो १॥

टीका॥ सेखावतनृपकेपुरोहितकीवेटीजानौंबासहो षडेलाकरमैंतीसोबखानिये। वस्योउरश्यामअभिरामकोटिकामहूंते भूलैधामकामसेवामानसीपिछानिये। बीति जातियामतनबामअनकूलभयोफूलअंगगतिमानोमतिछ-बिसानिये। आयोपतिगौनोलैनभायोपितमातहियेलिये चितचावपटआभरणआनिये ५७४॥

वस्यौउरश्याम॥ संग न ध्यान श्यामकेसेवस्यौभागवती॥ तत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा॥ ज्ञानवैराग्य भक्ति सर्वत्र सब देशमें है सबके हृदैमें हैं घटिवढ़ि क्यों गिन्योहै सोसुनों श्रीभ-गवान को नाम बासुदेवहै शुद्धहृदैमें झलकैहै दर्पन मोर-चाहोइ तौ नझलकै मज्योहोइ तौ आइझलकै सो हृ-दय दर्पनबिषै बासना मोरचे सो करमैती को हृदै उज्वल हरि आइझलकै सतसंगबिना हृदैकैसेउज्वल भयोकही पर्वजन्म की भक्ति अगररही सो उदैभई॥ ऐसेअंधेरी कोठरीमें वस्तु धरि कै बिदेशको गयो॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसेपछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौसंगकी उपेक्षानहीं २ सानियै॥ कवित्त॥ अबहींगई

खरिकगाइ कै दुहाइवेकी बावरी ह्वै आई डारि दोहनी औपानकी। कोऊकहै छरीकोऊ भौंनपरी डरीकहै कोऊकहै मरीगति हरीअयानि की॥ सासुव्रत ठानै नंदबोलति सयानैधाइ दौरिदौरि आनैमानौ खोरि देवतानि की। सखी सबहूँसै मुरझानि पहिंचानी कहूं देखी मुसिकानि वारँगीलै रसखानि की १॥

परयोशोचभारीकहाकीजिये विचारीहाडचामसोंस वारीदेहरतिनकेनकामकी। तातेंदेवोत्यागिमनसोंवैजि निजागिअरेमिटैउरदागएकसांचीप्रीतिश्यामकी। लाज कोनकाजजौपैचाहैव्रजराजसुतबड़ोईअकाजजौपैकरै सु चिधामकी। जानीमोरगौनोहोतसानीअनुरागरंगसंग एकवहीचलीभीजोमतिवामकी ५७५॥

हाडचाम सौंसनौ मांसग्रंथी देहतौ मलीनमन॥ सवैया योवनजोर मनोनलिता सबदेखि यकीयहअगमअथा है। बातचलै चहुंओरहुतै सु यहै मनमें अतिशोच महाहै। खेवनहार पुकारकरै आलीमांझ कीधारलखी परहाहै। नेहकीनाव कुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै २ जोवन की सलितागहिरो अरुनैननिनीरनदी उमही है। पीतम को पतियाजु लिख्यो बिनषेवटियाकहुंपारभई है। मानको रासमहा झकझोरत प्रेमकीडारि सो लागिरही है। मनमेरेमलाह मिलैतौबचौ नहिबोरि अथाह सलाह यही है १ सावैजिनि॥ कुंडलिया॥ ससाअंधेरी छाडिदै हरिभजि लाहोलेहु॥ हरिभजि लाहौलेहि देहजिनि राचीतेरी॥ नातरयमकेद्वार मूढ़पैठैजुपवेरी। ना दुपटै अतिचेत चालैजै भाई॥ भूलैयम पुरजाइ समझि भुवलोक वसाई अगर आलकसजिनिकरौ दुर्लभ मानुष देहससा अँधेरी छाडिदै हरिभजि लाहौलेह २ जोदिन

जाहि अनंदमें जीवनको फलसोइ। जीवनको फलसोइ नंदनंदन उरधारै॥ संतीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै॥ पदम पचज्यों रहै कालसम विषैपिछानै जगप्रपंचतें दूरि सत्यसीता पतिजानै॥ अगर अजाके स्वादतै चपितन देख्यो कोइ॥ जोदिन जाइ अनंदमें जीवनको फलसोइ ३ पानीको धननी कर्यो जरनभयो गुवाल॥ जरनभयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनदीयो। भक्ति सुधारस छांड़ि जहर विषयारसपीयो॥श्रवण ध्यान मुख प्रान वरणहंग उमगी आपी। तिनको दीनी पीठि निलज्ज कृतघी पापी अगर श्याम उपकार निधिभज्योनहीं गोपाल। पोनीको धननीकर्यौ जरनभया गुवाल ४॥

आधीनिशिनिकसीयोंबसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनसुधिबिसराईहै। भोरभयेशोरपर्योपितामातशोचकर्या। करिकैयतनठौरठौरढूंढ़िआईहै। चारोंओरदौरेनरआयेढिगटरिजानी ऊंटकेकरंकमध्यदेहजादुराईहै। जगदुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें बहुदुरगंधसोसुगंधलौंसराहीहै ५७६॥

सुधि बिसराई है। कवित्त। बैदनि बुलाइ लावो स्यान नि अनेक भांति यर्पति यतन रूप लागति है नेरमें। योगी जती जोइ सी उपासिक देव भैरौंके कामरूके बासीपचि मीडो हाथ हेरमें। लोटि लोटि जाइ बीरबालै न अनाज खाइपनियांकोनिकसीआजुअधिकअँधेरमें। बावरीअनाहकयहभूतनबधायेफिरैआईब्रजबालनंदलालजूकेफेरमें ५॥ चारौंओरबातरस ठौरठौर ढूंढ़िआयेहैं। कुयं। गिनिको आत्मा अप्राप्त तैसेनमिली जगदुर्गंध कोऊऐसीबुरीलागी जगत दुर्गंधहू तेंडरी। ऊंट कोकरंक की सुगंधमानी जगदुर्वासना करंकहू ते बड़ी मानी १॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियह कैसेकरिगाइये । आयोकोऊसंगताहीसिंगगंगातीरआई तहांसोअन्हाईहैभूपगाबनआइये । ढूंढ़तपरसरामपिता मधुपुरीआये पतेलैबतायेजाइमाथुरमिलाइये । सघन विपिनब्रह्मकुंडपरबरएकचढ़िकरिदेखीभूमिअँशुवाभिजा- इये ५७७ उतरिकैआइरोइपाईलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगमुखनदिखाइये । चलौगृहबेगिसबलोकउपहास मिटै सासुघरजावोमतिसेवाचितलाइये । कोऊसिंहव्या- घ्रअजुबपुकोबिनाशकरैत्रासमरेहोइफिरिमृतकजिवाइये । बोलीकहीसांचविनभक्ततनऐसोजानौ जोपैजियोचाहौ करौप्रीतियशगाइये ५७८ ॥

वैभूपगाबनआईहैं॥ रणोगिनीको बानोकरिकैदृन्दावन कहाजाहि ॥ जैसेबिदुरजी दुर्योधन की पौरिपै धनक ध- रिकै निकसे औधरजीने लिख्यो है डरै नहीं । चक्रवर्ती लिख्यो बधिकको बानोतीर्थ याचासें कहाकरैं यहश्रीवृ- न्दावन धामहै बैकुंठहूते सर्वोपरिहै १ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगायेहैं २ मृतक जिवाइये तुमसांची कही भक्तिबिना तौ प्रानी मृतकही तुल्यजानौं ३ नागलोक स्वर्गलोक मेंहूं भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटैजोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिना कलोकमेंनपाइये । वरषपचाशलगिविपैहीमेंबासकियो तऊनउदासभयेचनेकोचबाइये । देखेसबभोगमेंनदेखेएक श्यामताते कामतजिधामतनसेवामेंलगाइये । रातितेज्यों प्रातहोतऐसेतमजातभयो दयोलैसरूपप्रभुगयोहिये आइये ५७९ ॥

क्योंकि चारिकौड़ी की भांगसों बावरो ह्वै जाइहै॥ तापैपास्ती को दृष्टांत अरुभंगी को जहां रागरंग असत भोगकैसे न बावरो होइ ताते विद्या धनराज्य पाइकै मत्तहोइहै जैसेचौषो धनको पाइकै बावरो भयो॥ आपुको आपहीअधिकार है १ बरषपचास॥ सप्तमे॥ मतिर्न कृष्णोपरत: स्वतोवामिथोभिपद्येतगृहव्रतानां अदान्तगोभिर्विशता तमोंधं पुन:पुनश्चर्वितचर्वणानां २॥ कवित्त धनदियो धामदियो भामसुत नामदियो दियोजग यश ताके तनयौवन रूपमें। नरदेही दीनी सबसुरति सपूरी कीनी कामिनीनबीनीनहीं जानदीनों दुखमें। दामनको रोवैनिशि बासर जनमखोवै हरिजो बिसारैगोदी ऐसेतै ने सुखमें। धरिपरीकुलमें बड़ाइलें अंगारधरे भारपरो बुद्धिछार परोतिरे सुखमे ३ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छुटैगो सोनहीं ४॥ कुंडलिया॥ हाहाकरे न छूटिहैं वैरीवश परिजाइ॥ वैरीवश परिजाइ कालयमकी संगहैगो। तात मातसुतबाम भीरकोउ नाहिंधरैगो॥ दानपुण्य औषधी तिनहूते कानसरहीं। होनहारसोवड़ी उलटघटको अनुसरहीं॥ अगरउबारै रामपद कैसंतनि कीबांह। हाहाकरै न छूटही वैरीवश परिजाहि ५॥ कुंडलिया॥ बहुतगई थोरीरही थोरीह्रमेंचेत॥ थोरीह्रैचेत अमल घटथोरैथोरै। सारग विषैविसार शोभदै सियपतिओरै॥ द्वैघटिकामेंअंग भूपगोविंद पदपायो। दुर्गतितजिकैपिंगला श्यामहठ सेजबसायो॥ अगरआलकमजिनकरौ हरिभजवेकेहेत। बहुतगई थोरीरही थोरीह्रमेंचेत १ दयोलै सरूप॥पंचमे॥ कर्मकरन उपजनिपुनिनाश। सुखदुखशोक मोहनितत्रास॥ इनकेहेत दियोहरिनेतन। ताहिअन्यथा करैकौनजन १ जासवेदबानी बड़दाम। दृढ़गलबंधा कर्म गुणनाम॥ तामेंवँधे हरिहिहमऐसे। बहतहैबैल धनीको जैसे २ गुणकर्मनकरि दुखसुखजाजा। देतहैहरि हमलेत हैंसोसो॥ ताहोकेबश रहतहैंऐसे। अंधसबांखे केबशजैसे ३

सुतइनिजतन धारैतौलौं। गर्वत्यागि प्रारब्धहैजौलौं॥ औरदेह पुनिधरैनऐसे। सुनकोतन जाग्योजनजैसे ४ अहिबनहूंमें भययाते। संगहैंकछ इंद्रीरिपुजाते॥ आतमाराम जितेंद्रीमहा। ताबुधको गृहदूषणकहा ५ पहलैंकह इंद्रीवैरीजै। घरसेंरहि ऐसेजीतैते॥ ज्यौंगढ़मेंरहि रिपुनिजीतजन। फिरतहांरहै नहांभानैंमन ६॥ श्रीशुकउवाच॥ त्रिभुवनगुरुकी यहआज्ञासुनि। अपनोहैहलिकाई जदियपुनि॥ अतिभागवत तजप्रियव्रतजो। आदरसों शिरनायलईसो ७ बिधिहमनुकी पूजालैपुनि। लखि सनमानप्रियव्रतनारदमुनि॥ मनबानी व्यवहार अगोचर। ताब्रह्महि सुमिरत गमनेघर टपायमनोरथ विधितेमनुजो। नारदको सम्मतलैकैसो॥ सुतहिराजदै अपुल्यागोघर। अतिहीविषमविषैविषकोघर ९ योंनिर्मल मानदप्रियव्रतजो। हरिइच्छाते पायराज्यसो॥ जिहिप्रभाव जगबंधनहरै। तिहहरिपदमें नितचितधरै १०॥

आयेनिशिघरहरिसेवापधरायअतिमनकोलगायवहीटहलसुहाईहै। कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आयनृपपूछैद्विजकहांसुधिआईहै। बोल्योकोऊतनधामश्यामसंगपागेसुनि अतिअनुरागेबेगिखबरमँगाईहै। कहोतुमजायईशईहांईअशीशकरो कहीभूपआयोहियचाहिउपजाईहै ५८० देखीनृपप्रीतिरीतिपूंछीसबबातकही नैनअश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें। बरजतआयोभूपजायकैलिवायल्याऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें। कालिंद्रीकेतीरठाढ़ीभीरदृगभूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैंवैउमंगमें। कियोमनैंलाखबेरअयेअभिलापराजा कीनीकुटीआयदेशभीजेसोप्रसंगमें ५८१॥

भूपआयो ॥ बनवारीदाससुन्शीअरु दारासिकोहशाह जादो ताकोप्रसंग राजाको आशीर्वाद नकियो तापै फकीरअरु बादशाहको प्रसंग पावँ फइलायदिये १ दोहा ॥ जबलगयोगीजगतगुरु तबलगआशनिराश। तुल-सीआशाकरतही जगगुरयोगीदास १ ॥ कवित्त ॥ दुरित त्रिटारनी सकलजगतारनीयह नहिंप्रतिपारिनीहोप्यारीनाहकी। वृन्दावन रसकेलि कारिनीहो हरिनीहो सबनिकेनोकीभांति तनमनदाहकी । सूरति सुकबिरबि नंदिनीकृपाकैदीजै लाड़िलीऔलालकी सुभक्तिउतसाह को। औरजितीकामनाते सबैप्रवाहदेउ रहैपरवाहएक तेरेप्रवाहकी १ छप्पै ॥ प्राणजाउतोजाउ जाउयशसकल बड़ाई। होउधनकोनाश भ्रमहिमनगहोजड़ाई ॥ आधि व्याधिकेंदुखकरैंजतनकोजीरनाकरोनहोंउपचारिकोहो नानापोरन॥बहुविधिवचन कठोरकहि सबैनिरादरकरो किन।श्रीवृन्दाबनको छांड़ियेयहआवोमन भूलिजिन ३॥

मूल॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखडगसेनबाणीबिसद॥ गोपीग्वालपितुमातनामनिर्णयकियोभारी । दानकेलि दीपकप्रचुरअतिबुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकाल लीलामेंबितयो। कायथकुलउद्धारभक्तदृढ़अनतनचितयो॥ गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्यागोमंडलरसद । श्रीगोविंद चंदगुणग्रथनकोषड्ग० १६३टीका॥ग्वालियरवाससदा रासकोसमाजकरै शरदउज्यारीअतिरंगबढ्योभारीहै । भावकीबढ़निदृगरूपकीचढ़नितत्ताथेईकीरढनिजोरीसुंदर निहारीहै। खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झलत अपारसुखरीझिदेहिवारीहै । प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनिसरसाईबातलागीप्यारीहै ५८२॥

बाणीविसद ॥ पद ॥ है गोपिन बिचबिच नँदलाला। श्यामसेघको दुहुं ओर राजतनवदामिनिवाला। करत नृत्यसंगीत भेदगति गरजत मोरमराला। फहरत अंचल चंचल कुंडलयहररहै उरमाला। मध्यमिलीमुरलीमोहन धुनि गानवितान छयोतिहिंकाला। चलियेभलकि भ्रं-कभ्रंकरि बलयमिलि नूपुरकिंकिनीजाला। देवविमाननि कौतकमोहे लखिभयो मदनबिहाला। खगसेनप्रभु रैनिश देको बाब्योरंगरसाला १ ॥ पदपद गावतगावतही प्राण त्यागे देहवारीहै। देहछोड़िकै ताहीभावको प्राप्तभयो। सनेहकीहै जातिएक बिछुरनि पूरसनेही तन झिलिनि-हूंमेंछोड़े बिछुरनहूंमेंछोड़े १ ॥ दोहा ॥ चढ़िकैमैन तुरंग परचलबो पावकमाहिं। प्रमपंथ ऐसोकठिन सबकोउ निवहतनाहिं २ ॥

मूल ॥ सखाश्याममनभावतोगंगाग्वालगँभीरमत ॥ श्यामाजूकीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगायब्रज गावँ प्रथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिसुखझिलिअघट उरअंतरधरई । तारसमेंनितमगनअसदआलापनकरई ॥ ब्रजवासआशब्रजनाथगुरु भक्तचरणरजअनन्यगति । सखाश्याममनभावतो० १६४टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदा बनमनचाहभईसारंगसुनावैकोऊजोरावरिल्यायेहै । ब-ल्लभहूसंगरुवरभरतहीछायोरंग अतिहीरिझायोद्दगअँशु वाबहायेहैं । ठाढ़ोकरजोरिबिनैकरीपैनधरीहिये जियेब्रज भूमिहीसोंबचनसुनायेहैं । कैदकरिसाथलियेदिल्लीतेछु-टायदिये हरीदासतौबरनैंआयेप्राणपायेहैं ५८३ ॥

ब्रजबासआस ॥ कवित्त ॥ निकुंजकोचंद अरविंदरस सिंधुकोलाडिली कुंवरिमोहिं यहैदीजै। आनंदकोधाम

अभिराम याविपिनको जनजपरजनम कोऊ जोवकीजै॥ रहु अतिधूरिधूसर सदाप्रेम मय सुनतबरवानी कलके- लिजीजै। नवलनवकुंजमें फिरौं अलबेलीदिन निरखिवन रूपभरि दृगनपीजै १ परेज पतौवासूके भूख मेंपीयष जैसे खाऊंरूषरूपतरे बैसीतोको जीवको। प्यासतेबहैजु पीर तरनि तनैयातीर अंजुलिको अरिधीर छीरनीरपीवको। केलिकल जोहतबिमोहत सुहैहै कबिहंदावन कुंजपंकज भ्रमर भमीवको। आनंदमें झूमिघूमि बसोंगाविलासभू- मि आरतीको टूमिजैसे सुखपावैहीवको २ ब्रजभूमिको लालजूने स्वादअपने मुखसोंलियो ब्रह्मांडघाटपै १ दृग अँसुवा ॥ दोहा ॥ रूपचोजकीबात पुनि औरकटीलीतान रसिकप्रवीनन कहै छंदनकरैबेनाज १ वतरसनीरगँभीर अतिकोउन पावतथाहि। लीनलीन रसरसकजो सोईपा वततथाहि २ ॥

मूल ॥ सोतीश्लाघसंतनिसभाहुतियदिवाकरजानि यो ॥ परमभक्तिपरतापधर्मधुजनेजाधारी। सीतापतिको सुयशबदनशोभितअतिभारी॥ जानकीजीवनिचरणशरण थातीथिरपाई। नरहरिगुरुप्रसादपूतपूतेंचलिआई ॥राम उपासिकछापदृढ़औरनककुउरआनियो । सोतीश्लाघसं तनिसभाहुतियदिवाकरजानियो १६५ जीवतयशपुनि परमपदलालदासदोनोंलही॥ हृदैहरिगुणखानिसदासंत सँगअनुरागी । पद्मपत्रज्योंरह्योलोभकीलहरनलागी ॥ विष्णुरातसमरीतिविधैंसोतनत्याज्यो । भक्तबरातीवृंदम ध्यदूलहज्योंराज्यो ॥ खरीभक्तिहरिषांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ी गही।जीवतयशपुनपरमपदलालदासदोनोंलही १६६ ॥

सुयशबदनशोभितदोहा॥ तुलसीरसनाजोभलीनिशदिन

नसुमिरैराम ॥ नहींतोखैंचिनिकारियेमुखमेंभलोनचाम१ छापद्दढ़ ॥ सवैया ॥ आगमवेदपुराणबखानत कोटिकनिर गुणजाहिनजाने। जेमुनितेपुनिआपहिआपको ईमककहा-वतसिद्धसयाने। धर्मसबैकलिकालग्रसेजपयोगबैरागलैजीव पराने। कोकरिशोकमरैतुलसी हमनानुकीनायकेहाथ बिकाने १ जीवतयश॥कुंडलिया॥ इकदहै अरुचौपरीपुनि लाइदुहूंहाथ॥ पुनिलाइदुइहाथकथाहरिजनमिलिगावै। जीवतयशजगमाहिंबड़रसदगतिकोपावै॥ देवपितरविधि अवधिकोजबाधानईकरई। अनन्यभजनगुरुगदितनित्य गोविंदअनुसरई॥ अगरउभैताकीबनैह्वै संतनिकेसाथ। इकदहै० १कायाकसोकैमनबसोहँसोरहौगहिमौन। तु-लसीमनजीतेबिना मिटैनहींदुखजौन॥ विष्णुरातेवघेरमें पारायनकरवाई पूरीभईजबशरीरत्यागिदियो १॥

भक्तनिहितभगवानरचीदेहीमाधौग्वालकी॥ निशि दिनयहैबिचारदासजिहिविधिसुखपावैं। तिलकदाससों प्रीतिहृदैअतिहरिजनभावैं॥परमारथसोंकाजहियेस्वारथ नहिंजानें। दशधामत्तमरालसदालीलागुनगानें। आ रतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी।भक्तनहित० १६७ अगरसुगुरपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मानस बाचककायरामचरणनचितदीनों। भक्तनसोंअतिप्रेमभा वनाकरिशिरलीनों॥ रासमध्यनिर्जानिदेहुद्युतिदशादि खाई। आड़ौचलियोअंकमहोछैपूरीपाई॥ क्यारेकलशऔ लीध्वजाविदुषश्लाघाभागकी। श्रीअगरसुगुर० १६८ प्रगटअमितगुणप्रेमनिधिधन्यविप्रजिननामधरयो॥ सुं दरशीलसुभावमधुरबाणीमंगलकरु। भक्तनकोसुखदैन फल्योबहुधादशधातरु॥ सदनबसतनिर्वेदसारभुक्जगत

असंगी। सदाचारउदारनेमहरिदासप्रसंगी॥ दयादृष्टि वशआगरेंकथालोकपावनकर्‌यो। प्रगटअमितगुणप्रेम निधिधन्यविप्र० १६६॥

दयादृष्टिकरिकैजगतकोपारउतारै। यातेंवृंदाबननिकटताहिकोछोड़िकैआगरेरहैकथालोसबहीकहैं। पैक्रिया वानजनकीसुनिकैपारलगैं॥ कवित्त॥ जैसेशशिनिशिकोअकाशमेंप्रकाशपावैऔसिरावैतापतनकी। तैसेरसिकाई औअनन्ताईबातसुख शोभितहैक्रियावानजानकी। जैसे धनधामक्षामश्यामजूकेलागेकाम होतअभिरामदुखग्राम नाशैमनकी। ऐसेहरिगुणकोऊपुण्यनबखानकरैतौपैकान प्राणहरैगुणगनकी १ आगरेवृंदाबनकेघाटकोनलआवत इहबाट। तातेंयहहैआगरोऔरगांवसबघाट १॥

टीका॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरो शहरनिशिशेशजलल्याइये। वरषासुऋतुजितिततिअतिकीचभई भईचितचिंताकैसेअपरसआइये। जोपै अंधकारहीमेंचल्योतौबिगारहोतचलेयोंबिचारिनीचछुवैन सुहाइये। निकसतद्वारजबदेख्योशुकवारएकहाथमेंमसा लयाकेपाछेचलेजाइये ५८४ जानीयहहैबातपहुंचायेकहूं जातयहअबहींबिलातभलेचैनकोऊधरीहै। यमुनालौंआ योअचिरजसोलगायो मनतनअन्हवायोमतिवाहीरूपह रीहै॥ घटभरिधर्‌योशीशपटवहआयगयोआयगयोघरन हींदेखकहाकरीहै। लागीचटपटीअटपटीनसमझिपरैभट भटिभईनईनैनहीरिझरीहैं॥ ५८५॥

सुकुवार॥ एकमसालमेंकूपीतेतेलडारिविकीशोभाहोन्यारी॥ कवित्त॥ लालवऊचहीपागबांधीअनुरागहीसों

ताप्रभुकिरह्योतुरी अतिहीविशालहै। आँगाघेरदारफेंटा
बांध्योअतिचातुरीसों गरेगुंजमालशोभादेतप्रेमजालहै।
बाज़ूऊंचोकैचढ़ायचूड़ाचनकायअति औचकहीआयेजिस
हाथमेंमसालहै। आगेआगेचल्योजायमनकोलगायलियो
सुधिबिसरायचितकरतनिहालहै १ सोरठा॥ जामुखसों
जोनाम निकसतसोप्रगटतभयो। बहुरंगीवहश्याम ह्वै स
रूपअँखियनलग्यो २ दोहा ॥ पुतरीकारीआंखिकीरूप
श्यामकोमानि॥ वासोसबजगदेखियेबाविनअंधोजानि ३
कारीदृगकीपूतरी कारोहरिकोअंग ॥ जिनसोंसबजगदे-
खिये जिनबिनरूपनरंग ४ प्रेमकीनिधिअतिप्रेमनिधि भ-
र्योप्रेमउरजाल॥ सोईमूरतिधारकैप्रगटभयोतिहिकाल
प्रेमप्यारेमेंअंतरनहीं १ प्रेमप्रीतिमेंअंतरयेतो। बीसीतीन
साठहैतेतो २कहाकरीहै औरतौअंधेरकेचोर। यानेमसा
लबरायकै चितचुरायो भजनभूलिगयो मसालहीको
ध्यानरहै ६॥

कथाऐसीकहैंजामेंगहैंमनभावभरेकेरैंकृपादृष्टिदुहुजन
दुखपायोहै। जायकैसिखायोबादशाहडरदाहभयो कही
तियाभलीकोसमूहघरछायोहै। आयेचोबदारकहेचलौय
हीबारबार झारिधर्योप्रभुआगेचाहैशोरलायोहै। चले
तबसंगगयेपूछैंनृपरंगकहा तियनिप्रसंगकरौकाहिकैसुना
योहै ५८६ काहूभगवानहीकीबातसोबखानकहौंआनि
बैठेनारीनरलागीकथाप्यारीहै। कहूकोविडारैंझिझकारे
नैकुटाविषै दृष्टिकैनिहारैताकोलागैदोषभारीहै। कहीतुम
भलीतेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातकछू
न्यारीहै। बोल्योयाकोराख्योसबकरौनिरधारनीके चले
चोबदारलैकैरोकैप्रभुधारीहै ५८७ सोयोबादशाहनिशि

आयकैसुपनदियो कियोवाकोइछभेषकहीप्यासलागीहै। पीवोजलकहाआबखानेलैबखानेतब अतिहीरिसानेको पिवावैकोउरागीहै । फिरिमारीलातअरेसुनीनहींबातमे रीआयफुरमावोज्योईप्यावैबड़भागीहै । सोतौतैलैकैदक र्योसुनिअरबर्योडर्यो भर्योहियेभावमतिसेवततैंजा गीहै ५८८ बोरेनरताहीसमैबेगिदेलिवायल्याये देखल पटायेपायनृपद्दगभीजेहैं । साहिवतिसायेजायअबहींपि वावोनीरऔरपैनपीवैंएकतुमहीपैरीझेहैं । लेवोदेशगावँस दापावहींसोंलग्योरहौं गहोनहीनेकुधनपायबहुछीजेहैं । संगदैमसालताहीकालमेंपठाये यौंकपाटजालखुलेलाल प्यायोजलधीजेहैं ५८६ ॥

कथाऐसीकहै॥दोहा ॥ नातोनेहरसरंगभरिकहैंकथा निर्वेद ॥ जैसेचिठीविदेशकी बाचनह्रीमेंभेद १ गहौनही नेकु ॥ दोहा ॥ जबलगिभक्तिसकामता तबलगिकच्चीसेव॥ कहिकबीरवेक्योंमिलैं निहकामीनिजदेव २ ॥

मूल॥दूबरोजाहिदुनियाकहैसोभक्तभजनमोटोमहंत। सदाचारगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रगटदिखाई। बाहरिभीतर बिसदलगीनहिंकलियुगकाई ॥ राघवरुचिरसुभावअसद आलापनभावैं । कथाकीरतननेममिलैसंतनिगुणगावैं ॥ तापनोलिपूरोनषकज्यों घनअहरनहीरोसहंत । दूबलो जाहि० १७० दासनिकेदासंतकोचौकसचौकीयेमंडी॥ह रिनारायननृपतिपदमवेरछैंविराजै । गावँहुशंगाबादअट लऊधौभलछाजै॥ भलैतुलसीदासभटख्यावदेवकल्याने।

वोहिथविगरामदाससुहेलैपरमसुजाने ॥ औलीपरमानंद कैंधुजासवलधर्मकोगंडी। दासनिकेदास० ७११ अबलाश रीरसाधनसबलायेवईहरिभजनबल। दमाप्रगटसबदुनी रामवाईबीराहीरामनि । लालीनारालक्ष्युगुलपारवती जगतधनेखीचनि ॥ केसिधनागोमतीभक्तउपासिनि । बादररानीविदितगंगायमुनारैदासनि ॥ जेवाहरषाजोप सिनिकुंवररायकीरतिअमल। अवलाशरीरसाधन० १७२ कन्हरदाससंतनिकृपाहरिहदैलावोलह्यो ॥ श्रीगुरुशरनै आयभक्तिमारगसतजान्यो। संसारीधर्महिछांड़िझठिअरु सांचिपिछान्यो ॥ ज्योंशाखाद्रुमचंदजगततेइहिविधि न्यारो। सर्बभूतसमदृष्टिगुणगंभीरअतिभारो ॥ भक्तभला ईवदननितकुवचनकबहूंनहिंकह्यो। कन्हर० १७३ ॥

भजनबल ॥ हरिके भजन सोंकलियुग में साधन सबल किये ॥ छप्पै ॥ महाकठिन कलिकाल में कह्रोलाज कैसे- रहै ॥ जनम करम नितनेम प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ ताहि कहत पाषंड काहितू जगभरमावै ॥ लाबरलौंड लवार ताहि आदर करिलीजै ॥ शीलवंत गुणवंत साधु पकरि ताहि धक्कादीजै ॥ चतुरदासइक आशहरि सोई छतपन नाहिनगहै ॥ महाकठिन० १ सहनशील संतोष मनलें न- हिंलावै ॥ निस्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ रागद्वेष सों रहत रुचिर सतसंगत कीजै ॥ हरिगुरु सा- धुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै ॥ चतुरदास राधारवन निधि बासर इहिविध कहै ॥ महाकठिनकलिकाल में० २ ॥ कवित्त ॥ आजु कलिकाल ऐसो आयो है कराल अ- तिराखै जो शुपालटेक तौतौछन्द जीजिये ॥ बोलिये न चालियेजुबैठिपिंड पालिये नु आंखि कान मूंददोयमौन

व्रत कीजिये ॥ देखी अनदेखी जानिसुनी अनसुनी मानिसाखा गहिपानिहान लाभनचितदीजिये ॥ कीजि- ये न दोषजोपै कहैकोऊ बीससीष लीजैधरि शीश जग- दीश साषि कीजिये २ यहभक्ति को सरूप है लांचो लह्यो एकतौ देखत को बड़ो एकगुण में बडो जैसे गोरष की डीबीसी इनको हृदय गुनमें बड़ो दशअंगुल को तापैदश हजार गारीसभाय नाहिं चमासों १ सबहीते धरनीबडी जापैनव खंडबसैं ताते बडे सिन्धु तापै टापू दिखरात है। ताते बड़े कुंभताते तीनही चुलूमें किये ऐसेऊ अकाशमें अलेषै जात हैं ॥ दीरघ गगन अनी पूरन पगनभयो माप्यो ब्रह्मांड गयो वामन को गात है। होतो तुम बड़े तुमहूं ते बडेसंत जाकेहृदय में जग- न्नाथ अमसि समातहै १ ॥ दोहा ॥ सबही घटमें हरिबसे ज्यौं गिरिसुत में ज्योति ॥ ज्ञानगुरू बकभक्तबिना कैसे परगटहोति २ झूठि अरुसांचि सो संतसो ज्ञानहोय जग पिछाने जैसेगुमास्ते के संगसों साहूकार के बेटेने झूठो अवाहर पिछान्यो तबफारि डार्‌यो ॥ ऐसे सतसंग सों ज्ञानह्वै जबसंसार झूठोजानै जबकोंडिदे १ कुबचनकब' हूं ॥ दोहा ॥ संतननिंदा अतिबुरी भूलिकरो जिनकोय । कि येसुकृत सबजनम के जरामें डारैखाय २ ॥

लट्यो लटेरा आनि बिबिधि परमधरम अति पीन तनि । कहिनी रहिनी एक एक प्रभुपद अनुरागी । यश बितान जगत न्यो संत संमत बड़भागी । तैसोई पूत सपूत नूत फल जैसो परसा । हरि हरिदास निटहल कवितरचना पुनि सरसा । सुरसुरानंद संपुटाय दृढ़ केशव अधिक उदारमन । लट्यो लटेरा आनि बिधि परमधरम अति पीनतन १७४ केवलराम कलियुग के पतित जीव पावन किया । भगत भागवत बिमु

खजगतगुरुनामनजाने। ऐसेलोगअनेकऐचिसनमारग आने। निरमलरतिनिष्कामअजातेंसदाउदासी। तत्वदरशीतमहरणशीलकरुणाकीरासी। तिलकदासनवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढ़दिया। केवलरामकलियुगकेपतित जीवपावनकिया १७५ टीका॥ घरघरजायकहैंयहैदान दीजैमोकोकृष्णसेवाकीजैनामलीजैचितलायकै। देखेभेषधारिदशबीशकहुअनाचारीदिये प्रभुसेवनकेरीतिहिसिखायकै। करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेलगायोसांटोलोटेदयाआयकै। उपरयोप्रगटतनमनकोसचाईअहोभयेतदाकारकहोकैसेसमुझायकै ५६०॥

लक्ष्योलटेरा॥ दोहा॥ कबिरा हरिके भावतो दूरहिते दीखंत॥ तनछीने मनउनमने जगरूठड़े फिरंत॥ सोरठा॥ कहाचीकने गात रस पूछत खिसले परैं। सरस न आवै बातराखउड़ैरूखे हिये २ और अनुमान करैजैसे सुजावर औकाजीने लँगरीभेड़ को अनुमान कियो तत्वदरशी तापैदृष्टांत बादशाह अकसुघरा को घरघरजायक है क्योंकि करुणासिंधुहैं॥ जैसेकोऊ बेरीहयकरी वालेको जायकै छुटावै क्योंकि वहतो आपसकै नहीं॥ आपनहीं जायकै छुटावै साधुश्रो दीनवत्सला: जैसे चंद्रा सुघराने घरबैठेही बादशाह को तत्वदरशायो रीति दिखायके भोगलगाय के खायो १॥

मूल॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशविस्तरयो। धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि। पृथ्वीराजकुलदीपभीमसुतविदितकील्हशिषि। सदाचारअतिचतुरबिमलबाणीरचनापद। शूरधीरउदारबिनयभल

पनभक्तनिहद। सीतापतिपदराधासुबरभजननेमकूरमध्र्यो। श्रीमोहनमिश्रतपदकमल आशकरनयशबिस्तर्यो १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवरजानों मोहनजूधरिहियेसेवानीकीकरीहै। घरीदशमंदिरमेंरहै रहैचौकद्वारपावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै। पर्योकोऊकामआयअबहींलिवायल्यावोकहै पृथ्वीपतिलोगकानमेंनधरीहै। आईफौजभारीसुधिदीजियेहमारी सुनिवहूबातटरीअतिपरीखरवरीहै ५६१ कहिकैपठाईकहोकीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचलिपृथ्वीपतिआयोहै। पर्योशोचभारीतबबातयोबिचारी कहीआयएकजावोगयोअचिरजपायोहै। सेवाकरिसिद्धिशाष्टांगह्वैकैभूमिपरे देखिबडीवेरिपावँखडगलगायोहै। कहिगईऐड़ीऐपैटेढ़ीहूनभौंहकरीकरिनितनेमरीतिधीरजदिखायोहै ५६२ उठिचिकडारितबपाछेसोनिहारिकियोमुजराबिचारि बादशाहअतिरीझेहैं। हितकीसचाईयहैनेकुनकचाईहोतचरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं। बीतेदिनकोऊनृपभक्तसोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहरिछीजेहैं। करैविप्रसेवातिन्हैगावँलिखिन्यारेदिये वाकेप्राणप्यारेलाडकरीकरौकहिधीजेहैं ५६३ ॥

पावत न जानकोऊ घटकेमें मनचट जाय १ छिनमें प्रवीन छिनमाया में २ पैअठालौ मनन रहै सनलगाहू बांधकी गांठकी नाई साधनकरिये मनवश करिवेको जैसे ठाटी हरीनै साधन किया सो उलीचोही धीरज फकीर शहजादे को दृष्टांत १ ॥

मूल ॥ निहकंचनभक्तनिभजै हरिप्रतीतिहरिवंशके॥ कथाकीरतनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी। खरियाखुरपारीति ताहिज्योंसर्बसुत्यागी। संतोषीशुठिशीलअसदआलापन भावै। कालवृथानहिंजायनिरंतरगोविंदगावै ॥ शिप सपूतश्रीरंगकोउदितपारपदअंशके। निहकंचनभक्तनभजै हरिप्रतीतिहरिवंशके १७७ ॥

खरियाखुरपारिति॥ भारतकोइतिहासखरियाखुरपा सर्बसदान दीये। सो बदरिया वाही के शिरपररही। बड़े बड़े राजनने बड़ो बड़ो दान दियो। पै खरियाखुर-पा की बरोबर न भयो सर्बसु दियो॥

हरिभक्तिभलाईगुणगंभीरबांटैपरीकल्यानके।।नवल किशोरदृढ़ब्रतअनन्यमारगईयकधारा। मधुरबचनमनहरण सुखदजानतसंसारा।।परउपकारबिचारिसदाकरुणाकी रासी। मनबचसर्बसुरूपभक्तपदरैनिउपासी ॥ धर्मदास सुतशीलशुठिमनमान्योकृष्णसुजानके। हरिभक्तभलाईगु नगंभीरबांटैपरीकल्यानके १७८ बीठलदासहरिभक्तको दुहूंहाथलाडुलिया॥ आदिअंतनिरवाहभक्तपदरजब्रतधा री। रह्योजगतसोंऐंड़तुच्छजानैसंसारी॥ प्रभुतापतिकी पधितप्रगटकुलदीपप्रकासी। महतसभामेंमानजगतजा नैरैदासी।।पदपढ़तभईपरलोकगतिगुरगोविंदयुगफलदि या। बीठलदासहरिभक्तकोदुहुहाथलाडुलिया१७९ ॥

हरिभक्त भलाई॥ छप्पै॥ गुरभक्ता गुणवंत ज्ञान बि-ज्ञान बिचारै। परउपकारी पिंडप्रान परद्रोह निवारै। परधन को परित्याग रहै परनारि उदासा। सर्बात्मा

सर्वज्ञ सर्वउरमें नितबासा। तातें वेता तिहूंलोकमें ऐसी धरनी जो धरै। ईकोतरसैं आपनै पुरवपुरातन उद्धरै १ तुच्छ जानें॥ दोहा॥ चाख्योचाहै प्रेमरस राख्यो चाहै शीश। इक है है अरु आपही देत सुनौ नहिं कान२॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनकेसनमानको।कोहवश्री रंगसुमनिसदानंदसर्बसुत्यागी। श्यामदासलघुवअनन्य लाषाअनुरागी। मारुमुदितकल्याणपरसवंशीनारायन। चेताग्वालगुपालशंकरलीलापारायन। संतसेयकारजकि यातोषतश्यामसुजानको। भगवंतरचेभारीभगतभक्तन केसनमानको १८० तिलकदासपरकामकोहरीदासह रिनिर्मयो। शरणागतकोसिवरदानदधीचटेकबलि। प रमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनकलि। बीकावतवानैत भक्तिपनधर्मधुरंधर। तूबरकुलदीपकसंतसेवानितअनु- सर। पारथपीठअचरजकौनसकलजगमेंयशलियो। तिलकदासपरकामकोहरिदासहरिनिर्मयो१८१टीका॥ प्रहलादआदिभक्तिगायेगुणभागवतसबैइकठौरे आयदे खेहरिदासमें। रीझजगदेवसोंयोंकहिकैबखानकियो जा नतनकोऊसुनोंकरैलैप्रकासमें। रहैएकनटीशक्तिरूपगुण जटीगावैलागैचटपटीमोहयाचैमृदुहासमें। राजारिझवा रकरैदेवेकोबिचारिपैनपावैसार काटयोशीशराख्योतरेपा समें ५६४ दियोकरदाहनोमैंयासोंनहींयाच्योकाहूसुनि एकराजाभेदभावसोंबुलाईहै। नृत्यकरिगाईरीझलेवोक हींआयदेऊओट्योबायोंहाथरिसभरिकैसुनाईहै। येता अपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजूकोऐसेकहां

पाईहै। तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखाइदीजैदईनहीं जायकाहूमोहीकोसुहाईहै ५६५ ॥

तोपत ख्याल॥श्लोक॥ भक्तौतुष्टेहरिस्तुष्टो हरौतुष्टेचदेवता॥ अर्थसिद्धिःशाखाश्रतरोर्मूलनिसेचने। रहैएकनटीसो काहीको अवतार रहैजो वह नटीरूप गुणगान। तांई विशेषतामें आयकै कौन भईसो जगदेव पँवार भोज्यो सोभरापोड़ी है १

कितौसमुझावैल्यावोकहैयहैजकलागीगइबड़भागी पासवस्तुमेरीदीजिये। काटिदियोशीशतनरहैईशशक्ति लखोल्याईबकशीशथारढांपिदेखिलीजिये। खोलिकैदि खायोनृपमूर्छागिरायो तनवनकीनबातअबपाकोकहाकी जिये। मैंजुदीनोहाथजानिआनिकैजीव जोरिदईलईवहीरी झपदतानसुनिलीजिये ५६६ सुनीजगदेवरीतिप्रीतिनृ पराजसुतापितासोंबखानिकहीवाहीकोलैदीजिये। तब तोबुलायेसमुझायेबहुभांतिखोलिवचनसुनाये अजूबेटीमे रालीजिये। नट्योसतबारजबकहीडारोमारिबेलैमारिबे कोबोलीवहमरोमतिभीजिये। दृष्टिसोंनदेखेकहील्यावोका टिमूड़ल्यायेचहैशीशआंखिनिकोगयोफिररीझिये ५६७॥

रीझपद॥कवित्त॥ नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचि करि विविध कों शोच परयो नेही कैसे बचेंगे। लाष लाष लोगन के घाट घर कैसे कहूं पांच सात बनिआये तेऊयामें पचेंगे। करत बिचार शोच सागरन वारापार वेई करतार कछु बुद्धिबल रचेंगे। हियेहीमें आय कही मति पछितांहि तब वाहि वाहि रोयवो बनाय औरसबें

गे ॥ सोरठा ॥ नेही अक्षर दोययेतौ बिधना ना रचे। को पावैगो और नेह पंथ नेही बिन। १ प्रीत नृप राजसुताकै भई वाके रूप पै रीझि पादशाह को बेटी जाति पांति न बिचारी ॥ दोहा ॥ नृप बिद्या अरु बेलि तिययेन गनै कुल जाति। जो इनके नियरेबसै ताही को लपटाति ३ याको कहा कीजिये रीझ्यो पचायबेको बाह बाड़कार है १ शाहजहां को दृष्टांत ३॥

निष्ठारिझवाररीतिकीनीबिस्तारियह सुनोसाधुसेवा हरीदासजूनेकरीहै । परदानसंतसोहैदेतहैंअनन्तसुखर ह्योसुखजानिभक्तसुताचितधरीहै । दोऊमिलिसोवैंऋतु ग्रीषमकीछातपरगातपरिगातमोयेसुधिनहींपरीहै । दा तनकेकरबेकोचढ़ोनिशिशेषआप चादरउठायनीचेआये ध्यानहरीहै ५६८ जागिपरेदोऊअरबरदेखिचादरको पेखिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै। सन्तदृगनयेचलेबै ठेमगपगलयेगयेएकांतमेंयोंबिनतीबखानीहै । नेकुसाव धानह्वैकेकीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिद्रपाय कहैकटु बानीहै । तुमकोजुनावपूरेजरैसुनिहियामेरोडरैनिंदाआप नीनहोतसुखदानीहै ५६६ इतनीजतावनिमेंभक्तिकोक लंकलगेऐपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये । भईलाजभारी विषयवासधोयडारीनीकेजीकेदुखराशिचहै कहूंउठिजाइ ये । निपटमगनकियेनानाबिधिसुखदियेदियेपैनजानिमि लैलालनिलड़ाइये। गोबिंदअनुजजाकेबांसुरीको सांचो पनमनमेंनल्यायोनृपइहिबिधिगाइये ६००॥

बांसुरी को सांचो पन ॥ छप्पै ॥ टेक एकबंशी तजी जन गोबिंद की निर्वही । यमुना चंद किरपाल तास को दास

कहावै। पादशाह सों पैज ज्ञकुमनहीबैनु बनावै। वोका वत बानेत भक्त बंशपांडव अवतारी। कपिज्यों बीरालियो उठाय शीश अंबर कै भारी। पीठपरीछत सार का सभा शापसंतन कही। टेक एकवंशीतनीजन गोविंदकीनिर्वही १ दोहा ॥ गोविंदा गाढ़ी गही ज्ञकुम किया बादशाह। कैसुरली कीटेरदैकै अंबर चपुपेवाह २ अंबरचपुपै वाहसी सुरलीब्राजै नाह।सुरलीबाजैनाह देहएकैसाधवकेमाहँ ३॥

मूल ॥ नंदकुवँरकृष्णदासकोनिजपदतेनूपुरदियो ॥ ताननमानसुरतालसुलयसुंदरशुठसोहै। सुधाअंगभ्रूभंग गानउपमाकोकोहै। रत्नाकरसंगीतरागमालारँगरासी। रीझेराधालालभक्तपदरैनिउपासी।स्वर्णकारपडगूसुवन भक्तभजनपनदृढ़लियो। नंदकुवँरकृष्णदासकोनिजपद तेनूपुरदियो १८२ टीका ॥ कृष्णदासयेसुनारराधाकृष्णसुखसारलियोसेवाकरिपाछेनृत्यगानबिस्तारिये । ह्वैकरिमगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोगिरयोनसँभारिये। लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँ निजखोलिआपबांध्योसुखभारिये । फेरसुधिआईदेखि धारालैबहाईनयनकीरतियों छाईजगभक्तिलागीप्यारिये ६०१मूल ॥परमधरमप्रतिपोषिकैसंन्यासीयेमुकुटमनि। चित्तसुखटीकाकारभक्तिसर्बोपरराषी। दामोदरतीरथरामअर्चनविधिभाषी।चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकीनी। माधोमधुसूदनसरस्वतीपरमहंसकीरतिलीनी। प्रबोधनंदरामभद्रजगदानंदकलियुगधनि। परमधरम० १८३ प्रबोधानंदसरस्वतीकीटीका ॥ श्रीप्रबोधानंदबड़ेरसिकआनंदकन्दश्रीचैतन्य चंद्रजूकेपारषदप्यारेहैं। राधाकृष्णकुं

जकेलनिपटिनचवेलिकहीझेलरसरूपदोऊ कियेदृगतारे हैं। वृन्दावनवासकाहुलासलैप्रकाशकियोदियो सुखसिंधुकर्मधर्मसबटारेहैं। ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरँगपायोविपिनसुहायोबसेतनमनवारेहैं ६०२ ॥ मूल ॥ अष्टांगयोगतनत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी।सरिताकूकसगांवसलिलमेंध्यानधर्योमन । रामचरणअनुरागसुदृढ़जाकेसांचोपन। सुतकलत्रधनधामताहिसोंसदाउदासी। कठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुलफांसी । कीलिहकृपाबलिभजनकेज्ञानखड्गमायाहनी । आष्टांगयोगतनत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी १८४॥

रागमाला ॥ कवित्त ॥ भैरोविलावल मिलावत ललितमांझ गूजरी देव गंधार प्रातही विभासरी। प्रथम मेघ मलार राम कली टोड़ी मलार आसावरी जैतश्रिरीअ मरघनाश्रिरी। हिंडोल सारंग नटअड़ानो उपावें घटि कालिंगड़ीखंभायची सोहै चतुर मासरी। श्रिरी राग सिंध गौरी मालव बसंत टोढ़ी सोरठ सदारहत उदासरी१ दीपकसूहो कल्यान केदारोगान बखतबिहागरेको गावत बिलासरी। पंचम बड़े अपान जंगली काफी सयानो माल गौड़माखको सराग को निवासरी। कहतदयालपै शुपाल के छतीसोंराग ऐसी बिधि मोहन बनाईबन बांसुरी। सोई तो सुजान हरिके गुणगाय जाने वाकीको बकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी २ रागध्यान ॥ सुखिनिसुखनिवासोदुःखिता नांबिनोद श्रवनहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः। रतिरभसबिधाता वल्लभःकामिनीनां जगतिजयति नादः पंचमश्चोपभेदः १ भैरवोपंचमोनाट्यो मल्लारोगौड़मालवाः। ललितोगुजरीदेशी बराड़ीरामकृन्तथा ॥मतारागार्णवेराग्यः पंचैतेपंचमाश्रुताः २ नटनारायणःपूर्वीगंधारः

सारंगस्तथा। तत्केदारकर्णाटो पंचैतेपंचमाश्रया। मेघोम
ल्लारकामाल कौशक:प्रतिमंजरी। आसावरीपंचैतेराग: म
ल्लारसंश्रया: ४ हिंडोलश्रीगुलांधारी गौरीकोलाहलस्त
था। पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रितसंस्थिता ५ भूपालो
हरिपालश्च कामोदाघोरणीस्तथा। बेलावलीपंचैतेरागा
देशाकस्थिता ६ अन्येचबहवोरागा जातादेशविशेषत:।
मार्कप्रभृतयोलोके पंचभक्तासिकास्मृता ७ स्वरंसरसंचैव
रागंमधुरत्तरं। सालंकारप्रमाणंच षड्विधंगीतलक्षण ८
स्वरेणपदसंयुक्तंछंदसाचसुसंयुत। समाकृतस्तंतालंचस्वगीतं
तेनभण्यते ९ इंदाबन बासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परेजे
पतौवा सूके भूख में पियूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी
तोको जीविका। प्यास ते बढ़े जुचार तरन तनैया तीर
अंजौ भरि भरि धीर नीर पीवको। कोकिलकुल जाहतस
ह्वै है कबिइंदाबन कुंज पुंजभ्रमर अमरअमीवको। आनंद
मेंभूमि घमि बसौंगो बिलास भूमि आरत को हूम जैसे
सुखपावै हीवको २ ॥ छप्पै ॥ प्राण जाऊ तौ जाऊ होहि
यश सकल बड़ाई। होउधर्मको नाश भरमभनगहैजड़ाई।
आधि व्याधिके दु:खकरै जेतन को जीरन। करौ नहींउप
चार कोटि होनाना पीरन। भगवान तूहि बिधि बचन
कठोर कहि सबैनिरादर करौ किन। श्री इंदाबनकोछा
ड़िये यहआवो मन भूलिजिन २ ॥

पूरणप्रगटमहिमाअनंतकरिहैकौनबखान। उदयअ
स्तपरबतगहरुमध्यसरिताभारी। योगयुगतिविश्वास
तहांदृढ़आसनधारी। व्याघ्रसिंहगूंजैंखराकछुशंकनमाने।
अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधकोआने। शाखिशब्दनिर्मल
कहाकथियापदनिर्बान। पूरणप्रगटमहिमाअनंतकरिहैकौ
नबखान १८५ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभटलक्ष्मण अ
नुसर्यो। सदाचारमुनिवृत्तिभजनभागवतउजागर।

भक्तनसोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाकोआगर । संतोषीशुठि शीलहृदयस्वारथनहिंलेशी । परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी । श्रीभागवतबखानिकैनीरक्षीरव्ययवरणाकर्यो । श्रीरामानुजपद्धित प्रतापभटलक्ष्मणअनुसर्यो १८६ दधीचपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति।कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो । अतिथधरमप्रतिपालप्रगटयशजगमेंलीयो ॥ उदासीनताकीअवधिकनककामिननहींरात्यो । रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो ॥ गलितैगलितअमितगुणसदाचारशुठिनीति । दधीचपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति १८७टीका॥ बैठेहोगुफामेंदेखेसिंहद्वारआयगयो लयोयोंबिचारहोअ-तिथआजुआयोहै। दईजांघकाटिडारिकीजियेअहारअजूमहिमाअपारधर्मकठिनबतायोहै । दियोदरशनआयसांचमें रह्योनजायनिपटसचाईदुखजान्योनबिलायोहै । अन्नजलदेवेहीकोझीखतजगतनरकरिकौन सकैजनमनभरमायोहै ६०३ ॥

योगयुक्तिविश्वास ॥ कवित्त ॥ एंड़ीबामेपांवकीलगावै दूसीबनके बीचवाही जौनठौर ताहि नीके करिजानिये। तैसेहीअगतिकरिविधिसों प्रकार मेंढमेढ़ऊकेऊपर दच्छिण पाँव आनिये। सरलशरीर दृढ़ इन्द्रियसंयम करि अचल ऊर्ध्वदृस्यभ्रूकेमध्यठानिये। मोक्षके कपाट कोउ खोरत अ-वश्यमेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये १ ॥ छन्द ॥ दच्छिण ऊरू ऊपरप्रथमबामहिंपगआनिये । बायें ऊरू ऊपरतबहिंदच्छिण पग ठानहिं। दोऊकरिपुनि फेर पृष्टि पीछेकर आवय। दृढ़कैगहे अंगुष्टचिबुक वच्छस्थल लावय।

दूहि भांतिदृष्टि उनमेष करि अग्रनाशिका राखिये। सब व्याधि हरण योगीनकीपद्मासन पहिंचानिये २ प्रथम अंग यमकहो दूसरो नेम बताऊं। त्रिबिधसुआसन भेद सुतो अबतोहिंसुनाऊं। चतुर्थप्राणायाम पंचमप्रत्याहारं। षष्टंसु-नायधीरध्यध्यानसप्तंबिस्तारं। पुनिअष्टंग समाधि केसोसब तोहिंसुनाइहौं। सावधानह्वै शिष्य सुनि भिन्न भिन्न स-मुझाइहौं ३ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुस्तेयंत्यागे। ब्रह्म चर्यदृढ़ गहै क्षमाधृत सो अनुरागे। दया बड़ो गुण होय आजव हृदय आनै। प्रत्याहारपुनि करै शोचनीके बिधि जानै। ये दश प्रकार के यम कहे हठ प्रदीप का ग्रंथ में। जोपहिलेइनको ग्रहै सो चलत योगके पंथ में। तप संतोष गहै बुधि आस्तिक सोआनै। दान समभि करि देयमानि पूजान। बचन सिद्धांतसु सुनो लाज मतिदृढ़ करि राखै। जायक मुखसों असद आलापनभाखै। पुनिहोश करै दूहि बिधि तहां जैसी बिधि तहांतैसी बिधि सतगुरुकहै। दश प्रकार के यमकहे ज्ञान बिन कैसे कहै १॥

मूल॥ भलीभांतिनिबहीभगतिसदागदाधरदासकी। लालबिहारीजपतरहतनितबासरफूल्यो। सेवासहजस नेहसदाआनँदरसझूल्यो। भक्तनिसोंअतिप्रीतिरीतिसब हीमनभाई। ऐसीअधिकउदाररसमहरिकीरतिगाई। ह रिबिश्वासहियआनिकै सपनेहूआननआशकी।भलीभांति निबहीभगति सदागदाधरदासकी १८८ टीका॥ बुदान पुरढिगबागतामेंबैठेआयकरिअनुराग गृहत्यागपागेश्या मसों। गावँमेंनजातलोगकितेहाहाखातसुखमानलियोगा तनहींकामअरुकामसों। पर्योअतिमेहदेहबसनभिजाय डारेतबहरिप्यारेबोलेस्वरअभिरामसों। रहेएकशाहभक्त कहीजायल्यावोउन्हेंमन्दिरकरावोतेरो भर्योघरदामसों

६०४ नीठिनीठिल्यायेहरिबचनसुनाये जबतबकरबायो ऊंचोमन्दिरसँवारिकै। प्रभुपधरायेनामलालऔबिहारी श्यामअतिअभिरामरूपरहतनिहारिकै। करैसाधुसेवाजामेंनिपटप्रसन्नहोतबासीनरहतअन्नसोवैपात्रझारिकै। करतरसोईसोईराखीहीछिपायसामा आयेघरसंतकहीआयज्यांयेप्यारिकै ६०५ बोल्योप्रभुभूखेरहैंताकेलियेराख्योकछूभाष्योतबआपकाढ़ोभोरऔरआवैगो। करिकैप्रसाददियोलियोसुखपायोतबसेवारीतिदेखिकहीजगयश गावैगो। प्रातभयेभूखेहरिगयेतीनयामटरिरहे क्रोधभरिकहैकबधौंछुटावैगो। आयोकोऊताहीसमयद्वैशतरुपैयाधरेबोलेगुरुशीशलैकैनारोकितोपावैगो ६०६ ॥

भलीभांति निबही॥ नवातहै इनको निर्वाह भये॥ निष्काम भक्ति स्वरूपकी है सहजक मग की इत्तिलगै १ सोवैपात्र झारि॥ दोहा॥ सबततवमि को तत्वहै सोचम्र गट संसार॥लगैन अहिंडो चोरको ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार॥सबको सारभजन १

डरयोवहशाहमतिमोपैकछुकोपकियोकियोसमाधानसबबातसमुझाईहै। तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदेयसेवासुखलेतशाहरुचिउपजाइये। रहेकोऊदिनपुनिप्रभुपुरीबासलियोपियोब्रजरसलीलाअतिसुखदाईहै। लाललैलड़ायेसंतनिकेभुगताये गुणजानेजितेगायेमतिसुन्दरलगाईहै ६०७॥ मूल॥ हरिभजनसींवस्वामीसरसश्रीनारायणदासअति।भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिजबलकरिराखी। हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी। परचैप्रचुर

प्रतापजानमनरहसिसहायक। श्रीनारायणप्रगटमनो लोगनसुखदायक। नितसेचबसंतनिसहितदाताउत्तर देशगति। हरिभजनसींवस्वामीसरसश्रीनारायणदास अति १६६ टीका॥ आयेबद्रीनाथजूतेमथुरानिहारिनयन चैनभयोरहैजहांकेशवजूकोद्वारहै। आवैंदरशनलोगजूतिनकोशोगहियेरूपकोनभोगहोतकियोयोंबिचारहै। करैरखवारीसुखपावतहैंभारीकोऊजानैनप्रभावउरभाव सो अपारहै। आयोएकदुष्टपोटपुष्टसोतोशीशदईलईचले मग ऐसोधीरजहीसारहै ६०८॥

रहेकोऊ दिन॥ सवैया॥ कालकराल गयो सगयो घनहूंसुनि जो छिनही छिनछीजै॥ श्रीमथुरा यमुना तटवास कै जीवत जीवन को फललीजै॥ नाथनिरंतर केशव सुंदर बालको भागवता मृतपीजै॥ छांड़ि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबकोसुख देखिबो कीजै १ जूतिन को शोग॥ दोहा॥ हरिकि मंदिर जात हैं हरिदरशन की आश॥ औंधोहोय पायँनिपरै चित्तपन्है यमपास २ लै चले॥ दोहा॥ कायाकोठी लोहकी पिय पारषतिहमाह॥ रजवंतन सुखसों मढ़ेकंचन होती नाहिं २॥

कोऊबड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभूमिपरिभूरिनेहको। जानिकैप्रभावलियेपावमहा दुष्टहूने कष्टअतिपायोछूट्योअभिमानदेहको। बोलेआपचिंताजिनकरोतेरोकामहोत नैननीरसोतमुखदेखोनहींग्रेहको। भयोउपदेशभक्तिदेशउनजान्यों साधशक्तकोविशेष यही जान्योभावमेहको ६०६ ॥ मूल ॥ भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस। भजनभावआरूढ़गूढ़

गुणाबलितललितयश । श्रोताश्रीभागवतरहस्यज्ञाता अक्षररस । मथुरापुरीनिवासआशपदसंतनिइकचित । श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित । अतिगंभीरसुधीरमतिहुलशतमनजाकेदरश । भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरिश १६० ॥

धीरज कोसारहै ॥ बिचार्यो हरिहीने यहपोटि धरीहै यहकौनहै ॥ श्रुत ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म ऐसो ज्ञान आवैतब सुखीहोय नहींतौ दुखपावै जैसेचल्यो गायकाह्न कहीबैल मारैगो ॥ कहीब्रह्म सबमेहैं ॥ बैलने मार्यो कहने वालोभी तौ ब्रह्महै अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म शुभाशुभं ॥ हरिकी सेवामें कहालाभ है जो कर्मभोगै ॥ कर्मछीण होयहै सेवाते १ भावमेह को ॥ पद ॥ मुंडमुडाये की लाज निवहियो ॥ माला तिलक स्वांगधरि हरिको मारिगारि सबही की सहियो ॥ बिधिब्योहार नारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो ॥ अनन्य ब्रत धरि सतजिन छांडो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि बिषको लै पीवो बिषयनि को सुखभूलि न चहियो ॥ व्यास आशकरि राधापति की वृन्दाबन को बेगि उमहियो १ ॥

टीका ॥ जानिबेकोपनपृथ्वीपतिमनआईयों दुहाईलैदिवाईमालातिलकनधारिये । मानिआनिप्राणलोभकेतिकनित्यागिदियेछिपेनहींजातजानिबेगमारिडारिये । भगवानदासउरभक्तिसुखराशिभर्योकर्योलैसुदेशवेष रीतिलागीप्यारिये । रीझ्योनृपदेखिरीझिमथुरानिवासपायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोंनिहारिये ६१० ॥ मूल ॥ भक्तपक्षउदारतायहनिबहीकल्यानकी । जगन्नाथकोदा

सनिपुणअतिप्रभुमनभायो। परमपारषदसमझिजानिप्रि यनिकटबुलायो। प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसोंजो र्यो। सुतदाराधनधाममोहतिनकाज्योंतोर्यो। क्रोधनी ध्यानउरमेंबस्योरामनाममुखजानकी। भक्तपक्षउदारता यहनिबहीकल्यानकी १६१॥

जानिबे को पतिसो भगवान दासके संगसो रसखान मीरमाधव आदिभक्त बहुत होतभयेरसखानि के कंठसें हैसैकामालार है तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला स-बकोऊ पहिरै तुमएती को पहिरी तब रसखानबोले॥ दोहा॥ तनपाहन जलअगम को तनक काठ करैपार॥ बड़ेकाठ ऊपरतरैं जबतन पाहिन भार १ अरुमीर माधो कृष्णनाम प्रेमसो जु लेयसुनिबेको सके रासलोग फिर्यो करै तिनसों बादशाहकहीनाम तोसबकोऊ लेहै तिहा-रेहोपाछे क्योंफिर्योकरैहै तबमीर माधवकही॥ दोहा॥ मधुर बचन सुनिसुवा के काहुन अचरज होय॥ बोलिनि कागाकी मधुर सुनिधावै सबकोय १ तबपन देखिबे को दुहाई फिराई॥ मालाकंठी न धारै करत्रोलैसुदेश वेष्ठ प्रलोक॥ यदिवातादिदै।पेणमह्लक्तोमांचबिस्मरेत्॥ त हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं १ हरिको काहेको निहोरा कीजिये कंठीमाल पै शरीर छांड़िये १ कंठीमा-ला सुमिरणी पहिरत सबसंसार॥ पनधीरी कोउ एकहै और बिकियो शिंगार २॥

सोदरशोभूरामकेसुनौसंततिनकीकथा। संतदाससदब्र त्तजरातछोईकरिडार्यो। महिमामहाप्रबीणभक्तिवितधर्म बिचार्यो। बहुरोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो। करि योगिनिसोंबादबसनपावकप्रतिलीनो। परमधर्मबिस्ता रिहितप्रकटभयेनाहिनतथा। सोदरशोभूरामकेसुनोसंत

तिनकीकथा १६२ बूड़ियेबिदितकन्हरकृपालआत्मारा मआगमदरशि। कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुलपरमउजागर। क्षमाशीलगंभीरसर्बलक्षणकोआगर। सर्बसुहरिजनिजा निहृदयअनुरागप्रकाशै। अशनबसनसनमानकरतअति उज्ज्वलआशै। शोभूरामप्रसादतेकृपादृष्टिसबपरबसी। बू ड़ियेबिदितकन्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि १६३॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमेंधरो हमशृंगीमु-द्रामाधवदासबोले अचला कोपीनधरैंगे॥ दोहा॥ कंठी माला सुमिरणी पहिरत सबसंसार। पनधारी कोउएक है औरन कियो शृंगार। शोभूमाला शोभकी पनकी माला नाहिं। एँडेकोसो तडगडो पाल रह्यो गलमाहिं २॥ अचला कोपीन बचगये॥ शृंगी मुद्रानलगये पारथके क्षमाशील॥ दोहा॥ क्षमाबड़ेन को चाहिये छोछेनको उतपात। कहा बिष्णु को घटिगयो जोभृगु मारीलात १ ऐसे क्षमावानहैं सो नारायणहीं हैं शील गंभीर स्वभाव गंभीर समुद्र सोघटै बढ़ैनहीं सर्बलक्षणको आगर सो भगवानदास पारायण उज्ज्वल आशै निष्कपट बिषय बासनाकीचाहै सोसमान नाहींकरैहैयहउज्ज्वलआशै३॥

भक्तरत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशकिय। रुचिर शीलघननीललीलरुचिसुमतिसरितपति। बिबिधभक्तअ नुरक्तव्यक्तबहुचरितचतुरअति। लघुदीरघसुरशुद्धबचन अवरुद्धउचारन। बिश्वाबासबिश्वासदासपरचैबिस्तारन। जानजगतहितसबगुणनिसुसमनरायणदासदिय। भक्त रत्नमालासुधनगोबिंदकंठबिकाशकिय १६४ भक्तेशभ क्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर। श्रीयुतनृपमणिज गतसिंहदृढ़भक्तिपरायण। परमप्रीतिकियसुबशशीलल

क्ष्मीनारायण। जासुसुयशसहजहिकुटिलकलिकलपजुधायक। अज्ञाअटलसुप्रगटसुभटकटकनिसुखदायक। अतिहीप्रचंडमारतंडसमतमखंडनदोर्दंडबर। भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुंवर १६५ टीका॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयो ऐसोपारायनरहैडोलासंगही। लखेकोचलैआगेआगेसदापाछेरहैल्यावैजलशीशईशभरयोहियेरंगही। सुनियशवंतजयसिंहकेहुलाशभयोदेख्योदिल्लीमांझनीरल्यावतअभंगही। भूमिपरिबिनयकरीधरीदेहतुमहींनेजातेपायोनेह भीजिगयोयोंप्रसंगही ६११॥

विविधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीं में अनुराग कोऊदास्य कोऊ शृंगारके उपासिक १॥ धरीदेह॥ कबित्त॥ जिनहरिगढ़िगढ़ि एतक बनायोताहि तुलसीकोदल काहेते चढ़ायोनाहिं। खान प्रधान सब रचेतेरेभावतेपै ऐसोमन भावतो जुतेरे मनभायोनाहिं। गाढ़ीकरिगह्योव्रत प्रभुको नमान्योक्षत प्रभुने रिझायो औप्रभुते रिझायोनाहिं। लच्च जगजीवनिके नेहबिनदेहधरीजावो जगमाहिं ऐसेमेरेनानि जायोनाहिं १॥

नृपतिजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरेतेरीजुबहिनताकीगंधकोनपाऊंमैं। नामदीपकुंवरिसोबड़ीभक्तिमानजातवहरसखानिऐपैंकछुकलड़ाऊंमैं॥ सुनिसुखभयोभारीहुतीरिसवासोंटारीलियेगावकाटिफेरिदियेहरिध्याऊंमैं। लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकरनदीजे लीजेसाधुसेवाकरिनिशिदिनगाऊंमैं ६१२॥ मूल॥ गिरिधरनग्वालगोपालकोसखासांचलोसंगको। प्रेमभक्तप्रसिद्धगानअति

गद्‌गदबानी।अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रगटरहैनाहिनछानी। नृत्यकरतआमोदबिपिनतनबसनबिसारै। हाटकपटहित दानरीझिततत्कालउतारै। मालपुरैमंगलकरनरासरच्यो रसरंगको। गिरिधरनग्वालगोपालकोसखासांचलोसंग को १६६ ॥टीका॥ गिरिधरनग्वालसाधुसेवाहीसोंख्या लजाकेदेखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै। संततनछूट हूतेलेतचरणामृतजोऔरअबरीतिकहौकापैजातिगाईहै॥ भयेद्विजपंचइकठौरेसोऊपंचमानो आन्योसभामांझकहै छांड़ोनसुहाईहै। जाकेहोअभावमतिलैवीमेंप्रभावजान्यो मृतकयोंबुद्धिताकोबारोसुनिभाईहै ६१३॥

गदगद॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं हसत्य भीक्ष्णंरुदतिक्वचिच्च ॥ विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियु क्तोभुवनंपुनाति। सखासांसमतानित्यं सख्यत्वं भावउच्यते॥ द्वैमित्रनको दृष्टांत॥ ऐसे बिश्वासहोय तौहरि सदासंग हीरहैं ऐसे पांडवनके ॥दोहा॥ समता शिष्य सुमित्रता हिये सुदृढ़बिश्वास। पांडव द्रौपदी गजसमय प्रगटभये अनियास। सुईहाथीनको दृष्टांत॥ याबचनसों सत्यव्रत राजाको संदेहभयो बाजीगरको दृष्टांत ३॥

मूल॥ गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी। प्रगटअंगमेंप्रेमनेमसोंमोहनसेवा। कलियुगकलुषनलग्यो दासतेकबहुंनछेवा। बाणीशीतलसुखदसहजगोविंदधुनि लागी। लक्षणकलागंभीरधारसंतनअनुरागी। अंतरशुद्ध सदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी। गोपालीजनपोषकोज गतयशोदाअवतरी १६० श्रीरामदासरससरीतिसोंभली भांतिसेवतभगत। शीतलपरमसुशीलबचनकोमलमुखनि

कसे। भक्तउदितरबिदेखिउदौबारिजजिमिबिगसै। अ तिआनंदमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई। चरणधोयदंडव तबिबिधिभोजनविस्तरई। बछुवननिबासबिश्वासहरियु गुलचरणउरजगमगत। श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभां तिसेवतभगत १६८॥ टीका॥ सुनिएकसाधुआयोभक्ति भावदेखिबेकोबैठेरामदासपूंछैरामदासकौनहैं। उठेआप धोयेपांवआवैरामदासअबरामदासकहांमेरे चाहिऔरगौ नहैं। चलौजूप्रसादलीजैदीजैरामदासआनियहीरामदा सपगधारोनिजमौनहैं। लपटानोपायँनसोंचायनिसमात नाहिंभायनिसोंभर्योहियोछाईयशजौनहैं ६१४॥

जनपोषकों॥मल्लिंगमद्भक्तजनादर्शनस्पर्शनार्चनं॥परिच र्य्यास्तुतिप्रह्वगुणकर्मानुकीर्तनं॥ सोभगवानकोयशोदा जीनेलड़ायोसाधनीकोलड़ायबेकोमनमें अभिलाषरहीसो गोपालीरूप धरिकै पूरणकरी १ भलीभांति॥ एकादशे॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका०१चाहै अभिमानतोजातहरहैपैजाति अभिमान न जाय जनमते मरणतांईरहै चितामें धरयोतऊ कहै ब्राह्मण हाथलगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधुइष्टमाने बड़ोआश्चर्यहै॥

बेटीकोबिवाहघरबडोउतसाहभयो कियेपकवानसब कोठेमांझभरेहैं। कैरेरखवारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔर हीलगाइतारीखोल्योनहींडरेहैं। आयेगृहसंततिन्हैंपोट निबँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभावभरेहैं। सेवाश्रीबि हारीलालगाईपाकस्वच्छताई मेरेमनभाईसबसाधुउरह रेहैं ११५॥ मूल॥ बिप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिर तिकरी। भक्तिज्ञानवैराग्ययोगअंतरगतिपाग्यो। कामक्रो

धमदमोहलोभमत्सरसबत्याग्यो । कथाकीरतनमगनस
दाआनँदरसझूल्यो । संतनिरखिमनमुदितउदितरबिपंक
जफूल्यो । वैरभावजिनद्रोहकियतासुपागिषिसभैपरी ।
बिप्रसारसुतघरजनमराम० १९९ भगवंतमुदितउद्दारय
शरसरसनाअस्वादकिय। कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतर
भाशै । दंपतिसहजसनेहप्रीतिपरमितपरकाशै । अनन्य
भजनरसरीतिपुष्टमारगकरदेषी। बिधनिषेधबलत्यागिपा
गिरतिहृदयबिशेषी । माधवसुतसम्मतरसिकतिलकदाम
धरसेवलिय। भगवंतमुदितउद्दारयशरस० २०० ॥

रामराय ॥ भगवानदासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्त
गोसाईंजीकोअरु भगवानदासजी को प्रसंग॥दोहा ॥ सुत
हित सुधिता हंसमें ताकेअचरन नाहिं ॥ कामदेह को
हंसकरि त्यहि देखनसबनाहिं२ औराकी निजगतिचलै ता
को अचिरज नाहिं॥ पुनिखर ताको गतिचलै त्यहि देखन
सब जाहिं२तबगुसांईजी सुनिकै बहुत प्रसन्नभये ॥ साधुन
के येलच्छण हैं क्यों न आदर होय १ बैरभाव॥ दोहा ॥
कामलहृदै कोमलमिल्यो नंदनकाटतताहि ॥ काठकठोर
हृदैमिल्यो मधुकर काटत ताहि २ ॥

टीका ॥ सुजाकेदिवानभगवंतरसवंतभयेवृन्दाबनबा
सनिकीसेवाऐसीकरीहै । विप्रकेगुसाईंसाधुकोऊब्रज
बासीजाहुदेतबहुधनएकप्रीतिमतिहरीहै । सुनिगुरुदेवअ
धिकारीश्रीगोविंददेवनामहरिदासजाथदेखैचितधरीहै ।
योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलियो कियोउतसाहत
ऊपेपैंअरवरीहै ६१६ सुनीगुरुआवतअमावतनकिहूंअं
गरंगभरितियासोयोकहीकहाकीजिये। बोलीघरवारपट

संपतिभँडारसबभेटकरिदीजैएकधोतीधारिलीजिये। री-
झसुनिबानीसांचीभक्तितेहीजानीमेरे अतिमनमानीकहि
आखैंजलभींजिये ।यहीबातपरीकानश्रीगुसांईलईजानि
आयेफिरिवृन्दाबनपनमतिधीजिये ६१७ रह्योउतसाह
उरदाहकोनपारावार कियोलैबिचारआज्ञामांगिबनआये
हैं। रहेसुखलहैनानापदरचिकहैएकरसनिरवहै ब्रजवासी
जाछुटायेहैं। कीनीघरचेरीतऊनेकुनाशामोरीनाहिंवोरीम
तिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं। बड़ेबड़भागीअनुरागीरति
जागीजगमाधवरसिकबातसुनोपितापायेहैं ६१८॥

नेकुनासा मोरीनाहिं॥ कवित्त ॥ धनलेऊ जनलेऊ अ-
रधंगी हरिलेऊ सागतेन देऊ जापै उभ्रट गासीहै ॥ सु-
तहू को मारोतन टूकटूककरिडारौं दूखहू न निवारौं ब-
ड़ेमति ठासीहैं। ऐसेब्रजवासी ताको जगकरै उपहासी
मेरेतौ अभासी येतौसुकृत सुधासीहैं। पुनिहोतौ ग्यानौ
भगवंतइष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौं बड़ीजियफा-
सीहै १॥ दोहा॥ बांदर कांटेडी मदुख ब्रजवासी अरुचोर॥
षटकलेश याकुंजमेंपै आशा युगुल किशोर २॥

आयोअंतकालजानिबेसुधि पिछानिसबआगरेतेलैकै
चलेवृन्दाबनजाइये। आयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरहवे
कैकहांलियेजातकूरकहीजोईध्याइये । कह्योफेरोतनबन
जायबेकोपात्रनहींजरैबासआवैप्रिया पियकोनभाइये।
जानहारोहोइसोईजायगोयुगुलपास ऐसेभावराशिचलि
ताहीठौरआइये २२ ॥ मूल ॥ दुर्लभमानुषदेहकोलाल
मतीलाहोलियो । गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजन
सों। बंशीबटसोंप्रीतिप्रीतिब्रजरजपुंजनिसों। गोकुलगु

रजनप्रीतिप्रीतिघनबारहबनसों । पुरमथुरासोंप्रीति प्रीतिगिरिगोबर्द्धनसों । बासअटलवृन्दाबिपिनदृढ़करि सोनगरीकियो । दुर्लभमानुषदेहकोलालमतीलाहोलियो २०१ ॥

दुर्लभ ॥ दोहा ॥ कहं कटनकटप्रेम कीसीखोलाल बिवेक ॥ जैसेनौलख कामकू पैदरवाजो एक १ एकादशे ॥ दुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनांक्षिणभंगुरः २ गौरश्यामसों ॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधाराधामाधवरूपकं ॥ तस्मादिदंमहादेवि गोपालेनैवभाषितं २ सब्रह्महासुरापीचस्वर्णस्तेपीचपंचमः एतैर्दोषैविलप्येततेजोभेदान्महेश्वरी ३ सोलाड़िलीलाल लडायेजातनहींलाहोलह्यो ४ यमुना ॥ कवित्त ॥ सांवल बरण गातन्हात जाकोकरै गौर आपजल रूपवाको कारै-कलि रूपहै। आपनो प्रवाहवाहिकरै थिरवृन्दाबन आप घटै बढ़ैवह एकही स्वरूपहै ॥ आपरज राखैबाकै खोवै रजतमतीनो कीनों और ठाटयह कौतुक अनूपहै ॥ कृष्णपटरानी ऐसी यमुना बखानी कहिसकत न बानीनी के जानैभक्तभूप है ५ बास अटल ॥ छांडिस्वाद सुखदेह को औरजगत कोलाज ॥ मनहिं मारत न हारिकैवृन्दावनमें गाज ६ ॥

कबिजनकरतबिचारबड़ोकोउताहिमनीजे । कोउक हैअवनीबड़ीजगतआधाफनीजे । सोधारीशिरशेषशेषशिवभूषणकीनो । शिवआसनकैलाशभुजनभरिरावणलीनो रावणजीत्योबालिबालिराघोइकशायगडे । अगरकहेत्रैलोकयमेंहरिउरधारेतेबड़े २०२ हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश । नेहपरस्परअघटनिबहिचारोयुगआयो । अनुचरकोउत्कर्षश्यामअपनेमुखगायो । ओ

तप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै । पुरप्रवेशरघुबीरभृत्यकीरतिजुबखानै। अगरअनुगगुणबरणतेसीतापतितिनहोयबश । हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश २०३॥

बिचार करिकही ॥अवनि बडीजैसे नारायण भृगुआदिक यज्ञकरके कहे॥ समर्चन कोनकूं करै जो बड़ाहोय सो भृगुने नारायणकी परीक्षा करीसो क्षमाकरिकैनारायणहीं बड़े॥ ऐसेक्षमामें प्रथ्वी बड़ी १ हरिउर धारै॥ कवित्त॥ सबहीतेंबड़ी क्षितिक्षितिहूंतें सिंधुबड़े सिंधुहूंतें बडेमुनि वारिधिअचैरहे॥ तिनहूंते बड़ेनभतामेंमुनिसेअनेक जाकेबीचतारागनचारौं ओर छैरहे। नभहूंते बड़ेपग बावनबढ़ाये जबतिनकीउंचाई देख तीनौ लोक नैरहे। तिनहूंते बड़ेसंत साहिब अगमगति ऐसेहरि बड़ेजाके हृदै घर करिरहे १ भागवते॥ निरपेक्षं मुनिंशांतं निर्वैरंसम दर्शनं १ जिनकी चरणनि की रजहरिनें चाही यातेवही बड़े३ हरिसुयशनवमे॥साधवोहृदयंमह्यं साधूनांहृदयंत्वहं॥ मदन्यंतेनजानंतिनाहंतेभ्योमनागपि ॥ मनुष्य पांग पलटै हरिने हृदै पलटै हरिसाधन के गुण कहै अरुसुनै जैसे साधुहरि के गुणकहै अरुसुनै पुरप्रबेश करत कहै तो भरत सो हनुमान आदिक के सुनैनारदजी सों पांडवनि के संतहू अनन्यहैं जैसेप्रहलाद ऐसेही हरिअनन्यहैं ५॥

उत्कर्षसुनतसंतनकोअचरजकोऊजनिकरौ। दुर्बासाप्रतिश्यामदासबसताहरिभाषी । ध्रुवगजपुनिप्रह्लादरामसवरीफलसाखी । राजसुयशयदुनाथचरनधोयजूंठउठाई । बहुपांडवबिपतिनिवारिदियोबिषबिषियापाई। कलिबिशेषपरचौप्रगटआस्तीकह्वैकैचितधरौ । उत्कर्षसुनतसंतनकोकोऊअचरजजनिकरौ२०४॥ फलश्रुतिसा

र ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचतेपावैंअँगअँगपोष। पूरब जाज्योंबरनतेसबमानियोसँतोष २०५ भक्तजितेभूलोकमेंकथेकौनपैजाय । समुदपानश्रद्धाकरैकहचिरियापेटसमाय २०६ श्रीमूरतिसबैष्णवलघुदीरघगुनन[illegible]गाध । आगेपाछेबरेतैंजिनमानोअपराध २०७ फलकोशोभालाभतरतरुशोभाफलहोय। गुरूशिष्यकीकीर्तिमेंअचरजनाहींकोय। चारियुगनमेंजेभगततिनकेपगकीधूरि। सर्वसुशिरधरिराखिहौंमेरीजीवनमूरि २०६॥

कर्मानंद चारनकीछरीप्रभु लायदई यहहम न मानेंगे दुर्वासाप्रतिहरिनेवस्तुतःकही ॥ नवमे ॥ अहंभक्तपराधीनःह्यस्वतंचइवद्विज: १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासोंआयकै दरशन दीनो हम न मानेंगे ध्रुवमधोर्वनेद्वत्तिन्यागतःकौधी प्रेमनिधिको प्रभु मसाल लैकै आये यह हम न मानेंगे जैसेगजको प्रतिमाकूनाम देवने दूधपिवायो वा दूनके बोलते हरिआयगये यह हम नमानेंगे जैंप्रहलाद कर्माके खीचरी खाते ते चिलोचनके घरमें चौदहमहीना प्रसादपायो सो हम नमानेंगे जैसे सिवरीसेनको स्वरूप धरिकै राजाके तेललगायो यह हम नमानेंगे राजसूययज्ञमें कबीरकी जागेनागे रक्षाप्रभुनेकरी सोहमनमानेंगेबहुपांडव बिपत्ति निवार अंगदको बहनने बिषदियो और प्रभाव न भयो मीराकोबिष ननदनेदियो सोप्रभाव न भयो सो हम नमानेंगे जैसे चन्द्रहासके अचरऐसेप्रभाव १ कलि विशेष तीनियुगनमेंतो परचेहो यहीहै परकलियुगमें विशेषआस्तिकपै दृष्टांतमहापुरुषको अरुजंटको २॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनोतापनशाय। हरिजनको गुणबरनतेहरिहदअटलबसाय २१० हरिजनकोगुणब

रणातेजोजनकरैंअसूय । इहांउदरबाढ़ैव्यथाअरुपरलोक नशाय २११ जोहरिप्रासकीआशहैतौहरिकोयशगाय। नातरुसुकृतभुजेबीजज्यौंजनमजनमपछिताय २१२॥

जगकीरति॥ एकादशे॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनं॥परिचर्यास्तुति प्राहगुणकर्मानुकीर्तनं १ मेरो अरु मेरेभक्तको गुणसामान्यहै भक्तभगवन्तमें भेदनहीं वैष्णवी ममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने॥ अन्ययत्नंपरित्यज्यवैष्णवान्भज सास्वतं १ तृतीयेमैत्रेयेवाक्य॥ शारीरामानसादिव्यावैपासेयेचमानुषाः॥भौतिकाश्चकथंक्लेशाबाधन्तेहरिसंश्रयं२॥हरिजनको॥मारकंडेयवाक्यं॥ योहिभागवतांलोके उपहास्यंद्विजोत्तम॥करोतितस्यानश्यंतिधर्मार्थौयशःसुताः३॥ निंदांकुर्वंतियेमूढ़ावैष्णवानांमहात्मनां । पतंतिपितृभिःसार्द्धं महारौरवसंज्ञिका ४ आदिपुराणे॥ ममभक्तजनान् दृष्टानिंदांकुर्वंतियेनराः तेषांसर्वाणिनश्यंति सत्यंसत्यंधनंजय ५ दशमे भगवद्वाक्यं॥ राजसाघोरसंकल्पाःकामकाअहिमन्यवः। दांभिकामानिनप्रायाविहसंत्युच्यतप्रियान् ६ असूया पद॥ श्रीपति दुखित भक्तअपराधे। संतनद्वेषद्रोहताकरिनित आरति सहितमोहिंआराधे। सबैसुनोबैकुंठकेबासी सत्यकहत मानौजिनखेदे॥ तिनपरकृपाकैसेकैकरिहौं पूजतपावं कंठकोछेदै। संतन द्रोह प्रीतिमोह्ल सों मेरोनाम निरंतर लेहै। अग्रदास मागौतवदतहै मोहिं भजत परयमपुर जैहै १॥ इहांउदर बाढ़ै व्यथा जालंधरकारोग होय अथवा अनेक योनिनकी व्यथाहोय१॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद । सोप्रभुको प्यारोपुत्रजोबैठेहरिकेगोद २१३ अच्युतकुलजसएकबेरहूजाकीमतिअनुरागी। उनकीभक्तभजनसुकृतकोनिश्चयहोयबिभागी २१४ भक्तदासजिनजिनकथीतिनकीजूं

जूंठनपाय। मोमतिसारुअक्षरद्वैकीनोसिलौबनाय २१५ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआश। भक्तनाममालाअगरउरबसौनरायणदास २१६॥

इतिश्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजी
कृतसमाप्तम्॥

टीकाकर्ताके इष्टगुरुदेववर्णनं॥ कवित्त॥ रसिकाईकविताईजाहिदीनीतिनपाईभईसरसाईहियेनवनवचाहिये। उररंगभवनमेंराधिकारमणवसेलसैज्योंमुकुरमध्यप्रतिबिंबभाईहै। रसिकसमाजमेंबिराजरसराजाकहैंचहैंमुखसबैफूलेसुखसमुदाईहै। जनमनहरिलालमनोहरनामपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेशाईहै ६२०॥

भक्तिदाससंग्रहकरै॥ नारदगीतायां॥ तिष्ठतेवैष्णवंशास्त्रंलिखितं यस्यमंदिरे। तत्रनारायणोदेवस्वयंबसतिनारद १ बिभागो॥ एकबापकेचारिपुत्रकोऊ बरषको कोऊपांच बरषको कोऊ एकबरषकोकोऊ आजकोबांटोबरोबरि पावै १ साखा श्रीनाभानभउदित शशि भक्तमालसोजान रसिक अनन्य चकोरतस पानकरौ रसखान २॥ आगम निगम अरु स्मृति सबपुराण मतसार॥ भक्तमाल मैंसाखधरि संतभये भवपार २॥

इनहींकेदासदासदासप्रियादासजानो तिनलेबखानो मानोटीकासुखदाईहै। गोबर्द्धननाथजूकेहाथमनपर्योजाकोकर्योबासवृंदाबनलीलामिलिगाईहै। मतिअनुसारकह्योलह्योमुखसंतनकेअंतकोनपावैजोईगावैहियआईहै।

घटबढ़िजानिअपराधमेरोक्षमाकीजैसाधुगुणग्राहीयहमा
नकैसुनाईहै ६२१ कीनीभक्तमालसुरसालनाभास्वामी
जीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी। भक्तरसबोधनीसु
टीकामतसोधनीहैबांचतकहतअर्थलागैअतिसोहनी। जो
पैप्रेमलक्षणाकीचाहअवगाहियाहि मिटैउरदाहनेकुनयन
नहूजोहनी। टीकाअरुमूलनामभूलिजायसुनैजबरसिकअ
नन्यमुखहोतबिश्वमोहनी ६२२ ॥

वृन्दाबन ॥ कबित्त ॥ लगीअति प्यारीभूमिजहांप्रिया
प्रीतमजू प्रीतिसु बिहारकरै तेईगुणगाइबो। रसिकअन-
न्यनिकैलखिये मुखारबिंद गुणनिहारिये कुंजियकुलगा
इबो। मधुर रसालकथा लाल अभिराम नाम यहीआठो
यामनिज श्रवण सुनाइबो। वृन्दाबन रसवस ह्वैकै सब
छाड़ी मेंड़गही एक ऐंड तजिपैंडहू न जाइबो १ बिश्व
मोहनी ॥ कबित्त ॥ घरहू छुटाये काम पूरेनपरनपायेमन
कुलगाये कूपमति अतिलालकी। असन बसन भूलेलोचन
सरोजफूले मनरसभूले सुनिबाणी सुरसालकी। लोककुल
धर्मटारे धीरज बिदारि डारे रंगभरिभरि शोभाअंबर
बिशालकी। प्रेमसुखजालरहो काहूना सँभालरही कि-
धौंभक्तमाल किधौं बांसुरी गोपालकी १ राधारमणकी
गुसांइन कथामें उतावलीचली घरमें ढहवी मूंददई एक
सा उतावलीचली पाइ देवगिरी एक सीनेअपनेहाथकी
चूरी वैष्णवको फोरदीनी १॥

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियोमैंतौ ताकीसाखीप्र
थमसुनाईनीकेगाइकै। भक्तिबिश्वासजाकेताहीकोप्रका
शकीजैभीजैरंगहियोलीजैसंतनलड़ायकै। संबतप्रसिद्ध
दशसातसतउनहत्तरफालगुणमासबदीसप्तमीबिताइकै।

नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैकै प्रियादासदासउर बसौरहौछाइकै ६२३ ॥

भक्ति विश्वासजाके होय ताहीको सुनाइये । अविश्वासीको न सुनावै । क्योंकि नामापराध होयहै १ प्राधक्षद्वपि २ नामाश्च २ सतांनिंदांनान्न: परममपराधनवितनुतेयत: ख्यातयातयातंकथ सुमुत्सहतेतद्विग्रहं। सिवस्यश्री विष्णोइहिगुण: नामादि सकलं धयाभिन्नंपश्येत्स्यखलुहरिनाला हितकर गुरोरविज्ञाश्रुतिशास्त्रनिंदतं यथार्थं वादोहरिनामकल्पनं ॥ नाम्नोर्वलात्स्यहिपापबुद्धिर्न्न विद्यतेतस्यहियमैहिशुद्धि: ४ ॥ श्रुत्वापिनाम माहात्म्यंयश्रीतिरहितोनर: । अहंप्रमादिपरमोनाम्नि सोप्यपराधकृत् कवित्त ॥ वेदहुकी निंदाऔर साधनहुकी निंदाकरै गुरुकीअविज्ञा विष्णु शिव भेदमानिये । नामहीके आसरे सोंकरैबहुपाप और अश्रद्धावानहीं सो उपदेशलै बखानिये। एकअर्थवाद अरु बारबार कुतर्ककरै महिमा सुनतहिये श्रद्धानहिं आनिये। नामको समान और धर्मसब समानफलत अपराध दशनानिये १ ॥ पंचाध्यायी ॥ हीन अश्रद्धा नास्तिक हरिधर्मबहिरमुख। तिनसों कबहुं न कहै कहैतो नहीं लहै सुख भक्तजननसों कहैजिनकेसदा भागवतधर्मबल। ज्यांयमुनाकीमीन लीनदिनरहत यमुन जल। यद्यपिसप्तनिधि भेद भेदनी यमुना निगमबखानै । तेतहीं धारिहोंधार रमत कबितनहीं जलआवै १ गीता यां ॥ श्रद्धावाननसूयश्चश्रृणुयादपियोनरं । सोपिमुक्त:शुभांलोकान् प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणा ९ श्रद्धावान्श्रोतामन्यो करै चिंतानहीं १॥

अगिनिजरावोलैकैजलमेंबुडावोभावैशूलीपैचढ़ावोघोरिगरलपिवायवो। बीछुकटवावोकोटिसांपलपटावोहाथी

आगेडरवावोईतिभीतिउपजाइवी । सिंहपैखवावोचाहौ भूमिगड़वावोतीषीअनीबिधवावोमोहिंदुःखनहींपायवी। व्रजजनप्राणकान्हबातयहकानकरौ भक्तसोंबिमुखताको मुखनादिखाइवी ६२७ ॥

इतिश्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तम् ॥

अगिनिजरावो ॥पद॥ जोदुखहोयबिमुखघरआये। ज्यों कारो कारीलागै निशि कोटिक बीछूखाये। दुपहरि जेठ पतरवाहूमें घायनिलोनलगाये। कांटनमांझफिरै बिनप नहींमूड़मेटोलाखाये। टूटत चाबुक कोटिपीठिपर तरबर बांधि उठाये। जोदुखहोय अगिनिके दाहे सर्वसु धनहिं हेराये। ज्योंबांझहि दुखहोत सौति के सुंदर बेटाजाये। देखतही सुखहोत नितावह बिसरत नहिंबिसराये। भटकतफिरत निलज बरजतही कूकरज्यों झहराये। गारी देतबिलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये। अतिदुख दुष्ट जगतमें जेते नेकु न मेरेभाये। वाके दरश परश मिलवतही कहत व्यास यों न्याये॥ दोहा ॥ दागजु लाग्योनीलको सोमन साबनधोय। कोटिन यतन प्रबोधिये कौवा हंस न होय १ संगतिभई तौ कहभयो हिरदो भयोकठोर। नौनेजे पानीचढ़ो तऊ न भीजीकोर॥ ऐसेशठकथामें क्यों आवैहैं॥ श्लोक ॥ देवोज्ञातत्त्वभावंतो गंधर्वोमधुरःसुरः। मानुषं मतिचातुर्य्यं पिशाचोमतिनिर्गुणः। यक्षयंचभक्षं नास्तिराक्षसोउग्रतामसः। खरपृच्छवाक्भृष्टंचमृगपृच्छमति कातरः। मर्कटमतिचांचल्यां सर्वभक्षीचवायसी। एवंनाति मनुष्ये दशप्रकारंउच्यते १ तर्ककरबेकोआवैहैं तर्कनाहाव- क्ताकहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षाकरी बिमुखवोल्योव- क्ताहूको डारिदेऊ बचैतौ सांचोसांचो नहीभूंठोवक्ताकहै रामनामसों पाथरतरे बिमुखकहै अवतरावोतो सांचि नहींतौ भूंठ वक्ताकहैं गंगाजलसों स्नानकरावो बिमुख

कहैमतिकरावो पादोदकौहै बक्ताकहै सूर्यको यमुना जलसों जल दानकरै बिमुख कहै मतिकरौ पुत्री है पुत्री को जल कैसे लेगो बक्ताकहै तुलसी चरणामृत प्रसाद लेऊ बिमुखकहै मतिलेऊ उदरमें बिगरै यातें इनसों न कहिये २ ॥ ब्रजजनप्राण ॥ सवैया ॥ चंदन घोरिये बिंदलगाइकै कुंजनतें निकस्यो मुसक्यातो। राजतिहै बनमाल गरें और मोरपखा शिरपै फहरातो। जबतें रसखानि बिलोकतहौ तबतें कछु और न मोहिंसुहातो। प्रीतिकी रीतिमें लाजकहा कछुहैसोबड़ो यहनेहको नातो २ ॥ एकसमय बंशीधुनिसें रसखानिलियो कहनाम हमारो। ताछणतें वहवैरिन सासु कितौकियो भांकन देतिन द्वारो। होतचवाइ बलायसों आलीरी भोभरिअंक उरलीनत प्यारो। बाटचलत तबहीं ठटक्यो हियरे अटक्यो पियरे पटवारों २ ॥ यालकुटी अरु कामरियापर राज्य तिहुंपुरको तजिडारो। आठोसिद्धि नवोनिधिकोसुख नंदकिगाय चरायबिसारौं। कोटिकिये कलिधौतकेधाम करीरके कुंजन ऊपरवारौं। रसखानि कहैं इन नयनन सों ब्रजके बनबाग तड़ाग निहारौं ३ अहोभाग्य १ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णकेपास एईगईवेनआये १ ॥ सोरठा ॥ जिन भक्तनकी माल पहिराइहैनिशि दिनसदा॥ तेई रसिक रसाल बसो सो इंदाबिपिननित २ ॥

इतिश्रीभक्तमालसटीकसंपूर्णम् ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	लावनी	मिश्रितमाहात्म्य
योगवाशिष्ठ	**क़िस्सावग़ैरह**	गोकर्णमाहात्म्य
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	नानार्थनौसंग्रहावली	श्रीगोपालसहस्रनाम
सांख्यतत्वकौमुदी	ब्रह्मसार	कथासत्यनारायण
काव्य	शिवसिंहसरोज	हनुमान बाँहुक
सूरसागर	भक्तमाल	जनकपच्चीसी
कृष्णसागर	इन्द्रसभा	हरिहरसगुणनि० प०
विश्रामसागर	बिक्रमबिलास	बनयात्रा
प्रेमसागर	बैतालपच्चीसी	कायस्थवर्णनिर्णय
ब्रजबिलासबड़ा वाछोटा	पद्मावतीखण्ड	बिहारवृन्दाबन
कृष्णप्रिया	शुकबहत्तरी	समरबिहारवृन्दाबन
विनयमुक्तावली	बकावलीसुमन	कल्पभाष्य
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल	चहारदरवेश	**दरसी**
कविकुलकल्पतरु	क़िस्साहातिमताई	अक्षरावली
रसराज	अपूर्व्वकथा	स्वयम्बोध
सत्सई मूल तथा सटीक	क़िस्सागुलसनोवर	ज्ञानचालीसी
सभाबिलास	सहस्ररजनीचरित्र	•दोहावली
तुलसीशब्दार्थ	सिंहासनबत्तीसी	बालाबोध
भजनावली	राबिन्सन्क्रूसइतिहास	बिद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
प्रेमरत्न	सीताहरण	किताबजंत्री
युगुलबिलास	सतीबिलास	गणितकामधेनु
चित्रचन्द्रिका	**मुतफर्क़ात**	लीलावती
बारहमासाबलदेवप्रसाद	शनिश्चर की कथा	पटवारीकीपुस्तकें४ भाग
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	**ज्योतिषभाषा**
गंगालहरी	गोपीचन्दभरतरी	जातकचन्द्रिका
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजीकी	जातकालंकार
जगद्विनोद	अवधयात्रा	दैवज्ञाभरण
सिङ्गारबत्तीसी	भरतरीगीत	ज्ञानस्वरोदय
पद्मावत	दानलीला नागलीला	रमलसार
राग	रासलीला द्वा० प्र० कृत	इन्द्रजाल
रागप्रकाश	दोहावली रत्नावली	

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृतकीपुस्तकें	**संस्कृतउर्दूटीका**	प्रतापबिनोद
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	मनमौजचरित्र
सिद्धान्तचंद्रिका	विष्णु हारीत	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषतीनोंकांडस०	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासेतुबन्धखण्ड
पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क	मनोहरकहानी
निर्णयसिंधु	याज्ञवल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
संग्रहशिरोमणि	**संस्कृतभाषाटीका**	सीतावनबास
भगवद्गीतासटीक	**सहित**	किस्सामर्द औरत
दुर्गापाठमूल	अमरकोष	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठसटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति	सुदामाचरित्र
विष्णुभागवत	संध्यापद्धति	ज्ञानतरंग
अपराधभंजनस्तोत्र	व्रतार्क	सप्तशतिका
दुर्गास्तोत्रसटीक	भगवद्गीताटीकाह०बं०	बिजयचंद्रिका
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	रामायणबाल्मीकीय
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविन्द	भुवनेशभूषण
तथाछोटा	कथासत्यनारायण	महाभारतभाषासबलसिं-
मथुरासभा	परमार्थसार	हचौहानकृत
तुलसीतत्वभास्कर	शार्ङ्गधरसंहिता	सुन्दरबिलास
रामबिवाहोत्सव	पाराशरीसटीक	गीतरसिका
ज्योतिष	शीघ्रबोधसटीक	कबित्तावलीरामायण स०
मुहूर्त्तगणपति	लघुजातक	इलाजुलगुरबा भाषा
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	षट्पञ्चाशिका	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	सामुद्रिक	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	**नवीनकिताबें**	वाराह पुराण
मुहूर्त्तदीपक	कालिंजरमाहात्म्य	सौदागरलीला
बृहज्जातकसटीक	सुधामन्दाकिनी	रीडर नम्बर १
जातकालंकार	रामबिनयशतक	रीडर नम्बर २
जातकाभरण	नारीबोध	सीक्केल
होरामकरंद		